



खुलासा

श्री तारतम वाणी

खुलासा

अर्थ व भावार्थ

श्री राजन स्वामी एवं श्री नरेश टण्डन

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड़ रोड, सरसावा, सहारनपुर, उ.प्र.

www.spjin.org

सर्वाधिकार सुरक्षित (चौपाई छोड़कर)

© २०१८, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट

पी.डी.एफ. संस्करण — २०१९

अनुभूमिका

प्राणाधार श्री सुन्दरसाथ जी! अक्षरातीत श्री राज जी का हृदय ज्ञान का अनन्त सागर है। उनकी एक बूँद श्री महामति जी के धाम-हृदय में आयी, जो सागर का स्वरूप बन गयी। इसलिये कहा गया है कि **"नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी रोसन"** अर्थात् यह तारतम वाणी मारिफत के ज्ञान का सूर्य है। यह ब्रह्मवाणी सबके हृदय में ब्रह्मज्ञान का उजाला करती है।

"हक इलम से होत है, अर्स बका दीदार" का कथन अक्षरशः सत्य है। इस ब्रह्मवाणी की अलौकिक ज्योति सुन्दरसाथ के हृदय में माया का अन्धकार कदापि नहीं रहने देगी। इस तारतम वाणी की थोड़ी सी भी अमृतमयी बूँदों का रसास्वादन जीव के लिये परब्रह्म के साक्षात्कार एवं अखण्ड मुक्ति का द्वार खोल देता है। अतः वैश्विक

स्तर पर इस ब्रह्मवाणी का प्रसार करना हमारा कर्त्तव्य है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये यह आवश्यक है कि अनेक भारतीय भाषाओं में अवतरित इस ब्रह्मवाणी का टीका सरल भाषा में प्रस्तुत हो। यद्यपि वर्तमान में अनेक सम्माननीय मनीषियों की टीकायें प्रचलित हैं, किन्तु ऐसा अनुभव किया जा रहा था कि एक ऐसी भी टीका हो, जो विश्लेषणात्मक हो, सन्दर्भ, भावार्थ, स्पष्टीकरण, एवं टिप्पणियों से युक्त हो।

मुझ जैसे अल्पज्ञ एवं अल्प बुद्धि वाले व्यक्ति के लिये यह कदापि सम्भव नहीं था, किन्तु मेरे मन में अचानक ही यह विचार आया कि यदि सन्त कबीर जी और ज्ञानेश्वर जी अपने योगबल से भैंसे से वेद मन्त्रों का उच्चारण करवा सकते हैं, तो मेरे प्राणवल्लभ अक्षरातीत मुझसे तारतम वाणी के टीका की सेवा क्यों नहीं करवा

सकते। इसी आशा के साथ मैंने अक्षरातीत श्री जी के चरणों में अन्तरात्मा से प्रार्थना की।

धाम धनी श्री राज जी एवं सद्गुरु महाराज श्री रामरतन दास जी की मेहेर की छाँव तले मैंने यह कार्य प्रारम्भ किया। सरकार श्री जगदीश चन्द्र जी की प्रेरणा ने मुझे इस कार्य में दृढ़तापूर्वक जुटे रहने के लिये प्रेरित किया। श्री प्राणनाथ जी की पहचान के सम्बन्ध में जनमानस में अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ फैली रहती हैं। धाम धनी की कृपा से होने वाली इस टीका से उन भ्रान्तियों का समाधान हो सकेगा, ऐसी मैं आशा करता हूँ।

इस टीका के पुनीत कार्य में श्री नरेश टण्डन जी का विशेष सहयोग है। वे कुरआन पक्ष के महान विद्वान हैं। धाम धनी से प्रार्थना है कि उन पर पल-पल अपनी कृपा

बरसाते रहें।

सभी सम्माननीय पूर्व टीकाकारों के प्रति श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हुए मैं यह आशा करता हूँ कि यह टीका आपको रुचिकर लगेगी। सभी सुन्दरसाथ से निवेदन है कि इसमें होने वाली त्रुटियों को सुधारकर मुझे भी सूचित करने की कृपा करें, जिससे मैं भी आपके अनमोल वचनों से लाभ उठा सकूँ एवं अपने को धन्य-धन्य कर सकूँ।

आपकी चरणरज

राजन स्वामी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

सरसावा

अनुक्रमणिका

- | | | |
|---|---|-----|
| 1 | ए होत फुरमाया हक का
(खुलासा फुरमान का) | 10 |
| 2 | ए देखो खुलासा गिरो दीन का
(खुलासा गिरो दीन का) | 119 |
| 3 | हक हादी रुहन सों
(खुलासा मेयराज का) | 192 |
| 4 | असल खुलासा इसलाम का
(खुलासा इसलाम का) | 261 |
| 5 | मोमिन आए अर्स अजीम से
(भिस्त सिफायत का बेवरा) | 315 |
| 6 | फुरमाया कहूं फुरमान का
(इलम का बेवरा नाजी फिरका) | 352 |

- | | | |
|----|---|-----|
| 7 | हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी
(हक की सूरत) | 365 |
| 8 | जो उमत होवे अर्स की
(रूहों की बिने देखियो) | 388 |
| 9 | बुलाइयां निसबत जान के
(नूर नूरतजल्ला की पेहेचान) | 403 |
| 10 | पढ़े तो हम हैं नहीं
(जहूरनामा किताब) | 427 |
| 11 | अब कहूं विध निगम
(दोनामा किताब – मंगलाचरण) | 485 |
| 12 | दौड़ करी सिकंदरे | 501 |
| 13 | कंसे काला-गृह में | 547 |
| 14 | अब कहूं कुरान की
(कुरान की कहूं) | 630 |

- | | | |
|----|---|-----|
| 15 | बरस नब्बे हजार पर (कुरान के
निसान कयामत के जाहेर हुए) | 644 |
| 16 | केहेती हों उमत को
(सूरत मीजान की) | 695 |
| 17 | कहूं अर्स अरवाहों को (अर्स अजीम
की हक मारफत – महाकारन) | 763 |
| 18 | अब तुम निकसो नींद से | 816 |

श्री कुलजम स्वरूप

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत।

सो तो अब जाहिर भए, सब विध वतन सहीत॥

" श्री खुलासा "

सागर के अगाध जल में तैरते हुए सीपी के मुख में बन्द मोती का मूल्य नगण्य ही होता है। इसी प्रकार किसी कंगाल भिक्षुक की झोपड़ी के नीचे छिपी हुई उस अज्ञात हीरे की खदान का भी कोई मूल्य नहीं होता। जब तक सीपियों से मोती और खदान से हीरे निकाले न जायें, तब तक सागर में अपनी नौका से नित्य भ्रमण करने वाले नाविक या उस दरिद्र भिक्षुक को दरिद्रता के भयानक कष्ट का सामना करना ही पड़ता है।

वस्तुतः यही स्थिति धर्मग्रन्थों के सम्बन्ध में भी है।

वेद-कतेब की दोनों धाराओं के ग्रन्थों में शाश्वत् सत्य का बीज तो है, किन्तु वह इतने गोपनीय रूप में है कि संसार के लोग उसे यथार्थ रूप में पाने के लिये तरसते ही रहे हैं। प्राणेश्वर अक्षरातीत की कृपा रूपी प्रेममयी हवाओं के झोंकों से स्वप्न की बुद्धि जनित अज्ञानता का कुहासा अब हट गया है और खुलासा ग्रन्थ के रूप में तारतम्य वाणी का वह ज्ञान-सूर्य अपने प्रचण्ड तेज से इस प्रकार चमक रहा है कि उसके प्रकाश में एक चींटी भी छिप नहीं पा रही है।

धर्मग्रन्थों के शब्दों का बाह्य अर्थ लेकर उसे अपनी संकुचित मानसिकता से इस तरह विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया कि सारा संसार घृणा और द्वेष की अग्नि में इस प्रकार जलने लगा कि चारों ओर भयंकर रक्तपात ही रक्तपात हुआ। धर्म और अध्यात्म से प्रेम की सरिता तो

प्रवाहित नहीं हुई, अपितु चारों ओर रक्त की नदियाँ अवश्य बहायी गयीं। इस क्रम में गोरी, गजनवी, सिकन्दर लोदी, तैमूर लंग, नादिर शाह, और अहमद शाह अब्दाली आदि की एक लम्बी श्रृंखला है। इसी प्रकार, गोवा में पुर्तगालियों द्वारा अपनी कट्टरवादी ईसाइयत को बलपूर्वक थोपने के लिये अमानवीय हिंसा का सहारा लिया गया। क्या यही धर्म या अध्यात्म है?

श्रीमुखवाणी का खुलासा ग्रन्थ ज्ञान का वह स्तम्भ है, जिसकी छत्रछाया में संसार के सभी धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्यों को जाना जा सकता है, तथा उन्हें एकीकरण की माला में पिरोकर सम्पूर्ण विश्व को प्रेम, शान्ति, तथा एकता के आँगन में लाकर सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान करायी जा सकती है, तथा अखण्ड मुक्ति का उपहार दिया जा सकता है। उस स्थिति में वेदों के यह

कथन मूर्त रूप ले सकते हैं—

सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।

(अथर्ववेद १९/१६/६)

सभी दिशायें मेरी मित्र हों।

मित्रस्य चक्षुषा अहम् सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

(यजुर्वेद ३६/१८)

मैं संसार के सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ।

द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शान्तिः।

(यजुर्वेद ३६/१७)

सम्पूर्ण द्युलोक, अन्तरिक्ष, एवं पृथ्वी मण्डल में
शान्ति का साम्राज्य हो।

"खुलासा" शब्द अरबी भाषा का है, जिसका अर्थ
होता है— सारांश या गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण। अब

श्री प्राणनाथ जी के स्वरों में अवतरित खुलासा ग्रन्थ
रूपी मनोहर पुष्प की दिव्य सुगन्धि के झोंकों का यहाँ
दिग्दर्शन प्रस्तुत है—

किताब खुलासा वानी हकी सूरत फजर की।

रुहें अर्स की दिल दे देखो॥

परमधाम की आत्माओं! यह "खुलासा" ग्रन्थ परब्रह्म
स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के मुखारविन्द से अवतरित
हुआ है। जाग्रत ज्ञान रूपी सूर्य के उदय होने पर जब
अज्ञानता की रात्रि समाप्त हो गयी होती है, उस समय
इसका अवतरण हुआ है। अतः आप सभी सच्चे हृदय
(पूर्ण मन) से इसका चिन्तन करें।

खुलासा फुरमान का

खुलासा फुरमान का अर्थात् वेद-कुरआन का स्पष्टीकरण।

द्रष्टव्य- सामान्यतः फुरमान (फरमान) एवं मुसहाफ (मुसाफ) का अर्थ मात्र कुरआन से लिया जाता है, किन्तु इसका तात्पर्य परब्रह्म के आदेश से अवतरित वेद, भागवत, कुरआन आदि सभी दिव्य ग्रन्थों से है। "वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान" (खुलासा १३/१२), "साहेब कह्या हिन्दुअन का, संग गीता भागवत ग्यान" (खुलासा १३/२९), और "फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत" (खुलासा ८/१०) से यही सिद्ध होता है।

ए होत फुरमाया हक का, जो किया खुलासा ए।

किए हादीने जाहेर, याही मगज मुसाफ के॥१॥

यह खुलासा ग्रन्थ स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म का कहा हुआ है, जिसे उन्होंने इस नश्वर जगत् में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर उजागर किया है। इसमें वेद तथा कुरआन के गुह्य रहस्यों को सबके लिये प्रकट किया गया है।

ए देखो खुलासा फुरमान का, मोमिन करें विचार।

रुहें हक सूरत दिल में लई, छोड़ी दुनियाँ कर मुरदार॥२॥

धर्मग्रन्थों के स्पष्टीकरण रूप इस खुलासा ग्रन्थ को आप देखिए। परमधाम की उन आत्माओं के लिये यह ग्रन्थ चिन्तन करने योग्य है, जो इस संसार को नश्वर मानकर त्याग देती हैं तथा अपने हृदय के प्रेम रूपी

सिंहासन पर परब्रह्म की शोभा को विराजमान कर लेती हैं।

चौदे तबक होसी कायम, इन नुकते इलम हुकम।

हक अर्स वाहेदत में, हुआ रोसन दिन खसम॥३॥

सच्चिदानन्द परब्रह्म के आदेश से अवतरित इस तारतम वाणी के ज्ञान से यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करेगा। तारतम वाणी के दिव्य ज्ञान से यह बात प्रकाशित हो गयी है कि अक्षरातीत का वास्तविक स्वरूप इस नश्वर जगत् से परे उस स्वलीला अद्वैत परमधाम में है, जहाँ एकत्व (एकदिली) का साम्राज्य है। इससे इस स्वाप्निक जगत् की अज्ञानता का अन्धकार नष्ट हो गया है तथा अखण्ड ज्ञान का उजाला फैल गया है।

भावार्थ— "नुक़ता" का अर्थ होता है— बिन्दु रूप।

वस्तुतः अक्षरातीत श्री राज जी के हृदय में उमड़ने वाले ज्ञान के अनन्त सागर की एक बूँद श्री महामति जी के धाम-हृदय में आयी और सागर बन गयी। इस सम्बन्ध में श्रीमुखवाणी श्रृंगार ११/४५ का ये कथन देखने योग्य है—

एक बूँद आया हक दिल से, तिन कायम किए थिर चर।
इन बूँद की सिफत देखियो, ऐसे हक दिल में कई सागर॥

जिस प्रकार मूल स्वरूप श्री राज जी के हृदय में ज्ञान का अनन्त सागर लहरा रहा है, उसी प्रकार श्री महामति जी के हृदय में भी ज्ञान (इल्म) का अथाह सागर क्रीड़ा कर रहा है। "नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी रोसन" (मारफत सागर ४/७१) का यह कथन यही सिद्ध करता है।

बड़ाई नुकते इलम की, कहूं जाहेर न एते दिन।

खोले द्वार खिलवत के, एही कुन्जी बका वतन॥४॥

श्रीमुखवाणी के ज्ञान की महिमा अनुपम है। आज दिन तक संसार में परमधाम का ज्ञान कहीं भी स्पष्ट रूप से उजागर नहीं हो सका था, किन्तु इस वाणी ने परमधाम की खिलवत के आनन्द का द्वार खोल दिया है। वस्तुतः अखण्ड परमधाम की अनुभूति कराने की कुञ्जी तारतम वाणी ही है।

भावार्थ— बाह्य रूप में सम्पूर्ण परमधाम ही प्रिया-प्रियतम की एकान्तमयी लीला भूमि (खिलवत) है, किन्तु आन्तरिक रूप से दोनों का हृदय खिलवत है और इसकी कुञ्जी तारतम वाणी है। यद्यपि परमधाम के साक्षात्कार के लिए प्रेम अनिवार्य है, किन्तु बिना ज्ञान के अपने आराध्य के प्रति प्रेम कहाँ से पैदा हो सकता है।

खुले द्वार सब असी के, एही रूह अल्ला इलम।

एही लदुन्नी खुदाई, ए कौल हक हुकम॥५॥

इस तारतम वाणी ने तीनों सृष्टियों के तीनों धामों का द्वार खोल दिया है। इस ज्ञान को अवतरित करने वाले स्वयं श्यामा जी हैं। इस प्रकार यह तारतम वाणी परब्रह्म द्वारा कही गयी है। श्री राज जी के आदेश से, श्री महामति जी के धाम-हृदय में इसके वचन प्रकट हुए हैं।

भावार्थ- जीव सृष्टि का धाम वैकुण्ठ और निराकार है, ईश्वरी सृष्टि का धाम बेहद मण्डल है, तथा ब्रह्मसृष्टियों का निजघर परमधाम है। जब श्यामा जी ने अपने दूसरे तन (श्री मिहिरराज के तन) में प्रवेश किया, तो (विक्रम सम्वत् १७१२ के पश्चात्) तारतम वाणी का अवतरण प्रारम्भ हुआ। श्री महामति जी के धाम-हृदय में श्री अक्षरातीत विराजमान होकर इस वाणी को कह रहे हैं।

"ए रसना स्यामाजीए की, पिलावत रस रब्ब का"
(बीतक ७१/१२) का कथन यही भाव दर्शाता है।

ए कलाम आए हक से, ए नुकता कहा जे।

ए जानें विचारें मोमिन, जिन वास्ते हुआ ए॥६॥

श्री महामति जी के धाम-हृदय में उमड़ने वाला यह तारतम ज्ञान स्वयं श्री राज जी का कहा हुआ है। जिन ब्रह्मात्माओं के लिये यह तारतम वाणी अवतरित हुई है, एकमात्र वे ही इसकी महिमा को यथार्थ रूप से जानती हैं और इसके गुह्य रहस्यों के सम्बन्ध में चिन्तन करती हैं।

किया बेवरा इन वास्ते, उतरे अर्स से रूहें फरिस्ते।

मोमिन मुतकी ए सुन के, रहे न सकें जुदे॥७॥

परमधाम से ब्रह्मसृष्टियाँ तथा अक्षरधाम (बेहद मण्डल)

से ईश्वरी सृष्टियाँ इस नश्वर जगत् में आयी हुई हैं। उन्हीं के लिये खुलासा ग्रन्थ के रूप में धर्मग्रन्थों का स्पष्टीकरण कराने वाली यह पुस्तक अवतरित हुई है। इसकी वाणी को सुनकर ईश्वरी सृष्टि और ब्रह्मसृष्टि प्रियतम (श्री प्राणनाथ जी) के चरणों से अलग नहीं रह सकती हैं, अर्थात् माया को छोड़कर धाम धनी को अपने हृदय में बसा लेंगी।

जाहेर हुआ फुरमान से, क्यों आरिफ करें न सहूर।

रुहें फरिस्ते और दुनियाँ, ए लिख्या तीनों का मजकूर॥८॥

परब्रह्म के आदेश से अवतरित धर्मग्रन्थों में ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरी सृष्टि, तथा जीव सृष्टि का विवरण दिया गया है जो अब तारतम वाणी द्वारा प्रकट हो गया है, किन्तु आश्चर्य है कि विद्वत्जन अभी भी इस विषय में चिन्तन क्यों नहीं

कर रहे हैं।

देखो दोऊ पलड़े, एक दुनी और अर्स अरवाए।

रूहें फरिस्ते पूजें बका सूरत, और लिख्या दुनियाँ खुदा हवाए॥९॥

हे साथ जी! आप इस संसार की जीवसृष्टियों तथा परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को तुलनात्मक दृष्टि से देखिए। ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि का मानना है कि परब्रह्म की अति सुन्दर नूरमयी किशोर शोभा है, जबकि जीवसृष्टि अपने ग्रन्थों के अनुसार परमात्मा को निराकार ही मानती है।

ए जो गिरो अर्स अजीम की, तिन पे हकीकत मारफत।

बड़ी बड़ाई रूहन की, बीच लाहूत बका वाहेदत॥१०॥

परमधाम की रहने वाली ब्रह्मसृष्टियाँ सत्य एवं परमसत्य

(हकीकत और मारिफत) के तत्व ज्ञान को जानती हैं।
स्वलीला अद्वैत परमधाम के एकत्व में लीलामग्न इन
ब्रह्मात्माओं की अपार महिमा है।

नूर मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फरिस्तन।
कायम वतन से उतरे, सो पोहोंचे न हकीकत बिन॥११॥
ईश्वरीय सृष्टि बेहद मण्डल से प्रकट हुई हैं। ये भी
अखण्ड धाम से आयी हैं। इसलिये परमधाम का
वास्तविक तत्व ज्ञान पाये बिना अपने धाम में नहीं जा
सकतीं।

भावार्थ— परमधाम में स्थित अक्षरधाम में अक्षर ब्रह्म का
निवास है, किन्तु उनकी लीला बेहद मण्डल में होती है।
व्रज, रास, और जागनी लीला का आनन्द लेने के लिये
अक्षर ब्रह्म ने २४००० सुरताओं को धारण किया था।

अब इनका निवास सत्स्वरूप (बेहद मण्डल) में होगा, परमधाम के अक्षरधाम में ये नहीं जा सकतीं।

ए बेवरा सिपारे आम में, इन्ना इन्जुलना सूरत।

रुहें फरिस्ते दे सलामती, करें हुकम फजर बखत॥१२॥

यह सम्पूर्ण विवरण कुरआन के तीसवें पारे (अम्म सिपारे) की सूरतुल कद्रि में लिखा हुआ है। इसमें यह भी कहा गया है कि क्रियामत के समय जब तारतम ज्ञान से उजाला फैल जायेगा, उस समय ब्रह्मसृष्टियाँ तथा ईश्वरीय सृष्टियाँ इस संसार को अखण्ड मुक्ति का उपहार देंगी तथा आध्यात्मिक ज्ञान का निर्देशन करेंगी।

भावार्थ— श्रृंगार २९/२९ में कहा गया है कि "जो मेरी सुध दयो औरों को, तित चले तुमारा हुकम" से यह स्पष्ट है कि तारतम ज्ञान का प्रकाश जिसके पास पहुँचेगा, वह

ब्रह्मात्माओं के निर्देश को अवश्य मानेगा।

कुरआन मज़ीद पारा ३० अम्-यत्-तसा-लून सूरतुल क़दरि ९७ आयत ४ का कथन है- "तन्नज़्ज़ुल मलाइ-कतु व रूहु बि इज़िन रब्बि हिम् मिन् कुल्लि अम्रिन", अर्थात् उतरते हैं फरिश्ते व रूहें अपने रब के हुक्म से समस्त कार्यों के लिए। इसमें विद्वान "म लाइक व रूह" का अर्थ फरिश्ते एवं ज़िब्रील लेते हैं, जबकि ज़िब्रील स्वयं फरिश्तों में सम्मिलित है। अतः सर्वसिद्धि है कि रूह भिन्न है क्योंकि ज़िब्रील परमधाम में नहीं है। जबकि रूहों से अर्श अज़ीम परमधाम में वचन लिया कि "अलस्तु बिरब्बि कुंम" व "कअलु वला", अर्थात् क्या मैं तुम्हारा स्वामी नहीं? निःसन्देह हैं।

ए पैदा बनी-आदम की, ए जो सकल जहान।

सो क्यों कर आवे अर्स में, बिना अपने मकान॥१३॥

यह सम्पूर्ण सृष्टि आदम से उत्पन्न हुई है। उसका मूल घर वैकुण्ठ या निराकार है। उसे छोड़कर भला वह अखण्ड धाम के मार्ग को क्यों अपनायेगी?

भावार्थ- तारतम वाणी में आदम के अनेक अर्थ हैं। इस चौपाई में मानवीय सृष्टि के प्रथम पुरुष स्वयम्भुव मनु को आदिआदम के नाम से सम्बोधित किया गया है। वर्तमान मन्वन्तर के प्रथम पुरुष वैवस्वत मनु हैं। उन्हें भी आदम कहा जाता है। कियामतनामा में कहीं आदम का अर्थ श्री देवचन्द्र जी है, तो कहीं श्री प्राणनाथ जी है।

जाहेर सिपारे आठमें, लिख्या पैदा आदम हवाए।

अबलीस लिख्या दुनी नसलें, और दिल पर ए पातसाह॥१४॥

कुरआन के आठवें पारे में यह बात प्रत्यक्ष रूप से लिखी हुई है कि यह सम्पूर्ण सृष्टि आदम और हव्वा से उत्पन्न हुई है। कुरआन में यह बात भी कही गयी है कि संसार के जीवों के हृदय पर इब्लीश अर्थात् शैतान का साम्राज्य है।

भावार्थ- इस ब्रह्माण्ड की प्रथम सृष्टि सांकल्पिक होती है, जिसे देव सृष्टि कहते हैं। ब्रह्मा आदि महर्षि इसी के अन्तर्गत आते हैं। ब्रह्मा के पुत्र तथा शिष्य स्वयम्भुव मनु और उनकी पत्नी शतरूपा से मानवीय सृष्टि की उत्पत्ति मानी जाती है। इस मन्वन्तर में वैवस्वत मनु तथा उनकी पत्नी श्रद्धा को इस मानवीय सृष्टि का मूल (आदम और हव्वा) माना जाता है।

प्रत्येक कल्प में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक कल्प में ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष होते हैं। प्रत्येक मन्वन्तर में

अलग-अलग मनु होते हैं, जिनसे मानव जाति की वृद्धि होती है। इस ब्रह्माण्ड (सौर मण्डल) की आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष है। करोड़ों सौरमण्डलों वाली हमारी आकाशगंगा की वर्तमान आयु १३.६ अरब वर्ष है। ऐसी करोड़ों आकाशगंगाएँ इस सृष्टि के अन्दर हैं। सभी आकाशगंगाओं सहित सम्पूर्ण सृष्टि एवं इसके रचनाकार आदिनारायण (अजाजील) की आयु ३१ नील १० खरब और ४० अरब वर्ष की होनी निश्चित है। निराकार की मुक्ति पाने वालों की मुक्ति का सुख भी इतने ही समय का होता है। जीव के कारण एवं सूक्ष्म शरीर का निर्माण सृष्टि के प्रारम्भ में ही हो जाता है और वह एक ब्रह्माण्ड का लय होने पर भी जीव के साथ बना रहता है। सांख्य दर्शन के कथन "महदाख्यं कार्यं तन्मनः" अर्थात् महत्तत्त्व से मन, बुद्धि आदि की उत्पत्ति होती है - से

यही निष्कर्ष निकलता है।

महाविष्णु (अजाजील) इस सम्पूर्ण सृष्टि का कर्ता है। उसकी ही चेतना का प्रतिभास (चिदाभास) सभी प्राणियों के जीव रूप में दृष्टिगोचर होता है। सभी जीवों के हृदय रूप में स्थित मन ही इब्लीश है। इब्लीश को शैतान की संज्ञा इसलिये दी गयी है क्योंकि वह रज एवं तम से आक्रान्त होकर जीव को माया में डुबोये रखता है तथा परब्रह्म से प्रेम नहीं होने देता। कुरआन के आठवें पारे की आयत १६ एवं १७ में यह कथन इस प्रकार है—

का-ल फ़ाबिमा अग्वै-तनी ल-अक्अुदन्-न लहुम्
सिरा-त-कल् मुस्तक़ीम (१६)

बोला कि क़सम उसकी कि आपने मुझे गुमराह किया, तो मैं आपके सीधे मार्ग पर उनकी ताक में बैठूँगा।

सुम्-म लआ तियन्नहुम् मिम् बैनि ऐदीहिम् व मिन्

खल्फ़िहिम व अन् ऐमानिहिम व अन् शमा-इलिहिम्

(१७)

फिर अवश्य मैं उनके पास आऊँगा, उनके आगे-पीछे, दाहिने, और बायें से....(मुसलमान जब नमाज़ समापन के पश्चात् भयातुर रहकर दाएं-बाएं सलाम फेरते हैं, तो उसका तात्पर्य यह है कि वह इब्लीश को दुत्कारते हैं कि कहीं आया तो नहीं, यद्यपि वह तो मन का स्वरूप है जो कि अदृश्य है)।

भया निकाह आदम हवा, दुनी निकाह अबलीस।

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस॥१५॥

आदि आदम का सम्बन्ध हव्वा से हुआ और संसार के जीवों का विवाह इब्लीश अर्थात् मन रूपी शैतान से हुआ। यह बात कुरआन में स्पष्ट रूप से लिखी हुई है कि

सांसारिक जीव अपनी लौकिक तृष्णाओं की पूर्ति के लिये शून्य-निराकार को ही परमात्मा मानकर पूजा करते हैं।

भावार्थ- सांसारिक प्राणी अपने मन के अधीन होते हैं, इसलिये उपरोक्त चौपाई में मन रूप शैतान (इब्लीश) से इनके विवाह की बात कही गयी है। सामान्य रूप से आदम को आदिनारायण तथा उनकी पत्नी हव्वा को निराकार (मोहसागर) माना जाता है, किन्तु यह उचित नहीं है। आदम तो एक मानव (प्रथम पैगम्बर) है और उनकी पत्नी का नाम हव्वा है। वे सृष्टिकर्ता नहीं हैं। इस नश्वर जगत् को बनाने वाला अजाजील फरिश्ता (आदिनारायण) है।

तिन हवा हिरस से पैदा हुई, अपनी चाहिसें जे।

सो फैल कर जुदे पड़े, ए जो फिरे दुनियां के फिरके॥१६॥

उस निराकार अर्थात् अज्ञान रूपी तृष्णा से प्राणियों में लौकिक सुखों की इच्छा उत्पन्न हुई। इस प्रकार, संसार के सभी पन्थों के अनुयायी मायावी भोगों में पड़कर सत्य से विमुख हो गये।

भावार्थ- "हिर्स" अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है तृष्णा। भगवान बुद्ध ने तृष्णा को सभी प्रकार के दुःखों का कारण कहा है। मोह (निराकार) रूप अज्ञान से ही तृष्णा की उत्पत्ति होती है। "ख्वाहिश" फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अभिप्राय भोगों की इच्छा से है। वस्तुतः तृष्णा बीज रूप है और इच्छा उसका व्यक्त स्वरूप है।

पैदास बीच अबलीस कहया, ए जो आदम की नसल।

पूजे हवा को खुदा कर, दुनियां एह अकल॥१७॥

आदम से उत्पन्न होने वाले सभी मनुष्यों के हृदय में मन का स्वामित्व है। इस प्रकार इस संसार के लोगों की कैसी विचित्र बुद्धि है कि वे जड़ निराकार को ही सच्चिदानन्द परब्रह्म मानकर भक्ति करते हैं।

भावार्थ- सात्त्विक मन में ज्ञान, भक्ति, एवं वैराग्य का उदय होता है, जो जीव को मोक्ष की ओर अग्रसर करता है। तमोगुण से ग्रसित मन ही शैतान या दज्जाल रूप में जीव को परमात्मा से दूर करता है। उपनिषदों के कथन "यतो वाचो निवर्तन्ते, अप्राप्य मनसा सह" (तैत्तिरीयोपनिषद्) तथा "बुद्धिः न विचेष्टते" (कठोपनिषद्) से यह सिद्ध है कि मन एवं बुद्धि द्वारा परमात्मा के स्वरूप का यथार्थ निर्धारण नहीं हो सकता,

क्योंकि ये मायाजन्य हैं। यहीं कारण है कि विद्वानों ने अटकल से परमात्मा को निराकार मान लिया।

कहया कुलफ आड़े ईमान के, हवाई का देख।

दुनी का लिख्या बेवरा, सो ए कहूं विवेक॥१८॥

सच्चिदानन्द परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास लाने में यह मोह रूप निराकार की उपासना ही जीवों के लिये बाधक (पर्दा) बन जाती है। कुरआन में संसार के जीवों की वास्तविकता दर्शायी गयी है, जिसे मैं अच्छी प्रकार से प्रकट कर रहा हूँ।

भावार्थ— मोह अज्ञान भरमना, करम काल और सुन।

ऐ नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन॥

कलस हि. २४/१९

इस जड़ रूप निराकार (मोहसागर) में

आदिनारायण (अजाजील) का प्रकटन होता है। इस प्रकार, जब अजाजील निराकार से परे नहीं जा पाता, तो उसके चिदाभास (प्रतिबिम्बित चैतन्य) से उत्पन्न होने वाले जीव निराकार से परे ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप के विषय में कैसे जान सकते हैं?

राह पकड़े तौहीद की, धरे महंमद कदमों कदम।

सो जानो दिल मोमिन, जिन दिल अर्स इलम॥१९॥

जो श्री प्राणनाथ जी द्वारा दर्शाये हुए मार्ग का अनुसरण करके एकमात्र अक्षरातीत परब्रह्म को ही अनन्य प्रेम से रिझाये, उसे ही ब्रह्मात्मा समझना चाहिए। उसके ही हृदय में परमधाम का ज्ञान भरा होता है।

कहया सिजदा आदम पर, अजाजीलें फेरया फुरमान।

सो लिखी लानत सबन को, जो औलाद आदम जहान॥२०॥

अल्लाहतआला ने अजाजील फरिश्ते को आदम पर सिज्दा (प्रणाम) करने के लिए कहा, किन्तु उसने वैसा करने से मना कर दिया। इस प्रकार, अल्लाह की ओर से दण्डित किये जाने पर बदले की भावना से इब्लीश ने आदम से उत्पन्न होने वाले सभी मानव समाज को भटकाने के लिये उनके हृदय पर अधिकार पाने का वर प्राप्त कर लिया। इस प्रकार का वर्णन कुरआन में लिखा हुआ है।

भावार्थ— यह संशय होता है कि सर्वशक्तिमान अक्षरातीत के आदेश का उल्लंघन करने का सामर्थ्य एक फरिश्ते में कैसे आ गया? क्या परब्रह्म के समानान्तर भी कोई अन्य सत्ता है?

इस कथानक के रहस्य को माहेश्वर तन्त्र के इस कथन से समझा जा सकता है—

अनृतं तु तदज्ञानं सत्यं ब्रह्मैव केवलम्।

न तृषादंकुरोत्पतिः केवलातण्डुलादपि॥

तुषतण्डुलयोगेन जायेतेङ्कुरविस्तृतिः।

ब्रह्मण्यज्ञानयोगेन जायते विश्व सम्भवः॥

माहेश्वर तन्त्र ५/२६, २७

अर्थात् असत्य ही अज्ञान है और केवल सत्य ही ब्रह्म है। भूसी से अँकुर नहीं निकल सकता और न केवल चावल से, बल्कि भूसी और चावल के संयोग से अँकुर का विस्तार होता है। ऐसे ही ब्रह्म (अव्याकृत-सुमंगला पुरुष) में जब अज्ञान का योग होता है, तो विश्व का जन्म लेना सम्भव होता है।

यथाच्छादयति स्वल्पो मेघो भानुं सहस्रगुम्।

तथाच्छादयते मिथ्या ब्रह्मानन्तमखण्डकम्॥

ददर्शासौ तदात्मानं नारायणमिति स्थितम्।

वेदानां वेदमार्गाणां लोकानां च परायणम्॥

माहेश्वर तन्त्र ५/३६,४०

जिस प्रकार से मेघ का छोटा सा टुकड़ा अनन्त किरणों वाले सूर्य को आच्छादित कर लेता है, उसी प्रकार यह मिथ्या अज्ञान अखण्ड ब्रह्म को आच्छादित कर लेता है। उस समय वह स्वयं को उस आदिनारायण के रूप में देखता है, जो वेद मार्ग तथा संसार के आधार हैं।

इस सम्बन्ध में किरंतन ६५/१० का कथन है—

प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इण्ड आलम।

ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम॥

अर्थात् आदिनारायण का मूल स्थान अव्याकृत के महाकारण (सबलिक के स्थूल) में स्थित सुमंगला पुरुष है। वस्तुतः कुरआन में कथित अजाजील ही हिन्दू धर्मग्रन्थों का आदिनारायण है, जो अपने शुद्ध रूप में बहिश्त (अव्याकृत के महाकारण) में रह रहा था। मोह (अज्ञान) के कारण ही वह उस आदम को प्रणाम नहीं करता है, जिसमें अल्लाह ने अपनी रूह डाली थी। अहंकार मन में होता है और वह अज्ञान से उत्पन्न होता है। यही कारण है कि अजाजील के अहंकार युक्त मन (इब्लीश) को शैतान या दज्जाल की संज्ञा दी गयी है।

मिट्टी से बना होने पर भी आदम को इसलिये पूज्य माना गया है, क्योंकि एकमात्र मानव तन में ही परब्रह्म का साक्षात्कार हो सकता है, फरिश्ते (अजाजील) के तन में नहीं। यह सृष्टि तभी तक अस्तित्व में है, जब तक

आदिनारायण का स्वप्न चल रहा है। आदिनारायण की नींद के समाप्त होते ही यह जगत् समाप्त हो जायेगा। इस प्रकार, आदिनारायण (अजाजील) को ब्रह्म के साक्षात्कार के योग्य नहीं माना गया, जबकि आदम को यह सौभाग्य सहज ही प्राप्त है। यही कारण है कि वह अपने मन की शक्ति से सभी प्राणियों को भटकाता रहता है। कियामत के समय में मानव तन (श्री देवचन्द्र जी तथा श्री मिहिरराज जी) में ही श्री राज जी के आवेश एवं श्यामा जी को लीला करनी है। यही अल्लाह का आदम में अपनी रूह फूँकना है।

बहिश्त के द्वार पर पहरा देने वाले मोर एवं सर्प रजोगुण तथा तमोगुण के प्रतीक हैं, जिनकी सहायता से मन रूपी इब्लीश सम्पूर्ण मानव जाति को भटकाकर परब्रह्म के ज्ञान एवं प्रेम से दूर कर देता है तथा संसार—

सागर में भटकाता रहता है। उपरोक्त कथन के सम्बन्ध में सनन्ध ग्रन्थ ३८/३२, ३३ के ये कथन देखने योग्य हैं—

जिन कहो अजाजील को, इनने फेरया हुकम।

इन हुकम की इसारतें, हादी वास्ते करी खसम॥

अजाजील भूल्या नहीं, पर हुकमें भुलाया ताए।

ओ तो सिर ले हुकम, खड़ा है एक पाए॥

असल दुनी की ए भई, जो लिखी माहें फुरमान।

पातसाही अबलीस दिल पर, जो करत है सैतान॥२१॥

कुरआन में सांसारिक प्राणियों की यही स्थिति दर्शायी गयी है। सभी जीवों के हृदय (दिल) पर शैतान रूपी इब्लीश (अज्ञानमयी मन) का साम्राज्य है, जिसके कारण वे अन्धकार में भटकते रहते हैं।

गुनाह किया अजाजीलें, दुनी दिल लगी लानत।

ढूँढ़ें दज्जाल को बाहेर, पावें ना लिखी इसारत॥२२॥

आदम को प्रणाम न करने का अपराध अजाजील ने किया, किन्तु उसका दण्ड संसार के सभी प्राणियों के दिल को भोगना पड़ रहा है। लोग दज्जाल को बाहर ढूँढते रहते हैं, किन्तु वे इस सम्बन्ध में कुरआन में संकेतों में लिखी हुई बात को समझ नहीं पाते हैं।

भावार्थ- मोह सागर में अव्याकृत का प्रतिबिम्बित होना अपराध की तरह है, किन्तु जब नारायण ही नींद में रहेगा, तो उसके चिदाभास के स्वरूप जीवों में जाग्रति कैसे रह सकती है। उनके हृदय में छाये रहने वाले अज्ञान रूपी अन्धकार को ही कतेब परम्परा में दज्जाल कहा गया है, जो मन रूप से सबके अन्दर है, बाहर नहीं।

अबलीस लिख्या दुनी नसलें, पातसाही करे दिलों पर।

ऐसा लिख्या तो भी ना समझे, ए देखें ना रूह की नजर॥२३॥

कुरआन में ऐसा लिखा है कि मन रूपी इब्लीश संसार के सभी जीवों के हृदय पर अपना स्वामित्व रखता है, फिर भी संसार के लोग इस रहस्य को न तो समझ पाते हैं और न अपनी आत्मिक दृष्टि को खोलकर यथार्थ सत्य को ही जान पाते हैं।

भावार्थ- कुरआन के पार: ८ व लौ अन्नना सूरतुल् अअराफ़ि ७ आयत १४-१८ में यह प्रसंग इस प्रकार वर्णित है-

"का-ल अन्जिर्नी इला यौमि युब-असून" (१४)

(अल्लाह ने) कहा कि तुझको मुहलत (समय सीमा) दी गई है।

"का-ल इन्न-क मिनल् मुन्ज़रीन" (१५)

(वह) बोला कि जिस दिन लोग उठा खड़े किये जायेंगे, उस दिन की मुझे मुहलत (समय) दे दीजिये।

"का-ल फ़बिमां अगवै-तनी ल-अक्कुदन्-न लहुम
सिरा-त-कल् मुस्तक्रीम" (१६)

बोला तो क्रसम उसकी कि तूने मुझे गुमराह किया, मैं जरूर तेरे सीधे रास्ते पर उनकी ताक मैं बैठूँगा, फिर उनके पास आगे-पीछे, दायें या बायें से आऊँगा।

"सुम्-म लआतियन्नहुम्..... अक्स-रहुम् शाकिरीन"
(१७)

और तू उनमें से अक्स को शुक्रगुजार न पाएगा।

"कलखरुज्..... मिन्कुम् अज्मअीन" (१८)

(अल्लाह ने) फरमाया- यहाँ से निकल जा रद्द किया गया रांदा हुआ जरूर, जो उनमें से तेरे कहे पर चला तो मैं तुम सब से जहन्नम भर दूँगा।

चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत अजाजील।

राह मारत सब दुनी दिलों, अबलीस इनों वकील॥२४॥

अजाजील फरिश्ता (आदिनारायण) चौदह लोक के सिंहासन के रूप में वैकुण्ठ (मलकूत) में विद्यमान है। उसका वकील इब्लीश है, जो सबके दिल में बैठकर परब्रह्म के मार्ग से भटकाकर माया में ही डुबोये रखता है।

भावार्थ— इस चौपाई में आलंकारिक रूप से यह बात दर्शायी गयी है कि सुमंगला (रोधिनी) शक्ति से उत्पन्न होने वाले मोह से बनने वाले मन में जब अज्ञान रूपी अन्धकार रहेगा, तो भला जीव माया से पार कैसे जा सकेंगे। सम्पूर्ण क्षर ब्रह्माण्ड के नियन्त्रक आदिनारायण हैं और सभी प्राणी उनकी ही चेतना के प्रतिभास स्वरूप हैं। इसी कारण व्यंग्यात्मक भाषा में अज्ञानमयी मन रूप इब्लीश को अजाजील का वकील अर्थात् उनकी

भावनाओं का समर्थन करने वाला कहा गया है।

बुरका हवा का सिर पर, ले बैठा बुजरक।

दे कुलफ आड़े ईमान के, किए सब हवा के तअलुक॥२५॥

इस अजाजील (महाविष्णु) के चारों ओर निराकार का आवरण है। उसने एक सच्चिदानन्द परब्रह्म के प्रति सभी प्राणियों के विश्वास में ताला लगा (पर्दा कर) रखा है और सबको निराकार (मोहसागर) का उपासक बना दिया है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में जिस हव्वा का वर्णन है, वह आदम पैगम्बर की पत्नी नहीं, अपितु जड़-पदार्थ निराकार (मोहसागर) है। कुलफ का शुद्ध शब्द होगा- कल्फ़। यह अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है- आत्ममुग्ध। प्रायः विद्वान अनुवाद में कुफल कहते हैं, जो कि आलंकारिक है। परमधाम में ताला-चाबी का

कथानक सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि वहाँ पर आत्ममुग्धता को ही आलंकारिक भाषा में कल्फ़ कहा गया है।

तोड़ हवा कुलफ़ ले ईमान, सोई कहया सिरदार।

हवा तरक कर लेवे तौहीद, ए बल पैगंमरी हुसियार॥२६॥

मायावी निराकार के पर्दे को हटाकर जो एक सच्चिदानन्द परब्रह्म पर अटूट आस्था रखता है, उसे ही इस संसार में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व वाला कहा जा सकता है। निराकार को छोड़कर एक अद्वैत परब्रह्म से प्रेम करने का सामर्थ्य विलक्षण बुद्धि वाली उन ब्रह्मसृष्टियों में होता है, जो श्री प्राणनाथ जी के दर्शाये हुए मार्ग पर चलती हैं।

भावार्थ— यद्यपि "पैगम्बर" शब्द से आशय रसूल मुहम्मद साहिब से है, किन्तु इसका सूक्ष्म अर्थ श्री

प्राणनाथ जी पर घटित होगा।

पूजे हवा कौल तोड़ के, ए फौज सबे अबलीस।

लेने बुजरकी जुदे पड़े, कर एक दूजे की रीस॥२७॥

जो मुहम्मद (सल्ल.) के वचनों का उल्लंघन करके निराकार को ही परमात्मा मानते हैं, वे इब्लीश के मार्ग पर चलने वाले हैं। दूसरों की अपेक्षा स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने की चाहत में ये लड़कर अलग-अलग पन्थों (फिरकों) में बँट गये।

सिपारे आठमें मिने, जहूद नसारे जुदे पड़े।

त्यों कौल तोड़ महंमद के, एक दीन पर रहे ना खड़े॥२८॥

कुरआन के आठवें पारे में कहा गया है कि यहूदी और ईसाई आपसी मतभेद के कारण अलग-अलग पन्थों में

बँट गये। इसी प्रकार मुहम्मद स.अ.व. के अनुयायी मुसलमान भी उनके कहे हुए वचनों का उल्लंघन किये और एक सत्य सिद्धान्त पर दृढ़ नहीं रह सके।

भावार्थ- यहूदी "ओल्ड टेस्टामेन्ट" को प्राथमिकता देते हैं तथा ईसाई "न्यू टेस्टामेन्ट" को, जबकि ये दोनों ग्रन्थ एक ही बाईबल के भाग हैं। इसी प्रकार ईसाइयों में कैथोलिक तथा प्रोस्टेन्ट के अलग-अलग पन्थ हैं, और इनके भी कई उपपन्थ (फिरके) हैं। कुरआन के पार: ९ कालल्मलअु सूरतुल अऽराफ़ ७ आयत १६० में कहा गया है कि "व कत्तअ्-नाहुमुस्नतै..... यज्लिमून्" (वह जिन्होंने अपने धर्म भिन्न-भिन्न मार्ग निकाले)।

कहया अर्स दिल महंमद का, ए पूजें सब पत्थर।

माणे मुसाफ सब बातून, और ए लेत सब ऊपर॥२९॥

कुरआन में मुहम्मद स.अ.व. के दिल को धाम (अर्श) कहा गया है, किन्तु ये पत्थरों की पूजा करते हैं। कुरआन के सभी प्रसंगों के अर्थ सूक्ष्म (बातिनी) हैं, जबकि ये बाह्य अर्थों में ही भटकते रहते हैं।

भावार्थ— मक्का के काले पत्थर तथा पीरों एवं फकीरों की मजारों पर सिर झुकाना भी बुतपरस्ती (जड़ पूजा) ही है। मुहम्मद स.अ.व. ने मेयराज में प्रियतम अक्षरातीत का साक्षात्कार किया था, इसलिये उनके हृदय को धाम की शोभा दी गयी है।

लोक लानत जाने अबलीस को, सो तो सब दिलों पातसाह।
लोक ढूँढ़ें बाहेर दज्जाल को, इन किए ताबे अपनी राह॥३०॥
संसार के लोग तो यही समझते हैं कि अल्लाह का हुक्म न मानने के कारण इब्लीश को धिक्कार मिली है और उसे

दण्ड स्वरूप बहिश्त से निकाला गया है, किन्तु वह तो इस संसार में मन के रूप में सभी प्राणियों के दिल पर अपना राज्य चला रहा है। लोग दज्जाल (शैतान) को बाहर ढूँढा करते हैं, किन्तु वह सबको अपने अधीन कर माया के मार्ग पर चला रहा है।

भावार्थ- अजाजील नूरी फरिश्ता है और आदम पर सज्दा न करने के कारण उसके मन को इब्लीश (शैतान) कहा गया क्योंकि उसने अपने मन की प्रेरणा से अहंकारवश अल्लाह के आदेश की अवहेलना की। वस्तुतः यह सम्पूर्ण कथन आलंकारिक है। अव्याकृत का मोहसागर में प्रतिबिम्बित होने का संकल्प ही अपराध की तरह है क्योंकि इससे बेहद (बहिश्त) का सुख छूट जाता है। कुरआन को कलामुल्लाह (ईश वचन) कहा गया है कि अल्लाह का आदेश बाह्य रूप से था, आन्तरिक

रूप से नहीं। अन्यथा एक फरिश्ते द्वारा परब्रह्म के आदेश का उल्लंघन करना सम्भव ही नहीं था।

वस्तुतः इस कथन द्वारा सृष्टि रचना के रहस्य को आलंकारिक भाषा में समझाया गया है कि किस प्रकार आदिनारायण (अजाजील) का इस संसार में प्रकटन होता है और सभी प्राणियों के ऊपर मन द्वारा किस प्रकार शासन किया जाता है।

आकीन न रहे ऊपर का, जो होए जरा समया सखत।

तो आकीन उठ्या सबन से, जो आए पोहोंची सरत॥३१॥

यदि इन सांसारिक जीवों को थोड़ा सा कष्ट मिल जाये, तो परब्रह्म एवं धर्मग्रन्थों के प्रति इनका विश्वास डगमगाने लगता है। अब ग्यारहवीं सदी में जब कियामत के जाहिर होने का समय आ गया है, तो इन मुसलमानों को

कुरआन एवं मुहम्मद स.अ.व. पर आन्तरिक रूप से विश्वास ही नहीं रहा है।

तो जोरा किया दज्जाल ने, देखो आए नामे वसीयत।

लिखाए महंमद मेंहेदिए, तो भी देखें ना पोहोंची कयामत॥३२॥

यही कारण है कि जब औरंगजेब के पास १२ सुन्दरसाथ कियामत का सन्देश लेकर गये, तो उसके दज्जाल स्वरूप अधिकारियों (सिद्दीक फौलाद, शेखुल इस्लाम, रिज़वी खान, अक़ील खान, तथा शेख निज़ाम) ने उनके प्रति दुर्व्यवहार किया। हे साथ जी! देखिए, मक्का-मदीना से चार वसीयतनामे भी लिखकर आये, जिनमें लिखा था कि आखरुल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां हिन्दुस्तान में जाहिर हो गये हैं। फिर भी ये इस बात पर विचार ही नहीं कर रहे हैं कि

कियामत का समय आ गया है।

दिल मोमिन अर्स कहया, कहया दुनी दिल सैतान।

ए जाहेर इन बिध लिख्या, आरिफ क्यों न करें बयान॥३३॥

कुरआन में यह बात स्पष्ट रूप से लिखी गयी है कि ब्रह्मसृष्टियों का हृदय ही परब्रह्म का धाम होता है तथा संसार के जीवों में शैतान रूप मन का स्वामित्व होता है। इतना स्पष्ट वर्णन होते हुए भी कुरआन के विद्वान इस सत्य को उजागर (प्रकट) क्यों नहीं करते हैं?

भावार्थ- कुरआन अनुसार के मन्कूला रिवायत में कहा गया है- "क्लब-ए-मोमिन अर्शुल्लाह यानि क्लब-ए-मोमिन अर्श-ए-मनस्त" अर्थात् मोमिन का दिल ही अल्लाह का स्थान है। ब्रह्मसृष्टियों के धाम-हृदय में परब्रह्म की शोभा विराजमान होती है, जबकि जीवों के हृदय में

अज्ञानता का अन्धकार (शैतान, दज्जाल, पाप, कलियुग) विद्यमान होता है, जिसके कारण वे माया में ही लिप्त रहते हैं तथा परब्रह्म के प्रेम-मार्ग पर नहीं चल पाते।

जो कोई दुनियाँ कुंन से, आए न सके मांहें अर्स।

जो रूहें फरिस्ते उतरे, सोई अर्सों के वारस॥३४॥

आदिनारायण (अजाजील) के संकल्प "एकोऽहम् बहुस्याम्" से जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे अखण्ड धाम में नहीं जा पाते। परमधाम तथा अक्षरधाम (बेहद मण्डल) से जो ब्रह्मसृष्टियाँ एवं ईश्वरीय सृष्टियाँ आयी हैं, एकमात्र वे ही अपने धाम में जाने का अधिकार रखती हैं।

भावार्थ- अक्षरातीत के सत् अंग अक्षर ब्रह्म के मन में सृष्टि रचना का जो संकल्प होता है, वह सत्स्वरूप से

होते हुए केवल, सबलिक, एवं अव्याकृत में आकर मोहसागर में आदिनारायण द्वारा प्रकट हो जाता है। इस प्रकार "एकोऽहम् बहुस्याम" तथा "कुन्न-फअकुन्" के कथन का एक ही आशय है। इस सम्बन्ध में ब्रह्मवाणी का कथन है- "आवे अर्स से हुकम, तिन हुकमें चले हुकम।" (सनंध २९/१४)

रुहें आइयां जुदे ठौर से, और जुदा ही चलन।

दुनियाँ राह क्यों ले सके, जिन राह मह होवें मोमिन॥३५॥

ब्रह्मात्मायें इस मायावी जगत् से भिन्न परमधाम से आयी हैं, इसलिये उनका व्यवहार सबसे अलग ही होता है। प्रियतम परब्रह्म के प्रति अनन्य प्रेम एवं अटूट विश्वास के जिस मार्ग पर ब्रह्मसृष्टियाँ चलती हैं, भला उस मार्ग पर संसार के जीव कैसे चल सकते हैं?

मोमिन रूहें करें कुरबानियाँ, और मता वजूद समेत।

छोड़ दुनी इस्क लेवहीं, दिल अर्स हुआ इन हेत॥३६॥

परमधाम की आत्मायें धनी के प्रेम एवं सेवा में अपने तन-मन का सर्वस्व समर्पण कर देती हैं। वे सांसारिक तृष्णाओं को छोड़कर अपने प्रियतम के प्रति अनन्य प्रेम का मार्ग अपनाती हैं। यही कारण है कि उनके हृदय को अक्षरातीत का धाम (निवास) कहा जाता है।

अर्स कह्या दिल मोमिन, कोई एता न करे सहूर।

आए वजूद बीच आदम, इनों दिल क्यों हुआ रोसन नूर॥३७॥

कोई इतना भी चिन्तन नहीं करता कि आत्माओं के दिल को धाम कहा गया है। आत्माओं के मानव तनों में आने के कारण ये संशय करते हैं कि ये भी तो हमारे जैसे ही मानव हैं। इनके हृदय में अलग से परमधाम का ज्ञान

कैसे आ गया है?

दुनी दिल पर अबलीस, दिल मोमिन अर्स हक।

कुरान कौल तो ना विचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक॥३८॥

सांसारिक जीवों के हृदय में शैतान (अज्ञानमयी मन) की बैठक होती है, जबकि ब्रह्मसृष्टियों के हृदय में परब्रह्म विराजमान होते हैं। शरीयत की राह पर चलने वाले लोग कुरआन के कथनों का इसलिये विचार नहीं कर पाते क्योंकि इनमें थोड़ी सी भी जाग्रत बुद्धि नहीं होती।

द्रष्टव्य— प्रत्येक प्राणी में जीव होता है, जो कुन्न की पैदाइश के अन्तर्गत होता है। मानवीय तन में किसी-किसी जीव पर ईश्वरीय सृष्टि या ब्रह्मसृष्टि का वास होता है, जो द्रष्टा भाव से इस माया का खेल देख रही होती है। उसे गर्भ में नहीं जाना पड़ता।

ए देखें दिल अर्स मोमिन, अर्स हक बिना होए क्यों कर।

एह विचार तो न करे, जो कुलफ कहे दिलों पर॥३९॥

यद्यपि मुस्लिम लोग कुरआन के इस कथन "क़ल्ब-ए-मोमिन अर्शुल्लाह" को पढ़ते तो हैं कि ब्रह्मात्माओं का हृदय ही परब्रह्म का धाम होता है, किन्तु इसके रहस्य को वे समझ नहीं पाते। वे इस बात में संशय करते हैं कि हमारे जैसा ही तन धारण करने वाले ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) का दिल कैसे धाम हो सकता है क्योंकि परब्रह्म यहाँ नहीं बल्कि धाम में हैं। इनके हृदय पर ताला लगा है, अर्थात् इनकी अन्तर्दृष्टि खुली नहीं है। यही कारण है कि ये इस गहन रहस्य के सम्बन्ध में विचार नहीं कर पाते।

बीच कुरान रूहों का लिख्या, इनों असल अर्स में तन।

यों हक कलाम कहे जाहेर, मैं बीच अर्स दिल मोमिन॥४०॥

कुरआन में लिखा है कि ब्रह्मसृष्टियों के मूल तन परमधाम में परात्म के रूप में हैं। इस प्रकार कुरआन के वचनों में परब्रह्म ने स्पष्ट रूप से कहा है कि मैं ब्रह्मात्माओं के धाम-हृदय में रहता हूँ।

भावार्थ- कुरआन के पारा ९ व लौ अन्नना सू. ७ अअराफ़ आ. १५ में कहा गया है- "का-ल इन्न-क मिनल मुन्जरीन" (फरमाया तुझे मुहलत है सिवा मोमिन के) मंकुला:-कुल्ब-मोमिन अर्शुल्लाह "कल्ब-ए-मोमिन अर्श-ए-मनस्त" यानि मोमिन का दिल अर्श है। क्योंकि तफ़सीर-ए-हुसैनी जिल्द एक (१/४९१) ईमान के दरखत की जड़ मोमिन का दिल है। कुरान पार: १४ रू-बमा सूरतुल् हिजर १५ आयत ३९-४०-

"का-ल.....ल-उग्वियन्नहुम अज़्मयीन" (३९)

अर्थात् उनको बहकाऊंगा। इल्ला अिबाद-क मिन्हुअुल-मुख्लसीन (४०) अर्थात् सिवाय उसके जो उनमें आपके चुने हुए बन्दे हैं।

पत्थर पानी आग पूजत, किन जानी ना हक तरफ।

कहया दरिया हैवान का, समझ ना करे एक हरफ॥४१॥

इस संसार के लोग पत्थर, पानी, तथा अग्नि की पूजा करते हैं, और परब्रह्म तथा उनके अखण्ड परमधाम के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं रखते। इस भवसागर को विवेकहीन लोगों का संसार कहा गया है क्योंकि इन्हें धर्मग्रन्थों के एक भी शब्द का यथार्थ बोध नहीं होता।

भावार्थ- पौराणिक हिन्दू तथा मुस्लिम पत्थरों की पूजा करते हैं और पारसी लोग अग्नि की पूजा करते हैं। एक

भी शब्द का अर्थ न आना अतिशयोक्ति अलंकार है। इसका आशय यह है कि तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण जीव सृष्टि के विद्वान धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्यों को यथार्थ रूप में नहीं समझ पाते हैं।

होए भोम बका की कंकरी, ताए पूजे चौदे तबक।

कुरान बतावे बका मोमिन, पर दुनियाँ अपनी मत माफक॥४२॥

यदि इस संसार में अखण्ड परमधाम की एक कंकड़ी भी आ जाये, तो उसकी पूजा करने के लिये चौदह लोक का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड लालायित रहता है, किन्तु ब्रह्मसृष्टियों को इस जगत् में कोई भी जीव पहचान नहीं पा रहा है, जबकि कुरआन में यह बात लिखी हुई है कि ब्रह्मात्माओं के अखण्ड तन परमधाम में हैं। भला, इस जगत् के लोग क्या करें? वे अपनी स्वप्नजनित बुद्धि के

अनुसार ही तो सोच सकते हैं।

इत सहूर दुनी का ना चले, सुरिया छोड़े ना इनों अकल।

सरभर करे मोमिन की, जिनकी अर्स असल॥४३॥

परब्रह्म के वास्तविक स्वरूप के सम्बन्ध में जीवसृष्टि के विद्वान सोच ही नहीं पाते। वे अपनी बुद्धि से ज्योति स्वरूप (आदिनारायण) से आगे का चिन्तन नहीं कर पाते। स्वाप्निक जीव उन ब्रह्मसृष्टियों से अपनी बराबरी करना चाहते हैं, जिनके मूल तन परमधाम में हैं।

भावार्थ- आदिनारायण (प्रणव, ॐ) को ही ज्योति स्वरूप कहते हैं। कुरआन में इसे "सुरैय्या" कहकर सम्बोधित किया गया है।

केहेलावें महंमद के, चलें ना महंमद साथ।

डारें जुदागी दीन में, कहें हम सुन्नत जमात॥४४॥

यद्यपि संसार के मुस्लिमजन स्वयं को मुहम्मद स.अ.व. का सच्चा अनुयायी तो कहते हैं, किन्तु उनके दर्शाये हुए मार्ग पर नहीं चलते। वे अपने को सुन्नत जमात अर्थात् सत्य पर यथार्थ रूप से चलने वाला तो कहते हैं, किन्तु अपने अहंकार के कारण वे धार्मिक क्षेत्र में अलगाववाद की वृद्धि करते हैं।

पेहेचान नहीं मोमिन की, जिनमें अहमद सिरदार।

जो रूहें कही दरगाह की, बीच बका बारे हजार॥४५॥

इन मुस्लिमों को उन ब्रह्मसृष्टियों की पहचान नहीं है, जिनके प्रमुख परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी हैं, जो श्री देवचन्द्र जी के रूप में अवतरित हुईं। जो

परमधाम की आत्मायें कही गयी हैं, उनकी यहाँ के शब्दों में १२ हजार की संख्या कही गयी है।

द्रष्टव्य— परमधाम में आत्माओं की संख्या अनन्त है, किन्तु इस नश्वर जगत् में उन्हें बारह हजार की संख्या में सीमित करके दर्शाया गया है। "इन्तहाए नहीं अर्स भोम का, सब चीजों नहीं सुमार" (श्रृंगार २३/७९) के इस कथन से यही निष्कर्ष निकलता है।

ढूँढ़ पाए न पकड़े मोमिन के, पर हुआ हक हाथ सहूर।

जो मेहेर करे मेहेबूब, तब ए होए जहूर॥४६॥

शरीयत के मार्ग पर चलने वाले ये मुस्लिम इतने भाग्यहीन हैं कि वे श्री देवचन्द्र जी के साथ इस संसार में प्रकट होने वाले ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) की खोज करके उनके चरण नहीं पकड़ पा रहे हैं। भला, ये बेचारे करें भी

क्या? इनके मन में इस प्रकार की सोच का आना धाम धनी की कृपा पर निर्भर है। जब स्वयं श्री राज जी इनके ऊपर कृपा करेंगे, तभी इन्हें ब्रह्ममुनियों की पहचान हो सकेगी।

भावार्थ- दिल्ली, उदयपुर, मन्दसौर, औरंगाबाद आदि में शरीयती मुसलमान श्री प्राणनाथ जी तथा अन्य ब्रह्ममुनियों की वास्तविक पहचान करके आध्यात्मिक लाभ नहीं ले पाये। उसी के सम्बन्ध में यह चौपाई कही गयी है।

दिल मोमिन अर्स कहया, बड़ा बेवरा किया इत।

दुनी दिल पर अबलीस, यों कहे कुरान हजरत॥४७॥

कुरआन में मुहम्मद स.अ.व. ने विस्तृत विवरण के साथ यह बात दर्शायी है कि ब्रह्मसृष्टियों (मोमिनो) का हृदय ही

परब्रह्म का धाम है तथा जीवों के हृदय में शैतान (अज्ञानमयी अन्धकार) का निवास है।

भावार्थ- यह प्रसंग कुरआन में पा. ८ सू. ७ आ. २५ व ३० में इस प्रकार कहा गया है- "का-ल फीहा तहयौ-न व फीहा तमूलू-न व मिन्हा तुखरजून" अर्थात् कहा (मानव) आपको वही जीवन व्यतीत करना व मृत्यु वरण करना, अन्त समय तक मैं आपको निकालूँगा। "फरीकन् हदा व फरीक न् हक-क" अर्थात् एक समुदाय को उसने सन्मार्ग प्रदान किया।

दुनी ना छोड़े तिन को, जो मोमिनोँ मुरदार करी।

दुनी हवा को हक जानहीं, रूहों हक सूरत दिल धरी॥४८॥

इस संसार के जीव निराकार को ही परमात्मा मानकर उसकी उपासना करते हैं तथा किसी भी स्थिति में उसे

छोड़ने के लिये तैयार नहीं होते। इसके विपरीत परमधाम की आत्मायें निराकार को माया का स्वरूप मानकर उससे मुख मोड़ लेती हैं तथा अपने धाम-हृदय में परब्रह्म के किशोर स्वरूप को बसाये रखती हैं।

राह दोऊ जुदी पड़ी, दोऊ एक होवें क्योंकर।

तरक करी जो मोमिनो, सो हुआ दुनी का घर॥४९॥

इस प्रकार दोनों के मार्ग अलग-अलग हैं। परमधाम की आत्मायें जिस निराकार का परित्याग कर देती हैं, जीवसृष्टि उसी निराकार को अपना मुक्ति धाम मानती है।

मोमिन उतरे अर्स से, सो अर्स बिलंदी नूर।

ए जो रूहें कही दरगाह की, हक वाहेदत जिनों अंकूर॥५०॥

ब्रह्ममुनि (मोमिन) उस नूरमयी परमधाम से आये हैं,

जिसे सर्वोपरि अर्थात् बेहद एवं अक्षरधाम से भी परे कहा गया है। परमधाम की इन आत्माओं का सम्बन्ध सच्चिदानन्द परब्रह्म के हृदय के एकत्व (एकदिली) से है। इनके हृदय और परब्रह्म के हृदय में किसी भी प्रकार का भेद नहीं होता है।

रुहें अर्स अजीम की, जाकी हक हादी सों निसबत।

ए हमेसा बीच अर्स के, हक जात वाहेदत॥५१॥

परब्रह्म के युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी से परमधाम की इन ब्रह्मात्माओं का अखण्ड सम्बन्ध होता है। ये हमेशा उस परमधाम की रहने वाली हैं, जहाँ अक्षरातीत श्री राजश्यामा जी एवं उनके हृदय में एकत्व की लीला हुआ करती है।

रूहों तीन बेर खेल देखिया, बीच बैठे अपने वतन।

बड़ी दरगाह अर्स अजीम की, जित असल रूहों के तन॥५२॥

बेहद से परे अखण्ड परमधाम के मूल मिलावा में
ब्रह्मसृष्टियों के मूल तन हैं। वहीं से बैठे-बैठे सभी ने
अपनी सुरता द्वारा ब्रज, रास, एवं जागनी का खेल देखा
है।

ए हुकमें कजा करी, अव्वल से आखिर।

हक अर्स मता मोमिन का, लिया सब फिरकों दावा कर॥५३॥

सभी मतों के अनुयायियों ने यह दावा कर रखा था कि
परमधाम का ज्ञान उनके पास है तथा वे ही ब्रह्ममुनि
(मोमिन) हैं। वे यह भी मानते थे कि परमधाम का प्रेम
संवाद, ब्रज, रास, एवं जागनी की लीला भी उन्हीं से
सम्बन्धित है। अब श्री राज जी के आदेश से तारतम

वाणी के प्रकाश में यह निर्णय हो गया है कि ये सारी लीलाएँ ब्रह्मसृष्टियों से सम्बन्धित हैं, जीवों से नहीं।

भावार्थ- तारतम ज्ञान (इल्म-ए-लुदुन्नी) के अभाव में प्रत्येक मुस्लिम यही मानेगा कि "अलस्तु बिरब्बि कुंम" का कथन उसके लिये है। इसी प्रकार, जीवसृष्टि के हिन्दू भी यही मानते हैं कि महारास में वे ही थे।

करनी को देखे नहीं, जो हम चलत भांत किन।

वह दुनियां को छोड़े नहीं, जो मुरदार करी मोमिन॥५४॥

परमधाम का दावा करने वाले संसार के जीव अपने आचरण पर दृष्टिपात नहीं करते कि वह कैसा है। ब्रह्मसृष्टियों ने जिन लौकिक सुखों, वैकुण्ठ, एवं निराकार मण्डल की मुक्ति के आनन्द को नश्वर मानकर छोड़ दिया है, संसार के जीव उसे छोड़ने के लिये तैयार नहीं हैं।

मोमिनों के माल का, दावा किया सबन।

तब हो गए खेल कबूतर, हुआ जाहेर बका अर्स दिन॥५५॥

संसार के सभी मत-पन्थों के अनुयायी ब्रह्मात्माओं की आध्यात्मिक सम्पदा (परमधाम के ज्ञान, सर्वस्व समर्पण, तथा अटूट प्रेम) पर अपना दावा किया करते थे, किन्तु अब तारतम वाणी के उजाले में परमधाम का यथार्थ ज्ञान प्रकट हो गया है, जिससे इन ज्ञानियों का अस्तित्व बाजीगर के कबूतर की भांति समाप्त हो गया है।

भावार्थ- जिस प्रकार बाजीगर के कबूतर खेल के पश्चात् अदृश्य हो जाते हैं, उसी प्रकार जब परमधाम का अखण्ड ज्ञान प्रकट हो गया, तो अनुमान के सहारे जो लोग परमधाम के अनुभव का दावा करते थे, वे मौन हो गये।

गुनाह एही सबन पर, ए जो झूठी सकल जहान।

दावा किया वाहेदत का, पछतासी हुए पेहेचान॥५६॥

स्वलीला अद्वैत परमधाम में एकत्व (वहदत) का साम्राज्य है। इसे संसार के स्वायत्तिक जीव इस नश्वर जगत् में अपने हृदय में ढूँढा करते थे। उन्हें इस प्रकार की भ्रान्ति का दोष लगा है। जब उन्हें इस सत्य की वास्तविकता का बोध हुआ कि वहदत तो एकमात्र परमधाम या जाग्रत ब्रह्मात्माओं के हृदय में ही है, तो उन्हें अपनी भूल का प्रायश्चित्त करना पड़ा।

अब ए सुध किनको नहीं, पर रोसी हुए रोसन।

ए सब होसी जाहेर, ऊगे कायम सूरज दिन॥५७॥

यद्यपि इस समय किसी को भी परमधाम तथा अक्षरातीत परब्रह्म के विषय में बोध नहीं है, किन्तु जब

तारतम ज्ञान के अखण्ड प्रकाश में सब कुछ उजागर हो जायेगा, तो संसार के लोग अपनी इस अज्ञानजनित भूल पर रोयेंगे (पश्चाताप करेंगे) कि हमने श्री प्राणनाथ जी की सान्निध्यता का लाभ क्यों नहीं लिया।

विशेष- उपरोक्त कथन का संकेत काजी शेख इस्लाम, हिदायतुल्लाह, फतह मुहम्मद जैसे लोगों के लिये है, जो अपनी सत्ता एवं ज्ञान के अहंकार तथा लौकिक सुखों के लोभ में प्रियतम अक्षरातीत की पहचान नहीं कर पाये।

रुहें जो दरगाह की, हक जात वाहेदत।

ए जाने अर्स अरवाहें, जिन मोमिनों निसबत॥५८॥

स्वलीला अद्वैत परमधाम में आत्मायें परब्रह्म की अँगरूपा हैं। उनका और राज जी का हृदय एक ही है। इस गुह्य रहस्य को परमधाम की वे आत्मायें ही जानती

हैं जिनका धाम धनी से अखण्ड सम्बन्ध है।

और गिरो फरिस्तन की, जिनका कायम वतन।

दुनियां कायम होएसी, सो बरकत गिरो इन॥५९॥

इसी प्रकार ईश्वरीय सृष्टि का भी अखण्ड घर (बेहद मण्डल) अक्षरधाम है। इन ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टि की कृपा से माया की जीवसृष्टि भी अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होगी।

भावार्थ— अक्षर ब्रह्म का अक्षरधाम परमधाम के अन्तर्गत आता है। वह उस स्वलीला अद्वैत की भूमिका में आता है, जहाँ किसी नयी वस्तु की रचना नहीं हो सकती। परमधाम की लीला का रसपान करने के लिये अक्षर ब्रह्म ने २४००० सुरतायें धारण की हैं, इसलिये इनका अखण्ड धाम सत्स्वरूप को ही माना जायेगा।

और जो उपजे कुंन से, जो आदम की नसल।

दावा किया मोमिन का, जो दुस्मन अबलीस असल॥६०॥

कुन्न से उत्पन्न होने वाली सम्पूर्ण जीवसृष्टि को आदम का वंशज कहा जाता है। इनका मन अज्ञान रूपी शैतान के वशीभूत होता है, इसलिये ये स्वयं को ही परमधाम के ब्रह्ममुनि (मोमिन) के रूप में देखते हैं।

लिख्या सिपारे चौदमें, गिरो भांत है तीन।

महंमद समझाओ तिनों त्यों कर, जिनों जैसा आकीन॥६१॥

कुरआन के चौदहवें सिपारे में तीन प्रकार की सृष्टियों का वर्णन है। उसमें अल्लाह की ओर से कहा गया है कि हे मुहम्मद! इन तीनों सृष्टियों को इस प्रकार से समझाओ कि उन्हें एक परब्रह्म के प्रति विश्वास आ जाये।

भावार्थ— कुरआन के पार: १४ रू-बमा १५ सूर:

हिज़िर आयत २६ से २९ में कहा गया है—

"व ल-कद खलकनल इन्सा-न मिन् सल्सालिस
मिन् ह-मइम् मस्नून्" (२६)

और बेशक हमने इन्सान को बजती हुई मिट्टी से,
जो सियाह और बदबूदार थी, उत्पन्न किया।

"वल्र्जोन्-न ख-लक्नाहु मिन् कब्लु मिन्नारिस्
समूम" (२७)

और जिन्न को उससे पहले बनाया बे धुयें की आग
से।

"व इज् का-ल रब्बु-क लिल्मल्लोइ-कति इन्नी
खालिकुम् ब-श-रम् मिन् सल्सालिम् मिन् ह-मइम्
मस्नून्" (२८)

और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से
फ़रमाया कि मैं आदमी को बनाने वाला हूँ बजती मिट्टी से

जो बदबूदार सियाह गारे से है।

"फ़इजा सव्वैतुहू व न-फ़ख्तु फ़ीहि मिर्-रूही फ़-
क़अू लहू साजिदीन" (२९)

तो जब मैं उसे ठीक कर लूँ और उसमें अपनी तरफ़
की खास मुअज़्ज़ रूह फूँक दूँ।

और तारतम वाणी के कथनों से यह सिद्ध है कि
जिस समय अरब में मुहम्मद स.अ.व. के तन से लीला
चल रही थी, उस समय परमधाम की आत्मायें इस
संसार में अवतरित ही नहीं हुई थीं—

रूहें गिरो तब इत आई नहीं, तो यों करी सरत।

कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत॥

खुलासा २/२८

यही तथ्य बीतक साहिब में भी है—

हुकम के अमल में, ना कोई उतरे मोमिन।

बीतक साहिब ६२/३३

स्पष्ट है कि यहाँ "मुहम्मद" का तात्पर्य श्री प्राणनाथ जी (नूरी मुहम्मद) से है। आगे की चौपाइयों (६२-६५ तक) में श्री प्राणनाथ जी को ही सम्बोधित करके कहा गया है।

किया तीनों गिरो का बेवरा, सरीयत तरीकत हकीकत।

हुकम हुआ महंमद को, कर तीनों को हिदायत॥६२॥

कुरआन में तीनों सृष्टियों (जीव, ईश्वरीय, तथा ब्रह्मसृष्टि) के लिये तीन प्रकार की उपासना पद्धति दर्शायी गयी है— १. कर्मकाण्ड २. मानसिक भक्ति तथा ३. ज्ञान मार्ग। मुहम्मद स.अ.व. से अल्लाह तआला ने कहा कि इन तीनों सृष्टियों को उनकी स्थिति के अनुसार ही उपासना पद्धति बतानी चाहिए।

भावार्थ- ज्ञान (हकीकत) से तात्पर्य केवल शाब्दिक ज्ञान को ग्रहण कर वाचक ज्ञानी बनने से नहीं है, अपितु यथार्थ ज्ञान को ग्रहण कर आत्मिक दृष्टि से परब्रह्म का साक्षात्कार करने से है। उपरोक्त चौपाई में मूल स्वरूप श्री राज जी द्वारा श्री महामति जी को निर्देश दिया गया है कि तीनों सृष्टियों को उनकी अवस्था (पात्रता) के अनुसार ही भक्ति का मार्ग बताना चाहिए।

हकीकत सों समझावना, समझे इसारत सों मोमिन।

हक सूरत दृढ़ कर दई, तब दिल अर्स हुआ वतन॥६३॥

ब्रह्मसृष्टियों को यथार्थ (सत्य) ज्ञान से समझाना चाहिए। वे मात्र संकेतों (थोड़ा भी समझाने) से ही किसी भी तथ्य को समझ लेती हैं। जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में परब्रह्म के स्वरूप के सम्बन्ध में दृढ़ता हो जाती है,

तब उनके हृदय को धाम कहलाने की शोभा प्राप्त हो जाती है अर्थात् उनके हृदय में परमधाम सहित परब्रह्म (युगल स्वरूप) की शोभा विराजमान हो जाती है।

और राह जो तरीकत, गिरो फरिस्तों बंदगी कही।

सो समझे मीठी जुबांन सों, समझ पोहोंचे जबरूत सही॥६४॥

ईश्वरी सृष्टि का मार्ग उपासना का है, जो मानसिक उपासना के धरातल से प्रारम्भ होता है। ईश्वरीय सृष्टि मीठे शब्दों से समझाने पर तुरन्त ही समझ लेती हैं और भक्ति मार्ग द्वारा बेहद मण्डल को प्राप्त होती हैं।

तीसरी गिरो सरीयत से, जो करसी जेहेल जिदाल।

सो समझेंगे जिद्वै सों, क्या करें पड़े बंध दज्जाल॥६५॥

जीवसृष्टि कर्मकाण्ड के मार्ग का अनुसरण करती है। वह

अपनी मूर्खता के कारण यथार्थ सत्य को ग्रहण न करने का हठ करती है। इन्हें हठपूर्वक (बलपूर्वक) बार-बार समझाना ही पड़ेगा। बेचारे जीव करें भी क्या, ये अज्ञान रूपी शैतान के बन्धन में रहते हैं।

ए पढ़े सब जानत हैं, दिल पर दुस्मन पातसाह।

ले लानत बैठा दिल पर, ए अबलीस मारत राह॥६६॥

वर्तमान समय में कुरआन के विशेषज्ञ कहलाने वाले (अकिल खान, शेख निजाम, हिदायतुल्ला, फतह मुहम्मद आदि) इस रहस्य को यथार्थ रूप से जानते हैं, किन्तु इनके हृदय में इनका शत्रु अज्ञान (इब्लीश) बैठा है, जो परब्रह्म से मिलने वाली फटकार (दण्ड) का प्रतिशोध लेने के लिये इन्हें वास्तविक मार्ग से भटका देता है।

कुरान पढ़े चलें सरीयत, करें दावा मोमिनो राह।

पर क्या करें कुंजी बिना, पावें ना खुलासा॥६७॥

ये कुरआन को पढ़ते तो हैं, किन्तु शरीयत को छोड़ने के लिये तैयार नहीं हैं। परमधाम का ज्ञान न होने पर भी ब्रह्ममुनियों की राह पर चलने का दावा भी करते हैं। ये करें भी क्या? तारतम ज्ञान से दूर रहने के कारण धर्मग्रन्थों के यथार्थ रहस्यों से ये पूर्णतया अनभिज्ञ हैं।

मोमिन दुनी ए तफावत, ज्यों खेल और देखनहार।

मोमिन मता हक वाहेदत, दुनियां मता मुरदार॥६८॥

जीवसृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टि में इस प्रकार का अन्तर है कि जीव माया के खेल में मग्न रहने वाले हैं, जबकि ब्रह्मात्मायें द्रष्टा भाव से संसार को देखने वाली हैं। ब्रह्ममुनियों के पास श्री राज जी और उनकी अँगनाओं के

एकत्व (एकदिली) का ज्ञान है, जबकि जीवसृष्टि मात्र इस संसार का ज्ञान रखती है, जिसमें "मुण्डे-मुण्डे मतिभिन्ना" का कथन सार्थक होता है।

सबों दावा किया अर्स का, हिंदू या मुसलमान।

वेद कतेब दोऊ पढ़े, परी न काहूँ पेहेचान॥६९॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों ही परमधाम का ज्ञान रखने का दावा करते हैं। वे वेद-कतेब का अध्ययन भी करते हैं, किन्तु यह बताने में असमर्थ हैं कि परमधाम कहाँ है, कैसा है, तथा वहाँ की लीला कैसी है।

कहया दावा सब का तोड़या, दिया मता मोमिनों को।

लिए अर्स वाहेदत में, और कोई आए न सके इनमों॥७०॥

प्रियतम अक्षरातीत ने ब्रह्ममुनियों को तारतम वाणी के

रूप में परमधाम का ज्ञान दिया, जिससे संसार के सभी मत-पन्थों का यह दावा झूठ हो गया कि वे परमधाम के विषय में जानते हैं। धाम धनी ने ब्रह्ममुनियों को परमधाम के उस एकत्व का सुख दिया, जिसमें संसार का प्राणी प्रवेश (प्राप्त) ही नहीं कर सकता।

सिपारे सताईस में, लिखे दुनी के सुकन।

ए क्योंए पाक न होवहीं, एक तौहीद आब बिन॥७१॥

कुरआन के सताइसवें पारे में संसार के जीवों की वास्तविकता बतायी गयी है। स्वलीला अद्वैत सच्चिदानन्द परब्रह्म का ज्ञान पाये बिना, ये जीव किसी भी प्रकार से पवित्र नहीं हो सकते।

भावार्थ- परब्रह्म के ज्ञान एवं प्रेम मार्ग पर चले बिना किसी भी बाह्य पदार्थ से मन के पवित्र होने का प्रश्न ही

नहीं है।

पाक न होइए इन पानिएं, चाहिए अर्स का जल।

न्हाइए हक के जमाल में, तब होइए निरमल॥

श्रृंगार २५/४४

कुरआन सि. २७ का-ल फ़मा ख़त्वबुकुम् सू. ५७
सूरतुल हदीदि आ. १२ में कहा गया है कि "जन्नातुन्
तज्री तहितहुल अन्हारू खालिदी-न फीहा जालि-क
हुवल् फौजुल अज़ीम" अर्थात् फरमाया कि आज आपके
लिए शुभ सन्देश है, बाग है जिनके नीचे-मध्य में पवित्र
नहरें प्रवाहित हैं। इन्हीं में सदैव रहिये। यही प्रतिफल
विश्वासपात्रों हेतु निर्धारित है।

मोको पाक होए सो छूइयो, यों केहेवे फुरमान।

करे गुसल तौहीद आब में, इन पाकी पकड़ो कुरान॥७२॥

कुरआन में कहा गया है कि पवित्र होकर ही मुझे छूना चाहिए। स्वलीला अद्वैत परमधाम के ज्ञान एवं प्रेम रूपी जल में स्नान करने के पश्चात् ही मुझे छूने (पढ़ने) का अधिकार प्राप्त हो सकता है।

भावार्थ- यह प्रसंग कुरआन सि. ९ कालल्म-लउ सू. ७ सूर: आआफ़ आ. २०६ में इस प्रकार कहा गया है— "फस्तमिअू लहू" अर्थात् और जब कुरआन को पढ़ो, व "इजा कुरिअल-कुरआनु।"

मुस्लमान स्नान के पश्चात् नौ लोटे जल शरीर पर बहाते हैं। भ्रमवश इससे वे समझते हैं कि पवित्र हो गये हैं। यद्यपि शरीयत परिवाटी से पवित्र नहीं हो सकता, पवित्रता हेतु तो परब्रह्म के प्रेम में तल्लीन होना ही होगा।

वास्तव में पवित्रता जल से नहीं, अपितु परब्रह्म के अतुलनीय प्रेम, सौन्दर्य में तल्लीन होने में है। जल से

पवित्रता मात्र क्षणिक है, जबकि प्रेमानुभूति सदैव अविनाशी है।

सो पाक कहे रूह मोमिन, जिनको तौहीद मदत।

सो पीठ देवें दुनीय को, जिनपे मुसाफ मारफत॥७३॥

यथार्थता तो यह है कि ब्रह्मसृष्टियाँ ही पवित्र कही गयी हैं क्योंकि इनके पास अद्वैत परब्रह्म के अखण्ड ज्ञान की सम्पदा होती है। इनके हृदय में धर्मग्रन्थों का सर्वोच्च रहस्यमयी ज्ञान विद्यमान होता है, जिससे ये इस नश्वर संसार से अपनी दृष्टि हटाकर स्वयं को प्रियतम के प्रेम में डुबो देती हैं।

सो सरीयत को है नहीं, ए तो खड़े जाहेर ऊपर।

एक हादी के लड़ जुदे हुए, ए जो नारी फिरके बहत्तर॥७४॥

कुरआन के कथनों का बाह्य अर्थ लेने वाले इन लोगों के पास अद्वैत परमधाम का यथार्थ ज्ञान नहीं होता, इसलिये ये मात्र शरीअत के ही मार्ग पर चलते हैं। यही कारण है कि एक ही मुहम्मद स.अ.व. के मानने वाले सभी मुसलमान आपस में लड़कर अलग-अलग उन बहत्तर फिरको (पन्थों) में बँट गये जो दोजख के अधिकारी हैं।

"व यूरी दुल्लाहु अय्युहिक़क़ल हक़-क बि कलिमातिही" अर्थात् और अल्लाह चाहता है कि अपने कलाम से सच को कर दिखाए। कुरआन पार: १० वअ - लमू, सूर: तौबा ९ आयत "व का-लतिल-यहूदु अुजैरु निबनुल्लाहि व का-लतिनन्नसारल् मसीहुब्नुल्लाहि" अर्थात् यहूदी उजैर को ईसाई कहते हैं खुदा के बेटे का मसीह।

लिख्या कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत।

एक दीन जब होवहीं, दोऊ तब होवे साबित॥७५॥

कुरआन के सिपारा ९ काल्लम तड सूरः ८ अन्फालि आयत ७ में कुरआन के चमत्कार तथा मुहम्मद स.अ.व. की नबूवत की गरिमा के सम्बन्ध में लिखा हुआ है। इन दोनों के सम्बन्ध में कुरआन का कहा हुआ कथन तभी सार्थक होगा, जब सारा संसार एक सत्य-धर्म के मार्ग का अनुयायी बन जाये।

भावार्थ- कुरआन के उपरोक्त कथन का विकृत अर्थ लेकर ही आतंकवाद की नींव रखी जाती है। आतंकवादियों की यह क्षुद्र मानसिकता है कि वे अरबी भाषा, वेशभूषा, तथा शरीयत के पाँच नियमों (कलमा, रोजा, नमाज, हज, तथा जकात) को सारे संसार पर बलपूर्वक थोपना चाहते हैं। वस्तुतः यह धर्म नहीं, अपितु

कट्टर साम्प्रदायिकता (मजहबीपना) है।

धर्म शाश्वत् है, अनादि है, एवं सम्पूर्ण विश्व के लिये कल्याणकारी है। उसे किसी भाषा, वेशभूषा, या विशेष पूजा पद्धति के बन्धन में नहीं बाँधा जा सकता। एक परब्रह्म की आत्मिक दृष्टि से उपासना तथा धर्म के १० लक्षणों – धैर्य, क्षमा, इन्द्रियों का दमन, चोरी न करना, आन्तरिक एवं बाह्य पवित्रता, इन्द्रियों को विषयों में न जाने देना, बुद्धि, विद्या, सत्य, तथा क्रोध न करना – का पालन ही धार्मिकता है। इसके अतिरिक्त अन्य रीति-रिवाजों को धर्म की ओट में थोपना अत्याचार है।

महंमद चाहे सबों मिलावने, ए सब जुदागी डारत।

ए सब गुमाने जुदे किए, दुस्मन राह मारत॥७६॥

श्री प्राणनाथ जी (आखरुल इमाम मुहम्मद महदी

साहिबुजमां) अपनी तारतम वाणी से संसार के सभी लोगों को शाश्वत सत्य के मार्ग पर ले चलना चाहते हैं, किन्तु इन्हें आपस में लड़कर अलग-अलग रहना ही अच्छा लगता है। ये सभी अपने अहंकार के कारण ही लड़ते हैं, क्योंकि अज्ञान रूपी शैतान इन्हें भटकाकर सत्य से विमुख कर देता है।

एक फिरका नाजी कहया, जित लिखी हक हिदायत।

एक दीन किया चाहे, एही मोमिन वाहेदत॥७७॥

कुरआन में इस तिहत्तरवें फिरके को नाजी अर्थात् अखण्ड धाम का सुख प्राप्त करने वाला कहा गया है। इनके निर्देशक स्वयं श्री राज जी हैं। परमधाम के एकत्व (वहदत) से अवतरित होने वाले ब्रह्ममुनियों का यह समूह तारतम ज्ञान के प्रकाश में सारे संसार को परम

सत्य के मार्ग पर चलाना चाहता है।

भावार्थ- कुरआन के सि. २९ सू. ७२ आ. २७ में कहा गया है- "इन्न-क इन त-जरहुम् युज़िल्लू अिबा-द-क व ला यलिदू इल्ला फाजिरन् कफ़फारा" (और नूह ने अर्ज की, ऐ रब, जमीन पर काफिरों में से कोई बसने वाला न छोड़िए), तत्पश्चात् अर्थात् जलप्रलय के पश्चात् नूह के तीनों पुत्रों ने पुनः नूह के सान्निध्य में संसार की पुनर्स्थापना की, एवं साम ने अरब व ईरान (फारस), हाम (हिसाम) ने भारत (हिंद), एवं याफिस ने तुर्की स्थान को निवास स्थल बनाया। साम के वंश में १९, हाम के १७, याफिस के ३६ फिरके बने। यह कुल $१९ + १७ + ३६ = ७२$ फिरके बने, जो कि बनी ईस्माईल या यहूदी हैं। केवल मुहम्मद स.अ.व. आ. व. ही बनी ईस्माईल अर्थात् मुस्लमान समुदाय से हैं। अतः यही

७२ + १ = ७३ फिरकों की सत्यता है।

बसरी मलकी और हकी, लिखी महंमद तीन सूरत।

होसी हक दीदार सबन को, करसी महंमद सिफायत॥७८॥

कुरआन में मुहम्मद स.अ.व. की तीन सूरतें बतायी गयी हैं— बशरी, मल्की, और हकी। यह भी लिखा है कि क्रियामत के समय सबको परब्रह्म के दर्शन होंगे। हकी सूरत (श्री प्राणनाथ जी) द्वारा सभी को परमधाम का अलौकिक ज्ञान मिलेगा।

भावार्थ— मुहम्मद का अर्थ है— ऐसा व्यक्तित्व जिसकी महिमा की उपमा न दी जा सके। परब्रह्म ने इस संसार में तीन स्वरूप धारण किये, जिन्हें "मुहम्मद" कहकर सम्बोधित किया जाता है। वे इस प्रकार का हैं—

१. अरब में अवतरित होने वाले पैगम्बर मुहम्मद

स.अ.व. (मुस्तुफ़ा)

२. सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (मुहम्मद ईसा)

३. श्री प्राणनाथ जी (मुहम्मद महदी) के स्वरूप में अल्लाह तआला की सभी शक्तियाँ (निधियाँ) विद्यमान होंगी। उनका दर्शन परब्रह्म के दर्शन के समान माना जायेगा।

पारः सोलहवां क़ाल अलम (१६) सूरः पर्यम १९ काफ़ हा या अैन् साद् पृष्ठ संख्या २/९/१ में कहा गया है कि कियामत के समय तुम अल्लाह का दीदार करोगे। कुरआन में तीनों सूरतों का इस प्रकार वर्णन है—

"मजकूर है कि रसूल-ए-अकरम स.अ.व. की तीन सूरते हैं। एक बसरी जैसा कि अल्लाह ने कहा कि ऐ मुहम्मद! सिवाय इसके नहीं कि मैं भी हूँ बशर तुम्हारी तरह, दूसरी मल्की जैसा कि खुद ह. ने फरमाया कि

बेशक मैं नहीं हूँ तुममें से किसी के और मैं रहता हूँ अपने रब के पास, और तीसरी हकी जैसा कि फरमाया मेरे पास अल्लाह के वास्ते एक वक़्त है" (तफ़सीर-ए-हुसैनी भाग २)।

इनों हक बका देखाए के, करसी सबों एक दीन।

हक सूरत दृढ़ कर दई, देसी सबों आकीन॥७९॥

हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी सबको परमधाम में विराजमान श्री राज जी की अखण्ड शोभा का दर्शन कराकर एक सत्य मार्ग पर चलायेंगे। वे सभी को साकार-निराकार से परे परब्रह्म के शुद्ध त्रिगुणातीत स्वरूप के सम्बन्ध में दृढ़ता दिलाकर अटूट विश्वास दिलायेंगे।

मोमिन गुसल हौज कौसर, माहें ईसा मेंहेदी महंमद।

पकड़ें एक वाहेदत को, और करें सब रद॥८०॥

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में तीनों सूरतें (बसरी, मल्की, तथा हकी) विराजमान होंगी। उनके द्वारा दिये हुए तारतम ज्ञान के प्रकाश में ब्रह्ममुनि ध्यान (चितवनि) द्वारा हौज कौसर के अलौकिक जल में स्नान करेंगे। वे स्वलीला अद्वैत परमधाम की एकत्व (एकदिली) से ओत-प्रोत लीला एवं शोभा में डूबकर सारे संसार से अपना सम्बन्ध तोड़ लेंगे।

भावार्थ- अलिफ, लाम, और मीम को हरुफ-ए-मुक्तेआत कहा जाता है। वस्तुतः ये तीनों सूरते हैं। इनके सम्बन्ध में तारतम वाणी का कथन है-

अल्लफ कह्या महंमद को, रुह अल्ला ईसा लाम।

मीम मेंहेदी पाक से, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम॥

बशरी सूरत में अक्षर ब्रह्म की आत्मा (सत्) थी, मल्की सूरत में श्यामा जी की आत्मा (आनन्द) थी, तथा तीसरी हकी सूरत में महामति जी की आत्मा में चिद्धन स्वरूप परब्रह्म का आवेश था। इस प्रकार श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में सत् + चिद् + आनन्द अर्थात् सच्चिदानन्द परब्रह्म का स्वरूप लीला कर रहा है।

हक बतावत जाहेर, मेरे खूबों में महंमद खूब।

सो मोमिन छोड़े क्यों कदम, जाको हकें कहा मेहेबूब॥८१॥

मूल स्वरूप श्री राज जी स्पष्ट रूप से कहते हैं कि मेरे प्यारों में श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप अति प्यारा है। जिन श्री प्राणनाथ जी (नूरी मुहम्मद) को स्वयं श्री राज जी अपना अति प्रिय (महबूब) कहते हैं, उनके चरणों को परमधाम के ब्रह्ममुनि कभी भी नहीं छोड़ेंगे।

भावार्थ- "हकें मासूक कहा तो भी ना समझे" (खुलासा २/७१) के इस कथन से यह स्पष्ट है कि इसका सूक्ष्म अर्थ श्री प्राणनाथ जी के लिये घटित होगा। परमधाम में श्री राज जी अपने नूरमयी स्वरूप से विराजमान हैं, जबकि इस नश्वर जगत् में वे श्री प्राणनाथ जी के रूप में अपने आवेश स्वरूप से लीला कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में श्री प्राणनाथ जी से अधिक गरिमामयी स्वरूप अन्य कोई भी नहीं हो सकता। श्रृंगार २३/३१ का कथन यही सिद्ध करता है-

तुम ही उतर आए अर्स से, इत तुम ही कियो मिलाप।
तुम ही दर्ई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप॥

मासूक आसिक दोऊ जाने दुनी, हक मोमिन मांहें खिलवत।
उतरी अरवाहें अर्स से, तो भी पढ़े न पावें वाहेदत॥८२॥

संसार के लोग आशिक तथा मासूक को दो मानते हैं। स्वलीला अद्वैत परमधाम की खिल्वत में श्री राज जी, श्यामा जी, तथा ब्रह्मसृष्टियाँ एक ही स्वरूप हैं। वही ब्रह्मसृष्टियाँ माया का खेल देखने के लिये परमधाम से इस नश्वर जगत् में आयी हैं। इस बात को धर्मग्रन्थों में पढ़कर भी संसार के ज्ञानीजन परमधाम की एकदिली (एकत्व) को समझ नहीं पाते हैं।

महंमद बतावें हक सूरत, तिनका अर्स दिल मोमिन।

सो अर्स दिल दुनी छोड़ के, पूजे हवा उजाड़ जो सुन॥८३॥

मुहम्मद स.अ.व. ने कुरआन में परब्रह्म के किशोर स्वरूप (अमरद सूरत) का वर्णन किया है तथा यह भी कहा है कि वह अक्षरातीत (अल्लाह तआला) ब्रह्ममुनियों के धाम-हृदय में रहते हैं। इसे पढ़कर भी संसार के जीव

(शरीयती मुसलमान) श्री महामति जी (मुहम्मद महदी) के धाम-हृदय में विराजमान परब्रह्म की पहचान नहीं कर पा रहे हैं तथा जड़ रूप वीरान शून्य-निराकार को ही परमात्मा का स्वरूप मानकर बन्दगी (भक्ति) करते हैं।

भावार्थ- कुरआन के मन्कूला रिवायत में कहा गया है- "क्लब-ए-मोमिन अर्शुल्लाह" यानि क्लब-ए-मोमिन अर्श-ए-मनस्त अर्थात् मोमिन का दिल ही अल्लाह का स्थान है।

सि. २ सूर: बक्र (२) आयत १३६ "व अिजा सअलक अिबादि अन्नी फ अन्नी करीबुनं अजीबू दडवतददाअि अिजा दआनि फल यस्जीबूली वल यूअमिन् बी लल्लाल्लहुम यरशुदून" (मेरे बन्दे जब आपसे पूछें तो कहो कि मैं तो आपके पास करीब यानि दिल में हूँ)।

उपरोक्त चौपाई में यह संकेत किया गया है कि शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आये हुए अल्लाह तआला की पहचान नहीं कर पाये तथा शून्य-निराकार को ही अपना खुदा मानते रहे।

**अबलीस कहया दुनी दुस्मन, तो किया मोमिनों मता का दावा।
सो समझे न इसारतें, जिन ताले अबलीस हवा॥८४॥**

इब्लीश (अज्ञान) को संसार के जीवों का शत्रु कहा गया है। उसके बन्धन में होने के कारण संसार के लोग स्वयं को ब्रह्ममुनियों के समान ब्रह्मज्ञानी होने का दावा करते हैं। जिनके भाग्य में अज्ञान रूपी दज्जाल की परतन्त्रता तथा जड़ निराकार की भक्ति लिखी है, भला वे कुरआन में ब्रह्मसृष्टियों के लिये संकेतों में कही गयी गुह्य बातों का

अभिप्राय कैसे जान सकते हैं।

जोस गिरो मोमिनो पर, हकें भेज्या जबरईल।

रुहें साफ रहें आठों जाम, और अबलीस दुनी दिल॥८५॥

प्रियतम परब्रह्म ने ब्रह्मसृष्टियों के लिये जोश स्वरूप जिबरील को भेजा, जो उन्हें आठों प्रहर मायावी विकारों से दूर रखता है। इस प्रकार आत्माओं का हृदय सर्वदा निर्मल रहता है, जबकि जीवसृष्टि के हृदय में शैतान (अज्ञानता) का निवास रहता है।

अर्स से आया असराफील, दिया कई बिध सूर बजाए।

सो सोर पड़्या ब्रह्मांड में, पाक किए काजी कजाए॥८६॥

अक्षरधाम से जाग्रत बुद्धि का फरिश्ता इस्राफील आया।
उसने कई बार अपना सूर फूँका अर्थात् अनेक रूपों में

तारतम वाणी का अवतरण हुआ। ब्रह्मवाणी के अवतरण की गूँज सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैल गयी, और सबके न्यायाधीश के रूप में प्रकट होकर श्री प्राणनाथ जी ने न्याय किया, और ब्रह्मसृष्टियों के हृदय को पवित्र किया।

भावार्थ- जिबरील तथा इस्राफील का मूल निवास सत्स्वरूप है, जिसे अक्षरधाम के रूप में माना जाता है। स्वलीला अद्वैत परमधाम से इस्राफील का आना सम्भव नहीं है क्योंकि परमधाम की वहदत (एकत्व) में किसी भी फरिश्ते का प्रवेश सम्भव नहीं है। "असराफील फिरवल्या, अर्स अजीम के मांहें" (मारफत सागर १७/३०) के इस कथन का आशय श्री महामति जी के धाम-हृदय से है। "मेरे हिरदे चरन धनी के, इने ए फल पाया इत" (प्रकास हि. २०/१५) से यही स्पष्ट होता है।

तारतम वाणी के प्रकाश में सत्य-असत्य को उजागर करना ही इस संसार में न्याय करना है। कर्मों के अनुसार न्याय करने की लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड में सातवें दिन की लीला के अन्तर्गत होगी, जिसमें श्री मिहिरराज जी का जीव सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में श्री राज जी का रूप धारण करके न्याय करेगा। उस समय सभी बहिश्तों वाले अक्षरातीत के ही रूप में उन्हें मानेंगे। "मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार" (कलस हि. २३/१०४) से यही निष्कर्ष निकलता है।

तो अर्स कहा दिल मोमिन, पाया अर्स खिताब।

इतहीं गिरो पैगंमरों, काजी कजा इत किताब॥८७॥

इसलिये ब्रह्मात्माओं के हृदय को धाम कहा गया है। मूल सम्बन्ध से धाम धनी का इनके हृदय में विराजमान

होने के कारण ही इन्हें यह शोभा मिली है। सभी पैगम्बरों की शक्तियाँ भी श्री महामति जी (महदी) के धाम-हृदय में हैं। इन्हीं के तन से परमधाम की वाणी का अवतरण हुआ है और सबका न्याय करने के लिये इन्हें ही न्यायाधीश (काजी) कहा गया है।

भावार्थ- "साहेब तेरी साहेबी भारी" (कीर्तन) के प्रकरण में विस्तृत रूप से यह बात दर्शायी गयी है कि किस प्रकार सभी पैगम्बरों की शोभा (शक्तियाँ) श्री महामति जी में विराजमान है।

फुरमान आया इमाम पर, कुंजी रुह अल्ला इलम।

खुली हकीकत हुकमें, इसारतें रमूजे खसम॥८८॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी द्वारा तारतम ज्ञान रूपी कुञ्जी आयी। सभी धर्मग्रन्थों (कुरआन, भागवत आदि)

का सार तत्व श्री प्राणनाथ जी द्वारा प्रकाश में आया। धर्मग्रन्थों में परब्रह्म से सम्बन्धित जो गुह्य रहस्य संकेतों में कहे गये थे, उनका वास्तविक आशय भी मूल स्वरूप श्री राज जी के आदेश (इच्छा) से श्री प्राणनाथ जी द्वारा उजागर हुआ।

जो लिख्या जिन ताले मिने, मांहे हक फुरमान।

रुहे फरिस्ते और कुंन से, तीनों की नसल कही निदान॥८९॥

परब्रह्म के आदेश से अवतरित धर्मग्रन्थों में ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि, तथा जीवसृष्टि की वास्तविकता दर्शायी गयी है। इनके भाग्य में जो कुछ भी लिखा था, वह कियामत के समय प्रकट होने वाले श्री प्राणनाथ जी द्वारा उन्हें प्राप्त हुआ।

भावार्थ— कुरआन के सि. ३० सू. ९५ आ. ५ तथा

पारः १८ सू. १७ आयत १२ में ब्रह्मसृष्टि को खजूर, ईश्वरीय सृष्टि को अँगूर, तथा जीवसृष्टि को घास-पात कहा गया है।

बेवरा हुआ मुसाफ का, एक दुनियां और अर्स हक।

हक अर्स में सब कहया, दुनियां नहीं रंचक॥९०॥

तारतम वाणी के प्रकाश में ईश्वरीय ग्रन्थों (कुरआन तथा वेद) का सत्य ज्ञान उजागर हुआ, जिससे यह विदित हुआ कि इस मिथ्या जगत् तथा परब्रह्म और उनके परमधाम की वास्तविकता क्या है। श्री राज जी के परमधाम में तो सम्पूर्ण (अनन्त) प्रेम, शान्ति, और आनन्द है, जबकि यह संसार तो कुछ है ही नहीं, स्वप्नमात्र है।

भावार्थ— मुसहाफ से तात्पर्य ईश्वरी ग्रन्थों से है।

कुरआन तथा वेद को इसके अन्तर्गत माना जाता है। बाईबल (न्यू टेस्टामेन्ट) में लूका, युहन्ना आदि की रचनाये हैं, इसलिये इन्हें ईश्वरीय ग्रन्थ की श्रेणी में नहीं माना जा सकता। चारों वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, तथा गीता का यह निभ्रान्त कथन है कि वेद अपौरुषेय हैं, अर्थात् किसी व्यक्ति द्वारा नहीं कहे गये हैं, बल्कि सृष्टि के प्रारम्भ में चार ऋषियों के अन्दर चारों वेदों का ज्ञान प्रकट हुआ। तारतम वाणी खुलासा १३/९२ का कथन "वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान" यही सिद्ध करता है।

और बेवरा कहया जाहेर, दुनियां और मोमिन।

दुनी पैदा जुलमत से, मोमिन असल अर्स तन॥९१॥

इन दिव्य ग्रन्थों में जीवसृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टियों का

विवरण (यथार्थ) भी स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। संसार के जीव मोह (निराकार) से उत्पन्न हुए हैं और ब्रह्मसृष्टियों के मूल तन परमधाम में परात्म के रूप में हैं।

ए जो दुनियां चौदे तबक, हक के खेलौने।

ऐसे कई पैदा होत हैं, कोई कायम न इनों में॥९२॥

चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड परब्रह्म के खेलौने की भांति है। ऐसे असंख्य ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म के एक संकेत मात्र से उत्पन्न होते हैं तथा लय हो जाते हैं। इनमें कोई भी अखण्ड नहीं होता है।

भावार्थ— अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत के सत् अंग है। अतः इस चौपाई में परब्रह्म के खेलौने का तात्पर्य अक्षर ब्रह्म के खेलौने से है। "और खेलौने जो हक के, सो दूसरा क्यों केहेलाए" (खुलासा १६/८४) में खेलौने से

आशय परमधाम के पशु-पक्षियों से है।

साँच और झूठ को, दोऊ जुदे किए बताए।

हक मोमिन बिन दुनियाँ, बैठी कुफर खेल बनाए॥९३॥

तारतम ज्ञान के प्रकाश में सत्य और झूठ दोनों को ही अलग-अलग बताया गया है। अक्षरातीत श्री राज जी एवं ब्रह्मसृष्टियों के बिना इस संसार के जीवों को यदि देखा जाये, तो वे अज्ञान, द्वेष, या नास्तिकता के खेल में मग्न हैं।

भावार्थ- पाप करते समय इस बात का भय न करना कि परमात्मा देख रहा है, एक प्रकार की नास्तिकता ही है। इस प्रकार संसार के बहुसंख्यक मानव नास्तिक ही कहे जायेंगे, भले ही वे स्वयं को कितना ही धार्मिक क्यों न सिद्ध करें।

जब खुली मुसाफ मारफत, तब हुआ बेवरा रोसन।

खेल भी हुआ जाहेर, हुए जाहेर बका मोमिन॥९४॥

जब तारतम वाणी के प्रकाश में धर्मग्रन्थों (कुरआन, वेद) का परम सत्य उजागर हो गया, तो सब कुछ विदित हो गया। इस मायावी खेल की वास्तविकता भी ज्ञात हो गयी तथा अखण्ड परमधाम एवं ब्रह्ममुनियों के विषय में भी यथार्थ बोध हो गया।

दुनियां दिल पर अबलीस, तो राह पुलसरात कही।

वजूद न छोड़े जाहेरी, तो दस भांत दोजख भई॥९५॥

संसार के जीवों पर शैतान (अज्ञान) का स्वामित्व होता है, इसलिये ये कर्मकाण्ड के मार्ग पर चलते हैं। ये बाह्य शरीर से होने वाली भक्ति (जाहिरी बन्दगी) को छोड़ नहीं पाते और उन्हें अपने अशुभ कर्मों के कारण दस

प्रकार की दोजक (नर्क) का दण्ड भुगतना पड़ता है।

भावार्थ- केवल बाह्य कर्मकाण्डों से मन पवित्र नहीं हो सकता। अपवित्र मन बुरे कार्यों में जीव को लगा देता है, जिसके परिणामस्वरूप नर्क (दुःख) भोगना पड़ता है। बड़ा कयामतनामा ५/२५ में दस प्रकार की दोजक का वर्णन किया गया है।

भिस्त दर्ई तिन को, जो हुते दुस्मन।

सबों लई थी हुज्जत, हम वारसी ले मोमिन॥९६॥

शरीयत (कर्मकाण्ड) के मार्ग पर चलने वाले जो जीव श्री प्राणनाथ जी के प्रति शत्रुता का भाव रखते थे, धाम धनी ने उन्हें भी अखण्ड मुक्ति प्रदान की। इन सभी जीवों ने यह दावा ले रखा था कि वे ही परमधाम से आये हुए ब्रह्ममुनि (मोमिन) हैं।

भावार्थ- औरंगज़ेब के सभी धर्माधिकारी, फतह मुहम्मद, पुरदल खान, बेरीसाल, हाकिमराय, रामनगर के राजा, उदयपुर के राणा आदि इसी श्रेणी में आते हैं।

मेहेर हुई दुनियां पर, पाई तिनों आठों भिस्त।

बीज बुता कछू ना हुता, करी हुकमें किसमत॥९७॥

संसार के सभी जीवों पर श्री प्राणनाथ जी की अपार कृपा हुई, जिसके फलस्वरूप बेहद मण्डल में उन्हें आठ प्रकार की बहिश्तें (मुक्ति स्थली) प्राप्त हुईं। इन जीवों में अखण्ड मुक्ति पाने का कुछ भी सामर्थ्य नहीं था, किन्तु धाम धनी की कृपा रूपी इच्छा (आदेश) से इन जीवों के सुख का भाग्योदय ही हो गया।

मेहेर करी बड़ी महंमदें, आठों भिस्तों पर।

दोऊ गिरो दोऊ असों, पोहोंचे रूहें फरिस्ते यों कर॥९८॥

श्री प्राणनाथ जी की अपार कृपा से संसार के सभी जीवों को आठ प्रकार की बहिश्तें प्राप्त हुईं। उनके तारतम ज्ञान के प्रकाश में ब्रह्मसृष्टियों ने परमधाम को प्राप्त किया तथा ईश्वरीय सृष्टि ने सत्स्वरूप (बेहद मण्डल, अक्षरधाम) को प्राप्त किया।

विशेष- जब तक जागनी लीला चल रही है, तब तक कोई भी सृष्टि अपने मुक्ति धाम में नहीं जा सकती।

कोई आए न सके अर्स में, जाकी नसल आदम निदान।

दई हैयाती सबन को, मेहेर कर सुभान॥९९॥

जीवसृष्टि का कोई भी मानव परमधाम की प्राप्ति नहीं कर सकता था, किन्तु श्री राज जी ने इन जीवों के ऊपर

ऐसी कृपा की है कि वे भी बेहद मण्डल की आठ बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति के अधिकारी बन गये।

करें हिंदू लड़ाई मुझ से, दूजे शरीयत मुसलमान।

पाया अहमद मासूक हक का, अब छोड़ो नहीं फुरकान॥१००॥

परमधाम का अलौकिक ज्ञान तथा चितवनि (ध्यान) का मार्ग देने के कारण कर्मकाण्डी हिन्दू भी मुझसे लड़ते हैं, तथा शरीयत पर चलने वाले मुसलमान भी लड़ते हैं। अब मुझे श्री राज जी की प्रियतमा श्यामा जी के चरण कमल प्राप्त हो गये हैं। अतः अब मैं कुरआन आदि धर्मग्रन्थों के रहस्यों को उजागर करना नहीं छोड़ूँगा।

भावार्थ— मल्की सूरत (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) को अहमद कहा जाता है, जिनमें श्यामा जी की आत्मा थी।

छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ सों लागी जंग।

हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग॥१०१॥

जब हिन्दू और मुसलमान दोनों ही श्री प्राणनाथ जी से विवाद कर रहे थे, उस समय महाराजा छत्रशाल जी ने संसार का कर्मकाण्ड-भरा मार्ग छोड़ दिया तथा श्री जी के आदेश को दृढ़ विश्वास के साथ शिरोधार्य किया।

किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम।

दिया महंमद मेंहेदी ने, गिरो मोमिनो हाथ हुकम॥१०२॥

परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी की वाणी सबको संशयों से रहित करने वाली है। इसके प्रकाश में सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य स्पष्ट हो गये हैं। इस प्रकार धाम धनी ने ब्रह्मसृष्टियों को अखण्ड ज्ञान द्वारा समस्त संसार को परमधाम के मार्ग पर चलाने का निर्देश दिया।

प्रकरण ॥१॥ चौपाई ॥१०२॥

खुलासा गिरो दीन का

इस प्रकरण में यह स्पष्ट किया गया है कि परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों का वास्तविक धर्म क्या है। इसमें इस तथ्य को दर्शाया गया है कि ब्रह्मसृष्टियों को हिन्दू-मुस्लिम आदि के कर्मकाण्डों को छोड़कर परमधाम के अलौकिक प्रेम मार्ग का अवलम्बन करना चाहिए। यही उनका वास्तविक धर्म (दीन) है, जो इस प्रकरण की अन्तिम चौपाई से विदित होता है—

महामत कहे ए मोमिनो, राह बका ल्योगे तुम।

जिनका दिल अर्स कह्या, औरों ना निकसे मुख दम॥

इसी चौपाई का आचरण हमारी आत्मा को जाग्रत करेगा और धनी का सुख देगा।

ए देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान।

हक हादी गिरो अर्स की, सक भान कराऊं पेहेचान॥१॥

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे साथ जी! परब्रह्म के आदेश से अवतरित कुरआन-वेद आदि धर्मग्रन्थों में ब्रह्मसृष्टियों के धर्माचरण का उल्लेख है, जिसे मैं स्पष्ट कर रहा हूँ। परमधाम में श्री राजश्यामा जी तथा ब्रह्मसृष्टियों का स्वरूप विद्यमान है। उनके सम्बन्ध में जो भी भ्रान्तियाँ हैं, उनका निवारण करके यथार्थ सत्य की पहचान कराता हूँ।

हक सूरत हादी साहेद, मसहूद है उमत।

सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत॥२॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने परब्रह्म के अति सुन्दर किशोर स्वरूप की साक्षी दी है और ब्रह्मसृष्टियों ने इस

परम सत्य को आत्मसात् किया है। इन ब्रह्ममुनियों को श्री राज जी की खिल्वत तथा कियामत के समय में होने वाली जागनी लीला का विधिवत ज्ञान है।

हक बका में जेता मता, सो छिपे ना मोमिनो से।

खेल में आए तो भी अर्स दिल, ए लिख्या फुरमान में॥३॥

स्वलीला अद्वैत परमधाम में जो भी अलौकिक निधियाँ (प्रेम, शोभा, श्रृंगार, लीला आदि) हैं, उनका यथार्थ ज्ञान ब्रह्मात्माओं के पास हैं। कुरआन में यह बात लिखी हुई है कि इस मायावी जगत् में आने पर भी उनका हृदय धाम ही कहा गया है।

लिख्या नामे मेयराज में, हरफ नब्बे हजार।

तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार॥४॥

मेयराजनामा में लिखा है कि मुहम्मद स.अ.व. ने अल्लाह तआला का दीदार किया और उनसे नब्बे हजार हरुफ सुने। श्री राज जी ने तीनों स्वरूपों (बशरी, मल्की, तथा हकी) को तीस-तीस हजार हरुफों के भेदों को उजागर करने का अधिकार दिया।

भावार्थ- मेयराजनामा पार: १७ सूर १५ सूर बनी इस्राईल आयत १- "सुब्हानल्ल जी अिसरा.....बसीरु" अर्थात् वह पाक जात जो अपने बन्दे (मुहम्मद) को रातों-रात मस्जिद-उल-हराम (काबा) से मस्जिद-ए-अक्सा तक ले गया, जिसके चारों ओर हमने बरकतें (सौभाग्य) रखा है कि हम उनको अपनी कुदरत के कुछ नमूने दिखायें।

एक जाहेर किए बसरिँ, दूजे रखे मलकी पर।

तीसरे सूरत हकी पे, सो गुझ खोल करसी फजर॥५॥

बशरी सूरत मुहम्मद स.अ.व. ने कुरआन के तीस हजार हरुफों को प्रकट किया। शेष तीस हजार हरुफ मल्की सूरत सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के लिये छोड़ दिये गये। मारिफत के तीस हजार हरुफों को उजागर करने की शोभा हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के लिये थी। यह उनकी ही शोभा है कि वे मारिफत के गुह्य रहस्यों को खोलकर ज्ञान का उजाला कर देंगे।

कही सूरत तीन रसूल की, हुई तीनों पर इनायत हक।

किया तीनों का बेवरा, हरफ नब्बे हजार बेसक॥६॥

मुहम्मद साहिब की तीन सूरतें कही गयी हैं। इन तीनों पर अक्षरातीत श्री राज जी की असीम कृपा बरसी।

निश्चय ही इन तीनों स्वरूपों ने नब्बे हजार हरुफों का भेद संसार में प्रकट किया।

**राह चलाई बसरिँ फुरमानें, दर्ई कुंजी मलकी हकीकत।
हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत॥७॥**

मुहम्मद स.अ.व. ने कुरआन के रूप में शरीयत का ज्ञान दिया। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने सभी धर्मग्रन्थों को स्पष्ट करने के लिये तारतम ज्ञान रूपी कुञ्जी दी और हकीकत (सत्य) का मार्ग बताया। श्री प्राणनाथ जी ने परब्रह्म के अति सुन्दर किशोर स्वरूप का वर्णन किया और मारिफत (परमसत्य) का ज्ञान देकर अज्ञानता का अन्धकार दूर किया तथा दिन का उजाला फैला दिया।

ए अव्वल कहया रसूलें, होसी जाहेर बखत कयामत।

मता सब मेयराज का, करी जाहेर गुझ खिलवत॥८॥

रसूल मुहम्मद स.अ.व. ने पहले ही कह दिया था कि कियामत के समय मेयराज की गुह्यतम बातें उजागर हो जायेंगी। हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी ने परमधाम की खिल्वत की उन गुह्यतम बातों को तारतम वाणी द्वारा प्रकट किया, जिनके विषय में आज दिन तक कोई भी नहीं जानता था।

ए जो कागद वेद कतेब के, तामें जरा न हुकम बिन।

दुनियां सब तिन पर खड़ी, ए जो अठारे बरन॥९॥

वेद-कतेब के रूप में जो भी धर्मग्रन्थ हैं, उनमें यह बात दर्शायी गयी है कि श्री राज जी की आदेश शक्ति के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है, अर्थात् उनके आदेश से

ही सब कुछ होता है। हिन्दुओं के अठारह वर्ण तथा संसार के अन्य सभी लोग इन्हीं धर्मग्रन्थों का निर्देश मानते हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के आधार पर यह कहना उचित नहीं लगता कि सभी धर्मग्रन्थों में परब्रह्म के आदेश से ही सब कुछ लिखा गया है। तौरेत, इंजील, तथा जम्बूर में कुछ ऐसी भी बातें हैं, जो सत्य के अनुकूल नहीं हैं। यहाँ प्रश्न होता है कि परब्रह्म मिथ्या बाते क्यों लिखवायेंगे?

सत्य स्वरूप परब्रह्म का आदेश सत्य के अनुकूल ही होगा। ऋतम्भरा प्रज्ञा से रहित मनुष्यकृत ग्रन्थों में मिथ्या बातों का होना स्वाभाविक है। पौराणिक दृष्टि से हिन्दुओं के चार वर्णों से १४ उपवर्ण बनते हैं। इस प्रकार कुल १८ वर्ण होते हैं, किन्तु वैदिक दृष्टि से मात्र ४ ही

वर्ण होते हैं जो गुण, कर्म, और स्वभाव के अनुसार हैं, जन्म के आधार पर नहीं।

कलाम अल्ला जो फुरमान, सो इन सबसे न्यारा जान।

ल्याया पैगंमर आखिरी, हक के कौल परवान॥१०॥

अल्लाह द्वारा कहा हुआ कुरआन इन सभी धर्मग्रन्थों से अलग है। इस कुरआन को लाने वाले आखिरी पैगम्बर मुहम्मद स.अ.व. हैं, जिन्होंने खुदा के कहे हुए वचनों को जाहिर किया है।

कहया महंमद का सब हुआ, जो काफर करते थे रद।

फिरवले सबन पर, महंमद के सब्द॥११॥

काफिर लोग मुहम्मद स.अ.व. के वचनों को नहीं मानते थे, किन्तु उनका प्रत्येक कथन सत्य सिद्ध हुआ। श्री

प्राणनाथ जी द्वारा मुहम्मद साहिब के कथनों का जब गुह्य अर्थ स्पष्ट हो गया, तो वे शब्द सबके ऊपर छा गये अर्थात् उन्हें सबने स्वीकार कर लिया।

इत मुनाफक खतरा ल्यावते, जो कुराने कही कयामत।

सो खास रूहें मोमिन आए, जाके दिल अर्स न्यामत॥१२॥

कुरआन में ग्यारहवीं सदी के पश्चात् कियामत के आने का प्रसंग है, किन्तु मिथ्याचारी लोग इस बात पर संशय करते थे। अब उसी कथन के अनुसार परमधाम से ब्रह्मसृष्टियाँ आयी हैं, जिनके धाम-हृदय में परमधाम की सभी निधियाँ (प्रेम, ज्ञान, आनन्द, एकत्व, अटूट सम्बन्ध आदि) विद्यमान हैं।

ए देखो तुम बेवरा, कहावें बंदे महंमद।

सहूर ना करे बातून, कोई न देखे छोड़ हद॥१३॥

हे साथ जी! आप इस बात को देखिए कि ये मुसलमान स्वयं को मुहम्मद स.अ.व. का अनुयायी तो कहते हैं, किन्तु कुरआन के शब्दों के गुह्य (बातिनी) अर्थ का चिन्तन नहीं करते। कोई भी मुसलमान निराकार से परे की बात नहीं सोचता।

ए दुनियाँ किन पैदा करी, कौन ल्याया हूद तोफान।

किन राखी गिरो कोहतूर तले, किन डुबाई सब जहान॥१४॥

इस संसार को किसने पैदा किया? हूद के घर तूफान कौन लाया? उस तूफान में किसने ब्रह्मसृष्टियों को कोहतूर पर्वत के नीचे रखकर रक्षा की तथा किसने शेष सारी दुनिया को डुबो दिया?

किन फेर दुनी पैदा करी, फेर कौन ल्याया नूह तोफान।

किन ऐसी किस्ती कर तारी गिरो, किन डुबाई सब कुफरान॥१५॥

पुनः इस संसार को किसने पैदा किया? पुनः नूह के घर तूफान कौन लाया? किसने ब्रह्मसृष्टियों को किस्ती में बैठाकर तूफान से रक्षा की तथा समस्त संसार को डुबो दिया?

भावार्थ- उपरोक्त दोनों चौपाइयों का सार तत्त्व यही है कि यह सारी लीला अल्लाह तआला के आदेश से उन्हीं के स्वरूप श्री कृष्ण जी द्वारा हुई। उन्होंने ही गोवर्धन (कोहतूर) के नीचे ब्रह्मसृष्टियों की रक्षा की तथा योगमाया रूपी नाव में बचाकर रास लीला की।

तीन बेटे नूह नबीय के, बेर तीसरी दुनी इनसे।

हक फुरमान गिरो ऊपर, महंमद ल्याए इनमें॥१६॥

नूह नबी के तीन पुत्र श्याम, हाम, तथा याफिस कहे गये हैं। तीसरी बार, इनसे ही दुनिया के प्राणियों की उत्पत्ति हुई। इस दुनिया में ही ब्रह्मसृष्टियों को साक्षी देने के लिये मुहम्मद स.अ.व. परब्रह्म के आदेश पत्र कुरआन को लेकर आये।

कहया स्याम बाप उन लोकों का, रूम फारस आरबन।
सब तुरकों बाप याफिस, हाम बाप हिंदुस्तान सबन॥१७॥

श्याम (साम) को रोम, फारस (ईरान), तथा अरब के लोगों का पिता कहा जाता है। याफिस को तुर्किस्तान के मानवों का जनक माना जाता है, तो हाम (बलदाऊ जी) को हिन्दुस्तान के मानव-समूह का पिता कहा जाता है।

कुरान हकीकत न खुली, ना स्याम रसूल पेहेचान।

ना पावें महंमद गिरो को, जो सौ साल पढ़े कुरान॥१८॥

शरीयत की राह पर चलने वाले इन मुसलमानों को आज तक न तो कुरआन की यथार्थता का पता चला और न इन्हें साम तथा मुहम्मद स.अ.व. की ही पहचान हुई। यदि ये लगातार सौ साल तक भी कुरआन पढ़ते रहें, तो भी इन्हें यह पता नहीं चल सकता कि कियामत के समय आने वाले ब्रह्ममुनि (मोमिन) तथा उनके हादी (मुहम्मद) कौन हैं।

भावार्थ- इस चौपाई में मुहम्मद का तात्पर्य श्यामा जी से है।

ए सब मुखथें कहें महंमद को, ए अव्वल ए आखिर।

बड़े काम नजीकी हक के, ए किन किया महंमद बिगर॥१९॥

सभी मुसलमान अपने मुख से मुहम्मद स.अ.व. के विषय में यह तो कहते हैं कि मुहम्मद ही अक्वल में थे तथा आखिर में भी वही होंगे। प्रश्न यह है कि मुहम्मद के तीनों स्वरूपों के अतिरिक्त अन्य कौन हो सकता है, जिसने परब्रह्म के ब्राह्मी कार्यों को किया?

भावार्थ— जिस प्रकार कुछ कट्टरपन्थी लोगों ने अल्लाह को मात्र मुसलमानों का परमात्मा बना दिया है, उसी प्रकार "मुहम्मद" को भी मात्र मुसलमानों का एक व्यक्ति विशेष पैगम्बर बना दिया है, जो अन्य मतावलम्बियों के प्रति कटु भावना रखता है।

वास्तविकता यह है कि मुहम्मद का तात्पर्य है— अनन्त महिमा वाला। जैसे सूर्य से दाहकता को पृथक नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार परब्रह्म से उनकी आदेश शक्ति को भी पृथक नहीं किया जा सकता। यद्यपि

स्वलीला अद्वैत परमधाम में परब्रह्म के अतिरिक्त अन्य कोई भी दूसरा नहीं है, किन्तु उनके अंग रूप अक्षर ब्रह्म एवं आनन्द अंग का भी अस्तित्व है। परमधाम से बाहर कालमाया या योगमाया में परब्रह्म के आदेश के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

यही कारण है कि इस जागनी लीला में परब्रह्म के आदेश स्वरूप ने तीन स्वरूप धारण किये— १. सन्देश वाहक के रूप में अरब में २. तारतम ज्ञान की कुञ्जी लेकर नवतनपुरी में ३. परमधाम का ज्ञान लेकर श्री पद्मावतीपुरी धाम में। इन तीनों स्वरूपों को ही कुरआन की भाषा में अव्वल, मध्य, और आखिर में मुहम्मद का आना कहा गया है।

एक खुदा हक महंमद, हर जातें पूजें धर नाऊँ।

सो दुनियाँ में या बिना, कोई नहीं कित काऊँ॥२०॥

परब्रह्म एक है तथा उनकी आदेश शक्ति सत्य है। इस तथ्य को सभी जातियों तथा मतों के अनुयायी अलग-अलग नामों से पूजा करते हैं। इस प्रकार देखा जाये तो इस संसार में परब्रह्म और उनके आदेश स्वरूप के अतिरिक्त अन्य कहीं भी कुछ नहीं है।

भावार्थ- वेशभूषा, भाषा, और रीति-रिवाजों की विभिन्नता के कारण सभी मतों में द्वेष-भाव बना रहता है। जिस प्रकार परब्रह्म को अल्लाह तआला या The Supreme Truth God कहने से कोई अन्तर नहीं पड़ता, उसी प्रकार आदेश शक्ति या मुहम्मद कहने पर भी कोई भेद नहीं समझना चाहिए। मुहम्मद को किसी विशेष वर्ग, भाषा, स्थान, व्यक्ति, या सम्प्रदाय (मजहब)

के बन्धन में नहीं बाँधना चाहिए।

ओ खासी गिरो और महंमद, आए दो बेर मांहें जहूदन।

गिरो बचाई काफर डुबाए, ए काम होए ना महंमद बिन॥२१॥

ब्रह्मसृष्टियाँ और श्री कृष्ण स्वरूप मुहम्मद दो बार (व्रज-रास में) हिन्दुओं में आये। उसमें उन्होंने ब्रह्मात्माओं की रक्षा की तथा काफिरों को डुबो दिया। यह काम मुहम्मद स्वरूप श्री कृष्ण जी के बिना अन्य कोई भी नहीं कर सकता।

सब जातें नाम जुदे धरे, और सबका खावंद एक।

सबको बंदगी याही की, पीछे लड़े बिन पाए विवेक॥२२॥

संसार के सभी लोगों का परमात्मा एक ही है और उनका आदेश स्वरूप भी एक ही है, जो अलग-अलग

रूपों (तीनों सूरतों) में प्रकट हुआ। सबने परब्रह्म और उनके आदेश स्वरूप का अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग नाम रख लिया है। सभी को अपने आत्म-कल्याण के लिये उसी सच्चिदानन्द परब्रह्म की भक्ति करनी है, किन्तु विवेकहीन होने के कारण आपस में लड़ते रहते हैं।

रूहें अर्स से लैलत कदर में, हक हुकमें उतरे बेर तीन।

सुध खास गिरो न महंमद, कहे हम महंमद दीन॥२३॥

अक्षरातीत श्री राज जी के आदेश से परमधाम की आत्मायें इस मायावी जगत (इस प्रकार की लम्बी रात्रि) में तीन बार (व्रज, रास, तथा जागनी में) अवतरित हुईं। शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमानों को न तो ब्रह्मसृष्टियों की ही पहचान है और न मुहम्मद की, फिर

भी कहते हैं कि हम ही मुहम्मद स.अ.व. के दर्शाये हुए इस्लाम (शान्ति मार्ग) धर्म के अनुयायी हैं।

भावार्थ- यद्यपि योगमाया के ब्रह्माण्ड को मायावी जगत नहीं कहा जा सकता, किन्तु पूर्ण जाग्रति न होने से उसे भी रात्रि की लीला के अन्तर्गत माना गया है। "कछू नींद कछू जाग्रत भए, जोगमाया के सिनगार जो कहे" (प्रकास हि. ३७/३९) का यह कथन यही सिद्ध करता है।

लैल तुल कद्र का अर्थ होता है- इस प्रकार की लम्बी रात्रि जिसमें परमधाम की आत्मायें अवतरित हुईं।

एक बेर गिरो हूद घर, बेर दूजी किस्ती पर।

तीसरी बेर मास हजार लों, सदी अग्यारहीं हिसाब फजर॥२४॥

पहली बार ब्रह्मसृष्टियाँ ब्रजमण्डल (हूद पैगम्बर के घर) में आयीं। दूसरी बार योगमाया की नाव से नित्य वृन्दावन

में पहुँचीं। तीसरी बार हजार मास (८३ वर्ष और ४ माह अर्थात् १६३८-१७२२) तक लैल-तअल-कद्र की रात्रि में रहीं। ग्यारहवीं सदी में तारतम ज्ञान का सूर्य उगने से अन्धकार दूर हुआ और ज्ञान के उजाले (फज्र) की लीला हुई।

जाहेर पहचान कही रसूले, गिरो खासी और कयामत।

सहूर करें दिल अकलें, तो दोऊ पावें हकीकत॥२५॥

मुहम्मद स.अ.व. ने ब्रह्मसृष्टियों तथा कियामत की स्पष्ट पहचान दी है। यदि संसार के लोग शुद्ध हृदय एवं निष्पक्ष बुद्धि से विचार करें, तो इन दोनों की वास्तविकता को जान सकते हैं।

हजार साल कहे दुनी के, सो खुदाए का दिन एक।

लैलत कदर का टूक तीसरा, कहया हजार महीने से वैसेक॥२६॥

इस संसार के हजार वर्षों के बराबर खुदा का एक दिन होता है। लैल-तअल-कद्र के इस तीसरे भाग (जागनी लीला) को हजार महीने से भी अधिक विशेषता वाला कहा गया है।

सौ साल रात अग्यारहीं लग, एक दिन के साल हजार।

अग्यारैं सदी अंत फजर, एही गिरो है सिरदार॥२७॥

ग्यारहवीं सदी के सौ वर्ष होते हैं, तथा दसवीं तक दुनिया के १००० वर्ष बीत जाते हैं जो खुदा के एक दिन के बराबर होते हैं। ग्यारहवीं सदी को रात कहा गया है, जिसके अन्त में अर्थात् वि.सं. १७३५ के पश्चात् ज्ञान के उजाले (प्रातःकाल) की लीला होनी है। यह लीला

ब्रह्मात्माओं के प्रियतम श्री प्राणनाथ जी द्वारा की जायेगी।

रूहें गिरो तब इत आई नहीं, तो यों करी सरत।

कहया खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत॥२८॥

जब अरब की धरती पर मुहम्मद स.अ.व. का अवतरण हुआ था, उस समय परमधाम की आत्मायें अरब में नहीं आयी थीं। इसलिये मेयराज में अक्षरातीत परब्रह्म ने मुहम्मद स.अ.व. से वायदा किया कि कल के दिन, अर्थात् ११०० वर्ष व्यतीत होने के पश्चात्, जब कियामत का समय होगा, उस समय मैं आऊँगा।

भावार्थ— "दसवीं ईसा अग्यारहीं ईमाम, बारहीं सदी फजर तमाम" (बड़ा कयामतनामा १/१३) के कथन के आधार पर श्यामा जी के स्वरूप में भी श्री राज जी थे,

किन्तु वे पूर्ण रूप से उजागर नहीं हुए थे। यह लीला प्रत्यक्ष रूप से इमाम महदी के स्वरूप में ग्यारहवीं सदी में होनी थी, इसलिये यहाँ ग्यारहवीं सदी का वर्णन आया है। "अग्यारैं सदी मिने, मेरी बातिन खुली नजर" (खुलासा १७/३८) का कथन भी इसी ओर संकेत करता है।

जब एक रात एक दिन हुआ, सो एही फरदा कयामत।

अहेल किताब मोमिन कहे, हादी कुरान सूरत॥२९॥

जब सौ वर्ष की एक रात्रि तथा १००० वर्षों का एक दिन व्यतीत हुआ, तो वह समय ग्यारहवीं सदी के पश्चात् कल (फरदा रोज) का दिन कहलाता है, जिसमें कियामत का आना कहा गया है। इसी समय हादी श्री प्राणनाथ जी द्वारा कुरआन के गुह्यतम रहस्यों को प्रकट

किया जाना है। उनके अनुयायी ब्रह्ममुनियों को ही कुरआन के ज्ञान का वास्तविक उत्तराधिकारी कहा गया है।

आए वसीयत नामें मक्के से, उठ्या कुरान दुनी से बरकत।

सो अग्यारै सदी अंत उठसी, रूहें हादी कुरान सोहोबत॥३०॥

मक्का से चार वसीयतनामों आये, जिनमें यह लिखा था कि यहाँ से कुरआन उठ गया है तथा उसकी बरकत (लाभार्थ कृपा) भी चली गयी है। कुरआन में यह बात संकेतों में कही गयी है कि ईमान न रहने पर ग्यारहवीं सदी के अन्त में उसका तत्वज्ञान तथा बरकत उठ जायेगी, और ब्रह्मसृष्टियों तथा हादी श्री प्राणनाथ जी के पास चली जायेगी।

भावार्थ— कुरआन के सि. ३० सू. फज्र आ. १-२ में

कहा गया है- "वल्फजरि व लयालिन अशरिन" (२)
अर्थात् सुब्ह (प्रातःकाल) की कस्म (सौगन्ध) और दस
रातों (एक हज़ार साल) की कस्म (सौगन्धें)।

झण्डा ईसे मेहेंदी ने, खड़ा किया है जित।

सो आई इत न्यामतेँ, हक हकीकत मारफत॥३१॥

परब्रह्म के अंग श्री श्यामा जी (श्री देवचन्द्र जी) ने
अपने दूसरे स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के रूप में श्री
पद्मावती पुरी धाम में निजानन्द का ध्वज फहराया है।
वहाँ पर कुरआन की सारी निधियों के साथ परब्रह्म की
पहचान देने वाला सत्य तथा परमसत्य (हकीकत-
मारिफत) का तत्वज्ञान भी अवतरित हो गया है।

कही थी बरकत दुनी में, सो दुनियां माफक ईमान।

सो भी जाहेर ठौर सबे उठे, हिन्दु या मुसलमान॥३२॥

सभी धर्मग्रन्थों में संसार के लोगों के लिये परब्रह्म की कृपा का वर्णन है, किन्तु यह कृपा तो सांसारिक लोगों के विश्वास (ईमान) पर ही निर्भर होती है। जब सबका परमात्मा पर विश्वास ही नहीं रहा, तो कृपा कहाँ से बरसती? इस प्रकार हिन्दुओं तथा मुसलमानों के सभी धार्मिक स्थानों से कृपा हट गयी और एकमात्र श्री प्राणनाथ जी में केन्द्रीभूत हो गयी।

भावार्थ— हिन्दू अयोध्या, मथुरा, काशी, उज्जैन, हरिद्वार आदि में परब्रह्म की कृपा ढूँढा करते थे। इसी प्रकार मुस्लिम लोग मक्का-मदीना में अल्लाह की बरकत खोजते थे। अक्षरातीत परब्रह्म द्वारा श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में लीला करने से सारी कृपा के स्रोत श्री जी हो

गये और सबको उनके विश्वास के अनुसार फल मिला।
उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण में कथित "जाहेर ठौर
सबे उठे" का यही आशय है।

जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर।

खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर॥३३॥

जब ईश्वरीय ग्रन्थ (कुरआन, वेद) के गुह्य तत्त्वज्ञान के
साथ श्री प्राणनाथ जी ब्रह्मसृष्टियों को लेकर परमधाम
चले जायेंगे, तो यह दुनिया भला क्यों रहेगी। जिन
ब्रह्मात्माओं को दिखाने के लिये यह मायावी खेल बनाया
गया है, वे अपने समय पर ही जाग्रत होंगी।

भावार्थ- इस चौपाई से उस मान्यता का खण्डन होता
है, जिसमें यह कहा जाता है कि श्री प्राणनाथ जी की
अन्तर्धान लीला के पश्चात् सभी ब्रह्मसृष्टियाँ परमधाम

चली गयीं। यदि ऐसा होता, तो महाराज छत्रसाल जी, लालदास जी, और मुकुन्ददास जी क्या थे? क्या वे ब्रह्मसृष्टि नहीं थे? यदि इन्हें छोड़कर जाने की बात मानी जाये, तो "पौढ़े भेले जागसी भेले" (कलस हि. २३/२९) का सिद्धान्त ही खण्डित होता है।

देखो तीन बेर गिरो वास्ते, हक हुए मेहेरबान।

राख लई गिरो पनाह में, डुबाए दई सब जहान॥३४॥

हे साथ जी! देखिए कि प्रियतम अक्षरातीत ने तीन बार ब्रह्मात्माओं पर अपार कृपा की है। उन्होंने व्रज में इन्द्रकोप के समय, तथा व्रज से रास में जाते समय ब्रह्मात्माओं को अपनी छत्रछाया में रखकर रक्षा की तथा सारे संसार को प्रलय में डुबो दिया। तीसरी बार इस जागनी लीला में परमधाम का ज्ञान देकर वहाँ के सुखों

का प्रत्यक्ष अनुभव करा रहे हैं।

रसूल आए जिन बखत, कंगूरा गिरया बुतखाने का।
तब लोगों कहया रसूल का, जाहेर होने का माजजा॥३५॥
मुहम्मद स.अ.व. जिस समय अरब में अवतरित हुए,
उस समय मूर्तिस्थल (काबे) की मीनार का कलश
(कँगूरा) गिर गया। उस समय वहाँ के लोगों ने कहा कि
यह चमत्कार संकेत करता है कि मुहम्मद स.अ.व.
जाहिर हो गये हैं।

अब देखो माजजा रब आखिरी, सब उठाए सिजदे ठौर।
रोसन हुआ दिन अर्स बका, कोई ठौर रही ना सिजदे और॥३६॥
अब अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के प्रकटन से
सम्बन्धित यह आखिरत का सबसे बड़ा चमत्कार है कि

अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उग जाने से दिन जैसा उजाला फैल गया है तथा संशय रूपी रात्रि समाप्त हो गयी है। अब तक के प्रसिद्ध सभी धर्म स्थानों की महत्ता भी समाप्त हो गयी है, जिससे अब देवी-देवताओं के किसी भी मन्दिर, मस्जिद, या चर्चों में भक्ति (बन्दगी) करने का महत्व नहीं रह गया है।

सिपारे ओगनतीस में, इन विध लिखे कलाम।

अर्स बका पर सिजदा, करावसी इमाम॥३७॥

कुरआन के उन्तीसवें सिपारे में यह बात लिखी है कि जब आखरुल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां प्रकट होंगे, तो वे मात्र अखण्ड परमधाम के प्रति सबको सज़्दा करायेंगे अर्थात् मूल मिलावे में ध्यान करायेंगे।

और आगे बुत बोले हुते, सांचा आखिरी पैगंमर।

फुरमान ल्याया हक का, तुम झूठे हो काफर॥३८॥

मुहम्मद स.अ.व. के प्रकटन के समय मूर्तियों से यह आवाज आयी थी कि ये खुदा के आखिरी पैगम्बर हैं तथा पूर्णतया सच्चे हैं। ये खुदा से पैगाम के रूप में कुरआन लेकर आये हैं। इनका विरोध करने वाले तुम लोग झूठे हो, काफिर हो।

अब बेत अल्ला पुकारत, भेजी साहेदी नामे वसीयत।

तो भी दुनी ना देखहीं, जो ऐसे सौं खाय लिखे सखत॥३९॥

अब मक्का-मदीना से आने वाले चारों वसीयतनामों पुकार-पुकार कर श्री प्राणनाथ जी (आखरूल इमाम मुहम्मद महदी) की साक्षी दे रहे हैं। उन वसीयतनामों में अत्यधिक कठोर सौगन्ध (कसम) खाकर कियामत तथा

श्री प्राणनाथ जी के प्रकटन की बात कही गयी है, फिर भी आश्चर्य है कि संसार के लोग उसे पढ़कर भी विचार नहीं कर रहे हैं।

मक्के मदीने दीन का, खड़ा था निसान।

सो हुआ फुरमाया हक का, करसी दज्जाल कुफरान॥४०॥

मक्का-मदीना में मुहम्मद स.अ.व. ने धर्म का झण्डा खड़ा किया था और यह कहा था कि यहाँ पर आने वाले समय में शैतान पाप फैलायेगा। कुरआन में परब्रह्म का सब कुछ कहा हुआ सत्य सिद्ध हुआ।

तो जोरा किया दज्जाल ने, लोकों छुड़ाए दिया आकीन।

अग्यारै सदी के आखिर, रहया न किन का दीन॥४१॥

अज्ञान रूपी दज्जाल ने अपनी शक्ति दर्शायी और परब्रह्म

के प्रति लोगों के विश्वास को समाप्त कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि ग्यारहवीं सदी के अन्त तक कोई भी मुस्लिम अपने धर्म पर खड़ा न रह सका।

भावार्थ- यद्यपि ग्यारहवीं सदी के अन्त में अरब के सभी लोग स्वयं को इस्लाम धर्म का ही अनुयायी मानते थे, किन्तु धर्माचरण से कोसों दूर थे। वे मात्र शरीयत को ही धर्म का पालन करना समझते थे। माँसाहार, दुराचार, और निर्बलों पर अत्याचार करने वाला कोई भी व्यक्ति धार्मिक नहीं कहला सकता, भले ही वह शरीयत की बन्दगी का कितना भी दिखावा क्यों न करे।

गजब हुआ दुनी पर, खँच लिया फुरमान।

हादी भेजे नामे वसीयत, इत रहया न किनों ईमान॥४२॥

परब्रह्म की आश्चर्यचकित करने वाली ऐसी विचित्र लीला

हुई कि उन्होंने कुरआन की सारी शक्ति खींच ली। इस बात की साक्षी देने के लिये श्री प्राणनाथ जी ने औरंगज़ेब बादशाह के पास मक्का से आये हुए वसीयतनामों को भिजवाया, किन्तु उसके किसी भी दरबारी में वास्तविक धर्म पर विश्वास ही नहीं रहा। वे मात्र नाम के लिये मुस्लिम बने रहे।

भावार्थ— कुरआन की शक्ति यही है कि वह एक परब्रह्म के प्रति अटूट आस्था दिलाकर उसके प्रति प्रेम का मार्ग दर्शाता है तथा उसकी न्यायकारिता की स्मृति दिलाये रखता है कि यदि मैंने कोई बुरा कर्म किया तो मुझे अवश्य ही दण्ड मिलेगा। जब कुरआन की शक्ति खींच ली गयी, तो अरब के मुस्लिम लोग भले ही दिन-रात कुरआन पढ़ते रहे, किन्तु उनमें परब्रह्म के प्रति आस्था, अटूट प्रेम, तथा न्याय पर विश्वास की भावना नहीं रह

गयी, और ११वीं सदी के पश्चात् उनका विश्वविजय का रथ रुक गया। परिणाम स्वरूप, उनका राजनैतिक पतन प्रारम्भ हो गया। कुरआन की शक्ति का तात्पर्य उसकी शिक्षाओं के आचरण में है। यही धर्म है और धर्माचरण करने वाला सदा विजयी होता है। वेदज्ञ रावण अन्यायकारी था। केवल शब्द-ज्ञान में शक्ति तब तक नहीं हो सकती, जब तक धर्म का आचरण न किया जाये। मुस्लिम बादशाहों का पतन इसीलिए हुआ।

आए देव फुरमाए हक के, बीच हिंदुस्तान।

करो सबों पर अदल, मार दूर करो सैतान॥४३॥

प्रियतम अक्षरातीत के भेजे हुए सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी भारत में आये। उन्हें धाम धनी ने यह आदेश देकर भेजा कि अज्ञान रूपी शैतान को मारकर सबका न्याय

कीजिए, अर्थात् सत्य-असत्य का भेद बताकर सबको सत्य मार्ग पर चलाइये।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में "देव" शब्द का तात्पर्य श्री देवचन्द्र जी (श्यामा जी) से लिया जाना उचित है। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी के ये कथन देखने योग्य हैं-

सुंदरबाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी।

भेजे धनिएं आवेस देय के, अब न्यारे न होए एक खिन जी॥

प्रकास हि. २/२

दज्जाल मार के एक दिन, आए रूह अल्ला करसी जब।

खुलासा २/७७

ऐसी करी बीच आलम, रूह अल्ला के इलम।

मारया कुली दज्जाल को, जो करता था जुलम॥

मारफत सागर २/२६

आया बीच हिंदुअन के, मुसाफ हक हुकम।

सो खलक रानी गई, जिन छोड़े हक हादी कदम॥४४॥

परब्रह्म के आदेश से कुरआन का तत्व ज्ञान (हकीकत, मारिफत) हिन्दू तन में प्रकट होने वाले श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी के अन्दर आ गया। जिन्होंने परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के ऊपर विश्वास नहीं किया, वे नष्ट हो गये।

भावार्थ- कुरआन के तीस सिपारों का भाव सनन्ध ग्रन्थ के तीस प्रकरणों में अवतरित हो गया। इसे ही कुरआन का हिन्दुस्तान में आना कहते हैं। यद्यपि सनन्ध ग्रन्थ में कुल ४३ प्रकरण हैं, किन्तु १३ प्रकरण कलश हिन्दुस्तानी के हैं जो वेद पक्ष का तत्वज्ञान दर्शाते हैं।

फुरमान दूजा ल्याया सुकदेव, सो ढांप्या था एते दिन।

सो प्रगट्या अपने समें पर, हुआ हिंदुओं में रोसन॥४५॥

शुकदेव जी परब्रह्म के आदेश पत्र के रूप में श्रीमद्भागवत् लेकर आये थे, जिसका तत्त्वज्ञान अब तक छिपा पड़ा था। वह भी श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी द्वारा उचित समय पर हिन्दुओं में प्रकाशित हो गया।

भावार्थ- रास, प्रकाश, कलश, तथा कीर्तन ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत् के तत्त्वज्ञान (बेहद मण्डल के सुख) को दर्शाया गया है। इसमें ब्रह्मसृष्टियों की साक्षी थी, किन्तु तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण संसार के जीव समझ नहीं पाते थे।

परमहंस जाहेर भए, जाहेर धाम धनी अखण्ड।

कुली कालिंगा मारिया, मुक्त दर्ई ब्रह्मांड॥४६॥

अब इस ग्यारहवीं सदी में परमधाम के ब्रह्ममुनि, जो ब्रज-रास की लीला में थे, प्रकट हो गये हैं। इनके ही साथ स्वयं सच्चिदानन्द परब्रह्म अपने आवेश स्वरूप से श्री प्राणनाथ जी के रूप में आ चुके हैं। उन्होंने तारतम ज्ञान से कलियुग रूपी अज्ञान (शैतान) को नष्ट कर दिया है तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के जीवों को अखण्ड मुक्ति भी प्रदान कर दी है।

द्रष्टव्य— इस ब्रह्माण्ड के सभी जीव सातवें दिन की लीला में अखण्ड मुक्ति प्राप्त करेंगे।

झूठ अमल सबे उठे, आए साहेब बीच हिंदुअन।

दाभा जाहेर हुई मक्के से, आए हिंद में मेंहेदी मोमिन॥४७॥

सच्चिदानन्द परब्रह्म के हिन्दू तन में आने से हिन्दुओं के मत-पन्थों में प्रचलित झूठ आधारित कर्मकाण्ड समाप्त

हो गये। जब भारत में श्री प्राणनाथ जी एवं ब्रह्ममुनियों का प्रकटन हो गया, तो मक्का के लोगों में पशु वृत्ति (मिथ्याचारिता) फैल गयी।

दो बेर डुबाई जहान को, गिरो दो बेर बचाई तोफान।

तीसरी बेर दुनी नई कर, आखिर गिरो पर ल्याए फुरमान॥४८॥

परब्रह्म ने दो बार इस संसार का प्रलय कर दिया तथा ब्रह्मसृष्टियों को दोनों बार बचा लिया। पुनः तीसरी बार इस नये संसार की रचना की और ब्रह्मसृष्टियों के लिये तारतम वाणी लेकर स्वयं आये।

भावार्थ- "फुरमान" का अर्थ होता है- परब्रह्म के आदेश से अवतरित ज्ञान। "साहेब के हुकमें एह बानी, गावत हैं महामत" (किरंतन ५९/८) के इस कथन से यही स्पष्ट होता है कि श्री मुखवाणी धनी की इच्छा

(आदेश) से श्री महामति जी के तन से प्रकट हुई है, किन्तु इसे कहने वाले स्वयं अक्षरातीत हैं। तभी तो श्री महामति जी कहते हैं कि "मेरी बुधें लुगा न निकसे मुख, धनी जाहेर करें अखण्ड घर सुख" (प्रकास हि. २९/७) तथा "ए वचन महामति से प्रगट न होए" (प्रकास हि. ४/१४) का कथन यही सिद्ध करता है।

यों अर्स गिरो जाहेर करी, माहें कुरान पुरान।

किन पाई न सुध रूहें अर्स की, आप अपनी आए करी पेहेचान॥४९॥

कुरान तथा श्रीमद्भागवत् आदि में ब्रह्मसृष्टियों तथा परमधाम की सांकेतिक पहचान थी, किन्तु आज तक कोई भी उनकी पहचान नहीं कर सका था। आप अक्षरातीत ने स्वयं श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में प्रकट होकर परमधाम, अपनी, तथा ब्रह्ममुनियों की स्पष्ट

पहचान करायी है।

एही खासी गिरो हादी संग, एही फरदा कयामत।

जाहेर देखावे नामे वसीयत, कछू छिपी न रही हकीकत॥५०॥

अब वही ब्रह्मसृष्टि श्री प्राणनाथ जी के साथ कल के दिन अर्थात् ग्यारहवीं सदी में जाहिर हुई हैं। यहीं समय कियामत के आने का है। वसीयतनामों से भी यही बात स्पष्ट होती है। अब थोड़ी सी भी सच्चाई छिपी नहीं रहेगी (सब कुछ प्रकट हो जायेगा)।

सो पेहेचान क्यों कर सके, जो पकड़े पुलसरात।

छोड़े न वजूद नासूती, जान बूझ के कटात॥५१॥

कर्मकाण्ड की राह पर चलने वाली जीवसृष्टि श्री प्राणनाथ जी, ब्रह्मसृष्टियों, तथा कियामत की पहचान

भला कैसे कर सकती है? जीव सृष्टि न तो अपने नश्वर शरीर के मोह से अलग हो पाती है और न अपनी आत्मिक दृष्टि को ही खोल पाती है। परिणाम स्वरूप, इस सत्य को जानते हुए भी कि आत्मिक दृष्टि से आत्म-साक्षात्कार किये बिना कल्याण सम्भव नहीं है, वह कर्मकाण्ड के ही मार्ग का अनुसरण करती है तथा दुःख रूपी नरक का कष्ट भोगती है।

नासूत ऊपर लोक जानत, आसमान सात में मलकूत।

तिन पर हवा जुलमत, तिन पर नूर बका जबरूत॥५२॥

पृथ्वी लोक के ऊपर मानव-जीवन है। इसके ऊपर का सातवाँ लोक वैकुण्ठ (मलकूत) है। उसके ऊपर निराकार, मोह सागर का आवरण है। उसके परे अखण्ड बेहद मण्डल (अक्षरधाम) है।

बुजरकी पैगंमरों, पाई जबर्राईल से।

हुए नजीकी हक के, सो सब न्यामत दई इनने॥५३॥

इस संसार में परब्रह्म का सन्देश लाने वाले जो भी पैगम्बर हुए, उन्होंने जोश के फरिश्ते जिबरील से ही महानता पायी है। सभी पैगम्बरों ने परब्रह्म की जो कुछ भी अनुभूति (सान्निध्यता) पायी है, वह जिबरील के कारण ही सम्भव हो सका है।

सो जबर्राईल जबरूत से, आगे लाहूत में न जवाए।

नूरतजल्ला की तजल्ली, पर जलावत ताए॥५४॥

वह जिबरील सत्स्वरूप (बेहद मण्डल) से आगे परमधाम में नहीं जा सका क्योंकि अक्षरातीत धाम के तेज (प्रेम, एकत्व आदि) से उसके पर जलने लगे।

भावार्थ— स्वलीला अद्वैत परमधाम में कालमाया या

योगमाया के किसी भी व्यक्ति का प्रवेश सम्भव नहीं है क्योंकि वह पूर्णात्-पूर्ण है। उसमें न तो कुछ जोड़ा जा सकता है और न घटाया ही जा सकता है।

जिबरील के पँख होने की बात आलंकारिक है। यह कथन वैसे ही है, जैसे कहा जाता है कि ब्रह्मसृष्टियों के दो पँख हैं— इश्क और ईमान (प्रेम और अटूट विश्वास)। "कहे पर इस्क ईमान के, सो मोमिन छोड़ें न पल" (श्रृंगार २३/७३) का कथन यही दर्शाता है। सर्वरस सागर में युगल स्वरूप तथा ब्रह्मात्माओं की लीला होती है। ऐसी स्थिति में वहाँ जिबरील या इस्राफील या किसी भी ईश्वरीय सृष्टि का जा पाना सम्भव नहीं है। इस्राफील ने परमधाम का जो भी ज्ञान प्राप्त किया, वह श्री महामति जी के धाम—हृदय में ही बैठकर पाया।

जबरूत ऊपर अर्स लाहूत, इत महंमद पोंहोंचे हजूर।
 रद बदल बंदगी वास्ते, करी हकसों आप मजकूर॥५५॥

बेहद मण्डल से परे परमधाम है, जिसमें रंगमहल है।
 इसी के मूल मिलावा में मुहम्मद स.अ.व. की आत्मा
 पहुँची थी। उन्होंने संसार के लोगों के लिये कष्टसाध्य
 उपासना पद्धति में कुछ छूट देने के लिये प्रियतम परब्रह्म
 से वार्ता की थी।

ल्याए फुरमान इसारतें इत थें, सो नासूती क्यों समझाए।
 मारफत अर्स अजीम में, ए पुलसरतें अटकाए॥५६॥

मुहम्मद स.अ.व. परमधाम से कुरआन का ज्ञान लेकर
 आये थे, जिसमें संकेतों में सारी बातें कही गयी हैं। भला
 उन सांकेतिक रहस्यों को इस नश्वर संसार के लोग कैसे
 समझ सकते हैं। परमधाम में तो मात्र मारिफत

(परमसत्य) का ही ज्ञान ले जा सकता है, जबकि संसार के लोग मात्र कर्मकाण्ड (शरीयत) में ही अटक जाते हैं।

जाहेर लिखी आदम की, सब औलाद पूजे हवाए।

एक महंमद कहे मैं पोहोंचिया, नूर पार सूरत खुदाए॥५७॥

कुरआन में यह बात स्पष्ट रूप से लिखी है कि आदम (मनु) से उत्पन्न होने वाली सम्पूर्ण मानवीय सृष्टि जड़ निराकार की ही भक्ति करेगी। एकमात्र मुहम्मद स.अ.व. ने ही घोषणा की है कि मैंने अक्षरधाम से भी परे परमधाम के रंगमहल में जाकर खुदा की हसीन अमरद सूरत (अति सुन्दर किशोर स्वरूप) का दीदार किया है।

दुनियां चौदे तबक में, किन सुरिया उलंघी ना जाए।

फना तले ला मकान के, ए तिनमें गोते खाए॥५८॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में कोई भी ज्योति स्वरूप (आदिनारायण) को पार नहीं कर पाता। शून्य-निराकार तक का सारा ब्रह्माण्ड नश्वर है। संसार के भक्तजन इसी में अटके रह जाते हैं।

भावार्थ- मोहसागर (निराकार) में ही अक्षर ब्रह्म का मन प्रतिबिम्बित होकर आदिनारायण के रूप में प्रकट होता है, जिसके प्रतिभास स्वरूप सभी प्राणी हैं। यही कारण है कि तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण वे अपने प्रयासों से निराकार को पार नहीं कर पाते।

हक सूरत किन देखी नहीं, है कैसी सुनी न किन।

तरफ न जानी चौदे तबक में, महंमद पोहोंचे ठौर तिन॥५९॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में आज दिन तक कोई भी यह नहीं जान पाया था कि परब्रह्म कहाँ पर है। न तो

किसी ने उनका स्वरूप देखा था और न ही किसी ने यह सुना था कि उनका स्वरूप कैसा है। मुहम्मद स.अ.व. उस परमधाम में अपनी आत्मिक दृष्टि से पहुँचे और उनका दर्शन किया।

करी महंमदे मजकूर तिनसे, सुने हरफ नब्बे हजार।

जहूद तिन साहेब को, कहे सुन्य निराकार॥६०॥

उस सच्चिदानन्द परब्रह्म से मुहम्मद स.अ.व. ने बातें की और उनके मुख से नब्बे हजार हरुफ (शब्द) सुने। अनुपम शोभा वाले ऐसे परब्रह्म को हिन्दू लोग भ्रमवश कहते हैं कि वह शून्य है, निराकार है।

भावार्थ— वेद तथा बीजक के गुह्य रहस्यों को जानने वाले कुछ मनीषियों की विचारधारा ऐसी भी रही है कि परब्रह्म साकार—निराकार से परे त्रिगुणातीत स्वरूप वाला

है, जिसके स्वरूप के विषय में यहाँ के मन एवं बुद्धि से किसी भी प्रकार की उपमा नहीं दी जा सकती।

ए भी कहें हक की सूरत नहीं, जो कहावें महंमद के।

सोई सब्द सुन पकड़या, आगूं काफर केहेते थे जे॥६१॥

स्वयं को मुहम्मद स.अ.व. का अनुयायी कहने वाले मुसलमान भी कहते हैं कि परब्रह्म (अल्लाहतआला) का कोई स्वरूप नहीं है। मुहम्मद स.अ.व. से पहले काफिर लोग जिस प्रकार खुदा को निराकार कहते थे, उसे ही सुनकर मुसलमानों ने भी निराकार कहना प्रारम्भ कर दिया।

भावार्थ— मुहम्मद स.अ.व. से पहले अरब में मूर्तिपूजक यहूदी धर्म था। मुहम्मद साहिब के विरोधियों (यहूदियों) को यहाँ काफिर कहा गया है।

तो काहे को कहावें महंमद के, जो इतना न करें सहूर।
 कौल महंमद रद होत है, जो हक सों किया मजकूर॥६२॥

यदि मुसलमानों में विचार करने की इतनी भी शक्ति नहीं है, तो उन्हें स्वयं को मुहम्मद स.अ.व. का अनुयायी नहीं मानना चाहिए। परब्रह्म को निराकार कहने से तो मुहम्मद स.अ.व. का यह वचन ही झूठा हो जाता है कि मैंने अल्लाह तआला से नब्बे हजार हरुफ बातें की हैं।

जासों पाई बुजरकी महंमदें, हक मिलेके सुकन।
 सो सुकन टूटत है, कर देखो दिल रोसन॥६३॥

हे मुस्लिमजनों! आप अपने हृदय में विवेकपूर्वक विचार करके देखिए कि परब्रह्म से प्रत्यक्ष बातें करने के कारण ही मुहम्मद स.अ.व. को सभी पैगम्बरों से श्रेष्ठ माना जाता है। यदि आप परब्रह्म को निराकार मानते हैं, तो

मुहम्मद स.अ.व. का कुरआन के १६वें पारे में (मेयराज में) कहा हुआ कथन मिथ्या हो जाता है।

काफर न माने हक सूरत, ताको कछू अचरज नाहें।

केहेलाए महंमद के पूजें हवा, ए बड़ा जुलम दीन माहें॥६४॥

यदि काफिर लोग परब्रह्म का स्वरूप नहीं मानते हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, किन्तु जो स्वयं को मुहम्मद स.अ.व. का सच्चा अनुयायी मानते हैं और निराकार की भक्ति करते हैं, तो उनके लिए ऐसा करना धार्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा पाप है।

कहे महंमद करूं मैं एक दीन, जिन कोई जुदे परत।

कुरान माजजा मेरी नबुवत, हुए एक दीन होए साबित॥६५॥

मुहम्मद स.अ.व. कहते हैं कि हे संसार के लोगों! मैं

आप सभी को एक सत्य धर्म में देखना चाहता हूँ। आप लोग आपस में लड़-झगड़ कर अलग न होइए। कुरआन तथा मेरी नबूवत का चमत्कार यही है कि सारा संसार एक ही सत्य धर्म को मानने लगे।

भावार्थ- कुरआन के उपरोक्त कथन का विकृत अर्थ करके ही खूनी जिहाद के लिये प्रेरित किया जाता है तथा आतंकवाद को बढ़ावा दिया जाता है। वस्तुतः सारे विश्व का एक ही सत्य धर्म है, जो मानव धर्म है। उसे अनेक धर्मग्रन्थों के माध्यम से अलग-अलग भाषाओं तथा पन्थों में प्रकाशित किया जाता है। श्री प्राणनाथ जी (आखिरी मुहम्मद) की ब्रह्मवाणी संसार के सभी मत-पन्थों के लिये है। इसमें उस शाश्वत धर्म की बात है, जो किसी स्थान, क्षेत्र, पन्थ, वेशभूषा, भाषा, या रीति-रिवाज के बन्धन में नहीं है। यदि आतंकवादी समूह

कुरआन के गुह्य अर्थों को समझकर आचरण करें, तो वे हिंसा का मार्ग छोड़कर सम्पूर्ण मानवता से प्रेम कर सकते हैं। क्या रब्बिल आलमीन, अल रहीम, अल रहमान कहलाने वाला अल्लाह तआला मात्र मुसलमान का ही है, जो गैर-मुस्लिमों (हिन्दुओं, यहूदियों, ईसाईयों आदि) की हत्या करने के लिये प्रेरित करेगा। ऐसा सन्देश किसी कट्टरवादी सम्प्रदाय (मजहब) का तो हो सकता है, शाश्वत धर्म का नहीं।

तुम करत मुझसे दुस्मनी, मैं किया चाहों एक राह।

तो जुदे परत कई दीन से, जो दिलों अबलीस पातसाह॥६६॥

श्री प्राणनाथ जी (आखरूल इमाम मुहम्मद महदी) कहते हैं कि संसार के लोगों! तुम मुझसे वैर रखते हो क्योंकि मैं तुम सभी को एक सत्य मार्ग पर ले चलना

चाहता हूँ। तुम्हारे दिलों पर अज्ञान रूपी शैतान का स्वामित्व है, इसलिये तुममें से अनेक लोग धर्म के वास्तविक स्वरूप को छोड़ देते हैं।

कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित हुआ न चाहें।

लड़ फिरके जुदे हुए, जो बुजरक कहावें दीन मांहें॥६७॥

तुम्हारे अन्दर जो धर्म के बड़े-बड़े अग्रगण्य (मौलवी, पण्डित, पादरी आदि) हैं, वे ही नहीं चाहते कि समस्त विश्व को एक परमसत्य पर ले चलने का कुरआन का चमत्कार तथा नबी (मुहम्मद साहिब) की नबुवत सिद्ध हो सके। अतः ये सभी लोग विवाद करके अलग-अलग पन्थों में बँट जाते हैं।

भावार्थ— समस्त विश्व का एकीकरण आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान से होगा, शरीयत (रोजा, नमाज, हज, जकात,

तथा कलमा) या वेशभूषा (दाढ़ी रखना, पायजामा पहनना) थोपने से नहीं। इस कार्य के लिये सारे विश्व को क्षेत्र या भाषा की दीवार मिटाकर आत्मिक दृष्टि से देखना होगा। हकीकत तथा मारिफत के ज्ञान (तारतम वाणी) के बिना यह सम्भव नहीं है।

आए रसूलें हक जाहेर किया, किया असों का बयान।

हौज जोए बाग कई बैठकें, सब हकीकत ल्याया फुरमान॥६८॥

मुहम्मद स.अ.व. ने इस संसार में आकर सच्चिदानन्द परब्रह्म का ज्ञान दिया। तीनों धामों— वैकुण्ठ, बेहद मण्डल, तथा परमधाम— की वास्तविकता दर्शायी। इसके अतिरिक्त उन्होंने हौज कौसर ताल, यमुना जी, अनेक प्रकार के बागों (फूल बाग, नूर बाग आदि), तथा अलौकिक हवेलियों का भी वर्णन किया। इस प्रकार,

मुहम्मद साहिब ने कुरआन द्वारा परमधाम की यथार्थता को दर्शाया।

कहावें फिरके बुजरक, हुए आपमें दुस्मन।

महंमद मता अर्स बका, लिया जाए न हवा के जन॥६९॥

सभी मत-पन्थों के अनुयायी मात्र अपने को ही श्रेष्ठ मानते हैं, इसलिये आपस में लड़कर एक-दूसरे के शत्रु बने रहते हैं। श्री प्राणनाथ जी के अखण्ड परमधाम के ज्ञान को भला ये लोग कैसे ग्रहण कर सकते हैं, जिन्होंने जड़ शून्य-निराकार को ही अपना परमात्मा मान लिया है।

जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लों महंमद औरों बराबर।

दई कई बुजरकियां, लिखे लाखों पैगंमर॥७०॥

कुरआन में लाखों पैगम्बरों का वर्णन है और उन्हें कई प्रकार की महानता भी प्राप्त है। जब तक संसार के लोगों को परब्रह्म के स्वरूप का पता नहीं चलेगा, तब तक मुहम्मद स.अ.व. को अन्य पैगम्बरों के समान ही समझते रहेंगे।

भावार्थ- ब्रज-रास की लीला के पश्चात् श्री कृष्ण जी के तन में लीला का रस लेने वाली आत्मा अरब में मुहम्मद साहिब के रूप में अवतरित होती है।

तहां रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम।

त्रेसठ बरस तहां रहे, वायदा किया इस ठाम॥

बीतक साहिब ७१/८४

अक्षर ब्रह्म की आत्मा होने से उन्हें मेयराज हुआ तथा उस स्वरूप को वैसी शोभा मिली, जो अब तक किसी को भी नहीं मिली थी। संसार के लोगों को इस

रहस्य का पता ही नहीं है कि मुहम्मद साहिब के अन्दर परब्रह्म के सत अंग अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी। सनंध २४/३७ में कहा गया है—

ए माएने सो लेवे सब्द के, जो रूह अर्स की होए।

एक रसूल आया नूर पार से, और ख्वाब दुनी सब कोए॥

यही कारण है कि संसार के लोग मुहम्मद साहब को भी अन्य पैगम्बरों के ही समान समझते हैं।

तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक।

हकें मासूक कहया तो भी न समझें, क्या करे आम खलक॥७१॥

जब इस मायावी जगत के लोगों को तारतम वाणी के प्रकाश में सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान हो जायेगी, तब उन्हें मुहम्मद स.अ.व. की महानता का पता चलेगा। स्वयं श्री राज जी ने मुहम्मद स.अ.व. को अपना माशूक

कहा है, फिर भी जाग्रत बुद्धि के न होने से जीवसृष्टि इस रहस्य को समझ नहीं पाती है।

भावार्थ- कुरआन के सि. २६ सू. ४७ आ. १९ एवं पार: २२ व मय्यकुनत् सूरत ३६ या सीन आ. ३ "अिन्नक लमिनल् मुर्सलीन्" अर्थात् निःसन्देह आप (मुहम्मद स.अ.व.) हमारे अनुग्रही हैं।

जाहेर राह मारे दुस्मन, अबलीस दिलों पर।

जाहेरी इलमें नफा न ले सके, पेहेचान होए क्यों कर॥७२॥

संसार के लोगों के हृदय पर अज्ञान रूपी दज्जाल का स्वामित्व है, जो सबका शत्रु है और प्रत्यक्ष रूप से सत्य से भटकाता है। कुरआन आदि धर्मग्रन्थों के बाह्य अर्थ लेने वाले सत्य से वंचित रहे तथा मानव जीवन का वास्तविक लाभ न ले सके। ऐसे लोग भला परब्रह्म की

पहचान कैसे कर सकते हैं।

बका पोहोंच्या एक महंमद, कही जिनकी तीन सूरत।

तित और कोई न पोहोंचिया, जो लई इनों बका खिलवत॥७३॥

परमधाम के रंगमहल में मात्र मुहम्मद स.अ.व. ही पहुँचे हैं, जिनकी तीन सूरतें— बशरी, मल्की, तथा हकी— कही गयी हैं। मुहम्मद साहिब जिस प्रकार अखण्ड परमधाम में रंगमहल के मूल मिलावा में पहुँचे, वहाँ तक उनसे पहले अन्य कोई भी नहीं जा सका था।

देसी हकीकत सब असी की, नूर जमाल सूरत।

केहेसी निसबत वाहेदत, रखे न खतरा बीच खिलवत॥७४॥

मुहम्मद साहिब ने कहा था कि अक्षरातीत परब्रह्म के स्वरूप श्री प्राणनाथ जी अपनी तारतम वाणी द्वारा तीनों

धामों का यथार्थ ज्ञान देंगे। वे परब्रह्म से आत्माओं के मूल सम्बन्ध और एकत्व का वर्णन करेंगे। वे परमधाम की खिलवत का भी वर्णन करने में संकोच नहीं करेंगे।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में खिल्वत के वर्णन करने का आशय युगल स्वरूप तथा सखियों के मूल तनों की शोभा, तथा रंगमहल में होने वाली लीला का वर्णन करने से है।

सरत करी जो रसूले, सो पोहोंच्या आए बखत।

तिन इमाम को न समझे, जिनपे कुंजी कयामत॥७५॥

मुहम्मद स.अ.व. ने शर्त लगाकर कियामत तथा इमाम महदी के आने का जो समय निश्चित किया था, अब वह समय आ पहुँचा है। दुर्भाग्यवश संसार के लोग आखरूल इमाम मुहम्मद महदी स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की पहचान

नहीं कर पा रहे हैं, जिनके पास सबको अखण्ड मुक्ति देने वाली तारतम ज्ञान रूपी कुञ्जी है।

बका से आए रूह अल्ला, और महंमद मेंहेदी इमाम।

मैं जो करी मजकूर, सो देसी साहेदी तमाम॥७६॥

परमधाम से सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (ईसा रूहुल्लाह) तथा श्री प्राणनाथ जी आर्येंगे। मैंने अल्लाह तआला से मिलकर जो बातें की हैं, उसकी वे साक्षी देंगे कि यह पूर्णतया सत्य है।

भावार्थ— परमधाम से परब्रह्म के आनन्द अंग श्री श्यामा जी का इस संसार में अवतरण हुआ, जिन्होंने श्री देवचन्द्र जी का तन धारण किया।

कुरान माजजा नबी नबूवत, दोऊ साबित होवें तब।

दज्जाल मार के एक दीन, आए रूह अल्ला करसी जब॥७७॥

जब श्यामा जी द्वारा अपने दूसरे तन में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में लीला होगी, तो अज्ञान रूपी दज्जाल का हनन होगा और एक सत्य धर्म (निजानन्द) की स्थापना होगी। उस समय ही कुरआन का चमत्कार तथा नबी की नबूवत दोनों सिद्ध होंगे।

मसी और इमाम, जब देसी मेरी साहेदी।

मैं गुझ करी नूर जमाल सों, सो होसी जाहेर बुजरकी॥७८॥

जब मल्की सूरत (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) तथा हकी सूरत (श्री प्राणनाथ जी) द्वारा मेरी प्रियतम अक्षरातीत से होने वाली गुह्य बातों की साक्षी दी जायेगी, तो उन बातों की श्रेष्ठता उजागर हो जायेगी।

मैं दुनियां ल्याया जो दीन में, सो मैं देखत हों अब।

फिरके होसी मेरे तेहेत्तर, आखिर होएगी तब॥७९॥

मैंने इस संसार को जिस इस्लाम धर्म का अनुयायी बनाया, उसके विषय में मुझे ऐसा दिखायी दे रहा है कि उसमें तिहत्तर फिरके हो जायेंगे। वह समय आखिरत का अर्थात् कियामत का होगा।

तब ए बुजरक आवसी, साहेब जमाने के।

हक करसी हिदायत तिनको, इनों संग नाजी फिरका जे॥८०॥

उस समय आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्रमां श्री प्राणनाथ जी आयेंगे, जिनकी महिमा अनन्त होगी। उनके साथ ब्रह्ममुनियों का नाजी फिरका (अखण्ड सुख पाने वाला समुदाय) भी होगा, जिसे परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी तारतम ज्ञान के प्रकाश में निर्देशित करेंगे

(शिक्षा देंगे)।

हरफ गुझ जो हुकमें, मैं रखे छिपाए।

सो अर्स मता हक खिलवत, जाहेर करसी आए॥८१॥

परब्रह्म के आदेश से मारिफत के जिन तीस हजार हरुफों को मैंने अब तक छिपा रखा है, उसमें परब्रह्म की खिलवत तथा परमधाम की शोभा एवं लीला का ज्ञान निहित है। श्री प्राणनाथ जी उस समस्त ज्ञान को उजागर (प्रकाशित) करेंगे।

मता सब मेयराज का, किया अर्स में हकें मजकूर।

जो मेहेर हमेसा मुझ पर, सो ए सब करसी जहूर॥८२॥

दर्शन की रात्रि में मैंने परमधाम जाकर परब्रह्म से जो बातें की, उसका सारा ज्ञान तथा मेरे ऊपर नित्य बरसने

वाली परब्रह्म की कृपा का सारा विवरण, श्री प्राणनाथ जी संसार में प्रकाशित करेंगे।

और फिरके सब आवसी, और सब पैगंमर।

होसी हिसाब सबन का, हाथ हकी सूरत फजर॥८३॥

तारतम वाणी के प्रकाश से जब संशय रूपी रात्रि का अन्धकार मिट कर उजाला हो जायेगा, उस समय सभी पन्थों के अनुयायी तथा उनके पैगम्बर परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आयेंगे और उनका न्याय होगा।

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, खुलें न बिना खिताब।

गुझ बातून होसी जाहेर, जब हक लेसी हाथ किताब॥८४॥

कुरआन में यह बात प्रत्यक्ष रूप से लिखी हुई है कि कुरआन के छिपे हुए गुह्य भेदों के रहस्य एकमात्र श्री

प्राणनाथ जी से ही खुलेंगे। यह शोभा केवल उनके लिये ही है। जब परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी स्वयं कुरआन के भेदों को स्पष्ट करेंगे, तभी उनके हकीकत एवं मारिफत सम्बन्धि भेद उजागर होंगे।

भावार्थ- कुरआन के सि. ८ सू. ७ सूरतुल अऽराफि आ. ५४-५७ में वर्णन है-

"अिन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लजी.....तबारकल्लाहु रब्बुल्-आलमीन" (५४)

अर्थात् जमीन और आसमान परब्रह्म द्वारा ही निर्मित है। वह हर चीज़ का मालिक है। संसार की सभी वस्तुयें उसी की प्रार्थना में लीन हैं।

"हुवल्लजी युर्सिलर्रियाहू..... तजक्करून" (५७)

अर्थात् वही है जो अपनी दयालुता से पहले खुशखबरी प्रदान करने के लिये हवायें भेजता है।.....

शायद आप इसका संज्ञान लें।

हवा भेजने का तात्पर्य विभिन्न आध्यात्मिक विभूतियों के अवतरण से है, जिनमें मुख्यतः ईमाम महदी साहिबबुज्जमां अर्थात् श्री प्राणनाथ जी द्वारा धर्मग्रन्थों के रहस्य प्रगट करना है। यदि कोई व्यक्ति तन्मय होकर कुरआन ग्रन्थ का अवलोकन करता है, तो उसको ग्रन्थ में निहित अर्थ का रहस्य प्रगट होता है।

कुरआन के सि. २९. सू. ७५ सूरः कियामती आयत २३ में वर्णन है—

"अिन्ना नहनु नज़्ज़लूना अलैकल्—कुरआन तन्ज़ीलन्" (२३)

अर्थात् आप (मुहम्मद साहब) पर जो कुरआन अवतरित हुआ था, उसका रहस्य उन्होंने किसी को नहीं बताया। अपने अन्तिम समय से पूर्व उन्होंने संकेत किया

कि कुरआन और अहल-ए-बैत एक-दूसरे से भिन्न नहीं हैं।

यहाँ अहल-ए-बैत से तात्पर्य मासूमिन प्रथम ईमाम अली वलीउल्लाह व अन्तिम ईमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां हैं, जिनके द्वारा कुरआन के रहस्यों को प्रगट किया जाना है। यही उनके ईमाम-ए-जमाना होने का स्पष्ट प्रमाण है।

हक जाहेर हुए बिना, मेरी बड़ाई जाहेर क्यों होए।

कायम सूर उगे बिना, क्यों चीन्हे रात में कोए॥८५॥

मुहम्मद स.अ.व. कहते हैं कि जब तक स्वयं परब्रह्म आखरूल इमाम मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी) के स्वरूप में प्रकट नहीं हो जाते, तब तक मेरी महिमा भी नहीं फैल सकती। जब तक तारतम ज्ञान का अखण्ड

सूर्य उगता नहीं है, तब तक रात्रि के अन्धकार में भला मुझे कौन पहचान सकता है।

अर्स कहया दिल मोमिन, सब अर्स में न्यामत।

कहया और दिलों पर अबलीस, अब देखों तफावत॥८६॥

ब्रह्ममुनियों के हृदय (दिल) को ही धाम कहते हैं, जिसमें सारी निधियाँ (प्रेम, आनन्द, एकत्व, शोभा, सम्बन्ध आदि) विद्यमान होती हैं। इनके विपरीत सांसारिक जीवों के हृदय में अज्ञान रूपी शैतान का निवास होता है। अब इनके आचरण में भी अन्तर देखिए।

मोमिन हक बिना कछू ना रखें, करी मुरदार चौदे तबक।

महंमदें मोमिनो राह ए दर्ई, ए राह क्यों ले हवाई खलक॥८७॥

ब्रह्ममुनि एक प्रियतम अक्षरातीत के अतिरिक्त अन्य

किसी भी वस्तु की आकांक्षा नहीं करते। उनके लिये चौदह लोक का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही निरर्थक, सारहीन होता है। ब्रह्मात्माओं को उनके प्रियतम श्री प्राणनाथ जी ने यही मार्ग दर्शाया है। जड़-निराकार की भक्ति करने वाली जीवसृष्टि ब्रह्मसृष्टियों के इस मार्ग पर नहीं चल सकती।

महामत कहें ए मोमिनों, राह बका ल्योगे तुम।

जिन का दिल अर्स कहया, औरों ना निकसे मुख दम॥८८॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! अखण्ड परमधाम के मार्ग पर एकमात्र आप ही चल सकते हैं, क्योंकि आपके ही हृदय को धाम कहा गया है। जीवसृष्टि तो इस विषय में अपने मुख से कह भी नहीं सकती, आचरण में लाना तो दूर की बात है।

प्रकरण ॥२॥ चौपाई ॥१९०॥

खुलासा मेयराज का

(दर्शन लीला का विवरण)

इस प्रकरण में यह बात दर्शायी गयी है कि मुहम्मद स.अ.व. को किस प्रकार दर्शन की रात्रि में परब्रह्म का साक्षात्कार हुआ।

हक हादी रूहन सों, जो किया कौल अक्वल।

ए खुलासा मेयराज का, जो रूहों हुई रदबदल॥१॥

दर्शन की रात्रि के विवरण में इस तथ्य का स्पष्टीकरण होता है कि इस मायावी जगत में आने से पहले परब्रह्म श्री राज जी से श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं की इश्क (प्रेम) के सम्बन्ध में वार्ता हुई थी। उसमें परब्रह्म ने श्यामा जी एवं आत्माओं से जो कुछ कहा था, वह इस प्रकार है।

कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब।

हक इलम ले देखिए, सोई साइत है अब॥२॥

परमधाम से इस मायावी जगत में आती हुई आत्माओं से श्री राज जी ने कहा था कि क्या मैं तुम्हारा प्रियतम नहीं हूँ? हे साथ जी! यदि आप तारतम वाणी के प्रकाश में देखें, तो स्पष्ट होगा कि अब भी वही पल है।

भावार्थ- कुरआन के सि. ९ सू. ७ आ. १७२ में कहा गया है- "अलस्तु बिरब्बिकुम् कालू बला" अर्थात् धनी ने परमधाम में वचन लिया कि मैं ही तुम्हारा ईष्ट/पूज्य हूँ।

तब वले कहया अरवाहों ने, अर्स से उतरते।

किया जवाब हक ने, रूहों याद किया चाहिए ए॥३॥

तब परमधाम से उतरती हुई आत्माओं ने कहा था कि

निश्चित रूप से एकमात्र आप ही हमारे प्रियतम हैं। उनके इस कथन को सुनकर श्री राज जी ने कहा था कि आत्माओं! इस बात को अच्छी तरह से याद रखना।

तुम मांहों मांहें रहियो साहेद, मैं केहेता हों तुम को।

याद राखियो आप में, इत मैं भी साहेद हों॥४॥

मैं तुमसे एक बात कह रहा हूँ कि तुम आपस में एक-दूसरे के प्रति साक्षी रहना कि हमने अपने प्राणेश्वर से ऐसा ही कहा था। तुम्हें आपस में इस बात को याद रखना होगा। इस सम्बन्ध में मैं भी साक्षी रहूँगा।

और साहेद किए फरिस्ते, जिन जाओ तुम भूल।

फुरमान भेजोंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल॥५॥

इस सम्बन्ध में मैंने ईश्वरीय सृष्टि को भी साक्षी रखा है

कि तुमने ऐसा कहा था। तुम्हें इस बात को भूलना नहीं है। मैं अपने माशूक मुहम्मद स.अ.व. द्वारा तुम्हें साक्षी देने के लिए कुरआन भिजवाऊँगा।

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों के साथ ईश्वरीय सृष्टि भी खेल में आयी है, इसलिए उन्हें भी साक्षी मानना पड़ेगा।

मेयराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है उजू जल।

बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल॥६॥

जब मुहम्मद स.अ.व. को मेयराज हुआ, तो परमधाम से उनकी सुरता (आत्मिक दृष्टि) के यहाँ पर लौटने तक में एक पल का भी समय नहीं लगा था। वजू के लिये उन्होंने अपनी हथेली में जो जल रखा था, वह अभी तक हिल ही रहा था, तथा किसी बैठे हुए व्यक्ति के उठने पर जो गर्मी बनी रहती है, वह भी अभी बनी हुई थी।

दिया निमूना अरवाहों को, एक पलक बेर जान।

वले जवाब रूहों कहया, अजूं सोई अवाज बीच कान॥७॥

मेयराज के दृष्टान्त से परमधाम की आत्माओं को यह समझाया गया है कि किस प्रकार मात्र एक पल में ही जागनी लीला का इतना बड़ा खेल हुआ है। खेल में आते समय आत्माओं ने प्रत्युत्तर में जो "वले" शब्द कहा, उसकी "ले" की ध्वनि परात्म में जाग्रत होने पर कानों में सुनायी पड़ेगी।

भावार्थ- जिस प्रकार पल भर के स्वप्न में हम कई वर्षों का दृश्य देख लेते हैं तथा कई घण्टों की समाधि के पश्चात् भी ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे कुछ ही पल बीते हैं, उसी प्रकार मेयराज एवं आत्माओं के खेल में आने की घटना के समय को भी समझना चाहिए। त्रिगुणातीत लीलाओं का समय इस संसार की मान्यताओं के

अनुसार निर्धारित नहीं हो सकता।

उतर आए नासूत में, भूल गए अर्स की।

इत पैदा फना के बीच में, जाने हम हमेसगी॥८॥

इस मृत्युलोक में आने के पश्चात् ब्रह्मसृष्टियाँ परमधाम की बातों को भूल गयी हैं। उत्पन्न और लय होने वाले इस ब्रह्माण्ड में आने पर अब उन्हें ऐसा लग रहा है कि जैसे हम हमेशा से यहीं की रहने वाली हैं।

अर्स रूहें भूली नासूत में, इनसों हक हादी निसबत।

ताए लिख भेज्या फुरमान में, अजूं सोई है साइत॥९॥

इस संसार में ब्रह्मात्माओं ने परमधाम को भुला दिया है, किन्तु इनका युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी से अटूट सम्बन्ध है। इनके लिये ही धाम धनी ने सांकेतिक रूप में

कुरआन में साक्षियाँ लिखवाकर भिजवायी हैं, किन्तु परमधाम में अभी भी वही समय है।

हाए हाए ए समया क्यों न रहया, ए कैसा भोम का बल।
तो कहया सिखरा सींग पर, रेहे न सके एक पल॥१०॥
यह मायावी जगत् का कैसा प्रभाव है कि सभी परमधाम को भूल गयी हैं। हाय! हाय! परमधाम जैसी स्थिति (वह समय) अब क्यों नहीं रही? जिस प्रकार किसी पशु के सींग पर राई का दाना एक पल भी नहीं ठहरता, उसी प्रकार यह ब्रह्माण्ड भी नश्वर है।

आए पड़े तिन फरेब में, चौदे तबकों न बका तरफ।
फना बीच सब खेलत, कोई बोल्या न बका हरफ॥११॥
परमधाम के ब्रह्ममुनि चौदह लोक के इस छल भरे प्रपञ्च

में इस प्रकार फँस गये हैं कि इसमें किसी का भी चिन्तन अखण्ड परमधाम की ओर नहीं जाता। सबका ध्यान नश्वर वैकुण्ठ-निराकार तक ही रहता है। अखण्ड-अनादि परमधाम की तो कोई बात ही नहीं करता।

खेल झूठा झूठी रसमें, रूहें गैयां तिनमें मिल।

अब सीधा क्योंए न होवहीं, जो हुकमें फिराया दिल॥१२॥

यह मायावी जगत् मिथ्या है तथा यहाँ की रीतियाँ (परम्परायें, चलन) भी झूठी हैं। परमधाम की आत्मायें इनमें घुल-मिल गयी हैं। श्री राज जी के आदेश से जब इनका दिल परमधाम से हटकर माया में लिप्त हो गया है, तो बहुत प्रयास करने पर भी किसी प्रकार सीधा नहीं हो पा रहा है अर्थात् परमधाम में लग नहीं पा रहा है।

कौल किया हकें इनसों, बीच खिलवत रूहों मजकूर।

दिया इलम लदुन्नी इनको, ए बीच दरगाह बिलंदी नूर॥१३॥

मूल मिलावा में प्रेम संवाद के समय धाम धनी ने आत्माओं को यह वचन दिया था कि मैं माया में भी तुम्हें नहीं छोड़ूँगा और जाग्रत करूँगा। अपने इस वचन को पूर्ण करने के लिये ही प्रियतम अक्षरातीत ने इन आत्माओं को तारतम ज्ञान दिया, जो बेहद से भी परे सर्वोपरि परमधाम की रहने वाली हैं।

देखो बड़ी बड़ाई इनकी, हकें मासूक भेज्या इन पर।

भेजी हाथ कुंजी रूह अपनी, और दर्ई अपनी आमर॥१४॥

इन ब्रह्मात्माओं की महिमा तो देखिए कि प्राणेश्वर अक्षरातीत ने इनके लिये अपनी आनन्द स्वरूपा श्यामा जी को तारतम ज्ञान की कुञ्जी देकर भेजा तथा सभी

आत्माओं को जाग्रत करने के लिये उन्हें आदेश भी दिया।

हुकम दिया दिल अर्स किया, हकें कह्या महंमद मासूक।
 ए कौल सुन रूह मोमिन, हाए हाए हुए नहीं टूक-टूक॥१५॥
 श्री राज जी ने श्यामा जी को अपनी प्रियतमा (माशूक)
 कहा तथा उनके धाम-हृदय में विराजमान होकर सबको
 जाग्रत करने का आदेश दिया। हाय! हाय! ये बातें
 सुनकर भी ब्रह्मात्माओं के हृदय प्रियतम के प्रेम में
 टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाते, अर्थात् वे सर्वस्व
 समर्पण क्यों नहीं कर देतीं।

भावार्थ- हृदय का टुकड़े-टुकड़े हो जाना एक मुहावरा
 है, जिसका अर्थ होता है- किसी के विरह, प्रेम, या
 समर्पण में स्वयं को इतना लुटा देना कि न तो अपने

अस्तित्व का भान रहे और न ही अपना हानि-लाभ दिखायी दे।

जो कौल किए बीच खिलवत, हक हादी रूहों मिल।
 सो क्यों तुमें याद न आवहीं, अर्स में तन तुम असल॥१६॥
 हे साथ जी! परमधाम में आपके मूल तन परात्म हैं।
 आपने मूल मिलावा में श्री राजश्यामा जी तथा अन्य
 आत्माओं को जो वचन दिया था, उनकी याद क्यों नहीं
 आ रही है?

भावार्थ- सखियों ने श्री राज जी से कहा था-
 सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए।

खिलवत ११/३३

इसी प्रकार आपस में एक-दूसरे से कहा था-

जो तू भूले मैं तुझको, देऊंगी तुरत जगाए।

मैं भूलों तो तू मुझे, पल में दीजे बताए॥

खिलवत ११/४४

अर्थात् यदि मैं भूलूँ तो तुम मुझे जगा देना और यदि तुम भूलोगी तो मैं तुम्हें जगाऊँगी।

लिखे पहाड़ कर ईसा महंमद, ए निसान आखिर के।

हक बका अर्स देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए॥१७॥

कुरआन में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (ईसारुहुल्लाह) और श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) को पर्वतों के समान महिमावान बताया गया है। ये वक्त आखिरत की निशानियों में से हैं। ये दोनों स्वरूप प्रकट होकर सबको अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान करायेंगे तथा कियामत का समय दर्शायेंगे।

भावार्थ- कुरआन के सि. १ सू. २ आ. १९८ में कहा गया है- "लैस अलैकुम्..... मिनज़्ज़ालीन", "अिन्दल-मशअरिल हरामि वज्जुरुह कमा हदाकुम्"

तो मशअरिल हराम के पास मुजदल्फा में दो पहाड़ों के करीब (अर्थात् सफा और मरवा) अल्लाह को याद करें।

लिख्या सूरज मारफत का, होसी जाहेर महंमद से।

आई अर्स रूहें गिरो अहमदी, किए जाहेर जबराईलें॥१८॥

कुरआन में लिखा है कि मारिफत के ज्ञान का सूर्य इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी से प्रकट होगा। परमधाम से माया का खेल देखने के लिए ब्रह्मसृष्टियाँ श्यामा जी के साथ आई हुई हैं, जिनकी पहचान जिबरील ने पहले से ही कुरआन में दे दी थी।

भावार्थ- यह प्रसंग कुरआन के पार: २ सू. २ आयत १९८ में लिखा है।

करसी बका अर्स जाहेर, ताके निसान पहाड़ बिलंद।

आखिर अपने कौल पर, आए जमाने खावंद॥१९॥

कुरआन के कथनानुसार सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्रकट करेंगे। इन दोनों की महिमा पर्वतों के समान ऊँची कही गई है। परब्रह्म ने अपनी अँगरूपा आत्माओं से आने का जो वायदा किया था, उसके अनुसार वे इन दोनों स्वरूपों के रूप में आकर लीला किये।

हक बका का किबला, कहया जाहेर होसी आखिरत।

पावें न माएना जाहेरी, मुसाफ माएने इसारत॥२०॥

कुरान में लिखा है कि कियामत के समय तारतम ज्ञान के प्रकाश में एकमात्र परब्रह्म का अखण्ड स्वरूप ही पूज्य होगा। कुरआन में संकेतों में लिखी हुई इस बात को बाह्य अर्थ लेने वाले तथा शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान नहीं जान पाते हैं।

भावार्थ- कुरआन के सि. २ सू. २ आ. २०८ में कहा गया है- "या अय्युहल्लज़ीन अदुब्बुम-मुबीनुन" अर्थात् इस्लाम में पूरे आ जाँ। शैतान के कदमों पर न चलें, वह तुम्हारा दुश्मन है।

हकें बुजरकी वास्ते, लिखी इसारतें पहाड़ कर।
 सो दुनी पूजे पहाड़ जाहेरी, इनों नाहीं रूह की नजर॥२१॥
 सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी की अनुपम महिमा होने के कारण श्री राज जी ने कुरआन में

इन्हें संकेतों में पर्वत के रूप में लिखा है, किन्तु संसार के लोग इस रहस्य को नहीं जान पाते और जड़ पर्वतों (सफा और मर्वा) की पूजा करते हैं। ऐसी भूल इनसे इसलिए होती है क्योंकि इनकी आत्मिक दृष्टि खुली नहीं होती।

कहे कुरान इन जिमी से, तरफ न पाई अर्स हक।

ए तेहेकीक किन ना किया, कई ठूढ थके बुजरक॥२२॥

कुरआन में लिखा है कि इस संसार में आज दिन तक किसी को भी परमधाम तथा अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान नहीं हो सकी, यद्यपि बहुत से ज्ञानियों और तपस्वियों ने खोजा, किन्तु थक-हारकर बैठ गए। उनमें से किसी ने भी यह निश्चित नहीं किया कि परमात्मा कहाँ है और कैसा है।

जो बची गिरोह कोहतूर तले, और तोफान किस्ती पर।
 बेर तीसरी लैलत कदर में, जिन रोज कयामत करी फजर॥२३॥

जो ब्रह्मसृष्टियाँ इन्द्र-कोप के समय गोवर्धन (कोहतूर)
 पर्वत के नीचे बची रहीं तथा रास (नूह तूफान) के समय
 योगमाया रूपी नाव में बची रहीं, वे ही लैल-तअल-कद्र
 के इस तीसरे खण्ड में इस संसार में आई हैं। इस लीला
 में प्रियतम अक्षरातीत ने तारतम ज्ञान का उजाला करके
 कियामत की पहचान कराई है।

सोई गिरो इसलाम की, खेल लैल देख्या दो बेर।
 तीसरी बेर फजर की, जाके इलमें टाली अंधेर॥२४॥

शान्ति और प्रेम का सन्देश देने वाली उन्हीं ब्रह्मसृष्टियों
 के समूह ने ब्रज और रास का खेल देखा, और तीसरी
 बार इस जागनी के ब्रह्माण्ड में आई हैं जिसमें प्रियतम

अक्षरातीत ने तारतम ज्ञान का प्रकाश कर परमधाम के ज्ञान का उजाला फैला दिया है और माया का अन्धकार दूर कर दिया है।

सिर बदले जो पाइए, महंमद दीन इसलाम।

और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखिर गिरोह स्याम॥२५॥

अपना सिर देने के बदले भी यदि किसी को श्री प्राणनाथ जी के चरण कमल प्राप्त होते हैं और श्री निजानन्द सम्प्रदाय का ज्ञान (तारतम) प्राप्त होता है, तो यही समझना चाहिए कि सौदा सस्ता है अर्थात् हमने बहुत बड़ी उपलब्धि पा ली है। यदि ब्रह्मात्माओं को संसार में ब्रह्मसृष्टियाँ (मूल सुन्दरसाथ) और उनके प्राणवल्लभ अक्षरातीत मिल जाते हैं, तो उन्हें और क्या चाहिए। क्या इस सृष्टि में इनसे भी कोई मूल्यवान है?

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को आत्म-मन्थन करना चाहिए, जो हमेशा ही अपने मायावी दुःखों का रोना रोते रहते हैं तथा तारतम ग्रहण करने से पहले अपने अतीत की समृद्धि का बखान करते हैं। सबसे अधिक दुर्भाग्यशाली वे लोग हैं, जो अपने यहाँ अतिथि के रूप में आये हुए सुन्दरसाथ को बोझ समझते हैं। सुन्दरसाथ में घृणा और कटुता का बीज बोना तो महापाप ही है।

ए जो पैदा जुलमत से, सो कुंन केहेते उपजे।

मगज मुसाफ न पावत, लेत माएने ऊपर के॥२६॥

निराकार (मोहसागर) में उत्पन्न होने वाले जीव "एकोऽहम् बहुस्याम्" (कुन्न) कहने से उत्पन्न हुए हैं। इसलिये ये कुरआन के वास्तविक आशय को नहीं समझ

पाते, केवल बाह्य अर्थों में ही उलझे रहते हैं।

कौल हमारे नूर पार के, सो क्यों समझें जुलमत के।

कुंन केहेते पैदा हुए, ला मकान के जे॥२७॥

हमारी बातें परमधाम की हैं। उसे निराकार के जीव भला कैसे समझ सकते हैं? इनकी उत्पत्ति तो मोह सागर में "एकोऽहम् बहुस्याम्" के कथन मात्र से ही हो गयी।

भावार्थ— कुन्न का कथन अल्लाह तआला का माना जाता है, किन्तु ऐसा अद्वैत सिद्धि के लिये है। "आवे अर्स से हुकम, तिन हुकमें चले हुकम" (सनन्ध २९/१४) के अनुसार कुन्न का जो आदेश परब्रह्म द्वारा होता है, वह अजाजील (आदिनारायण) द्वारा मोहसागर में प्रत्यक्ष होता है। इस प्रकार, इन दोनों कथनों में कोई

विरोधाभास नहीं है। ऐतरेयोपनिषद् में "एकोऽहम् बहुस्याम्" का कथन अक्षर ब्रह्म के लिये है।

लैलत कदर में रूहें फरिस्ते, जो अर्स से उतरे।
 कौल किया हकें जिनसों, सो नूर बानी से समझेंगे॥२८॥
 इस मायावी जगत् में परमधाम से ब्रह्मसृष्टियाँ तथा
 अक्षरधाम (सत्स्वरूप) से ईश्वरीय सृष्टियाँ आयी हैं।
 अक्षरातीत ने इन्हें ही वचन दिया था कि मैं खेल में
 आऊँगा। इस प्रकार ये सृष्टि धाम धनी की कही हुई
 तारतम वाणी से यथार्थ सत्य को जान जायेंगी।

फना जिमी के बीच में, जाहेरी पहाड़ पूजत।

दुनियां नजर फना मिने, अर्स बका न काहूँ सूझत॥२९॥

इस नश्वर संसार में धर्मग्रन्थों का बाह्य अर्थ लेने वाले

जड़ पर्वतों की पूजा करते हैं। संसार के जीवों की दृष्टि इस नश्वर ब्रह्माण्ड में ही होती है। उनका चिन्तन कभी अखण्ड परमधाम की ओर होता ही नहीं।

दिल हकीकी अर्स मोमिन, कहया तिन दिल की भी तरफ नाहें।
वाकी इत तरफ क्यों पाइए, दिल रहेत अर्स तन माहें॥३०॥

परमधाम की ब्रह्मात्माओं का हृदय ही यथार्थ (सच्चा) होता है। संसार के जीवों को तो उनके दिल की भी पहचान नहीं होती। भला, इस स्वाज्ञिक जगत् में उनका दिल (हृदय) कहाँ से हो सकता है, वह दिल तो परमधाम के मूल तनों (परात्म) में ही होता है।

भावार्थ— यद्यपि परात्म का दिल ही यथार्थ दिल है, किन्तु इस स्वाज्ञिक जगत् में भी ब्रह्मसृष्टि का दिल माना जाता है, जो परात्म के दिल का ही प्रतिबिम्ब होता है।

उसे आत्मा का दिल या अक्श का दिल भी कहते हैं—
 सिफत ऐसी कही मोमिनो की, जाके अक्स का दिल अर्स।
 हक सुपने में भी संग कहे, रूहें इन विध अरस—परस॥

श्रृंगार २१/८१

अर्स तन दिल में ए दिल, दिल अन्तर पट कछू नाहें।

श्रृंगार ११/७९

ऐसा नहीं समझना चाहिये कि इस स्वप्नमयी तन
 के दिल में श्री राज जी विराजमान नहीं होते हैं—

इन सुपन देह माफक, हकें दिल में किया प्रवेस।

ए हुकम जैसा कहावत, तैसा बोले हमारा भेस॥

अर्स तन का दिल जो, सो दिल देखत है हम को।

प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों॥

श्रृंगार २१/९२, ९३

इस नश्वर तन में भी धाम धनी शाहरग से निकट हैं।
इस सम्बन्ध में तारतम वाणी के ये कथन देखने योग्य
हैं—

और इस्क मांहे रूहन, हकें अर्स कहयो जाको दिल।
हकें दिल दे रूहों दिल लिया, यों एक हुए हिल मिल॥
ना तो हक आदमी के दिल को, अर्स कहें क्यों कर।
पर ए आसिक मासूक की वाहेदत, बिना आसिक ना कोई कादर॥

श्रृंगार २०/१०९,११०

अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो हक सों रूह निसबत।
ना तो अर्स दिल आदमी का, क्यों कह्या जाए ख्वाब में इत॥

श्रृंगार २६/१२

रूह तन की असल अर्स में, अर्स ख्वाब नहीं तफावत।
तो कह्या सेहेरग से नजीक, हक अर्स दुनी बीच इत॥

श्रृंगार २६/१३

और दिल हकीकी अर्स मोमिन, हके दिल अर्स कह्या इन।

खुलासा ३/४०

इस चौपाई का कथन यही दर्शाता है कि इस नश्वर तन में भी ब्रह्मात्मा के होने से उनका दिल धाम कहलाने की शोभा प्राप्त करता है।

दिल अर्स मोमिन कह्या, जामें अमरद सूरत।

खिन न छूटे मोमिन से, मेहेबूब की मूरत॥३१॥

ब्रह्मात्माओं का हृदय ही प्रियतम अक्षरातीत का धाम होता है, जिसमें उनकी किशोर सूरत बसी होती है। अपने प्राणेश्वर की मोहक छवि को ब्रह्मसृष्टियाँ एक पल के लिए भी अपने हृदय से अलग नहीं करती हैं।

ए जो फजर सूर असराफील, नुकता हुकम बजावत।

ले कुफर बैठे पहाड़ से, सो जरे ज्यों उड़ावत॥३२॥

परब्रह्म के आदेश से इस्त्राफील फरिश्ता तारतम ज्ञान का सूर फूँक रहा है, जिससे संशय रूपी रात्रि का अन्धकार समाप्त हो गया है तथा अखण्ड ज्ञान रूपी सूर्य के उदित होने से चारों ओर उजाला फैल गया है। अपने स्वाप्निक ज्ञान के अहंकार में स्वयं को पर्वतों के समान सर्वश्रेष्ठ मानने वाले सभी मत-पन्थों के विद्वान अब तिनके की तरह उड़ते (नतमस्तक होते) हुए दिखायी दे रहे हैं।

और कुफर दुनी जो पहाड़सी, सूर दूजे कायम करत।

हकें मेहेर कर मोमिनों पर, बातून माएने लिखत॥३३॥

पाप से भरे हुए संसार के जीव, जिनकी संख्या पहाड़

के समान विशाल है अर्थात् अनन्त है, उनको भी इस्राफील फरिश्ता अपने दूसरे सूर में अखण्ड मुक्ति का उपहार देगा। धाम धनी ने अपनी अपार कृपा से तारतम वाणी में धर्मग्रन्थों के छिपे हुए गुह्यतम रहस्यों का स्पष्टीकरण किया है।

भावार्थ— उपरोक्त दोनों चौपाइयों में कियामतनामा की अन्तिम चौपाई "एक सूर उड़ाए के दिए, दूसरे तेरहीं में कायम किये" का भाव दर्शाया गया है। इस्राफील जाग्रत बुद्धि का फरिश्ता (शक्ति) है। उसके द्वारा तुरही में सूर फूँकने का वर्णन आलंकारिक है। इसका अभिप्राय है— जाग्रत बुद्धि के ज्ञान की वर्षा होना।

पहले सूर अर्थात् चरण में चारों ओर अखण्ड ज्ञान का प्रकाश फैल जायेगा, जिससे संशयात्मक स्वाप्निक ज्ञान का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। दूसरे सूर (चरण)

में जाग्रत ज्ञान से परिपूर्ण प्राणी अखण्ड मुक्ति पाने के अधिकारी बन जायेंगे। "बारहीं सदी संपूरन, ब्रह्मांड ने पायो इनाम" (सनन्ध ४२/२३) तथा "कायम सदी तेरहीं, उथींदा निरवाण" (सनन्ध ३५/३०) का कथन इसी तथ्य की ओर संकेत करता है।

फरिस्ता नजीकी बुजरक, किया सब जिमी सिजदा जिन।

दर्द लानत न किया सिजदा, रद किया वास्ते मोमिन॥३४॥

अल्लाह का नजदीकी कहलाने वाला फरिश्ता अजाजील है, जिसने सम्पूर्ण धरती पर अल्लाह के नाम का सिज्दा किया, किन्तु आदम पर सज्दा न करने के कारण उसे खुदा से धिक्कार मिली। ब्रह्मसृष्टियों को माया में भुलाने वाला खेल दिखाने के लिये ही उससे ऐसा अपराध कराया गया।

भावार्थ- अक्षरातीत परब्रह्म के सत् अंग अक्षर ब्रह्म हैं, जिनके मन स्वरूप अव्याकृत का स्वाप्निक मन आदिनारायण है। इन्हें ही कतेब परम्परा में अजाजील कहा जाता है। वैदिक मान्यता के अनुसार अद्वैत ब्रह्म की भूमिका में अन्य किसी का भी अस्तित्व नहीं है, किन्तु कतेब परम्परा में बेहद मण्डल (जबरूत) की अलग-अलग शक्तियों को फरिश्ते कहकर सम्बोधित किया जाता है।

अक्षर ब्रह्म के मन स्वरूप अव्याकृत का स्वाप्निक मन होने के कारण अजाजील को अल्लाह का नजदीकी फरिश्ता कहा गया है। अजराईल (शिव) तथा मैकाईल (ब्रह्मा जी) को अल्लाह के नजदीकी फरिश्तों में नहीं माना जाता है, क्योंकि ये इसी संसार में उत्पन्न होते हैं।

दिल मोमिन अर्स कहया, ए जो असल अर्स में तन।

ए लिख्या फुरमान में जाहेर, पर किया न बेवरा किन॥३५॥

ब्रह्मात्माओं के हृदय को प्रियतम अक्षरातीत का धाम कहा जाता है। उनके मूल तन परमधाम में विद्यमान हैं। कुरआन में यह बात प्रत्यक्ष रूप से लिखी तो हुई है, किन्तु किसी ने भी यह स्पष्ट रूप से निर्णय करके नहीं बताया कि वे कौन हैं, जिनका हृदय अक्षरातीत का धाम कहलाता है।

भावार्थ- कुरआन के सि. २ सू. २ आ. १८६ में लिखा है कि "क़ल्ब-ए-मोमिन अर्शुल्लाह" यानि क़ल्ब-ए-मोमिन अर्श-ए-मनस्त अर्थात् मोमिन का दिल ही अल्लाह का स्थान है।

पार: २. सूर: २ आयत १८६ "व इज़ा स-अ-ल-क..... अन्नी फ इन्नी करीबुन" अर्थात् जब

व्यक्ति पूछे (ज्ञात करे) तो मैं दिल के करीब हूँ।

औलिया लिह्ना रूहें मोमिन, बोहोत नाम धरे उमत।

ए सब बड़ाई गिरो एक की, जो अर्स रूहें हक निसबत॥३६॥

कुरआन में ब्रह्मसृष्टियों को औलिया लिह्नाह, रूहें, मोमिन आदि अनेक नामों से दर्शाया गया है। यह सारी महिमा उन आत्माओं की है, जो परमधाम की रहने वाली हैं तथा प्रियतम अक्षरातीत से जिनका प्रिया-प्रियतम का अखण्ड सम्बन्ध है।

हकें कलाम लिखे अपने, कहे मैं भेजे मोमिनों पर।

सो फिरका खोले इसारतें रमूजें, बिन मोमिन न कोई कादर॥३७॥

अक्षरातीत परब्रह्म ने अपने कहे हुए शब्दों को कुरआन में लिखवाया है। वे कहते हैं कि मैंने ये शब्द अपनी

आत्माओं के लिए भिजवाये हैं। कुरआन में संकेतों में कहे हुए गुह्य भेदों को मात्र ब्रह्मसृष्टियाँ ही खोल सकती हैं। इनके अतिरिक्त और किसी में भी यह सामर्थ्य नहीं है।

हकें लिख्या मैं करूँ हिदायत, एक नाजी फिरके को।
हुआ हजूर ले हक इलम, जले बहत्तर दोजखमों॥३८॥
कुरआन में परब्रह्म लिखते हैं कि मैं केवल एक नाजी फिरके को ही हिदायत (निर्देशन, सिखापन) दे रहा हूँ, जो मेरे ज्ञान को ग्रहण कर मेरे पास आ जाएगा। शेष बहत्तर फिरके दोज़क (प्रायश्चित, नरक) की अग्नि में जलेंगे।

भावार्थ— कुरआन के सि. १ सू. २ आ. १०८ "अम् तुरीदून..... सवा अस्सबीलि" अर्थात् तो वह सीधे रास्ते से भटक गया।

सि. १ सू. २ आ. ११० "मिन खैरिन ताजिदूह
 अिन्दल्लाहि.....अिन्नल्लाह बिमा तऽमलून मशीरुन"
 अर्थात् अल्लाह के यहाँ पाओगे (मोक्ष) क्योंकि अल्लाह
 सब कुछ देख रहा है।

लिखियां सब बड़ाइयां, तिन सब सिर हक हुकम।

सो सब आमर दर्ई हाथ रुहन, इनों दिल अर्स कर बैठे खसम॥३९॥

कुरआन में सारी महिमा इन्हीं ब्रह्मात्माओं की है। इन
 सबके सिर पर श्री राज जी का हुक्म लीला कर रहा है।
 धाम धनी ने इन्हें अपने हुक्म की शक्ति दी है और इनके
 हृदय को अपना धाम बनाकर विराजमान हो गये हैं।

भावार्थ— श्री राज जी के हृदय में जो इच्छा होती है,
 उसी के अनुसार ब्रह्मसृष्टियाँ कार्य करती हैं, और जब
 ब्रह्मसृष्टियाँ अपने प्राणेश्वर की पहचान संसार को देती हैं,

तो संसार उनका निर्देश मानता है। उपरोक्त चौपाई के दूसरे और तीसरे चरण का यही आशय है।

और दिल हकीकी अर्स मोमिन, हके दिल अर्स कहया इन।

दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, और ऊपर कहया दुस्मन॥४०॥

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों का हृदय सच्चा होता है, इसलिये धाम धनी ने इनके हृदय को अपना धाम कहा है। मायावी जीवों का हृदय झूठा होता है और मात्र माँस का टुकड़ा होता है। इनमें अज्ञान रूपी शैतान का वास होता है।

भावार्थ— मूल सम्बन्ध के कारण ही धाम धनी ब्रह्मात्माओं के हृदय को अपना धाम बनाते हैं। ब्रह्मात्मा जिस जीव पर विराजमान होती है, उसका हृदय भी वही होता है जो अन्य सांसारिक जीवों का होता है। परमधाम

की आत्मा के हृदय से सम्बन्धित होने के कारण, जीव के हृदय में भी आत्मिक गुण (प्रेम, विश्वास, समर्पण आदि) आने लगते हैं, इसीलिये उसके हृदय को सच्चा कहा गया है। माया के बन्धनों में बँधे हुए जीव का हृदय झूठा ही होता है।

दुनियां दिल मजाजी अबलीस, दिल हकीकी पर हक।

एक गिरो दिल अर्स कही, सोई अर्स रुहें बुजरक॥४१॥

जीवों के दिल झूठे होते हैं, जिनमें अज्ञान रूपी दज्जाल की बैठक होती है। आत्माओं के सच्चे दिल में परब्रह्म विराजमान होते हैं। जीवों से भिन्न, परमधाम की आत्माओं का हृदय धाम होता है, इसलिये इनकी महिमा अत्यन्त महान कही जाती है।

रूह की नजरों पाइए, जो हक के नजीकी।

सो बैठे अपने मरातबे, देवे हक कलाम साहेदी॥४२॥

मात्र आत्मिक दृष्टि से देखने पर ही परब्रह्म के अँगरूप (नजदीकी) कहे जाने वाले ब्रह्ममुनियों की पहचान हो सकती है। वे ब्रह्ममुनि तो अपने मूल तन से परमधाम में धनी के सम्मुख बैठे हैं तथा स्वाज्ञिक तन से इस संसार में हैं। इसकी साक्षी कुरआन में दी गयी है।

भावार्थ- कुरआन के सि. ९ सू. ७ आ. १७२ में कहा गया है कि "अलस्तु बिरब्बिकुम् कालू बला" अर्थात् धनी ने परमधाम में वचन लिया कि मैं ही तुम्हारा ईष्ट/पूज्य हूँ, तब ब्रह्मात्माओं ने प्रत्युत्तर में कहा कि निःसन्देह आप ही हमारे उपास्य हैं।

बड़ा फरिस्ता मलकूत का, जाए सके ना जबरूत जित।

सुनने हकीकत कुरान की, रखता नहीं ताकत॥४३॥

मलकूत का बड़ा फरिस्ता अजाजील है, जिसका सामर्थ्य अक्षरधाम (सत्स्वरूप) में जाने का नहीं है। उसमें इतनी भी शक्ति नहीं है कि वह कुरआन के यथार्थ गुह्य भेदों को सुन सके।

मलकूत जबरूत लाहूत, ए अर्स कर तीनों लिखे।

मलकूत फना बीच में, जबरूत लाहूत बका ए॥४४॥

तीनों सुष्टियों (जीव, ईश्वरीय, तथा ब्रह्मसृष्टि) के तीन धाम हैं— १. वैकुण्ठ (मलकूत) २. बेहद मण्डल (जबरूत) ३. परमधाम (लाहूत)। वैकुण्ठ प्रलय में लय हो जाने वाला है, तथा बेहद मण्डल और परमधाम को अखण्ड कहा गया है।

नूर मकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबरईल जित।

अर्स अजीम जो लाहूत, हक हादी रूहें बसत॥४५॥

अक्षरधाम को जबरूत (सत्स्वरूप) कहा जाता है। जिबरील यहीं तक पहुँचता है। इससे परे जो परमधाम है, उसमें श्री राज जी, श्यामा जी, और सखियाँ रहती हैं।

भावार्थ- यमुना जी से पश्चिम में जो अक्षर ब्रह्म का रंगमहल आता है, उसे प्रायः अक्षरधाम कहते हैं, किन्तु यहाँ अक्षर ब्रह्म की लीला नहीं होती। अक्षर ब्रह्म की लीला बेहद मण्डल में होती है, इसलिये उसे अक्षरधाम भी कहते हैं। जिबरील तथा इस्माफील का स्थान सत्स्वरूप (अक्षरधाम) है।

आगूं जबरईल जाए ना सक्या, वाकी हद जबरूत।

पोहोंच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत॥४६॥

जिबरील का निवास सत्स्वरूप है, इसलिये वह उससे आगे नहीं जा सका। वह बेहद से परे उस सर्वोपरि परमधाम में नहीं जा सका, जहाँ सखियाँ रहती हैं।

विशेष- सर्वरस सागर में भी सखियों की लीला होती है। ऐसी स्थिति में जिबरील का वहाँ जा पाना सम्भव नहीं है।

हक हादी रूहें रूहअल्ला, ए बीच अर्स वाहेदत।

करे इलम लदुन्नी बेवरा, इत और न कोई पोहोंचत॥४७॥

युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी तथा श्यामा जी की अँगरूपा सखियाँ परमधाम की एकदिली (एकत्व) में रहते हैं। मात्र तारतम वाणी से ही वहाँ का विवरण प्राप्त होता है। वहाँ पर इस ब्रह्माण्ड का अन्य कोई भी नहीं जा सकता।

वाहेदत निसबत अर्स की, जब जाहेर हुई खिलवत।

ए सुकन सुन मोमिन, दिल लेसी अर्स लज्जत॥४८॥

जब श्री प्राणनाथ जी द्वारा तारतम वाणी के प्रकाश में परमधाम की वहदत (एकत्व), निस्बत (मूल सम्बन्ध), तथा खिल्वत उजागर हो गयी है, तो उसे आत्मसात् करके आत्मायें परमधाम के आनन्द का रसास्वादन करेंगी।

ए बीच हमेसा खिलवत के, इनको हक मारफत।

वाहेदत एही केहेलावहीं, बीच अर्स अजीम उमत॥४९॥

ये आत्मायें सर्वदा ही परमधाम की खिल्वत के आनन्द में डूबी रहती हैं। इन्हें श्री राज जी के स्वरूप की यथार्थ पहचान है। परमधाम में इनके नूरमयी तनों में एकत्व (वहदत) क्रीड़ा करता है।

भावार्थ- खिल्वत का तात्पर्य है, जहाँ प्रिया-प्रियतम (माशूक-आशिक) के अतिरिक्त अन्य कोई भी न हो। बाह्य रूप से सम्पूर्ण परमधाम (रंगमहल, २५ पक्ष आदि) ही खिल्वत है, तो आन्तरिक रूप से प्रिया-प्रियतम का हृदय ही एक-दूसरे की खिल्वत है।

बीच मेयराज इसारतें, मासूक लिख भेजत।

हाँसी करने रूहन पर, ए जो फरेब देखाया इत॥५०॥

अपनी अँगनाओं पर हँसी करने के लिये ही प्रियतम अक्षरातीत ने मायावी प्रपञ्चों से भरा हुआ यह खेल दिखाया है। इसमें कुरआन के माध्यम से उन्होंने मुहम्मद स.अ.व. को होने वाले मेयराज की गुह्य बातें संकेतों में लिखकर भेजी हैं।

हक अर्स नजीक सेहेरग से, दोऊ हादी खोले द्वार।

बैठाए अर्स अजीम में, जो कहा मेयराजें नूर पार॥५१॥

ब्रह्मात्माओं का हृदय ही वह परमधाम है, जिसमें प्राणवल्लभ अक्षरातीत प्राणनली शाहरग से भी अधिक निकट होकर विराजमान हैं। इस रहस्य को उद्घाटित करते हुए सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी ने इस नश्वर संसार में ही हमें उस परमधाम की अनुभूति अपने धाम-हृदय में करा दी है, जिसे मुहम्मद स.अ.व. ने अपने मेयराज (दर्शन की रात्रि) वर्णन में अक्षर से भी परे कहा है।

भावार्थ- निस्बत (मूल सम्बन्ध) की पहचान के बिना प्रियतम की अनुभूति को शाहरग से निकट मानना उचित नहीं है। यह तारतम वाणी के प्रकाश में ही सम्भव है।

किन तरफ न पाई अर्स हक की, मांहें चौदे तबक।

सो खोल दिए पट हादिऐँ, इलम ईसे के बेसक॥५२॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में आज दिन तक कोई भी यह नहीं बता सका था कि अक्षरातीत का परमधाम कहाँ है। श्री प्राणनाथ जी ने सबको संशय रहित करने वाले तारतम ज्ञान के प्रकाश में निराकार का आवरण हटाकर यह दर्शा दिया कि परमधाम कहाँ है।

भावार्थ— निराकार मण्डल के अनन्त होने के कारण स्वप्न की बुद्धि से यह कोई जान ही नहीं पाता था कि इसके परे भी कुछ हो सकता है। निराकार—बेहद से परे जो अनन्त परमधाम है, वह तारतम वाणी के आधार पर ध्यान (चितवनि) द्वारा अपने धाम—हृदय में ही देखा जा सकता है।

देखो मरातबा मोमिनो, बोलें न मेयराज बिन।

जो हकें हरफ छिपे रखे, वास्ते अर्स रूहन॥५३॥

आप परमधाम की आत्माओं की गरिमा तो देखिये। ये परब्रह्म के दर्शन के अतिरिक्त और कोई चर्चा ही नहीं करतीं। इन्हीं आत्माओं के लिये तो प्रियतम अक्षरातीत ने कुरआन में वर्णित दर्शन लीला से सम्बन्धित मारिफत के गुह्य रहस्यों वाले शब्दों को सबसे छिपा रखा था।

मेयराज में जो इसारतें, हक इलमें खोलें मोमिन।

कहें गुझ छिपा दिल हक का, कोई ना कादर या बिन॥५४॥

मुहम्मद स.अ.व. को होने वाले साक्षात्कार की गुह्यतम बातें मात्र संकेतों में ही कुरआन में कही गयी हैं, जिसके रहस्यों को मात्र ब्रह्मात्मायें ही तारतम ज्ञान द्वारा खोल (स्पष्ट कर) सकती हैं। एकमात्र उनमें ही यह सामर्थ्य है

कि वे अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत के हृदय में छिपे हुए गुह्यतम रहस्यों को उजागर करें, अन्य किसी के लिये यह सम्भव नहीं है।

कई जोर किया जबरईलें, आया एक कदम महंमद खातिर।
तो भी आगूँ आए न सक्या, कहे जलें मेरे पर॥५५॥

जिबरील ने बहुत प्रयास किया कि वह परमधाम में प्रवेश कर सके, किन्तु सफल न हो सका। मुहम्मद स.अ.व. के कहने पर एक कदम आगे भी चला, किन्तु इससे आगे न बढ़ सका। कहने लगा कि यदि मैं आगे चलता हूँ तो मेरे पर जलते हैं।

भावार्थ— अनन्य प्रेम (इश्क) और एकत्व (वहदत) के परमधाम में प्रवेश कर पाना जोश के फरिश्ते जिबरील के लिये सम्भव नहीं है। इसी तथ्य को दर्शाने के लिये पर

(पँख) जलने की बात कही गयी है, जो आलंकारिक वर्णन है। जिबरील कोई पक्षी नहीं है, जिसके पँख हों।

चढ़ उतर के देखाइया, वास्ते राह मोमिन।

जो रूहें उतरी लैलत कदर में, सो चढ़ जाएंगे अर्स वतन॥५६॥

मुहम्मद स.अ.व. ने अपने परमधाम एवं परब्रह्म के दर्शन को इसलिए संसार में उजागर किया कि जिससे प्रेरित होकर परमधाम की आत्मायें भी वही मार्ग अपनायें। निजधाम से जो भी आत्मायें इस माया के खेल में आयी हैं, वे मुहम्मद स.अ.व. को मार्गदर्शक मानकर अपने धाम धनी का साक्षात्कार कर सकती हैं।

इसारतें मेयराज में, जो लिख भेजियां हक।

सो खोलें हम इसारतें, पढ़ायल रूह अल्ला के बेसक॥५७॥

मेयराज से सम्बन्धित गुह्य बातें धाम धनी ने कुरआन में संकेतों में लिखवा रखी हैं। श्यामा जी के तारतम ज्ञान के प्रकाश में हम आत्मायें उन रहस्यमयी संकेतों के गुह्य अर्थों को उजागर करती हैं।

कहया मीठा दरिया उजला, जो देख्या नबी नजर।

तिन किनारे दरखत, जित बैठा जानवर॥५८॥

मेयराजनामे में लिखा है कि मुहम्मद स.अ.व. को मेयराज में परमधाम में एक दरिया दिखायी पड़ा, जिसका जल दूध से भी अधिक उज्ज्वल तथा मिश्री से भी अधिक मीठा था। उसके किनारे एक वृक्ष था, जिस पर एक मुर्गा बैठा हुआ था।

अन्दर मुरग जो कहया, बैठा हुकम के दरखत।

इत ना पोहोंच्या जबरईल, सो मोमिन खोले मारफत॥५९॥

जिस हुकम रूपी वृक्ष के ऊपर मुर्गा बैठा हुआ था, वहाँ तक पहुँचने में जिबरील भी असमर्थ था। इस गुह्य आलंकारिक कथन का रहस्य मात्र ब्रह्मसृष्टियाँ ही प्रकाशित कर सकती हैं।

चुटकी खाक ले चोंच में, मुरग बैठा दरखत पर।

पर ना जलें इन मुरग के, सो कोई देवे एह खबर॥६०॥

वृक्ष पर बैठे हुए मुर्गे ने अपनी चोंच में चुटकी-भर मिट्टी दबा रखी है। कोई इस रहस्य को स्पष्ट करे कि इस मुर्गे के पँख क्यों नहीं जल रहे हैं?

भावार्थ- इस चौपाई में यह प्रश्न पूछा जा रहा है कि जहाँ जाने पर जिबरील के पर जलते हैं, तो उस मुर्गे के

पर क्यों नहीं जलते हैं?

इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि श्यामा जी का स्वरूप एकत्व (वहदत) में है, इसलिये उनके (मुर्ग के) पर नहीं जल सकते, जबकि जिबरील के जल जायेंगे अर्थात् जिबरील वहदत में प्रवेश करने में असमर्थ है।

हादीएँ पूछा हक से, क्यों खाक धरी चोंच में।

खेल उमतेँ मांगिया, गुनाह वजूद हुआ तिनसे॥६१॥

जब मुहम्मद स.अ.व. मेयराज में मूल मिलावा में पहुँचे, तो उन्होंने श्री राज जी से पूछा कि मुर्गे ने अपनी चोंच में मिट्टी क्यों रखी है? इसके उत्तर में धाम धनी ने कहा कि श्यामा जी तथा ब्रह्मसृष्टियों ने माया का खेल देखने की इच्छा की है, इसलिये इनके तनों को अपराध लगा है

और मिट्टी का मानव तन धारण करना पड़ा है।

लिख्या दरिया नींद इसारतें, जो देखाई कर मेहेरबानगी।

मोहे रूह अल्ला पट खोलिया, दर्ई महंमदें मेयराज में साहेदी॥६२॥

उपरोक्त कथानक में आलंकारिक रूप से संकेतों में यह दर्शाया गया है कि मोहसागर ही नींद है। इस मायावी खेल को प्रियतम अक्षरातीत ने अपनी आत्माओं पर अपार कृपा के फलस्वरूप दिखाया है। इस रहस्य को मेरे धाम-हृदय में विराजमान होकर श्यामा जी ने दर्शाया है और मुहम्मद स.अ.व. ने भी मेयराज द्वारा साक्षी दी है।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक खेल के महाकारण के सन्दर्भ में है। जब मूल स्वरूप श्री राज जी ने मेहर का दरिया दिल में लिया, तो रूहों के दिल में खेल देखने का ख्याल उपजा। अपने स्वरूप की पूर्ण पहचान (अर्थात्

वहदत, निस्बत, खिल्वत, इश्क आदि की मारिफत) को दर्शाने के लिये ही धाम धनी ने खेल देखने की इच्छा पैदा की, जिसके परिणामस्वरूप अक्षर ब्रह्म ने परमधाम की लीला देखने की इच्छा की तथा ब्रह्मसृष्टियों ने माया देखने की। श्री राज जी के दिल की इच्छा (हुक्म) से यह खेल बना है, इसलिये इसे हुक्म का खेल (वृक्ष) कहा गया है। इस खेल में श्यामा जी की आत्मा (मुर्ग) ने मानव तन धारण किया है, अर्थात् अपनी चोंच में मुर्ग ने चुटकी भर मिट्टी रखी है।

ए जो मुर्ग मेयराज में अंदर, हर साइत यों केहेता था।

जो छोड़ूं खाक चोंच से, तो दरिया होए जाए अंधेरा॥६३॥

जब मुहम्मद स.अ.व. को मेयराज हुआ, तो उन्होंने देखा कि वृक्ष पर बैठा हुआ मुर्ग बार-बार हर पल यही

कह रहा था कि यदि मैं अपनी चोंच से मिट्टी छोड़ दूँ, तो इस दरिया में अन्धेरा हो जायेगा।

भावार्थ- श्यामा जी की ही अंगरूपा सभी आत्मायें हैं। उन्होंने सभी आत्माओं को जाग्रत करने के लिये ही मानव तन धारण किया है। "सुंदरबाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी" (प्रकास हि. २/२) तथा "ल्याओ बुलाए तुम रूह अल्ला, जो रूहें मेरी आसिक" (खिलवत १३/१) का कथन यही दर्शाता है।

चोंच से मिट्टी छोड़ने का तात्पर्य है- श्यामा जी द्वारा धारण किये हुए तन को छोड़ देना और अपनी सुरता से परमधाम चले जाना। इसके परिणाम स्वरूप दरिया (संसार सागर) में अन्धेरा हो जाने का भाव यह है कि जब श्यामा जी का तन ही नहीं रहेगा, तो यह खेल भी समाप्त हो जायेगा, क्योंकि उनके अतिरिक्त और कौन

है जो ब्रह्मात्माओं को जगायेगा।

यह तो सर्वविदित है कि सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के धामगमन के पश्चात् उनका दाह संस्कार कर दिया गया था। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि—

रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे ऊपर मुद्दार।

सोई इमाम मेंहेदी, याकी बुजरकी बेसुमार।।

किरंतन १०८/७

अब श्यामा जी के दूसरे तन (मिहिरराज जी) में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में लीला हो रही है। प्रकृति की मर्यादा निभाने के नाटक रूप में अपनी अन्तर्धान लीला को दर्शाने के पश्चात् श्री प्राणनाथ जी एक वर्ष तक महाराजा छत्रशाल जी, श्री लालदास जी, मुकुन्ददास जी आदि से प्रत्यक्ष वार्ता करके उन्हें आनन्दित कर सान्त्वना देते रहे। तत्पश्चात् अखण्ड ध्यान में लीन हो

गये। उनका शरीर अब भी पूर्ववत् ही है। जिस क्षण उनका तन चैतन्यता से रहित होगा, उसी क्षण प्रलय हो जायेगा और इस संसार का भी अस्तित्व समाप्त हो जायेगा।

माहेश्वर तन्त्र २६/७,८ का यह कथन देखिए, जिसमें भगवान शिव कह रहे हैं कि मैंने ५००० दिव्य वर्षों की समाधि लगायी। उसमें जो ज्ञान प्राप्त हुआ, वही मैं तुम्हें (पार्वती जी को) सुना रहा हूँ।

इति तर्कयता देवि समाधिर्हि मया धृतः।

तस्मिन् युगसहस्राणि व्यतीयुः पंच सुन्दरि॥

समाधिस्थेन देवेशि श्रुतमीश्वर भाषितम्।

तच्छ्रुत्वा हृदयं देवि निर्विकल्पमभून्मम॥

यदि अक्षर ब्रह्म की सुरता रूप भगवान ५००० दिव्य वर्षों की समाधि लगा सकते हैं, तो श्री महामति जी

को तो समाधिस्थ हुए मात्र लगभग ३२५ वर्ष ही हुए हैं। उपरोक्त कथन को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को इस अशोभनीय भाषा का प्रयोग बन्द कर देना चाहिए, जिसमें वे अपने पाण्डित्य के अहं में कहा करते हैं कि गुम्मत जी तो मात्र समाधि है और उसमें श्री राज जी की शक्ति या महामति जी की आत्मा नहीं है।

इतने कटु शब्दों का प्रयोग करने वाले सुन्दरसाथ को यह आत्म-मन्थन करना चाहिए कि वे श्री प्राणनाथ जी को किस स्वरूप में देखते हैं? क्या उनकी दृष्टि में श्री प्राणनाथ जी का व्यक्तित्व भगवान शिव से भी छोटा नजर आ रहा है? इस तरह की शब्दावली का प्रयोग करने से पूर्व उन्हें इसी खुलासा ग्रन्थ २/३३ को पढ़ लेना चाहिए जिसमें कहा गया है—

जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्योंकर।

खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर॥

यदि ब्रह्मसृष्टियाँ श्री प्राणनाथ जी के साथ परमधाम चली गयी हैं, तो यह संसार अभी तक क्यों दिखायी दे रहा है?

उपरोक्त विवेचना यही दर्शाती है कि जब तक यह ब्रह्माण्ड दिखायी दे रहा है, तब तक ब्रह्मसृष्टियाँ भी यहीं हैं तथा उनके प्रियतम प्राणनाथ भी यहीं हैं।

दरिया उजला दूध सा, मेहेर मीठा मिश्री।

ए दरिया कबूँ न होए अंधेरा, ए हकें रूहों पर मेहेर करी॥६४॥

उस दरिया को दूध के समान उज्ज्वल (सफेद) तथा मिश्री के समान मीठा कहा गया है। इसे परब्रह्म की कृपा से बनाया हुआ माना गया है। धाम धनी ने अपनी अपार मेहर से इस दरिया (सागर) को बनाया है, जिसमें कभी

भी अन्धेरा होगा ही नहीं।

भावार्थ- क्षीर सागर आत्माओं की वहदत (एकत्व) का सागर है। परमधाम की वहदत में श्री राज जी, श्यामा जी, सखियों, खूब खुशालियों आदि सभी का इश्क समान है, क्योंकि सभी के दिलों के रूप में एकमात्र श्री राज जी का ही दिल (हृदय) लीला कर रहा है। सभी एक-दूसरे को रिझाते हैं, अतः सभी स्वयं को एक-दूसरे का आशिक कहते हैं।

एक पातसाही अर्स की, दूजे वाहेदत का इस्क।

सो देखलावने रूहों को, पेहेले दिल में लिया हक॥

खिलवत ६/४३

इस खेल में तारतम वाणी द्वारा परमधाम की वहदत (एकत्व) के इस रहस्य (मारिफत) को उजागर करना है कि परमधाम में मात्र श्री राज जी का मारिफत

(परमसत्य) स्वरूप ही हकीकत (श्यामा जी, सखियों, महालक्ष्मी, पच्चीस पक्ष आदि) के रूप में लीला कर रहा है। उन्हीं का प्रेम, सौन्दर्य, मूल सम्बन्ध आदि आन्तरिक रूप से सभी स्वरूपों में विद्यमान है, जो लीला रूप में बाह्यतः अलग-अलग प्रतीत हो रहा है। इस नश्वर जगत् में मिश्री से भी मीठी यह तारतम वाणी है, जो श्यामा जी की रसना रूप है। यही कारण है कि इस संसार रूपी दरिया को दूध से भी अधिक उज्ज्वल तथा मिश्री से भी अधिक मीठा कहा गया है।

कहया खाक वजूद नासूती, हादी बैठा वजूद धर।

दुनी दरिया अंधेरी, हादी चले ना होए क्यों कर॥६५॥

श्री श्यामा जी ने जो मिहिरराज जी के रूप में दूसरा तन धारण किया है, वह इस नश्वर संसार का पञ्चभौतिक तन

है। यह संसार ही दरिया है। प्रश्न यह है कि श्यामा जी द्वारा अपना दूसरा तन छोड़ देने के पश्चात् यहाँ अन्धेरा क्यों नहीं होगा?

हकें देखाया दरिया मेहेर का, सो अंधेरा क्योंए ना होए।
करसी कायम चौदे तबक, बरकत हादी रूहों सोए॥६६॥

धाम धनी ने अपनी मेहर के रूप में यह संसार रूपी दरिया दिखाया है। इसमें किसी भी प्रकार से अन्धेरा नहीं हो सकेगा क्योंकि इसमें अपने प्राणेश्वर के साथ श्यामा जी तथा आत्माओं ने लीला की है। इसलिये उनकी कृपा से चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा।

भावार्थ— यद्यपि इस पञ्चभौतिक ब्रह्माण्ड का प्रलय तो होगा, किन्तु बेहद मण्डल में अपने नूरमयी स्वरूप से अपने मूल रूप में अखण्ड रहेगा। अन्य ब्रह्माण्डों की

तरह इसका अस्तित्व समाप्त नहीं होगा।

नूर तजल्ला बीच में, हक हादी रूहों खिलवत।

हक से हादी रूहें नूर में, ए अर्स असल वाहेदत॥६७॥

परमधाम में श्री राज जी, श्यामा जी, और सखियों की खिलवत है, अर्थात् सभी एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। श्री राज जी की हृदय स्वरूपा श्री श्यामा जी हैं और उनकी अँगरूपा नूरमयी सखियाँ हैं। इस प्रकार परमधाम की वहदत (एकदिली) की यह यथार्थता है।

नूर तजल्ला बीच में, लिख्या गुनाह पोहोंच्या रूहन।

जित आए न सक्या जबरईल, इत असल मोमिनो तन॥६८॥

कुरआन में लिखा है कि जिस परमधाम में जिबरील नहीं जा सका, उस परमधाम में ब्रह्मात्माओं के मूल तन

परात्म हैं। फिर भी आश्चर्य की बात है कि उन तनों में खेल देखने का गुनाह कैसे पहुँच गया।

भावार्थ— कुरआन सिपारा ९ सूरः आराफ आ. १७२ में यह प्रसंग लिखा है।

लिया हाथ हिसाब याही वास्ते, हक रूहों पर हाँसी करत।

हक हादी रूहें रूह अल्ला, होसी हाँसी इन खिलवत॥६९॥

प्राणेश्वर अक्षरातीत अपनी अँगनाओं पर हँसी करना चाहते हैं, इसलिए स्वयं न्यायाधीश बनकर श्री प्राणनाथ जी के रूप में यहाँ आये हैं। इस खेल में आत्माओं से होने वाली भूलों की हँसी उस परमधाम में होगी, जहाँ श्री राजश्यामा जी और उनकी अँगरूपा आत्मायें अपने मूल तन से बैठी हैं।

मोतिन के मुंह ऊपर, कुलफ लिख्या मांहें फुरमान।

इन गुन्हेगारों के दिल को, अपना अर्स कर बैठे मेहेरबान॥७०॥

कुरआन में लिखा है कि मोतियों (सखियों) के मुँह पर ताला था, अर्थात् वे फरामोशी में बैठी थीं, किन्तु प्रेममयी कृपा के सागर प्रियतम अक्षरातीत खेल माँगने का गुनाह करने वाली इन आत्माओं के धाम-हृदय में बैठकर लीला कर रहे हैं।

भावार्थ- कुरआन पार: सुब्हानल्ल जी १५ सूरतुबनी असिरातील में वर्णन है कि रसूलल्लाह स.अ.व. ने मेयराज किया। इसका खुलासा कस्सुल अंबिया के पृ. सं. २८०-२८२ में विस्तार से वर्णन किया गया है कि "इनकी कुंजी तेरा दिल" है।

सो कुलफ कहया फरामोस का, कहया गुनाह रूहों का दिल।

खेल मांग्या फरामोस का, कर एक दिल सब मिल॥७१॥

ब्रह्मात्माओं के मुख पर फरामोशी रूपी ताला लगा है तथा उनके दिल में खेल माँगने का गुनाह लगा है। सभी सखियों ने आपस में मिलकर एक मत से माया (फरामोशी, नींद) का खेल देखने की इच्छा की थी, इसलिये उन्हें गुनाह (दोष) लगा है।

फरामोस गुनाह दिल मोमिनों, सोई कुलफ गुनाह इनों दिल।

याकी कुंजी दिल महंमद, सो टाले फरामोसी दे अकल॥७२॥

जिस प्रकार परमधाम में परात्म के दिल में खेल माँगने के कारण फरामोशी और दोष (गुनाह) लगा है, उसी प्रकार इस जगत् में भी उनकी सुरता रूप आत्माओं के हृदय में नींद है तथा खेल माँगने का गुनाह है। श्यामा जी

के हृदय से अवतरित होने वाली उनकी रसना रूप
ब्रह्मवाणी ही वह कुञ्जी है, जिससे नींद और गुनाह (दोष)
दोनों ही समाप्त हो सकते हैं।

कहे महंमद सुनो मोमिनों, ए उमी मेरे यार।

छोड़ दुनी ल्यो अर्स को, जो अपना वतन नूर पार॥७३॥

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे साथ जी! सांसारिक
चतुराई से रहित शुद्ध हृदय वाले आप ही मेरे सच्चे प्रेमी
हैं। इस मायावी जगत् से अपना ध्यान हटाकर उस
परमधाम में ले चलिए, जो अक्षर ब्रह्म से भी परे है।

हम बंदे रूहें इन दरगाह, कहया अर्स दिल मोमिन।

यारों बुलावें महंमद, करो सिजदा हजूर अर्स तन॥७४॥

प्रत्युत्तर में सुन्दरसाथ की ओर से कहा जा रहा है—

प्रियतम के प्रेम में डूबी हम आत्मायें परमधाम की रहने वाली हैं, किन्तु हमारा हृदय (दिल) ही हमारे प्राणेश्वर का धाम है। हमारे प्रियतम प्राणनाथ तारतम वाणी के प्रकाश में हमें बुला रहे हैं। अतः श्री महामति जी के धाम-हृदय में विराजमान अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत को प्रत्यक्ष मानकर प्रणाम कीजिए।

भावार्थ- उपरोक्त प्रकरण की ७२वीं चौपाई में कहा गया है कि जिस प्रकार परात्म के तनों में फरामोशी और गुनाह लगा है, उसी प्रकार आत्मा के तनों में भी फरामोशी (नींद) और गुनाह लगा है क्योंकि वह परात्म की प्रतिबिम्ब स्वरूपा हैं। ठीक यही स्थिति स्वरूप के निर्धारण में भी है। जिस तरह परात्म के हृदय-धाम में अक्षरातीत का स्वरूप विराजमान है, उसी प्रकार आत्मा के भी धाम-हृदय में प्रियतम विराजमान हैं। "इन

गुन्हेगारों के दिल को, अर्स कर बैठे मेहेरबान" (खुलासा ३/७०) तथा "कह्या अर्स दिल मोमिन" (खुलासा ३/७४) का कथन यही सिद्ध करता है।

जब श्री महामति जी के धाम-हृदय में प्रियतम अक्षरातीत विराजमान होकर श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में लीला कर रहे हैं, तो उस स्वरूप को प्रणाम (सज्दा) करने या मूल मिलावा में विराजमान मूल स्वरूप को प्रणाम करने में कोई भी अन्तर नहीं है। यदि यह कहा जाये कि "अर्स बका पर सिज्दा, करावसी इमाम" (खुलासा २/३७) के कथनानुसार मात्र परमधाम के ही स्वरूप पर सज्दा करना चाहिए, तो यह उचित नहीं है क्योंकि "तुमहीं उतर आए अर्स से, इत तुमहीं कियो मिलाप" (श्रृंगार २३/३१) के कथनानुसार मूल स्वरूप श्री राज जी ही इस संसार में अपने आवेश स्वरूप से श्री

प्राणनाथ जी के स्वरूप में लीला कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में दोनों स्वरूपों में कोई भेद नहीं माना जा सकता। यद्यपि श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप द्वारा सब सुन्दरसाथ को मूल स्वरूप का ही ध्यान कराया गया, किन्तु यदि कोई श्री प्राणनाथ जी को आवेश स्वरूप मानकर उनका ध्यान करता है, तो भी उसकी सुरता मूल स्वरूप में अवश्य केन्द्रित होगी। इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री प्राणनाथ जी की पहचान करना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है, जबकि उनके स्वरूप की अवहेलना करना एक अक्षम्य अपराध है।

खुलासा ३/७४ के चौथे चरण में "अर्स तन" शब्द आया है। इसका भाव यह भी है कि जिस प्रकार धनी के दिल में विराजमान होने पर उसे अर्श दिल कहते हैं, उसी प्रकार तन में विराजमान होने पर अर्श तन कहा

गया है।

परमधाम में परात्म के सभी तनों में परामोशी है, अतः उन तनों से प्रणाम करना सम्भव नहीं है। चाहें हम परमधाम में प्रणाम करें या इस संसार में, हमें अपनी परात्म की भावना से आत्मा का श्रृंगार करके ही प्रणाम करना चाहिए। खिल्वत के पहले प्रकरण में ही यह बात दर्शायी गयी है कि श्री राज जी के सम्मुख बैठे रहने पर भी मूल तनों से न तो देखा जा सकता है, न बोला जा सकता है, और न ही सुना जा सकता है। इसी चरण में कथित "हजूर" शब्द से यही आशय निकलता है कि इसी संसार में प्रत्यक्ष विराजमान श्री प्राणनाथ जी को प्रणाम करें।

यदि यह संशय करे कि हमने इन आँखों से श्री प्राणनाथ जी को देखा तो नहीं है, पुनः प्रणाम कैसे करें?

तो इसका समाधान यह है कि गुम्मत जी मन्दिर की सेवा (तख्त) पर यदि हम युगल स्वरूप का भाव लेकर प्रणाम करें, तो वह प्रणाम अवश्य स्वीकार होगा, क्योंकि युगल स्वरूप श्री महामति जी के धाम-हृदय में विराजमान हैं तथा मूल मिलावा में भी विराजामन हैं। उसी युगल स्वरूप की छवि को अपने धाम-हृदय में बसाने का प्रयास करना चाहिए।

श्री प्राणनाथ जी के नाम पर बनाये गये काल्पनिक चित्रों को कभी भी प्रणाम नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये जामनगर राज्य के दो राजाओं के चित्र हैं, जो श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी के रूप में प्रचारित किये जाते हैं। सार तत्व यही है कि हम श्री प्राणनाथ जी को मात्र युगल स्वरूप के रूप में ही देखें और उन्हीं का ध्यान करें।

प्रकरण ॥३॥ चौपाई ॥२६४॥

खुलासा इस्लाम का

इस प्रकरण में इस्लाम के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है।

असल खुलासा इस्लाम का, सब राह करत रोसन।

झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखिर सुख सबन॥१॥

इस्लाम के वास्तविक स्वरूप का बोध अध्यात्म जगत के सम्पूर्ण मार्ग को दर्शाता है। यह मायावी जगत में भी परम सत्य को उजागर करके सबको सुख देने वाला है।

भावार्थ- "इस्लाम" का तात्पर्य शरीयत के ५ नियमों, अरबी वेश-भूषा, भाषा, एवं परम्पराओं को थोपना नहीं, बल्कि समर्पण रूपी उस शाश्वत धर्म को प्रकाश में लाना है, जो सारे विश्व के लिये कल्याणकारी है, और जिसकी गूँज आज से करोड़ों वर्ष पूर्व भारतीय ऋषियों ने "ओ३म्

शान्तिः शान्तिः शान्तिः" कहकर की थी।

तारतम वाणी एवं बीतक साहिब के शब्दों में इस्लाम को ही "निजानन्द" कहते हैं (अरबी भाषा में इस्लाम का तात्पर्य समर्पण है, जो कि सलाम अर्थात् सलामती की कामना से बना है)।

मगज मुसाफ और हदीसों, हादी हिदायत देखें मोमिन।

ए खुलासा बिने इसलाम का, सबों देखावें बका वतन॥२॥

श्री प्राणनाथ जी की कृपा-दृष्टि से ब्रह्मात्मायें कुरआन तथा हदीसों के गुह्यतम् भेदों को जानती हैं। इस्लाम के वास्तविक स्वरूप का प्रकटीकरण सभी को अखण्ड परमधाम की पहचान कराता है।

बका फना का बेवरा, पाया मगज सबका ए।

हादी रूहें अर्स से इजने, लैलत कदर में उतरे॥३॥

सभी धर्मग्रन्थों का गुह्यतम सार तत्व है— इस नश्वर जगत से परे अखण्ड परमधाम का विवरण प्राप्त करना। अपने प्रियतम की इच्छा (आदेश) से श्री श्यामा जी तथा परमधाम की आत्मायें इस नश्वर संसार में लैल-तअल-कद्र (इस प्रकार की लम्बी रात्रि) में अवतरित हुईं।

भावार्थ— तारतम ज्ञान के अवतरण से पूर्व इस संसार में अज्ञानता का अन्धकार फैला था, इसलिये उस समय को इस प्रकार की लम्बी रात्रि (लैल-तअल-कद्र) कहकर सम्बोधित किया गया है (लैल-तअल-कद्र का तात्पर्य महिमावान रात्रि से है)।

हकें कहा अलस्तो-बे-रब-कुंम, कालू वले कहाया रूहन।

खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन॥४॥

परमधाम से इस संसार में आती हुई आत्माओं से धाम धनी ने कहा था कि क्या मैं तुम्हारा प्रियतम नहीं हूँ? प्रत्युत्तर में सखियों ने कहा था कि निश्चित रूप से आप ही हमारे प्रियतम हैं। इस बात पर श्री राज जी ने कहा था कि माया में जाकर तुम मुझसे विमुख हो जाओगी तथा मेरे द्वारा भेजे गये सन्देशवाहक (रसूल साहिब) के वचनों को नहीं मानोगी।

भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फरिस्ते।

मैं तुममें साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के॥५॥

प्रियतम अक्षरातीत ने कहा कि निश्चय ही तुम भूल जाओगी, इसलिये मैं तुम्हें तथा ईश्वरीय सृष्टि को साक्षी

रखता हूँ। मैं तुम्हें अपनी साक्षी दूँगा तथा तुम अपनी ओर से ब्रह्मसृष्टियों की साक्षी देना।

चौथे आसमान लाहूत में, रूहें बैठी बारे हजार।
 इन तसबी से पैदा होत हैं, फरिस्तों का सिरदार॥६॥
 नासूत (पृथ्वी लोक), मलकूत (वैकुण्ठ), जबरूत (बेहद मण्डल) से परे चौथे आकाश परमधाम में १२ हजार ब्रह्मसृष्टियाँ रहती हैं। उनकी खेल देखने की प्रबल इच्छा के कारण देवताओं के स्वामी आदिनारायण की उत्पत्ति हुई।

रूहें रहें दरगाह बीच में, प्यारी परवरदिगार।
 खासलखास कही इनको, सिफत न आवे मांहें सुमार॥७॥
 परमधाम में रहने वाली ये ब्रह्मांगनायें अक्षरातीत की

प्राणवल्लभा हैं। इन्हें खासलखास (सर्वश्रेष्ठ सृष्टि) कहा जाता है। इनकी महिमा असीम मानी जाती है।

उमत मेला महंमद का, इनकी काहूँ ना पेहेचान।

ना होए खुले बातून बिना, मारफत हक फुरमान॥८॥

आज दिन तक किसी को भी परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी तथा उनकी अँगरूपा ब्रह्मसृष्टियों की पहचान नहीं थी। कुरआन के छिपे हुए गुह्य भेदों का स्पष्टीकरण हुए बिना अक्षरातीत परब्रह्म की पूर्ण पहचान होना असम्भव है।

ए बात नहीं अटकल की, होए साबित खुलें हकीकत।

बूझे दीन महंमद का, हक हादी रूहें निसबत॥९॥

कुरआन की ये बातें काल्पनिक या अनुमानतः नहीं हैं।

तारतम ज्ञान के प्रकाश में जब इसके गुह्य रहस्य उजागर हो जायेंगे, तो इसकी सत्यता प्रमाणित हो जायेगी। इसके साथ ही श्री प्राणनाथ जी द्वारा प्रचलित किये निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) की गरिमामयी पहचान मालूम होगी, तथा यह भी विदित होगा कि परब्रह्म अक्षरातीत से श्यामा जी एवं आत्माओं का मूल सम्बन्ध क्या है।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी द्वारा दर्शाया पन्थ सम्पूर्ण विश्व का एकीकरण करने वाला है। इसमें वेद-कतेब द्वारा परमसत्य को उद्धाटित कर सम्पूर्ण विश्व को एक आँगन में बैठाने का मार्ग दर्शाया गया है। कतेब पक्ष की वैचारिक कट्टरवादिता एवं हिंसात्मक भावना ने इस्लाम की मूल भावना को विकृत कर दिया है।

इन महंमद के दीन में, सक सुभे जरा नाहें।

सो हकें दिया इलम अपना, ए सिफत होए न इन जुबांए॥१०॥

श्री प्राणनाथ जी द्वारा दर्शाये हुए निजानन्द मार्ग में नाम मात्र के लिये भी संशय नहीं है। स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म ने इस सम्प्रदाय को परमधाम की वाणी दी है, जिसकी महिमा का वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता।

मासूक महंमद तो कहया, बहस हुआ वास्ते इस्क।

और कलाम अल्ला में कहया, आसिक नाम है हक॥११॥

परमधाम में इश्क (प्रेम) का निर्णय करने के लिये संवाद (बहस) हुआ, जिसमें श्री राज जी ने श्यामा जी को अपना माशूक (प्रियतमा) कहा। परब्रह्म द्वारा कहे गए कुरआन में भी अक्षरातीत को आशिक (प्रियतम, प्रेमी) कहा गया है।

मूल मेला महंमद रूहों का, सो कोई जानत नाहें।

ए जाने हक हादी रूहें, अर्स बका के माहें॥१२॥

परमधाम के अन्दर जिस मूल मिलावा में श्यामा जी एवं सखियाँ मिलकर बैठी हैं, उसकी जानकारी किसी को भी नहीं है। इस रहस्य को मात्र श्री राजश्यामा जी एवं सखियाँ ही जानती हैं, क्योंकि ये उसी अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं।

सुन्नत जमात याको कहे, और कहया दीन उमत।

महंमद की गिरो मिने, सक न सुभे इत॥१३॥

इन्हीं ब्रह्मसृष्टियों को सुन्नत जमात अर्थात् परब्रह्म के प्रति दृढ़ विश्वास रखने वाला, संयमी, और धर्म के प्रति निष्ठावान कहा गया है। श्यामा जी के अँगरूप कहे जाने वाले सुन्दरसाथ में किसी भी प्रकार का संशय नहीं होता

है।

सक सुभे सब सरीयतों, यों कहे हदीस फुरमान।

कोई जाने ना हक तरफ को, ए अर्स रूहें पेहेचान॥१४॥

कुरआन हदीसों में कहा गया है कि संशय शरीयत (कर्मकाण्ड) की राह पर चलने वाली जीवसृष्टि को होता है। कोई भी जीवसृष्टि परब्रह्म के विषय में यथार्थ रूप से नहीं जानती, मात्र परमधाम की आत्माएँ ही प्रियतम अक्षरातीत की पहचान जानती हैं।

दूजा ढिग वाहेदत के, आए न सके कोए।

आगे ही जल जात है, बका न देखे सोए॥१५॥

कोई भी जीवसृष्टि (तारतम ज्ञान से रहित) न तो परमधाम को देखने की योग्यता रखती है और न ही

परमधाम की एकदिली में प्रवेश करने का सामर्थ्य रखती है। परब्रह्म के साक्षात्कार से पहले ही वह अपने अस्तित्व को समाप्त कर लेती है।

भावार्थ- जीवसृष्टि तारतम ज्ञान का प्रकाश पाकर प्रेममयी चितवनि द्वारा परमधाम की शोभा को तो देख सकती है, किन्तु वहदत के स्वरूप श्यामा जी और सखियों को नहीं देख सकती।

जो देख न सक्या जबरईल, तो क्यों कहूं औरन।

ए हक खिलवत महंमद रूहें, सो जाने बका बातन॥१६॥

जिस परमधाम को जिबरील भी नहीं देख सका, तो औरों के विषय में क्या कहूँ। परमधाम की खिल्वत में श्री राजश्यामा जी और सखियाँ रहते हैं। एकमात्र इन्हें ही उस धाम की गुह्य बातें मालूम रहती हैं।

ए खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन।

रूहअल्ला इलम ल्याए इनों पर, ए सब हुआ वास्ते मोमिन॥१७॥

माया का यह खेल श्यामा जी के लिये बना है और वे ब्रह्मसृष्टियों को जाग्रत करने के लिये तारतम ज्ञान लेकर आयी हैं। यथार्थता तो यह है कि इस संसार का बनना तथा तारतम ज्ञान का अवतरित होना भी ब्रह्मसृष्टियों के लिये ही हुआ है।

भावार्थ- प्रियतम अक्षरातीत की आह्लादिनी शक्ति होने के कारण प्रेम संवाद में श्यामा जी का यह विशेष दावा था कि एकमात्र वे ही आशिक हैं। इसका निर्णय करने के लिये खेल का बनना आवश्यक था।

इनों तन असल अर्स में, तीन बेर उतरे मांहें लैल।

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, ए हकें देखाया खेल॥१८॥

श्यामा जी तथा इन ब्रह्मांगनाओं के मूल तन परमधाम में परात्म के रूप में हैं। वे इस रात्रि के खेल में तीन बार व्रज, रास, तथा जागनी ब्रह्माण्ड में आयी हैं। कुरआन में यह बात स्पष्ट रूप से लिखी है कि स्वयं परब्रह्म ने ही उन्हें यह खेल दिखाया है।

भावार्थ- योगमाया के ब्रह्माण्ड में पूर्ण जाग्रति न होने से उसमें होने वाली रास लीला को भी रात्रि के अन्तर्गत ही माना गया है। कुरआन के सि. ३० आमः सू. ९५ सूरः ए-क़द्र में कहा गया है कि "तन्ज़जुल मलायकतु व रूहु फीहा" अर्थात् अवतरित होती ब्रह्मात्मायें (ईश्वरी व ब्रह्म)।

रूहें आइयां खेल देखने, आए महंमद मेंहेदी देखावन।

तीनों हादी खेल देखाए के, दोऊ गिरो ले आवें वतन॥१९॥

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ माया का खेल देखने आयी हैं और उन्हें दिखाने के लिए स्वयं अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आए हैं। उनके स्वरूप में तीनों हादी (बसरी, मलकी, तथा हकी) विराजमान हैं। धाम धनी श्री प्राणनाथ जी ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरी सृष्टि को माया का खेल दिखाकर उनके निज घर परमधाम तथा अक्षरधाम अथवा सत्स्वरूप ले जायेंगे।

भावार्थ- बसरी सूरत से तात्पर्य अक्षर की आत्मा से है, मलकी सूरत का श्यामा जी की आत्मा से, तथा हकी सूरत का श्री राज जी की आवेश शक्ति अर्थात् चिद्धन शक्ति से है।

रुहें खेल देखे वास्ते, भिस्त दई सबन।

द्वार खोल मारफत के, करसी जाहेर हक बका दिन॥२०॥

ब्रह्मसृष्टियों के इस मायावी जगत् में आने के कारण ही धाम धनी ने इस ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान की है। उन्होंने तारतम वाणी द्वारा परमधाम का सर्वोच्च ज्ञान देकर अज्ञानता का अन्धकार मिटा दिया और उजाला कर दिया, जिससे अब अक्षरातीत तथा परमधाम की पहचान उजागर हो जायेगी।

रूहें उतरी नूर बिलंद से, खलक पैदा जुलमत।

दुनी दिल अबलीस कहया, दिल मोमिन हक वाहेदत॥२१॥

ब्रह्मसृष्टियाँ परमधाम से आयी हैं, जबकि जीवसृष्टि मोहसागर (निराकार) से पैदा हुई है। संसार के जीवों के दिल में शैतान की बैठक है, जबकि ब्रह्मात्मा के हृदय की राज जी के हृदय से एकदिली है अर्थात् इनके हृदय में श्री राज जी विराजमान हैं।

दिल मजाजी दुनी का, मोमिन हकीकी दिल।

हक हादी रूहें निसबत, कही अबलीस दुनी नसल॥२२॥

इस संसार के जीवों का दिल झूठा होता है और ब्रह्ममुनियों का हृदय पूर्णतया सच्चा होता है। युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी से ब्रह्मात्माओं का अखण्ड सम्बन्ध है, इसके विपरीत जीवों के हृदय में अज्ञान रूपी शैतान का स्वामित्व रहता है।

तीन जिनस पैदा कही, ताके जुदे कहे ठौर तीन।

करे तीनों को हिदायत महंमद, याको बूझसी महंमद दीन॥२३॥

तीन प्रकार की सृष्टि कही गयी है। इन तीनों के अलग-अलग तीन धाम भी कहे गये हैं। श्री प्राणनाथ जी की ओर से इन तीनों को अलग-अलग सिखापन है, जिसे निजानन्द की राह पर चलने वाले सुन्दरसाथ ही

समझेंगे।

भावार्थ- जब से अक्षरातीत हैं, तभी से ब्रह्मसृष्टि हैं अर्थात् वह अनादि हैं। ईश्वरी सृष्टि (२४०००) परमधाम की लीला का आनन्द लेने के लिये अक्षर ब्रह्म द्वारा धारण की गयी हैं। इस प्रकार वह अखण्ड तो हैं, किन्तु अनादि नहीं। जीव सृष्टि स्वाप्निक है और यहीं उत्पन्न होती है।

ए ले खुलासा मोमिन, बका राह इसलाम।

ए मेहेर मुतलक हक से, करत जाहेर अल्ला कलाम॥२४॥

उपरोक्त चौपाई के रहस्य को जानकर ब्रह्ममुनि अखण्ड परमधाम की राह अपनायेंगे, जो निजानन्द सम्प्रदाय का मूल है। निश्चित रूप से यह कृपा श्री राज जी की है, जो कुरआन के अब तक छिपे हुए गुह्य भेदों को प्रकट कर

रहे हैं।

बिने सब की बताइए, ज्यों होए सब पेहेचान।

दीजे साहेदी मुसाफ की, ज्यों होए ना सके मुनकर जहान॥२५॥

तीनों सृष्टियों के आचरण को स्पष्ट करना चाहिए, जिससे सबको यह बोध हो जाये कि हम किस सृष्टि के अन्तर्गत आते हैं। इस कार्य में कुरआन की साक्षी भी देनी चाहिए, जिससे कोई बहाने बनाकर अस्वीकार न कर सके कि यह आपकी व्यक्तिगत धारणा है।

जो पैदा जिन ठौर से, तिन सोई देखाइए असल।

हुकम चले जित हक का, तित होए ना चल विचल॥२६॥

जो सृष्टि जहाँ से आयी है, उसे उसके घर की पहचान करानी चाहिए। जो कार्य परब्रह्म के आदेश से होता है,

उसमें कोई विकृति (गड़बड़ी) नहीं होती।

द्रष्टव्य- उपरोक्त दोनों चौपाइयों (२५, २६) में श्री प्राणनाथ जी की ओर से जागनी कार्य के सम्बन्ध में सुन्दरसाथ को निर्देशित किया गया है।

पांच बिने कही मुस्लिम की, जिन लई शरीयत।

कलमा निमाज रोजा कहया, और जगात हज जारत॥२७॥

शरीयत के मार्ग पर चलने वाले मुसलमानों के लिये पाँच प्रकार के नियम बनाये गये हैं- १. कलमा पढ़ना २. नमाज पढ़ना ३. रमजान के महीने में रोजे रखना ४. अपनी आय का ४०वाँ भाग दान में देना तथा ५. यथा सम्भव मक्का-मदीना की यात्रा करना।

जुबांन से कलमा केहेना, सिर फरज रोजा निमाज।

जगात हिस्सा चालीसमा, कर सके न हज इलाज॥२८॥

अपने मुख से एक परब्रह्म पर विश्वास दिलाने वाला कलमा (ला इलाह इल्लिल्लाह...) कहना, एक माह रोजे (उपवास) रखना, तथा नियमित रूप से नमाज पढ़ना (प्रार्थना करना) अनिवार्य है। इसके पश्चात् यदि मक्का-मदीना जाना (हज करना) सम्भव न हो सके, तो अपनी आय का चालीसवाँ भाग दान में दे देना।

परहेज करे बदफैल से, बिने पाँचों से पाक होए।

सो आग न जले दोजख की, पावे भिस्त तीसरी सोए॥२९॥

जो मुसलमान बुरे कार्यों से अपने को दूर रखेंगे तथा शरीयत के पाँचों नियमों से अपने हृदय को पवित्र करेंगे, वे दोजक की अग्नि में नहीं जलेंगे। वे आखिर की तीसरी

अर्थात् अव्याकृत में सातवीं बहिश्त (मुक्ति स्थान) को प्राप्त होंगे।

भावार्थ- चार बहिश्तें अव्वल की हैं- १. ब्रज २. रास ३. महंमदी ४. मलकूती। कियामत के समय अखण्ड होने वाली ४ बहिश्तें इस प्रकार हैं- सत्स्वरूप में दो तथा अव्याकृत में दो, जिन्हें सातवीं और आठवीं बहिश्त कहते हैं। मुहम्मद स.अ.व. के देह-त्याग के पश्चात् जो मुसलमान उपरोक्त चौपाई की कसौटी पर खरे उतरेंगे, वे अव्याकृत में स्थित सातवीं बहिश्त को प्राप्त होंगे। इस सम्बन्ध में खुलासा ५/१६ का कथन देखने योग्य है-

जिन किन राह हक की, लई सांच से सरीयत।

भिस्त होसी तिनों तीसरी, सच्चे ना जलें कयामत॥

कोई पांच बिने की दस करो, पालो अरकान लग आखिर।
 पर अर्स बका हक का, दिल होए न मोमिन बिगर॥३०॥

यदि कोई शरीयत के ५ नियमों के स्थान पर १० नियमों का पालन करे तथा कियामत तक पूरे नियमों को भी यथावत् निभाये, फिर भी ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त अन्य किसी के भी दिल में अखण्ड परमधाम और परब्रह्म की शोभा नहीं बस सकती है।

जो पांच बिने न करे, सो नहीं मुसलमान।
 इन की बिने फैल नासूती, ए लिख्या माहें फुरमान॥३१॥

कुरआन में यह बात स्पष्ट रूप से लिखी हुई है कि जो शरीयत के पाँचों नियमों (कलमा, रोजा, नमाज, जकात, हज) का पालन नहीं करता, उसे मुसलमान कहलाने का अधिकार नहीं है। ऐसे लोगों का मायावी

आचरण उन्हें नासूत (मृत्युलोक) में ही बनाये रखता है।

एक कुरान का माजजा, दूजी नबी की नबुवत।

एक दीन जब होएसी, कहया तब होसी साबित॥३२॥

कुरआन का चमत्कार तथा मुहम्मद स.अ.व. की नबुवत तब सत्य प्रमाणित होगी, जब तारतम वाणी के प्रकाश में सारा विश्व एक सत्य धर्म में स्थित हो जायेगा।

भावार्थ- संसार में एक सत्य धर्म की स्थापना का आशय उस वैश्विक धर्म से है, जिससे तारतम वाणी के प्रकाश में सभी मतों के अनुयायी अपने-अपने धर्मग्रन्थों से एक परमसत्य की पहचान करें। यहाँ शरीयत के इस्लाम को सब पर थोपने का कोई भी प्रसंग नहीं है।

हादी किया चाहे एक दीन, ए कौल तोड़ जुदे जात।

सो क्यों बचे दोजख से, जाए छोड़े ना पुलसरात॥३३॥

श्री प्राणनाथ जी सारे संसार को एक सत्य धर्म के मार्ग पर ले चलना चाहते हैं, किन्तु शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान मुहम्मद स.अ.व. के वचनों को नहीं मान रहे हैं और अपने अलग-अलग पन्थ (फिरके) बनाकर चल रहे हैं। शरीयत को न छोड़ने वाले ये मुसलमान दोजक की अग्नि में जलने से नहीं बच सकेंगे।

कहे महंमद मिस्कात में, दुनी दिल पर सैतान।

वजूद होसी आदमी, होसी फिरकों ए ईमान॥३४॥

मुहम्मद स.अ.व. मिस्कात ग्रन्थ में कहते हैं कि संसार के जीवों के दिल में शैतान का स्वामित्व होता है, भले ही इनका शरीर इन्सान (मनुष्य) का क्यों न हो। अलग-

अलग फिरकों (पन्थों) में रहने वाले लोगों का ईमान (विश्वास) भी शैतान (अज्ञान) की ओर से भटकाया हुआ होता है।

पर मैं डरों इमामों से, करसी गुमराह ऐसी उमत।

करसी लड़ाई आप में, छूटे न लग कयामत॥३५॥

किन्तु मैं उन इमामों से डरता हूँ, जो मेरे अनुयायियों को भटका देंगे और आपस में इस प्रकार लड़ेंगे कि कियामत के समय तक उनका युद्ध बन्द नहीं होगा।

भावार्थ- कुरआन के सि. २ सू. २ आ. १०५-१०७ में लिखा है कि "मा मन्सख मिन..... मिसलिहा" अर्थात् हम कोई आयत रद कर दें या बुद्धि से उतार दें या उससे उत्तम ले आएं।

"व इज़्जतु वजिल्लतु मन्तशाऊ" अर्थात् जिसको

हम सद्मार्ग दिखाते हैं, उसको कोई सद्मार्ग से विमुख नहीं कर सकता, एवं जिसको धर्मविमुख कर देते हैं, उसको कोई भी सन्मार्ग पर अग्रसर नहीं कर सकता।

इसका सूक्ष्म अर्थ यह है कि सुन्दरसाथ में भी धर्म के अग्रगण्य इस प्रकार विरोध पैदा करेंगे कि वह प्रलय के समय तक चलता रहेगा।

तो भए तेहत्तर फिरके महंमद के, तामें एक नाजी कहया नेक।
और बहत्तर कहे दोजखी, ए बेवरा कहया विवेक॥३६॥

इस प्रकार मुहम्मद स.अ.व. के अनुयायी मुसलमानों में ७३ फिरके (पन्थ) हो गये, जिनमें मात्र एक को ही अखण्ड सुख को प्राप्त करने वाला कहा गया है। शेष बहत्तर फिरकों को दोजकी (नारकी) कहा गया है। कुरआन में यह बात अच्छी प्रकार से लिखी गयी है।

करी हकें हिदायत नाजी को, ए लिख्या मांहें फुरमान।

इन बीच फिरके सब आवसी, एक दीन होसी सब जहान॥३७॥

कुरआन में ऐसा लिखा है कि परब्रह्म का सिखापन (हिदायत) मात्र नाजी फिरके को ही होगा। तारतम ज्ञान के प्रकाश में जब सभी फिरके उसमें मिल जायेंगे, तो सारे विश्व में एक ही सत्य धर्म की स्थापना होगी।

भावार्थ— बिना तारतम ज्ञान के न तो संसार के मत-पन्थ एक हो सकते हैं और न किसी को अखण्ड धाम का ज्ञान ही प्राप्त हो सकता है। उपरोक्त चौपाई में गुह्य रूप से नाजी फिरके का आशय ब्रह्ममुनियों के समूह या तारतम ज्ञान की छत्रछाया में रहने वालों के लिये है।

सरीयत खूबी नासूत में, याको ए पांचों पाक करत।

ए जाहेर पांच बिने से, ऊंचे चढ़ न सकत॥३८॥

शरीर के पाँचों नियमों का पालन करने वाला इस मृत्युलोक से आगे नहीं जा सकता। इनसे केवल शरीर तथा आंशिक रूप से मन की शुद्धि होती है। स्पष्ट है कि कर्मकाण्ड के इन पाँचों नियमों का पालन अखण्ड धाम में नहीं पहुँचा सकता।

भावार्थ— उपरोक्त चौपाई तथा इसी प्रकरण की २९वीं चौपाई के कथनों में कोई विरोध नहीं है। २९वीं चौपाई में यह दर्शाया गया है कि यदि कोई शुद्ध हृदय से कोई भी बुरा कर्म (हिंसा, माँसाहार, परस्त्री गमन, चोरी, मिथ्या भाषण, शराब इत्यादि) किये बिना तरीकत (दिल की बन्दगी) का आधार लेकर सूफियों की तरह पाँचों नियमों का पालन करता है, तो उसे सातवीं बहिश्त प्राप्त हो जायेगी। किन्तु यदि वह, "दिन को रोजा रखत है, रात हनत हैं गाय", कबीर जी के इस कथन को चरितार्थ

करे, पाँच बार भले ही नमाज पढ़े किन्तु जिहाद की ओट में भोले-भाले गैर-मुस्लिमों का कत्ल करे, दुराचार करके हज करने का नाटक करे, तो उसे इस मृत्युलोक (नासूत) से ऊपर उठने का अवसर नहीं मिलेगा।

छोड़ सरा ले तरीकत, पीठ देवे नासूत।

फैल करे तरीकत के, सो पोहोंचे मलकूत॥३९॥

यदि कोई मुसलमान इन्द्रियों से होने वाली बन्दगी को छोड़कर हृदय से होने वाली बन्दगी का मार्ग अपनाता है, तो वह इस मृत्युलोक को छोड़कर मलकूत अर्थात् वैकुण्ठ को प्राप्त करता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में यह दर्शाया गया है कि नमाज पढ़ने में वज़ू (अपने अंगों को धोना) तथा उठने-बैठने का जो बाह्य कर्मकाण्ड होता है, उसे छोड़कर यदि

कोई सूफियाना अन्दाज में अल्लाह की बन्दगी करता है, तो वह मलकूत को प्राप्त होता है।

कलमा निमाज दोऊ दिल से, और दिलसों रोजे रमजान।

दे जगात हिस्सा उन्तालीसमा, हज करे रसूल मकान॥४०॥

परब्रह्म पर अटूट निष्ठा रखकर जो ध्यान द्वारा दिल से प्रणाम करता है, अपने हृदय से माया की सारी तृष्णाओं को समाप्त कर देता है, तथा अपनी आय का उन्तालीसवाँ हिस्सा परोपकार के लिए दान कर देता है, वह मुहम्मद स.अ.व. की बहिश्त (रास से ऊपर) को प्राप्त होता है।

भावार्थ- इस चौपाई के चौथे चरण में कथित "रसूल मकान" से आशय अक्षरधाम से नहीं लिया जा सकता, क्योंकि मुहम्मद स.अ.व. में अक्षर की आत्मा थी,

इसलिए एकमात्र वे ही अक्षरधाम जा सकते हैं। इस सम्बन्ध में सनंध ३६/६२ का यह कथन देखने योग्य है—

रसूल आया हुकमें, नाम धराया गैन।

हुकम बजाए पीछा फिरया, तब सोई ऐन का ऐन॥

स्पष्ट है कि मुहम्मद स.अ.व. का जीव रास से ऊपर (सबलिक के अन्तर्गत) तीसरी बहिश्त में जायेगा। खुलासा ४/४० की इस चौपाई में "रसूल मकान" से तात्पर्य इसी तीसरी बहिश्त से है। किसी भी जीवसृष्टि के लिए अक्षरधाम में जाना सम्भव नहीं है। सत्स्वरूप की पहली दो बहिश्तें क्रमशः ब्रह्मसृष्टि के जीवों तथा ईश्वरीसृष्टि के लिए हैं। उसमें भी तारतम्य वाणी के प्रकाश में प्रेममयी चितवनि किये बिना किसी भी जीव का प्रवेश सम्भव नहीं है।

कहया दिल दुनी का मजाजी, जो पैदा हुआ केहेते कुंन।
 सो छोड़ ना सके मलकूत को, आड़ी जुलमत हवा ला सुंन॥४१॥

संसार के जीवों का दिल झूठा कहा गया है। जीवसृष्टि की उत्पत्ति कुन्न कहने से हुई है। यह सृष्टि वैकुण्ठ (मलकूत) से आगे नहीं जा सकती है क्योंकि आगे निराकार (मोहसागर, शून्य) का पर्दा आ जाता है।

दुनियां दिल कहया मजाजी, सो टुकड़ा गोस्त का।
 अबलीस कहया दुनी नसलें, सोई दिलों इनों पातसाह॥४२॥

संसार के जीवों के हृदय में झूठ ही झूठ भरा होता है। प्रेम और विश्वास से रहित होने के कारण उनके हृदय को मात्र माँस का टुकड़ा कहा जाता है। इन सांसारिक प्राणियों के हृदय में इब्लीश (अज्ञान) की बैठक होती है, जिसके ये वशीभूत होते हैं।

भावार्थ- जिस हृदय को माँस का टुकड़ा कहा गया है, वह स्थूल शरीर है, किन्तु जिस हृदय (दिल) में अज्ञान (इब्लीश) का वास कहा गया है, वह कारण शरीर है। सृष्टि में कोई भी पदार्थ सत, रज, और तम से रहित नहीं है। रज और तम की अधिकता ही अज्ञानता को पैदा करती है, जिससे जीव पाप कर्मों में लिप्त हो जाता है। इसी को कतेब की भाषा में इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि सभी प्राणियों के अन्दर शैतान का वास है।

आदम औलाद दिल अबलीस, बैठा पातसाह दुस्मन होए।
 कहया हवा खुदाए इन का, उलंघ जाए क्यों सोए॥४३॥

आदम (मनु) से उत्पन्न होने वाले प्रत्येक मानव के हृदय में अज्ञान रूपी इब्लीश विद्यमान रहता है, जो सबका शत्रु है, किन्तु अपना स्वामित्व बनाये रखता है।

ये प्राणी निराकार को ही अपना परमात्मा मानते हैं। ऐसी स्थिति में, भला ये निराकार को पार कर बेहद मण्डल में कैसे जा सकते हैं?

जबराईल महंमद हिमायतें, तो भी छोड़ न सक्या असल।
तो दुनियां जो तिलसम की, सो क्यों सके आगे चल॥४४॥
मुहम्मद स.अ.व. द्वारा उत्साहवर्धन (हिम्मत बढ़ाये जाने) पर भी जब जिबरील फरिश्ता अपने मूल स्थान सत्स्वरूप से आगे नहीं जा सका, तो स्वप्न से उत्पन्न होने वाले जीव भला निराकार से आगे कैसे जा सकते हैं?

जेती दुनी भई कुंन से, हवा तिनसे ना छूटत।
सो क्यों छोड़े ठौर अपनी, कही असल जिनों जुलमत॥४५॥

कुन्न से उत्पन्न होने वाली जीवसृष्टि निराकार को परमात्मा कहना नहीं छोड़ सकती। भला जिसकी उत्पत्ति मोहसागर (नींद) से हुई है, वह अपने मूल को कैसे छोड़ सकती है?

जो उतरे मलायक लैल में, ताको असल नूर मकान।
 सो राह हकीकत लिए बिना, उत पोहोंचे नहीं निदान॥४६॥

जो ईश्वरी सृष्टि इस मायावी जगत् में आयी है, उसका मूल स्थान अक्षरधाम (सत्स्वरूप) है। वह जब तक हकीकत (यथार्थ ज्ञान) का मार्ग नहीं अपनाती, तब तक वह निश्चित रूप से अपने धाम नहीं जा सकती।

कलमा निमाज रोजा हकीकी, करे दिलसों रूह पेहेचान।
 हुआ बंदा बूझ जगात में, दिल दीदार नूर सुभान॥४७॥

हकीकत का कलमा कहने (संसार को पीठ देने), नमाज पढ़ने (परब्रह्म के अखण्ड स्वरूप को ध्यान में रखकर सिजदा बजाने), रोजा रखने (विषय-विकारों से पूर्णतया मुक्त हो जाने), तथा अपने आत्मिक स्वरूप की पहचान करके सच्चे दिल से सेवा करने वाले को अपने दिल में ही परब्रह्म के नूरी स्वरूप का दीदार हो जाता है।

भावार्थ- "मोमिन उजू जब करें, पीठ देवें दोऊ जहान को" (श्रृंगार २५/४७), यह मोमिनों का उजू करना है। "जब हक बिना कछू ना देखे, तब बूझ हुई कलमें" (श्रृंगार २५/५२)। मोमिनों की शरीयत के सम्बन्ध में श्रृंगार २५/५३, ५८ का कथन है-

ए मोमिनों की सरीयत, छोड़े ना हक को दम।

अर्स वतन अपना जान के, छोड़ें ना हक कदम॥

इतहीं रोजा इत बन्दगी, इतहीं जकात ज्यारत।

साथ हकी सूरत के, मोमिनो सब न्यामत॥

हकीकत के सम्बन्ध में तारतम वाणी का कथन है—
जो तूं ले हकीकत हक की, तो मौत का पी सरबत।
मुए पीछे हो मुकाबिल, तो कर मजकूर खिलवत॥

श्रृंगार २५/६५

तारतम वाणी की उपरोक्त कसौटी पर खरा सिद्ध होने वाली सृष्टि ही बेहद मण्डल की अधिकारी बन सकती है।

मलकूत हवा जुलमत, उलंघ जाना तिन पर।

बिना हादी हिदायत, सो बका पावे क्यों कर॥४८॥

वैकुण्ठ के ऊपर निराकार (मोहसागर) का आवरण है,

जिसे पार करने के लिए श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी का प्रकाश चाहिए। इसके बिना कोई भी अखण्ड धाम का सुख नहीं ले सकता।

जिनों हक हकीकत देवहीं, सो छोड़े हवा मलकूत।

दिल साफ जिकर रूहानी, ले पोहोंचावे जबरूत॥४९॥

जिनके ऊपर परब्रह्म की कृपा होती है, उन्हें ही हकीकत (यथार्थ सत्य) का ज्ञान प्राप्त होता है और वे ही वैकुण्ठ-निराकार को छोड़ पाते हैं। अपने हृदय को प्रेम से निर्मल करके प्रीतम के चिन्तन में लगे रहने से जबरूत (अक्षर धाम) की प्राप्ति होती है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में ईश्वरी सृष्टि का मार्ग बताया गया है और इनके स्थान को अक्षरधाम (जबरूत और नूर मकान) समझना चाहिए।

जो फरिस्ता जबरुत का, सो रहे ना सके मलकूत।

मलकूत बीच फना के, नूर मकान बका जबरुत॥५०॥

अक्षरधाम (सत्स्वरूप) का फरिस्ता जिबरील किसी भी स्थिति में वैकुण्ठ में नहीं रह सकता। वैकुण्ठ नश्वर जगत् के अन्दर है, जबकि अक्षरधाम (नूर मकान, जबरुत) अखण्ड है।

बड़ा फरिस्ता नजीकी, जाको रुहल अमीन नाम।

जुलमत हवा तो उलंघी, जबरुत इन मुकाम॥५१॥

अक्षर ब्रह्म का सबसे नजदीकी फरिस्ता जिबरील है, जिसे "रुहल अमीन" भी कहते हैं। इसका मूल घर जबरुत है, इसलिए यह शून्य-निराकार के मण्डल को पार कर गया।

पाई बड़ाई पैगंमरों, हाथ जबराईल सबन।

सो जबराईल न पोहोंचिया, मकान महंमद मोमिन॥५२॥

इस संसार में सभी पैगम्बरों ने जिबरील द्वारा ही शोभा पाई हैं। वह जिबरील फरिश्ता अपनी सारी शक्ति लगाकर भी उस परमधाम में नहीं जा सका, जहाँ श्यामा जी और ब्रह्मात्माओं का निवास है।

सो जबराईल जबरूत से, लाहूत न पोहोंच्या क्योंकर।

हिमायत लई महंमद की, तो भी कहे जलें मेरे पर॥५३॥

वह जिबरील फरिश्ता किसी भी प्रकार से सत्स्वरूप से आगे परमधाम में प्रवेश नहीं कर सका। मुहम्मद स.अ.व. द्वारा उत्साहवर्धन किये जाने पर भी वह कहने लगा कि यदि मैं आगे चलूँ तो मेरे पर जलते हैं, अर्थात् मैं किसी भी स्थिति में प्रेम और एकत्व (एकदिली) के परमधाम में

प्रवेश नहीं कर सकता।

तन मोमिन असल अर्स में, जो अर्स अजीम बका हक।
जित पोहोंच्या नहीं जबरईल, तित क्या कहूं औरों खलक॥५४॥
जो श्री राज जी का सर्वोपरि अखण्ड परमधाम है,
उसमें ही ब्रह्मात्माओं के असल तन (परात्म) विराजमान
हैं। जब वहाँ पर जिबरील नहीं जा सका, तो अन्य जीवों
की बात ही क्या कहूँ।

हक हादी रूहें लाहूत में, ए महंमद रूहों वतन।
इस्क हकीकत मारफत, तो हक अर्स दिल मोमिन॥५५॥
परमधाम में श्री राज जी, श्यामा जी, और सखियाँ रहते
हैं, जिसमें श्यामा जी और सखियाँ अपने प्राणेश्वर
अक्षरातीत के साथ लीला-विहार करती हैं। इनके हृदय

में इश्क, यथार्थ ज्ञान, तथा प्रियतम के स्वरूप की पूर्ण पहचान होती है, इसलिए इनके दिल को ही श्री राज जी का परमधाम कहते हैं।

मारफत हक हकीकत, अर्स रूहों को दर्ई हक।

जो इलम दिया हकें अपना, तामें जरा न सक॥५६॥

श्री राज जी ने तारतम वाणी द्वारा परमधाम की आत्माओं को सत्य तथा परमसत्य (हकीकत तथा मारिफत) का ज्ञान दिया है। प्राणेश्वर अक्षरातीत ने अपनी अँगनाओं के हृदय में जो तारतम ज्ञान का प्रकाश किया है, उसमें नाम मात्र को भी संशय नहीं है।

कही रूहें नूर बिलंद से, माहें उतरी लैलत कदर।

कौल किया हकें इनों सों, मासूक आया इनों खातिर॥५७॥

कुरआन में लिखा है कि ब्रह्मसृष्टियाँ परमधाम से इस मायावी जगत् का खेल देखने आयी हैं। धाम धनी ने इन्हीं आत्माओं को यह वचन दिया था कि मैं भी आऊँगा। श्यामा जी भी इन्हीं को जगाने के लिए आयी हैं।

ए राह इसलाम मोमिनों, चढ़ उतर देखाई रसूल।

आई तीन सूरतें इन वास्ते, जाने रूहें जावें जिन भूल॥५८॥

ब्रह्मसृष्टियों के लिए यही निजानन्द (दीन-ए-इस्लाम) का मार्ग है, जिसमें मुहम्मद स.अ.व. ने परमधाम में जाकर परब्रह्म का दर्शन किया और संसार में आकर उसे बताया। इन ब्रह्मात्माओं के लिए ही मुहम्मद स.अ.व., सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र, एवं श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप इस संसार में प्रकट हुए। यह बात किसी को भी भूलनी

नहीं चाहिए।

इन वास्ते भेजी रूह अपनी, अर्स कुंजी हाथ दे।

दे खिताब इमाम को, अर्स पट खोले इन वास्ते॥५९॥

परमधाम की अपनी आत्माओं के लिए ही धाम धनी ने अपने आनन्द अंग श्यामा जी को परमधाम के रहस्यों को उजागर करने के लिए तारतम ज्ञान की कुञ्जी देकर भेजा। इन आत्माओं के सुख के लिए ही श्यामा जी के दूसरे तन को इमाम की शोभा देकर परमधाम का दरवाजा खोल दिया।

असराफील जबरईल, भेज दिया आमर।

निगहबानी कीजियो, मेरे खासे बंदों पर॥६०॥

प्राणेश्वर अक्षरातीत ने जोश के फरिश्ते जिबरील तथा

जाग्रत बुद्धि के फरिश्ते इस्राफील को यह आदेश दिया कि माया के खेल में आयी हुई आत्मायें मेरी अँगनाएं हैं, इसलिए इनकी मायावी कष्टों से सुरक्षा करते रहना।

विशेष- उपरोक्त चौपाई को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को आत्म-मन्थन करना चाहिए, जो जिबरील को ही राज जी का साक्षात् स्वरूप मान लेते हैं। जब तक आवेश स्वरूप प्रकट नहीं होता, तब तक उसे धाम धनी का साक्षात् स्वरूप नहीं कहा जा सकता।

इलम लदुन्नी भेजिया, सब करने बका पेहेचान।

आप काजी हुए इन वास्ते, करी खिलवत जाहेर सुभान॥६१॥

अपनी अँगरूपा आत्माओं को उनके निज घर की पहचान देने के लिए धाम धनी ने तारतम ज्ञान भेजा और इनके लिए ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में न्यायाधीश

बनकर आये तथा परमधाम की खिल्वत को इस संसार में प्रकाशित किया।

हक कहे मुख अपने, मैं रूहें राखी कबाए तले।

कोई और न बूझे इनको, मेरी वाहेदत के हैं ए॥६२॥

प्राणवल्लभ अक्षरातीत स्वयं अपने मुख से कहते हैं कि मैंने अपनी अँगनाओं को मूल मिलावा में अपने चरणों में बैठा रखा है। मायावी जगत् में कोई भी इनके विषय में कुछ भी नहीं जानता। ये मेरे परमधाम की वहदत (एकत्व) है, अर्थात् मेरे और इनके हृदय में कोई भी अन्तर नहीं है।

मेरी कदीम दोस्ती इनों से, दोस्ती पीछे इन।

ए इलम लदुन्नी से माएने, करे हादी बीच रूहन॥६३॥

मेरा इनसे अनादि काल से प्रेम का सम्बन्ध है और इस प्रेम के कारण ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में मैं इनके बीच आकर तारतम ज्ञान के प्रकाश में सब धर्मग्रन्थों का आशय समझाऊँगा।

अर्स दिल इनका कहया, और कहया हकीकी दिल।

एती बड़ाई इनको दर्ई, जो वाहेदत इनों असल॥६४॥

इन्हीं के दिल को प्रियतम का धाम कहा जाता है और इनके ही दिल को पूर्ण शुद्ध हृदय कहलाने की शोभा प्राप्त है। इन आत्माओं की इतनी महिमा इसलिए है क्योंकि इनके मूल तन परमधाम की एकदिली में हैं।

ए अर्स बड़ा रूहों का, जो कहया तजल्ला नूर।

जबराईल इत न आइया, जित महंमद किया मजकूर॥६५॥

बेहद मण्डल से परे ब्रह्मसृष्टियों का यह परमधाम अनन्त कहा जाता है। इसी परमधाम में अपनी सुरता से आकर मुहम्मद स.अ.व. ने प्राणेश्वर अक्षरातीत से बातें की थीं। अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर भी जिबरील यहाँ आ नहीं सका।

हरफ केतेक कराए जाहेर, केतेक हुकमें रखे छिपाए।

सो वास्ते रूहों दाखले, अब हादी देत मिलाए॥६६॥

श्री राज जी ने मुहम्मद स.अ.व. से शरीयत के तीस हजार हरुफों को उजागर करवाया तथा मारिफत के तीस हजार हरुफों को पूर्णतया छिपवा दिया। अब श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप द्वारा अपनी आत्माओं को परमधाम का आनन्द देने के लिए हकीकत और मारिफत के सभी रहस्यों को प्रकट कर रहे हैं।

कही पाँच बिने मुस्लिम की, सोई पाँच बिने मोमिन।

वे करें बीच फना के, ए पांच बका बातन॥६७॥

शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमानों के पाँच नियम हैं। इसी प्रकार ब्रह्ममुनियों के लिए भी पाँच नियम हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान अपने नियमों का पालन इस नश्वर जगत के अन्तर्गत करते हैं, जबकि सुन्दरसाथ अपने पाँच नियमों का पालन परमधाम में विराजमान युगल स्वरूप को रिझाने के भाव से करते हैं।

अर्स रूहें बंदे हमेसगी, इनों बिने सब इस्क।

हकीकत मारफत मुतलक, इन उरफान मेहेर हक॥६८॥

परमधाम की आत्माएँ अपने प्राणवल्लभ को अपने धाम-हृदय में प्रत्यक्ष मानकर रिझाती हैं। इनके सभी नियमों में

प्रेम ही प्रेम भरा होता है। प्रियतम अक्षरातीत की मेहर (प्रेममयी कृपा) से हकीकत एवं मारिफत (सत्य और परमसत्य) का ब्रह्मज्ञान भी इन्हीं के पास होता है।

चौदे तबक की जहान में, किन तरफ न पाई अर्स हक।
 सो किया अर्स दिल मोमिनों, ए निसबत मेहेर मुतलक॥६९॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में आज तक किसी को भी यह पता नहीं चल पाया था कि अक्षरातीत का परमधाम कहाँ है, किन्तु परमधाम के मूल सम्बन्ध तथा अपनी अनन्त कृपा से श्री राज जी ने इस नश्वर संसार में भी ब्रह्मसृष्टियों के हृदय को अपना धाम बना लिया।

हक नूर रूह महंमद, रूहें महंमद अंग नूर।
 ए हमेसा वाहेदत में, तो सब मुख ए मजकूर॥७०॥

श्यामा जी का स्वरूप श्री राज के नूर से है तथा सखियाँ श्यामा जी की अँगरूपा हैं। ये तीनों स्वरूप हमेशा ही एकदिली के प्रेम में डूबे रहते हैं, इसलिए सबके मुख पर केवल प्रेम की ही बात रहती है।

मोमिन आए इत थें ख्वाब में, अर्स में इनों असल।

हुकम करे जैसा हजूर, तैसा होत मांहें नकल॥७१॥

ब्रह्मसृष्टियों के मूल तन परमधाम में हैं। वे इस नश्वर जगत में अपनी सुरता द्वारा आयी हैं। मूल स्वरूप श्री राज जी अपने दिल में किसी ब्रह्मात्मा से सम्बन्धित जैसा भाव लेते हैं, वही उसके परात्म के तन में प्रकट होता है तथा इस नश्वर जगत में उसी के अनुसार आत्मा का तन कार्य करता है।

जो मोमिन बिन पाँच अर्स में, सो होत बंदगी बातन।

जिन बिध होत हजूर, सो करत अर्स दिल मोमिन॥७२॥

ब्रह्मात्माओं की बन्दगी के जो पाँच नियम हैं, वे परमधाम से सम्बन्धित होते हैं। इसे ही छिपी बन्दगी अर्थात् आत्मा द्वारा की जाने वाली प्रेममयी भक्ति कहा जाता है। श्री राज जी के दिल में जो कुछ होता है, उसके अनुसार ही इस संसार में ब्रह्मात्मा का हृदय कार्य करता है।

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों के लिए कलमा, रोजा, तथा नमाज की व्याख्या इसी प्रकरण की चौपाई ४७ में की जा चुकी है। प्रियतम के प्रेम में अपने हृदय का सम्पूर्ण समर्पण ही जकात है तथा चितवनि द्वारा परमधाम के पच्चीस पक्षों में घूमना ही हज करना है।

दिल अर्स हकीकी तो कहया, जो हक कदम तले तन।

रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रुहन॥७३॥

ब्रह्मसृष्टियों के मूल तन मूल मिलावा में श्री राज जी के चरणों में बैठे हैं, इसलिए इनके धाम-हृदय को परिपूर्ण शुद्ध (हकीकी) कहा गया है। मुहम्मद स.अ.व. बार-बार इन्हें खुदा की उम्मत (परब्रह्म की प्राणेश्वरी) इसलिए कहते हैं क्योंकि ये सखियाँ श्री राज जी की खिलवत में रहती हैं।

महामत कहे ए मोमिनो, हकें मेहेर करी तुम पर।

भुलाए तुमें हाँसीय को, वास्ते इस्क खातिर॥७४॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! आपके ऊपर प्राण प्रियतम श्री राज जी ने अपार कृपा की है। उन्होंने इश्क की पहचान देने के लिए तुम्हें इस मायावी जगत में

भुला रखा है, ताकि वे तुम पर हँसी कर सकें।

प्रकरण ॥४॥ चौपाई ॥३३८॥

भिस्त सिफायत का बेवरा

इस प्रकरण में बेहद मण्डल में अखण्ड होने वाली आठों बहिशतों (मुक्ति स्थानों) की महत्ता का विवरण दिया गया है।

मोमिन आए अर्स अजीम से, हमारी हक सों निसबत।

दिया इलम लदुन्नी हकने, आई हक बका न्यामत॥१॥

हम ब्रह्मात्मायें परमधाम से इस संसार में आयी हुई हैं। हमारा मूल सम्बन्ध अक्षरातीत श्री राज जी से है। प्रियतम अक्षरातीत ने तारतम वाणी के रूप में हमें परमधाम की अखण्ड निधि दी है।

हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहे ना ताए।

अर्स बका रूहें फरिस्ते, सब हद्दां देवें बताए॥२॥

ब्रह्मवाणी की यही विशेषता है कि उससे कुछ भी छिपा नहीं रहता है। इससे अखण्ड परमधाम, ब्रह्मसृष्टियों, तथा ईश्वरी सृष्टि की सारी यथार्थता ज्ञात हो जाती है।

कहूं नेक दुनी का बेवरा, जो हकें दर्ई पेहेचान।

रूह अल्ला महंमद मेहेर थेँ, कहूं ले माएने फुरमान॥३॥

प्रियतम अक्षरातीत ने मुझे जो पहचान दी है, उससे मैं इस संसार के विषय में थोड़ा सा कहता हूँ। श्यामा जी के तारतम ज्ञान के प्रकाश में (कृपा से) मुहम्मद स.अ.व. द्वारा लाये गये कुरआन के गुह्यार्थों द्वारा मैं यह कथन कह रहा हूँ।

ए जो हुई पैदा कुंन से, सबों सिर फरज सरीयत।

पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीकत॥४॥

कुन्न कहने से पैदा हुई जीवसृष्टि के ऊपर शरीयत (कर्मकाण्ड) के नियमों का पालन करना आवश्यक माना गया है। यदि जीवसृष्टि तरीकत (उपासना) का मार्ग अपनाती है, तो वह वैकुण्ठ या निराकार तक जाती है।

जो लग्या वजूद को, ताए छूटे न जिमी नासूत।
पुलसरात को छोड़ के, क्यों पोहोंचे मलकूत॥५॥

जो शरीर एवं इन्द्रियों से होने वाले कर्मकाण्ड में ही फँसा रहता है, वह मृत्युलोक के बन्धनों को नहीं तोड़ पाता। ऐसा प्राणी भला कर्मकाण्ड को छोड़कर वैकुण्ठ भी कैसे जा सकता है?

ए आम खलक जो आदमी, या देव या जिन।
सो राह चलें ले वजूद को, पावें नहीं बातन॥६॥

इस प्रकार, जीवसृष्टि के मनुष्य, देवता, अथवा राक्षस (जिन्न) इस शरीर तथा इन्द्रियों द्वारा ही उपासना करते हैं। वे आत्मिक भक्ति का रहस्य नहीं जानते।

जो होवे नूर मकान का, कायम जिनों वतन।
 सो क्यों पकड़े वजूद को, पोहोंचे न हकीकत बिन॥७॥

ईश्वरीय सृष्टि, जो अखण्ड अक्षरधाम (बेहद मण्डल) की रहने वाली है, वह शरीर तथा इन्द्रियों से भक्ति नहीं करती, अपितु आत्म-चैतन्य द्वारा उपासना करती है। यह सृष्टि जब तक हकीकत (ज्ञान) के मार्ग का अनुसरण नहीं करती, तब तक अपने मूल घर को प्राप्त नहीं होती।

जो होवे अर्स अजीम की, सो ले हकीकत मारफत।
 इनको इस्क मुतलक, जिन रुह हक निसबत॥८॥

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होती है, वह हकीकत तथा मारिफत (ज्ञान एवं विज्ञान) का मार्ग अपनाती हैं। इनका अक्षरातीत परब्रह्म से अखण्ड सम्बन्ध होता है तथा ये निश्चित रूप से प्रियतम के प्रति अनन्य प्रेम का मार्ग अपनाती हैं।

भावार्थ- ज्ञान से तात्पर्य शाब्दिक ज्ञान से नहीं, बल्कि आत्म-चैतन्य द्वारा प्रेममयी ध्यान में उपलब्ध अनुभूत (साक्षात्कार के) ज्ञान से है। इसी प्रकार विज्ञान से आशय है- साक्षात्कार के पश्चात् उसमें ओत-प्रोत होकर उसी का स्वरूप बन जाना।

रूहें फरिस्ते दो गिरो, तिन दोऊ के दो मकान।

एक इस्क दूजी बंदगी, राह लेसी अपनी पेहेचान॥९॥

अखण्ड धाम की दो सृष्टियाँ हैं- १. ब्रह्मसृष्टि २.

ईश्वरीय सृष्टि। इन दोनों के दो धाम हैं— १. परमधाम २. अक्षरधाम (सत्स्वरूप)। ब्रह्मसृष्टि अनन्य प्रेम का मार्ग अपनायेगी, तो ईश्वरीय सृष्टि उपासना (भक्ति) के मार्ग का चयन करेगी। ये अपना मार्ग स्वतः ही चुन लेती हैं।

उतरी रूहें फरिस्ते लैल में, अपने रब के इजन।

दे हुकमें सबों सलामती, आप पोहोंचे फजर वतन॥१०॥

प्रियतम परब्रह्म के आदेश से ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि अज्ञानमयी अन्धकार से पूर्ण इस संसार में आयी हुई हैं। वे परब्रह्म के आवेश से सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति देकर अपने उस अखण्ड धाम में जायेंगी, जहाँ सर्वदा जाग्रत अवस्था रहती है।

भिस्त हाल चार कुरान में, कहया आठ होसी आखिर।

ए भी सुनो तुम बेवरा, देखो मोमिनों सहूर कर॥११॥

कुरआन में कहा गया है कि चार बहिश्तें पहले अखण्ड हो गयी थीं तथा चार अब होंगी। इस प्रकार कुल आठ बहिश्तें आखिरी समय (न्याय के दिन) में अखण्ड होंगी। हे साथ जी! आप इन बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) का विवरण सुनिये तथा उनके विषय में विचार कीजिए।

तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त।

दो भिस्त अव्वल लैल में, चौथी महंमद आए जित॥१२॥

वर्तमान समय में जो बहिश्तें अखण्ड हो चुकी हैं, उनका विवरण इस प्रकार है— एक मलकूती बहिश्त है, दो बहिश्तें रात्रि की प्रथम दो लीलाओं (ब्रज एवं रास) की हैं, तथा चौथी बहिश्त मुहम्मद स.अ.व. के जीव की है।

भावार्थ- मुहम्मदी बहिश्त सबलिक के तुरियातीत निर्मल चैतन्य में तीसरी बहिश्त है। इसके नीचे सबलिक के महाकारण में रास की चौथी बहिश्त है। इसके भी नीचे सबलिक के कारण में व्रज लीला की बहिश्त है, जो पाँचवी बहिश्त है। अव्याकृत के महाकारण में छठी बहिश्त मलकूती बहिश्त है।

आखिर भिस्तों का बेवरा, जो नैयां होसी चार।

जो होसी बखत कयामत के, तिनका कहूं निरवार॥१३॥

न्याय के दिन चार और नयी बहिश्तें बनेंगी। कयामत के समय में होने वाली इन चार नयी बहिश्तों का मैं विवरण बताता हूँ।

भिस्त अव्वल रूहों अक्स, ए जो होसी भिस्त नई।

भिस्त होसी दूजी फरिस्तों, जो गिरो जबरूत से कही॥१४॥

सत्स्वरूप के तुरियातीत निर्मल चैतन्य में पहली बहिश्त अखण्ड होगी, जिसमें ब्रह्मसृष्टियों की परात्म का प्रतिबिम्ब नूरमयी तन धारण करेगा। उनमें ब्रह्मसृष्टियों का जीव विद्यमान होकर लीला करेगा। इसके नीचे दूसरी बहिश्त अक्षरधाम की ईश्वरी सृष्टि की होगी। इस बहिश्त में ईश्वरी सृष्टि अपने जीव के साथ विद्यमान होकर लीला करेगी। ईश्वरी सृष्टि के नूरमयी तनों का स्वरूप पहली बहिश्त के नूरमयी तनों के प्रतिबिम्ब जैसा होगा।

भावार्थ— सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में श्री मिहिरराज जी का जीव श्री राज जी का प्रतिबिम्बित रूप धारण करेगा और श्री देवचन्द्र जी का जीव श्री श्यामा जी का। ब्रह्मसृष्टियों के जीव ब्रह्मसृष्टियों की परात्म का रूप धारण

कर लेंगे। महाप्रलय के पश्चात् सातवें दिन की न्याय की लीला इसी बहिश्त में होगी, जिसमें अन्य सातों बहिश्तों वाले इस बहिश्त के स्वरूपों को श्री राज जी, श्यामा जी, और सखियाँ मानकर नतमस्तक होंगे।

आगे हुई ना होसी कबहूँ, हमें धनीएं ऐसी सोभा दर्ई।
सब पूजें प्रतिबिंब हमारे, सो भी अखंड में ऐसी भई॥

किरंतन ८१/३

मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार।

कलस हि. २३/१०

का कथन यही सिद्ध करता है। संसार के सभी जीव इन्हीं को परब्रह्म मानकर भक्ति करेंगे और अपने बुरे कर्मों का प्रायश्चित्त करेंगे।

जिन जीवों ने तारतम वाणी का प्रकाश पाकर ब्रह्मसृष्टियों जैसा आचरण किया, अर्थात् प्रेममयी

चितवनि द्वारा अपने हृदय में प्रियतम की छवि को बसा लिया, उन्हें भी सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में जाने और ब्रह्मसृष्टियों के मूल तनों जैसा रूप धारण करने का अधिकार प्राप्त होगा। तारतम वाणी के चिन्तन तथा चितवनि की यही अपार महिमा है। इस सम्बन्ध में श्रीमुखवाणी का कथन है—

जो किन जीवे संग किया, ताको करुं ना मेलो भंग।

सो रंगे भेलूं वासना, वासना सत को अंग॥

कलस हि. २३/६४

पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम।

चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम॥१५॥

संसार में परब्रह्म का सन्देश देने वाले पैगम्बरों की आखिर की तीसरी अर्थात् अव्याकृत में सातवीं बहिश्त

होगी। इसके अतिरिक्त अव्याकृत में इसके नीचे आखिर की चौथी अर्थात् आठवीं बहिश्त, जिसमें शेष सारी जीवसृष्टि अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होगी।

जिन किन राह हक की, लई सांच से सरीयत।

भिस्त होसी तिनों तीसरी, सच्चे ना जलें कयामत॥१६॥

जो जीव तारतम ज्ञान का प्रकाश पाकर श्री राज जी की पहचान कर लेंगे और सच्चे हृदय से कर्मकाण्ड (शरीयत) का मार्ग अपनायेंगे, अर्थात् सेवा पूजा, परिक्रमा, पाठ करेंगे, वे अव्याकृत में आखिर की तीसरी अर्थात् सातवीं बहिश्त (मुक्ति का स्थान) को प्राप्त करेंगे। सच्चे हृदय से कर्मकाण्ड का पालन करने के कारण, इन्हें न्याय के दिन दोजक (प्रायश्चित) की अग्नि में नहीं जलना पड़ेगा।

जो सरीयत पकड़ के, चल्या नहीं सांच ले।

सो आखिर दोजख जल के, भिस्त चौथी पावे ए॥१७॥

जिन्हें तारतम वाणी का प्रकाश नहीं मिलेगा या तारतम लेकर भी जो राज जी से विमुख हो जायेंगे, और सच्चे हृदय से धाम धनी पर आस्था नहीं रखेंगे और यदि वे भक्ति के नाम पर कर्मकाण्ड करते भी हैं, तो भी उन्हें न्याय के दिन प्रायश्चित की आग में जलना पड़ेगा। तत्पश्चात् उन्हें अव्याकृत में आखिर की चौथी अर्थात् आठवीं बहिस्त प्राप्त होगी।

भावार्थ- इस बहिस्त का द्वार बड़े से बड़े नास्तिक और पापी के लिए भी खुला रहेगा, किन्तु इसमें प्रवेश करने के लिए उन्हें प्रायश्चित की भयंकर अग्नि में जलना पड़ेगा कि हमने परब्रह्म की पहचान न कर अपने जीवन को व्यर्थ ही गवाँ दिया।

रूहों अक्स कहे नई भिस्त में, ताए असल रूहों के तन।
 सो अरवा अर्स अजीम में, उठें अपने बका वतन॥१८॥

सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में जो स्वरूप खड़े होंगे, वे
 ब्रह्मसृष्टियों के मूल तनों के प्रतिबिम्ब होंगे। इस खेल में
 आयी हुई ब्रह्मात्मा अपने अखण्ड घर परमधाम में अपने
 मूल तन में जाग्रत हो जायेंगी तथा उसका जीव
 सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में सखियों की परात्म जैसा
 रूप धारण करके लीला करेगा।

जोलों अपनी राह पावें नहीं, तोलों पोहोंचे ना अपने मकान।
 हादी हद्दों हिदायत करके, आखिर पोहोंचावें निदान॥१९॥

तारतम वाणी के प्रकाश में कोई भी सृष्टि जब तक अपने
 मूल अँकुर के अनुसार कर्मकाण्ड, ज्ञान, एवं विज्ञान
 (शरीयत, हकीकत, मारिफत) का ज्ञान नहीं अपनायेगी,

तब तक वह अपने धाम को प्राप्त नहीं हो सकेगी। श्री प्राणनाथ जी ने तीनों सृष्टियों को अखण्ड धाम पहुँचाने की सिखापन दे दी है और अन्ततोगत्वा वे अपनी कृपादृष्टि से उन्हें अवश्य पहुँचायेंगे।

अब कहूँ सिफायत की, जो आखिर महंमद की चाहे।

नेक सुनो सो बेवरा, देऊँ रूहों को बताए॥२०॥

हे साथ जी! अब मैं उस सिफायत के बारे में बता रहा हूँ, जो श्री प्राणनाथ जी की पहचान देती है। मैं परमधाम की आप आत्माओं के लिए यह थोड़ा सा विवरण दे रहा हूँ, उसे सुनिये।

भावार्थ— सिफायत शब्द सिफ्त से बना है, जिसका अर्थ होता है प्रशंसा या महिमा करना। यह सर्वमान्य तथ्य है कि परमधाम के किसी भी स्वरूप द्वारा मात्र

सत्य ज्ञान या सत्य स्वरूप की ही महिमा गाई जायेगी। इस प्रकार तारतम वाणी में जहाँ भी मुहम्मद या महामति की सिफायत लेने का प्रसंग है, उसका आशय उनके द्वारा दिये गये सत्य ज्ञान को ग्रहण करने से है।

इसी प्रकार मुहम्मद स.अ.व. द्वारा यदि अपने किसी अनुयायी की प्रशंसा करने का प्रसंग आता है, तो उसका आशय यह है कि उस व्यक्ति ने उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारा है, अर्थात् मुहम्मद स.अ.व. का सत्य ज्ञान यह प्रमाणित कर रहा है कि वह व्यक्ति उनके दर्शाये मार्ग पर चला है। यह आलंकारिक प्रसंग है। इस प्रसंग को ऐसा नहीं समझना चाहिए कि मुहम्मद स.अ.व. न्याय के दिन साक्षात् शरीर से प्रकट होकर अपने किसी अनुयायी की प्रशंसा करेंगे और अखण्ड मुक्ति (बहिश्त) देने की सिफारिश करेंगे।

जित पोहोंची सिफायत महंमद की, सो तबहीं दुनी को पीठ दे।

सो पोहोंच्या महंमद सूरत को, आखिर तीसरी हकी जे॥२१॥

जिस व्यक्ति तक मुहम्मद स.अ.व. की सिफायत पहुँचेगी, अर्थात् वह व्यक्ति जब कुरआन के छिपे हुए गुह्य अर्थों को समझ जायेगा, तो वह इस संसार से पीठ मोड़कर हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के चरणों में अपना हृदय समर्पित कर देगा।

जिन छोड़ दुनी को ना लई, हकीकत मारफत।

सो अर्स बका में न आइया, लई ना महंमद सिफायत॥२२॥

जो व्यक्ति श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी को आत्मसात् कर उसमें निहित हकीकत-मारिफत (ज्ञान-विज्ञान) को नहीं अपनायेगा तथा संसार के मोह का परित्याग नहीं करेगा, वह अखण्ड परमधाम के सुख लेने

का अधिकारी नहीं है।

जो दुनी को लग रहे, ताए अर्स बका सुध नाहें।

महंमद सिफायत लई मोमिनो, जाकी रूह बका अर्स माहें॥२३॥

श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी का सिखापन मात्र ब्रह्मसृष्टियाँ ही लेती हैं, जिनके मूल तन अखण्ड परमधाम में विराजमान हैं। जो संसार के क्षणिक विषय सुखों में लिप्त रहते हैं, उन्हें अखण्ड परमधाम की सुध ही नहीं होती।

अर्स ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठौर।

हक खोया झूठ बदले, सुन्या न महंमद सोर॥२४॥

हे संसार के लोगों! या तो तुम परमधाम का अखण्ड सुख लो या संसार का क्षणिक सुख, दोनों एक साथ नहीं

मिल सकते। तुमने तो प्रियतम अक्षरातीत की तारतम वाणी की गूँज नहीं सुनी और संसार के झूठे सुखों की चाहत में अपने प्राणेश्वर से विमुख हो गये।

दुनी अपनी दानाई से, लेने चाहे दोए।

फरेब देने चाहे हक को, सो गए प्यारी उमर खोए॥२५॥

किन्तु इस संसार की जीवसृष्टि अपनी चतुराई से दोनों सुख लेना चाहती है। ऐसा करके वह एक प्रकार से परब्रह्म को ही धोखा देना चाहती है और इस प्रकार अपने कुत्सित प्रयास में अपनी अति प्यारी उम्र खो देती है।

भावार्थ— विषय सुखों का दलदल इतना घातक होता है कि एक बार उसमें फँस जाने पर तब तक नहीं निकला जा सकता, जब तक परब्रह्म की कृपा से विवेक-दृष्टि

उत्पन्न न हो जाये। संसार के लोग यही सोचते हैं कि इतनी उम्र है, इसमें केवल तारतम वाणी के चिन्तन और चितवनि से जीवन का लक्ष्य पूरा नहीं होगा, अपितु संसार का सुख भी लेना चाहिए। जीवसृष्टि ज्ञान और प्रेम का मार्ग तो अपना नहीं पाती, वह केवल कर्मकाण्ड का आशय लेकर चलती रहती है। परिणामतः उसकी तृष्णा से निवृत्ति नहीं हो पाती और प्रियतम का सुख भी खो देती है। जब तक वह सावचेत होती है, तब तक बुढ़ापा आ चुका होता है।

इसके विपरीत जो व्यक्ति तारतम ज्ञान का प्रकाश पाकर थोड़ी देर के लिए भी युगल स्वरूप की मोहिनी छवि का ध्यान करता है और यह प्रार्थना करता है कि हे मेरे प्राणेश्वर! मुझे विषय जाल से बचाये रखना। परब्रह्म की कृपा रूपी छत्रछाया ऐसे व्यक्ति का हर पल संरक्षण

करती है। यदि वह बुरे संस्कारों के कारण विषय सुखों में फँसना भी चाहता है, तो अन्तःप्रेरणा उसे रोक देती है। इसलिये आत्मिक सुख के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को युगल स्वरूप की प्रेममयी चितवनि का आश्रय अवश्य लेना चाहिये।

सो मोमिन क्यों कर कहिए, जिन लई ना हकीकत।

छोड़ दुनी को ले ना सक्या, हक बका मारफत॥२६॥

उस सुन्दरसाथ को परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कैसे कहा जा सकता है, जिसने तारतम वाणी के प्रकाश में हकीकत (सत्य का मार्ग) का अनुशरण नहीं किया होता। ऐसा सुन्दरसाथ संसार को पीठ देकर अक्षरातीत तथा अखण्ड परमधाम की पूर्ण पहचान नहीं कर पाता।

भावार्थ— इस चौपाई को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को

आत्म-मन्थन करना चाहिए, जो हठपूर्वक शरीर्यत की महिमा दर्शाते हैं, और उसे बलपूर्वक दूसरों पर थोपने का प्रयास करते हैं, और हकीकत एवं मारिफत की हँसी उड़ाना अपना गौरव समझते हैं।

चौदे तबक नबी के नूर से, सो सब कहें हम मोमिन।

सो मोमिन जाको सक नहीं, हक बका अर्स रोसन॥२७॥

चौदह लोक का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मुहम्मद स.अ.व के नूर से बना हुआ है, अर्थात् अक्षर ब्रह्म की सत्ता के प्रकाश से इसका अस्तित्व है। इसलिये सभी मुसलमान अपने को ब्रह्मसृष्टि कहते हैं, किन्तु ब्रह्ममुनि तो वह है जिसे अक्षरातीत तथा अखण्ड परमधाम के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का संशय नहीं होता है।

भावार्थ— अक्षर ब्रह्म की इच्छा मात्र से ही इस ब्रह्माण्ड

की रचना होती है। मुहम्मद स.अ.व. के अन्दर अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी, जो तारतम वाणी के कथनों से प्रमाणित है—

मूल सुरत अछर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह।
सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस॥

प्रकास हि. ३७/२९

तहां रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम।
त्रेसठ बरस तहां रहे, वायदा किया इस ठाम॥

बीतक ७१/८४

सन्त वाणी में कहा गया है— "एक नूर से सब जग उपज्या।" इस प्रकार अक्षर ब्रह्म (मुहम्मद स.अ.व. की आत्मा) के नूर से सृष्टि की उत्पत्ति मानी गयी है।

सब खोजें फिरके ले किताबें, कहें खड़े हम तले कदम।
 ले हकीकत पोहोंचे अर्स में, जिन सिर लिया महंमद हुकम॥२८॥

सभी मत-पन्थों के अनुयायी अपने-अपने धर्मग्रन्थों में परब्रह्म की खोज करते हैं तथा कहते हैं कि हम ही परब्रह्म के चरणों में खड़े हैं। इसके विपरीत जिन्होंने श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी को आत्मसात् किया और उसके निर्देशों के अनुसार हकीकत का मार्ग अपनाया, उन्हें अखण्ड धाम की प्राप्ति अवश्य होगी।

पोहोंची सिफायत जिनको, तिन छोड़ी दुनियां मुतलक।
 कदम पर कदम धरे, पोहोंच्या बका अर्स हक॥२९॥

जो प्रियतम अक्षरातीत की श्रीमुखवाणी को हृदयंगम कर लेते हैं, वे निश्चित रूप से संसार को छोड़ देते हैं और श्री प्राणनाथ जी के बताये हुये मार्ग पर चलकर श्री

राज जी तथा अखण्ड परमधाम का साक्षात्कार कर लेते हैं।

हकीकत मारफत की, हक बातें बारीक।

जित नहीं सिफायत महंमद की, सो लरे लीक ले लीक॥३०॥

परमधाम की हकीकत एवं मारिफत (ज्ञान तथा विज्ञान) की बातें बहुत ही सूक्ष्म (गहन) हैं। जो श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान को आत्मसात् नहीं करते हैं, वे रुढ़िवादिता के संरक्षण के नाम पर लड़ते रहते हैं।

भावार्थ— रुढ़िवादिता अज्ञानता के अन्धकार से उत्पन्न होती है। उसका संरक्षण करना आध्यात्मिक क्षेत्र का पतन करना है। तारतम ज्ञान का प्रकाश ही इस विकृति से मुक्ति दिला सकता है।

तरक करे सब दुनी को, कछू रखे ना हक बिन।

वजूद को भी मह करे, ए महंमद सिफायत मोमिन॥३१॥

तारतम वाणी में ब्रह्मसृष्टियों के लिये श्री प्राणनाथ जी का सिखापन है कि वे सारे संसार की मोह-ममता तथा विषय सुखों से मुख मोड़ लें, और अपने हृदय में प्रियतम अक्षरातीत के अतिरिक्त अन्य कोई चाहत न रखें। अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति में अपने शरीर को न्योछावर करने में नाम मात्र भी संकोच न करें।

कहे महंमद खबर जो मुझको, सो खबर मेरे भाई।

धरे आवें कदमों कदम, जिनकी पेसानी में रोसनाई॥३२॥

मुहम्मद स.अ.व. कहते हैं कि जो ज्ञान मेरे पास है, वह ज्ञान मेरे भाइयों अर्थात् परमधाम के ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) को भी है। उनके माथे (मस्तिष्क) में ज्ञान का

प्रकाश जगमगाता रहता है। वे अखण्ड ज्ञान के प्रकाश में श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आ जायेंगे।

भावार्थ- "माथे में उजाला होना" ज्ञान से परिपूर्णता का द्योतक है। यह कथन आलंकारिक भाषा में कहा गया है।

महंमद एही सिफायत, अर्स बका हक रोसन।

जो अर्स अरवाहों को सक रहे, सो क्यों कहिए रूह मोमिन॥३३॥

श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी का ज्ञान हृदय में अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत की शोभा को प्रकाशित कर देता है। इस सम्बन्ध में यदि परमधाम की आत्माओं को भी संशय होता है, तो उन्हें ब्रह्मसृष्टि कहलाने का अधिकार नहीं है।

जाए पूछो मोमिन को, जरे जरे बका की बात।

देखो अर्स अरवाहों में, ए महंमद की सिफात॥३४॥

यदि आप परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों से जाकर पूछें, तो आपको विदित हो जायेगा कि उन्हें परमधाम के एक-एक कण का ज्ञान है। श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान की महिमा परमधाम की आत्माओं के हृदय से प्रकट होती है।

किन बिध रूहें लाहूती, क्यों जबरूती फरिस्ते।

जिन लई सिफायत महंमद की, सो बताए देवें सब ए॥३५॥

जिन्होंने अपने हृदय में श्री प्राणनाथ जी की वाणी को आत्मसात् कर लिया है, वे इस प्रश्न का बहुत अच्छी तरह उत्तर दे सकते हैं कि परमधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ कैसी हैं तथा अक्षरधाम से ईश्वरीसृष्टि इस खेल में क्यों आई हैं।

इलम खुदाई लदुन्नी, सब अर्सी की सुध तिन।

एक जरे की सक नहीं, लई सिफायत हादी जिन॥३६॥

जिन्होंने अपने हृदय में अक्षरातीत परब्रह्म की श्रीमुखवाणी को बसा लिया है, उन्हें तीनों धामों— वैकुण्ठ, बेहद, और परमधाम की यथार्थ पहचान होती है। इस सम्बन्ध में उन्हें नाम मात्र का भी संशय नहीं होता।

अर्स रूहें सब विध जानहीं, हौज जोए जिमी जानवर।

महंमद की सिफायत से, मोमिनों सब खबर॥३७॥

परमधाम की आत्मायें यह बात अच्छी तरह से जानती हैं कि हौज कौसर ताल, यमुना जी, पच्चीस पक्षों की सम्पूर्ण धरती, तथा नूरमयी जानवरों की शोभा क्या है। श्री प्राणनाथ जी की ब्रह्मवाणी के प्रकाश से ब्रह्मात्माओं

को परमधाम से सम्बन्धित हर बात का ज्ञान होता है।

जोए निकसी किन ठौर से, क्यों कर आगे चली।

अर्स आगे आई कितनी, जाए कर कहां मिली॥३८॥

यमुना जी कहाँ से निकलती है और किस प्रकार वहाँ से आगे चलती है? रंगमहल से आगे आकर कितनी दूर बहती है और आगे जाकर कहाँ मिलती है?

भावार्थ- यमुना जी, पुखराज पहाड़ (खजाने के ताल) से साढ़े चार लाख कोस तक कुछ ढकी-कुछ खुली बहती है, पुनः दक्षिण दिशा में नौ लाख कोस तक आगे बढ़ती है, आगे साढ़े चार लाख कोस पश्चिम दिशा में मुड़कर हौज कोसर ताल में जाकर मिलती है।

क्यों कर हकीकत हौज की, क्यों घाट पाल गिरदवाए।

किन विध टापू बीच में, ए सब सुध मोमिन देवें बताए॥३९॥

हौज कोसर ताल की शोभा कैसी आयी है? इसके चारों घाट कैसे हैं? चारों तरफ पाल की शोभा कैसी आयी है? हौज कोसर के मध्य में टापू महल की शोभा कैसी आयी है? इन सारी बातों की जानकारी परमधाम की आत्माओं को रहती है।

भावार्थ- हौज कोसर ताल की पूर्व दिशा में सोलह दयोहरी का घाट, पश्चिम में झुण्ड का घाट, उत्तर में नौ दयोहरी का घाट, तथा दक्षिण में तेरह दयोहरी के घाट की शोभा आयी है। पाल के ऊपर वृक्षों की पाँच हारें आयी हैं, जिसमें दो हार ढलकती पाल पर और तीन हार चौरस पाल पर आयी हैं।

जोए अर्स के किस तरफ है, किस तरफ हौज अर्स के।

नूर अर्स की गलियां, अरस अरवा जानें ए॥४०॥

यमुना जी रंगमहल के किस ओर है तथा हौज कौसर तालाब रंगमहल के किस तरफ है? रंगमहल की नूरी गलियाँ कैसी हैं? इस बात को परमधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ बहुत अच्छी तरह से जानती हैं।

भावार्थ— यमुना जी रंगमहल की पूर्व दिशा में आई है तथा हौज कोसर ताल दक्षिण दिशा में आया हुआ है।

बारीक गलियां अर्स की, मोमिन भूलें न इत।

अरवा अर्स की रात दिन, याही में खेलत॥४१॥

परमधाम की आत्माएँ रंगमहल की बहुत पतली-पतली गलियों में दिन-रात क्रीड़ा करती हैं। इस नश्वर जगत में आने पर भी ये गलियाँ उनकी ज्ञान-दृष्टि से अलग नहीं

होतीं।

भावार्थ- ज्ञान दो प्रकार का होता है- बौद्धिक दृष्टि से ग्रहण किया हुआ और चितवनि द्वारा अनुभूत किया हुआ। दोनों दृष्टियों से परमधाम की गलियों का ज्ञान उनके हृदय में बना रहता है।

जाको सिफायत महंमद की, तिन का एही निसान।

जोए हौज अर्स जिमीय की, एक जरा न बिना पेहेचान॥४२॥

जिसने प्रियतम प्राणनाथ की तारतम वाणी को आत्मसात् कर लिया, उसकी पहचान यही है कि यमुना जी, हौज कौसर ताल, रंगमहल, तथा पच्चीस पक्षों की सम्पूर्ण धरती का एक कण भी उनकी जानकारी के बिना नहीं रहता।

नूर तजल्ला नूर की, जिमी बाग जानवर।

महंमद सिफायत जिनको, तिन से छिपी रहे क्यों कर॥४३॥

जिनके हृदय में श्री प्राणनाथ जी की ब्रह्मवाणी का प्रकाश हो जाता है, उनसे अक्षरधाम तथा परमधाम की सम्पूर्ण धरती, बाग-बगीचे, तथा जानवरों की शोभा किसी भी प्रकार से छिपी नहीं रह पाती।

महंमद हक के नूर से, रूहें अंग महंमद नूर।

सो देखो अर्स अरवाहों में, पोहोंच्या महंमद का जहूर॥४४॥

श्री श्यामा जी का स्वरूप श्री राज जी के नूर से है तथा सभी सखियाँ श्यामा जी की अँगरूपा हैं और उनके नूर से हैं। यही कारण है कि परमधाम की ब्रह्मात्माओं ने अपने प्राणेश्वर की श्रीमुखवाणी को अपने हृदय में बसा लिया है।

हक हादी रूहन सों, इत खेलें माहें मोहोलन।

ए रहे हमेसा अर्स में, हौज जोए बागन॥४५॥

श्री राजश्यामा जी अपनी अँगरूपा आत्माओं के साथ परमधाम के महलों में क्रीड़ा किया करते हैं। ये आत्माएँ रंगमहल, हौज कौसर ताल, यमुना जी, फूलबाग, नूरबाग, बड़ोवन आदि में तरह-तरह की प्रेममयी क्रीड़ायेँ करती हैं।

मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात।

तित रह्या तैसा ही बन्या, ए बका बागों की बात॥४६॥

अखण्ड परमधाम के बागों की यह विशेषता है कि आपको जिस मेवे की आवश्यकता होती है वह आपको उसी क्षण प्राप्त हो जायेगा, किन्तु जहाँ से आपने लिया है वहाँ पहले जैसा ही विद्यमान दिखेगा। यही स्थिति किसी

भी प्रकार के फल, फूल, कन्द-मूल, तथा पत्तों के लेने पर बनी रहती है।

एक बाल न खिरे पसुअन का, न गिरे पंखी का पर।

कोई मोहोल न कबूँ पुराना, दिन दिन खूबतर॥४७॥

परमधाम के किसी भी पशु का एक भी बाल गिरता नहीं है और न ही किसी पक्षी का पंख गिरता है। कोई भी महल कभी भी पुराना दिखाई नहीं देता, अपितु दिन-प्रतिदिन और सुन्दर दिखाई देता है।

इत नया न पुराना, न कम ज्यादा होए।

इत वाहेदत में दूसरा, कबहूँ न कहिए कोए॥४८॥

सम्पूर्ण परमधाम में एकदिली (वहदत) का साम्राज्य है। उसमें श्री राज जी का दिल ही सभी रूपों में लीला कर

रहा है। इसलिए मारिफत की दृष्टि से देखा जाए, तो वहाँ श्री राज जी के अतिरिक्त किसी अन्य का अस्तित्व नहीं है। इसलिए इस परमधाम में न कोई भी वस्तु नयी होती है, न पुरानी, न ही कम होती है, और न ही अधिक।

महंमद सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार।

हक बका अर्स सब का, तिन इतहीं पाया दीदार॥४९॥

जिन सुन्दरसाथ ने परमधाम की इस ब्रह्मवाणी को आत्मसात् कर लिया, वे इस संसार में माया के प्रति सावचेत हो गये और उन्होंने इसी संसार में बैठे-बैठे अपने धाम-हृदय में अखण्ड परमधाम तथा प्रियतम अक्षरातीत का दर्शन कर लिया।

प्रकरण ॥५॥ चौपाई ॥३८७॥

इलम का बेवरा नाजी फिरका

इस प्रकरण में तारतम ज्ञान की महत्ता तथा अखण्ड सुख के अधिकारी नाजी फिरके (श्री निजानन्द सम्प्रदाय) का विवरण दिया गया है।

फुरमाया कहूं फुरमान का, और हदीसे महंमद।

मोमिन होसी सो चीन्हसी, असल अर्स सब्द॥१॥

श्री महामति जी कहते हैं कि मैं कुरआन तथा मुहम्मद स.अ.व. की हदीसों का कथन व्यक्त करता हूँ। जो परमधाम के ब्रह्ममुनि होंगे, वे परमधाम के सम्बन्ध में कहे गये वास्तविक शब्दों को पहचान लेंगे।

एक कहया वेद कतेब ने, जो जुदा रहया सबन।

तिनको सारों ढूंढ़िया, सो एक न पाया किन॥२॥

वेद और कतेब (तौरेत, इंजील, जंबूर, तथा कुरआन) ने एक परब्रह्म का सांकेतिक वर्णन किया है, जो क्षर जगत के सभी प्रपञ्चों से अलग कहा गया है। उस सच्चिदानन्द परब्रह्म को सभी ने खोजा, किन्तु कोई भी उसे न पा सका।

एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर।

सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर॥३॥

एक अखण्ड परमधाम के विषय में सभी कहते हैं, किन्तु कोई भी यह नहीं कहता है कि वह अखण्ड परमधाम कहाँ है? सभी का यही कहना है कि हम उस परब्रह्म को खोजते-खोजते थक गये, किन्तु हमें उनका साक्षात्कार नहीं हुआ।

सब किताबों में लिख्या, एक थे भए अनेक।

सो सुकन कोई न केहेवहीं, जो इस तरफ है एक॥४॥

सभी धर्मग्रन्थों में लिखा है कि उस अद्वैत ब्रह्म से इस अनन्त जगत की उत्पत्ति हुई, किन्तु इस नश्वर जगत में वह अद्वैत स्वरूप किस रूप में है, इस सम्बन्ध में कोई भी कुछ भी नहीं कहता।

भावार्थ— इस त्रिगुणात्मक जगत् में मात्र ब्रह्म की सत्ता है, स्वरूप नहीं। जहाँ सूर्य के समान ब्रह्म का अखण्ड स्वरूप है, वहाँ मायावी जगत का अस्तित्व नहीं है।

सो हक किनों न पाइया, जो कहया एक हजरत।

ढूँढ़ ढूँढ़ फिरके फिरे, पर किन्हूँ न पाया कित॥५॥

मुहम्मद स.अ.व. ने जिस एक परब्रह्म का वर्णन किया, उसे कोई भी नहीं पा सका। सभी मत-पन्थ वाले

खोज-खोज कर थक गये, किन्तु कोई भी उस परब्रह्म को कहीं भी नहीं पा सका।

ना कछू पाया एक को, ना उमत अर्स ठौर।

ना पाया हौज जोए को, जाए लगे बातों और॥६॥

संसार के लोगों को न तो परब्रह्म के विषय में कुछ पता चल पाया और न ही वे यह जान सके कि ब्रह्मसृष्टियाँ तथा परमधाम कहाँ पर है। वे हौज कौसर ताल तथा यमुना जी के भी विषय में कुछ भी नहीं जान सके। अन्ततोगत्वा, वे कर्मकाण्ड की बातों में उलझ गये।

नब्बे बरस हजार पर, पढ़ते गुजरे दिन।

लिखी कयामत बीच कुरान के, सो तो न पाई किन॥७॥

कुरआन में लिखा है कि मुहम्मद स.अ.व. के पर्दे में होने

(देह-त्याग) के १०९० वर्ष बाद कियामत आयेगी। इसे पढ़ते-पढ़ते इतनी पीढ़ियों की सारी उम्र बीत गयी, किन्तु अब तक किसी को भी कियामत की पहचान नहीं हो पायी।

भावार्थ- कुरआन के सि. २९ सू. ७५ आयत १-५
 "ला अक्सिमुबियौमिल् कियामति..... यस्अलु
 अय्यान यौमिल कियामति"

"कियामत के दिन की कस्म....."

वह जो पूछते हैं कि कियामत का दिन कब होगा? पारः
 १७, २८, २९ सूरः व आयत, पारः ३० सू. ८९ सूर
 फजरि आयत १। "व लयालिन अशरिन" और दस रातों
 की कस्म।

आसमान जिमी की दुनियां, कथे इलम करे कसब।

किन एक न बका पाइया, दौड़ दौड़ थके सब॥८॥

पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों तथा आकाश में सूक्ष्म शरीरधारी सिद्ध पुरुषों, देवी-देवताओं ने परब्रह्म से सम्बन्धित बहुत अधिक ज्ञान चर्चा की, किन्तु वे सभी दौड़-दौड़कर थक गये। उनमें से किसी ने भी अखण्ड परमधाम तथा परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं किया।

यों गोते खाए बीच फना के, ला सुन्य ना उलंघी किन।

ढूँढ़ ढूँढ़ सबे थके, कोई पोहोंच्या न बका वतन॥९॥

इस प्रकार सभी लोग इस नश्वर जगत में ही भटकते रह गये। परब्रह्म को खोजते-खोजते सभी थक गये, किन्तु निराकार (मोहसागर) को पार करके कोई भी अखण्ड धाम में नहीं जा सका।

लदुन्नी से पाइए, जो है इलम खुदाए।

खोज खोज सबे हारे, आज लों इमदाए॥१०॥

परब्रह्म के दिये हुए एकमात्र तारतम ज्ञान से ही अखण्ड धाम की प्राप्ति हो सकती है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक सभी लोग परब्रह्म को खोजते-खोजते हार गये, किन्तु कोई सफल नहीं हो सका।

लिख्या है कतेब में, सोई करूं मजकूर।

एक फिरका पावेगा, जिन को तौहीद जहूर॥११॥

कतेब ग्रन्थों में लिखा है कि एक पन्थ (फिरका) ऐसा भी होगा, जिसे परब्रह्म की पहचान होगी। उस मत में अद्वैत परब्रह्म के ज्ञान का प्रकाश फैलेगा। उसके विषय में मैं बताता हूँ।

लिख्या है फुरमान में, खुदा एक महंमद बरहक।

तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावे सक॥१२॥

कुरआन में लिखा है कि परब्रह्म एक है, तथा मुहम्मद स.अ.व. ने जो कुछ कहा है, वह सत्य है। जो इस कथन में संशय करता है, उसे काफिर समझना चाहिये।

भावार्थ- कुरआन के सि. १९ सू. २५ आ. ३०-३१
 "व कालर्सूल या रब्बि..... व कफ़ा बि रब्बिक
 हादियव्व नसीरन"

पैगम्बर अल्लाह से अर्ज करेंगे कि मेरी क़ौम ने इसको बकवाद ठहराया। इसी तरह, हम हर पैगम्बर के दुश्मन बनते आएँ और हिदायत देने और मदद करने को परवरदिगार काफी है।

एक खुदा हक महंमद, अर्स बका हौज जोए।

उतरी अरवाहें अर्स की, चीन्हो गिरो नाजी सोए॥१३॥

परब्रह्म एक है तथा मुहम्मद स.अ.व. का कथन पूर्णतया सच है। रंगमहल, हौज कौसर ताल, तथा यमुना जी का स्वरूप अखण्ड है। परमधाम की आत्माएँ इस मायावी जगत में आयी हुई हैं। इन्हीं का समूह नाजी फिरका कहलाता है। इसकी पहचान कीजिए।

सब दुनियां का इलम, लिख्या कुरान में ए।

सो कोई इलम पोहोंचे नहीं, बनी असराईल मूसा के॥१४॥

कुरआन में संसार के सभी धर्मग्रन्थों का सार लिखा है, किन्तु उसमें यह भी लिखा हुआ है कि मूसा पैगम्बर (श्री प्राणनाथ जी) और बनी इस्राईल (सुन्दरसाथ) के इल्म के बराबर अन्य भी किसी का इल्म नहीं है।

भावार्थ- हज़रत इब्राहिम के दो बेटे थे- इस्माइल और इसहाक। इसहाक के बेटे याकूब को इस्राईल की उपाधि मिली। बनी इस्राईल का तात्पर्य है सुन्दरसाथ (ब्रह्मसृष्टि) तथा मूसा से आशय है श्री प्राणनाथ जी। उपरोक्त चौपाई का भाव यह है कि श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान के समान अन्य किसी का भी ज्ञान नहीं होगा।

कहे फुरमान इलम मूसे का, और बड़ा इलम खिजर।

इलम खुदाई बूंद के, न आवे बराबर॥१५॥

कुरआन कहता है कि यद्यपि मूसा पैगम्बर और पैगम्बर खिज़्र का ज्ञान बहुत महान है, किन्तु इनका ज्ञान तारतम वाणी के ज्ञान की एक बूँद के बराबर भी नहीं है।

फिरके इकहत्तर मूसा के, हुए ईसा के बहत्तर।

एक को हिदायत हक की, यों कह्या पैगंमर॥१६॥

मूसा पैगम्बर के इकहत्तर फिरके हुए तथा ईसा के बहत्तर, किन्तु मुहम्मद स.अ.व. का कहना है कि इनमें से एक फिरके को ही परब्रह्म की हिदायत (सिखापन) होगी।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के कथनानुसार मूसा तथा ईसा के एक-एक फिरके नाजी होंगे, तथा सत्तर और इकहत्तर फिरके नारी (दोज़की) होंगे। इसका आशय यह है कि बहुसंख्यक समाज धर्म-विरुद्ध आचरण में लिप्त हो जायेगा।

महंमद के तेहत्तर हुए, तिनको हुआ हुकम।

जिन को हिदायत हक की, तामें आओ तुम॥१७॥

मुहम्मद स.अ.व. के तिहत्तर फिरके हुए। उन्हें परब्रह्म का आदेश हुआ कि जिस नाजी फिरके को अखण्ड ज्ञान द्वारा परब्रह्म की ओर से सिखापन मिले, तुम उसी में सम्मिलित हो जाना।

जिन दीन लिया खुदाए का, सो नाजी गिरो आखिर।

और होसी दोजखी, जो जुदे रहे बहत्तर॥१८॥

जिन्होंने श्री प्राणनाथ जी की वाणी को आत्मसात् कर आचरण में उतारा है, वही समूह कियामत के समय अखण्ड आनन्द को प्राप्त करने वाला है। इनके अतिरिक्त शेष बहत्तर फिरके, जो प्राणनाथ जी की वाणी से अलग रहे हैं, वे प्रायश्चित (दोजक़) की अग्नि में जलेंगे।

दुनियां चौदे तबक में, सोई नाजी गिरो है एक।

आखिर जाहेर होएसी, पर पेहेले लेसी सोई नेक॥१९॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में ब्रह्मसृष्टियों का यही एक समूह है, जो परमधाम के अखण्ड सुखों को प्राप्त करने वाला है। यद्यपि यह समूह न्याय के दिन जाहिर हो जायेगा, किन्तु उसके पहले जो तारतम वाणी का प्रकाश लेगा, वह धन्य-धन्य होगा।

महामत कहे ए मोमिनो, ल्यों हकीकत कुरान।

ढूँढ़ो फिरके नाजी को, जो है साहेब ईमान॥२०॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! आप तारतम वाणी के प्रकाश में कुरआन की वास्तविकता को ग्रहण कीजिए तथा ब्रह्मसृष्टियों के उस समूह की खोज कीजिए, जो प्रियतम परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वाला है।

प्रकरण ॥६॥ चौपाई ॥४०७॥

हक की सूरत

इस प्रकरण में परब्रह्म के स्वरूप की यथार्थता दर्शायी गयी है।

हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत।
हक सूरत अर्स माने नहीं, जो दर्ई महंमद बका न्यामत॥१॥
हे साथ जी! शरीयत की राह पर चलने वाले इन मुसलमानों की वास्तविकता को देखिये, जिन्होंने कुरआन के तत्वज्ञान को ग्रहण नहीं किया। हाय, हाय! मुहम्मद स.अ.व. ने कुरआन के रूप में अखण्ड परमधाम की निधि दी, किन्तु दुर्भाग्यवश ये न तो परब्रह्म का किशोर स्वरूप मानते हैं और न परमधाम को मानते हैं।

आसमान जिमी की दुनियां, करी सबों ने दौर।

तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अर्स बका ठौर॥२॥

धरती तथा आकाश में रहने वाले सभी मनुष्यों तथा सिद्ध पुरुषों ने परब्रह्म की खोज में बहुत अधिक प्रयास किया, किन्तु न तो ये परब्रह्म का स्वरूप जान पाये और न ही यह जान पाये कि अखण्ड परमधाम कहाँ है।

खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक।

खोज खोज सुन्य में गए, कोई आगूं न हुए बेसक॥३॥

सारे संसार ने परब्रह्म की खोज की, किन्तु कोई भी परब्रह्म के स्वरूप को नहीं जान सका। सारे प्रयास करके उन्होंने शून्य-निराकार का तो अनुभव किया, किन्तु संशयरहित होकर इसके आगे का कुछ भी वर्णन नहीं कर पाये।

दौड़ थके सब सुन्य लो, किन ला हवा को न पायो पार।
 तब खुदा याही को जानिया, कहे निरंजन निराकार॥४॥

खोजते-खोजते सभी निराकार तक जाकर थक गये।
 कोई भी निराकार को पार नहीं कर सका। तब हारकर
 इन्होंने निराकार को ही परब्रह्म मान लिया और यह कहा
 कि परमात्मा किसी भी प्रकार के अंग-अवयव या
 आकृति से रहित है।

पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत।
 बोहोत करी रद-बदलें, वास्ते सब उमत॥५॥

इन सबके पश्चात् मुहम्मद स.अ.व. इस संसार में आये
 और उन्होंने कहा कि मैंने परब्रह्म के किशोर स्वरूप को
 प्रत्यक्ष देखा है। सभी ब्रह्मसृष्टियों को साक्षी देने के लिए
 मैंने परब्रह्म से बहुत अधिक वार्तालाप किया है।

अर्स बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर।

और देखी अरवाहें अर्स की, कहे मैं हक का पैगंमर॥६॥

मैंने उस अखण्ड परमधाम में हौज कौसर ताल, यमुना जी का दूध से भी अधिक उज्ज्वल जल, अति सुन्दर बाग-बगीचों, नूरमयी धरती, अति सुन्दर पशुओं, तथा रंगमहल के मूल मिलावा में बैठी हुई आत्माओं को देखा। मैं परब्रह्म का सन्देश लेकर आया हूँ।

बोहोत देखी बका न्यामतें, करी हकसों बड़ी मजकूर।

ख्याब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर॥७॥

मैंने उस अखण्ड परमधाम में बहुत से सुन्दर दृश्यों (निधियों) को देखा है और प्राणेश्वर अक्षरातीत से बहुत सी बातें की हैं। इसलिए इस स्वप्नमयी झूठे संसार में भी मैं परमधाम तथा परब्रह्म के स्वरूप का वर्णन कर रहा हूँ।

कौल किया हके मुझसे, हम आवेंगे आखिरत।

हिसाब ले भिस्त देयसी, आखिर करसी कयामत॥८॥

परब्रह्म ने मुझे वचन दिया है कि मैं कियामत के समय में आऊँगा। अपने दिये हुए वचन के अनुसार कियामत के समय वे अवश्य आयेंगे तथा सबके न्यायाधीश बनकर उनके कर्मों के अनुसार आठ बहिश्तों में मुक्ति देंगे।

वास्ते खास उमत के, मैं ल्याया फुरमान।

सो आखिर को आवसी, तब काजी होसी सुभान॥९॥

ब्रह्मसृष्टियों को साक्षी देने के लिए ही मैं यह कुरआन लेकर आया हूँ। परमधाम की आत्माएँ कियामत (वक्त आखिरत) के समय आयेंगी। उस समय परब्रह्म सबके न्यायाधीश बनकर न्याय करेंगे।

जो इन पर आकीन ल्याइया, ताए भिस्त होसी बेसक।

जो इन बातों मुनकर, ताए होसी आखिर दोजक॥१०॥

जो मेरी इन बातों के अनुसार कियामत के समय आने वाले इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के ऊपर विश्वास लायेगा, उसे निश्चित ही बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति प्राप्त होगी। जो इन बातों को स्वीकार नहीं करेंगे, उन्हें न्याय के दिन प्रायश्चित की अग्नि (दोजक) में जलना पड़ेगा।

खुदा काजी होए बैठसी, होसी फजर को दीदार।

ले पुरसिस लैलत कदर में, होसी फजर तीसरे तक़रार॥११॥

स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म उस समय न्यायाधीश होकर सबका न्याय करेंगे। जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में इस संसार का अज्ञान रूपी अन्धकार समाप्त हो जायेगा, तो वे सबको दर्शन भी देंगे। लैल-तुल-कद्र के तीसरे

तकरार अर्थात् इस खेल के तीसरे भाग जागनी लीला में, जब तारतम ज्ञान का उजाला फैल जायेगा, तो परब्रह्म संसार के सभी प्राणियों का न्याय करेंगे।

भावार्थ- संसार में परब्रह्म का न्याय ज्ञान दृष्टि से होगा अर्थात् सत्य-असत्य की पहचान करायी जायेगी। सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में जो न्याय की लीला होगी, उसमें सबके कर्मों के अनुसार बहिश्तों में अखण्ड किया जायेगा। आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां (श्री प्राणनाथ जी) के अन्दर परब्रह्म की अलौकिक शक्तियाँ होंगी, जिसके कारण संसार उन पर विश्वास करेगा।

सब पैगंमर आवसी, होसी मेला बुजरक।

तब बदफैल की दुनियां, ताए लगसी आग दोजक॥१२॥

जब सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में न्याय की लीला होगी, तब सभी पैगम्बर (सन्देशवाहक) श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आयेंगे। उस समय इस ब्रह्माण्ड के सभी जीव एकत्रित होंगे। तब बुरे कार्य करने वालों तथा श्री प्राणनाथ जी की पहचान न करने वाले जीवों को प्रायश्चित (दोजक) की अग्नि में जलना पड़ेगा।

जलती जलती दुनियां, जासी पैगंमरों पे।

ताए सब पैगंमर यों कहे, तुम छूट न सको हम से॥१३॥

पश्चाताप की अग्नि में जलती हुई दुनिया के जीव जब अपने पैगम्बरों के पास जायेंगे, तो सभी पैगम्बर उनको यही उत्तर देंगे कि हमारे पास इस अग्नि से छुटकारा दिलाने का सामर्थ्य नहीं है।

कहें पैगंमर हम सरमिंदे, हकसों होए न बात।

तुम जाओ महंमद पे, वे करसी सबों सिफात॥१४॥

उस समय सभी पैगम्बर कहेंगे कि प्रायश्चित की अग्नि के दुःख से आपकी रक्षा न कर पाने के कारण हम लज्जित हैं तथा परब्रह्म स्वरूप इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी से आपकी बात कहने का भी हमारा सामर्थ्य नहीं है। तुम सभी मिलकर मुहम्मद स.अ.व. के पास जाओ। वे इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी से सबकी सिफत करेंगे।

भावार्थ- उपरोक्त तीनों चौपाइयाँ सत्स्वरूप की बहिश्त में सातवें दिन की लीला का वर्णन कर रही हैं, किन्तु इससे पूर्व की चौपाई पाँचवें दिन में होने वाली न्याय की लीला का वर्णन कर रही है जिसमें ज्ञान दृष्टि से ही न्याय होगा।

चौदहवीं चौपाई में संसार के जीवों को मुहम्मद

स.अ.व. के पास जाने और सिफायत करने का भाव आलंकारिक है। इसका आशय यह है कि जब जीव यह सोचेंगे कि मुहम्मद स.अ.व. ने हमें संसार में कुरआन द्वारा परमधाम, परब्रह्म, तथा इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की पहचान दी थी, किन्तु हमने उनकी पहचान न करके मायावी दुष्कर्मों में अपने को डुबो दिया था। अब हमें अपने पापों के लिए सच्चे हृदय से क्षमा माँगनी होगी। दया के सागर परब्रह्म हमें अवश्य क्षमा करेंगे।

ऐसा सोचते-सोचते, जब वे मुहम्मद स.अ.व. का वास्ता देकर विलख-विलख कर रोयेंगे, तो परब्रह्म की कृपादृष्टि से वे विरह में तड़पकर निर्मल होंगे तथा बहिशतों की अखण्ड मुक्ति के सुख के अधिकारी बनेंगे। यही मुहम्मद स.अ.व. द्वारा की जाने वाली सिफायत है, अर्थात् उनके द्वारा दी गयी सिखापन की सच्चे हृदय से

की गयी स्वीकारोक्ति है, जो पश्चाताप की अग्नि में जलाकर जीवों को मुक्ति सुख दिलायेगी।

उपरोक्त कथन में ऐसा नहीं समझना चाहिए कि मुहम्मद स.अ.व. वहाँ प्रत्यक्ष खड़े होकर एक-एक व्यक्ति की सिफारिश करेंगे। यदि ऐसा होगा तो निष्पक्ष न्याय कैसे होगा, क्योंकि हिन्दू या अन्य धर्मों के लोग तो मुहम्मद स.अ.व. द्वारा की जाने वाली सिफायत के प्रसंग को जानते ही नहीं हैं। जब सारे ब्रह्माण्ड के परब्रह्म के रूप में श्री प्राणनाथ जी सत्स्वरूप में विराजमान होकर लीला करेंगे, तो वहाँ हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई आदि का भेद न रहकर केवल प्राणिमात्र के प्रति न्याय होगा।

ए बात पसरी दुनी में, जो कोई ल्याया आकीन।

सो नाम धराए मुस्लिम, माहें आए महंमद दीन॥१५॥

मुहम्मद स.अ.व. की कही हुई बातें संसार में फैल गयीं। जिसने भी उन बातों पर विश्वास किया, उसने स्वयं को मुस्लिम अर्थात् परब्रह्म पर अटूट विश्वास करने वाला कहा, तथा मुहम्मद साहब के चलाये हुए धर्म में आ गया।

खुदा के नूर से महंमद, हुई दुनियां महंमद के नूर।

इन बात में सक जो ल्याइया, सो रहया दीन से दूर॥१६॥

परब्रह्म के नूर से मुहम्मद स.अ.व. है तथा यह संसार मुहम्मद स.अ.व. के नूर से है। जो इस बात में संशय करता है, उसे मुहम्मद साहिब के धर्म (दीन-ए-इस्लाम) से अलग ही समझना चाहिए।

भावार्थ- परब्रह्म के सत् अंग (नूर) अक्षर ब्रह्म हैं, जिनके मन का स्वरूप (नूर) अव्याकृत है, जिसका स्वाप्टिक रूप आदिनारायण (अजाजील) के रूप में इस

सृष्टि की रचना करता है।

कोईक पूरा ईमान ल्याइया, बिन ईमान रहे बोहोतक।

कई जुबां ईमान दिल में नहीं, सो तो कहे मुनाफक॥१७॥

किसी-किसी ने मुहम्मद स.अ.व. पर पूरा विश्वास किया, तो बहुत से ऐसे भी लोग थे, जिन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। कुछ लोग ऐसे भी हुए जो मुख से तो कहते थे कि हमें मुहम्मद स.अ.व. पर विश्वास है, किन्तु अपने दिल में विश्वास नहीं रखते थे। ऐसे व्यक्तियों को मुनाफिक (मिथ्याचारी, बेईमान) कहा गया।

केते कहावें मोमिन, और दिल में मुनकर।

एक नाजी फिरका असल, और दोजखी बहत्तर॥१८॥

कुछ ऐसे भी होते हैं, जो मुख से अपने को मोमिन

(अटूट विश्वास रखने वाला) कहते हैं, किन्तु हृदय से नहीं मानते। इस प्रकार मुहम्मद स.अ.व. के अनुयायियों में मात्र एक ही फिरका सच्चा है, जो अखण्ड सुख का अधिकारी है, शेष बहत्तर फिरके दोजकी अर्थात् दुःख की अग्नि में जलने वाले हैं।

कहया फिरके नाजीय को, होसी हक की हिदायत।

सब फिरके इनमें आवसी, होसी एक दीन आखिरत॥१९॥

कुरआन में कहा गया है कि इस नाजी फिरके को ही परब्रह्म का सिखापन (निर्देश) होगा, शेष अन्य सभी (७२) फिरके जब इसमें आ जायेंगे, तो कियामत के समय सारे संसार में एक ही सत्य धर्म की स्थापना हो जायेगी।

भावार्थ— उपरोक्त चौपाई का सूक्ष्म अर्थ यह है कि जब

श्री प्राणनाथ जी की वाणी से सारा संसार एक सत्य की पहचान कर लेगा, तो कर्मकाण्ड का मार्ग छोड़कर परमधाम के प्रेम मार्ग का अनुसरण करेगा। इस प्रकार सारे संसार में आन्तरिक रूप से एक सत्य धर्म की स्थापना हो जायेगी, भले ही बाह्य रूप से कोई हिन्दू, मुस्लिम, क्रिश्चियन, या यहूदी क्यों न कहलाता हो। इस प्रकार श्री प्राणनाथ जी द्वारा प्रकाशित निजानन्द का मार्ग वह वैश्विक मार्ग (विश्व धर्म) है, जिसमें सारा संसार एक प्रेममयी आँगन में समा जाता है।

तब होसी कुरान का माजजा, और नबी की नबूवत।

ए कौल तोड़ जुदे पड़त हैं, सो कौल मेंहेदी करसी साबित॥२०॥

उस समय ही कुरआन के चमत्कार तथा नबी की नबूवत की सत्यता प्रमाणित होगी। कुरआन के शब्दों का

बाह्य अर्थ लेने वाले मुसलमान आपस में लड़-झगड़कर इसलिए अलग हो रहे हैं, क्योंकि वे कुरआन के गुह्य अर्थों को न समझ पाने के कारण विश्वास नहीं कर पा रहे हैं। जब श्री प्राणनाथ जी कुरआन के उन्हीं कथनों के गुह्य अर्थ प्रकाशित कर सबको एकरस कर देंगे, तो सबमें एकमत स्थापित हो जायेगा।

भावार्थ- धर्म का वास्तविक स्वरूप तत्त्वज्ञान से निर्देशित होता है, कर्मकाण्डों से नहीं। वेशभूषा, कर्मकाण्ड, तथा भाषा की भिन्नता धार्मिक विवादों को बढ़ाने में अहम् भूमिका का निर्वाह करते हैं। जब सभी "जो कुछ कहा कतेब ने, सोई कहा वेद" (खुलासा १२/४२) के कथन को अंगीकार कर लेंगे, तब धार्मिक विवाद स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे। कुरआन के गुह्य अर्थों के प्रकाश में आये बिना, शरीयत के इस्लाम को सारा

संसार कभी भी स्वीकार नहीं करेगा। बलपूर्वक शरीयत को थोपने की प्रवृत्ति संसार में आतंकवादी हिंसा को प्रोत्साहित करती है और धार्मिक विद्वेष को भी जन्म देती है।

कुरान में ऐसा लिख्या, खुदा एक महंमद साहेद हक।

तिनको न कहिए मोमिन, जो इनमें ल्यावे सक॥२१॥

कुरआन में ऐसा लिखा है कि परब्रह्म मात्र एक है और मुहम्मद स.अ.व. इसकी सच्ची साक्षी देते हैं। जो इस बात में संशय करता है, उसे मोमिन कहा ही नहीं जा सकता।

भावार्थ— कुरआन सिपारा ३० सूरा ११२ आयत १ में कहा है कि "कुल् हुवल्लाहु अहदुन्" अर्थात् कहिए कि अल्लाह एक (अद्वितीय) है। पा. ३० सू. २० आ. १७ "कुतिलल्-अिन्सानु मा अक्फरहू" अर्थात् आदमी पर

लानत वह नाशुक्रा है।

जो हक बका सूरत में, मुस्लिम ल्यावे सक।

तो क्यों खुदा एक हुआ, क्यों हुआ महंमद बरहक॥२२॥

यदि कोई मुसलमान परब्रह्म के अखण्ड किशोर स्वरूप को मानने में संशय करता है, तो वह परब्रह्म को एक कैसे कह सकता है और मुहम्मद स.अ.व. का कथन कैसे सच्चा हो सकता है?

हाए हाए गिरो महंमदी कहावहीं, कहे हक को निराकार।

जो जहूदों ने पकड़या, इनों सोई किया करार॥३३॥

हाय, हाय! जो मुसलमान अपने को मुहम्मद स.अ.व. का अनुयायी कहलाते हैं, वे भी परब्रह्म को निराकार ही कहते हैं। हिन्दुओं की तरह इन्हें भी परमात्मा को

निराकार कहने में कोई झिझक नहीं होती।

जो कहे खुदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद।

खुदा महंमद वाहेदत में, सो कलाम होत है रद॥२४॥

जो परब्रह्म को बिना रूप का कहते हैं, तो उनके इस कथन से मुहम्मद स.अ.व. का कथन ही झूठा हो जाता है। तब तो मुहम्मद स.अ.व. और परब्रह्म के बीच नब्बे हजार हरुफों में बातें होने का कथन ही झूठा हो जाता है।

गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान।

कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रहया ईमान॥२५॥

भले ही दूसरे पन्थों के अनुयायी परब्रह्म को बिना रूप का कहते हैं, किन्तु उनकी देखा-देखी ये मुसलमान भी

क्यों ऐसा कह रहे हैं? ये जब अपने को मुहम्मद स.अ.व. के इस्लाम का अनुयायी कहते हैं, तो उन्हीं के विपरीत कथन करने से इनका मुहम्मद स.अ.व. पर ईमान कहाँ रहा? बिल्कुल नहीं।

खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर दीन माने क्यों कर।

हक सूरत की दई साहेदी, हकें तो कहया पैगंमर॥२६॥

इस स्थिति में दूसरे पन्थ का अनुयायी इस बात को क्यों मानेगा कि परब्रह्म एक है और मुहम्मद स.अ.व. उनकी सच्ची साक्षी देने वाले हैं? मुहम्मद स.अ.व. ने परब्रह्म के किशोर स्वरूप के दर्शन करने की साक्षी दी, तभी तो परब्रह्म ने उन्हें अपना पैगम्बर कहा।

दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान।

एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक महंमद जान॥२७॥

कुरआन में ऐसा लिखा है कि जो परब्रह्म के स्वरूप की साक्षी देता है, वह उन्हीं का स्वरूप होगा। परमधाम में तो एक परब्रह्म के अतिरिक्त कोई दूसरा है ही नहीं। इस प्रकार मुहम्मद स.अ.व. के कथन को पूर्णतया सत्य जानना चाहिये क्योंकि उनके स्वरूप में परब्रह्म द्वारा ही शब्द कहे गये हैं।

भावार्थ- कुरआन के सि. ३० आयत १ सू. ११२ में लिखा है- "कुल.... अहदुन", पारा २१ सू. ७२ आ. २ "बिरब्बिना अहूदन" अर्थात् अद्वितीय है। परवरदिगार में कोई शरीक नहीं।

उपरोक्त चौपाई का गुह्य अर्थ श्री प्राणनाथ जी पर घटित होता है क्योंकि इसी स्वरूप में आकर ही

अक्षरातीत श्री राज जी ने परमधाम की ब्रह्मवाणी देकर सारे संसार के लिए एक सत्य मार्ग दर्शाया है।

महामत कहे सुनो मोमिनो, दीन हकीकी हक हजूर।

हक अमरद सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर॥२८॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! धर्म के शाश्वत् स्वरूप को मानने वाले ही प्राणेश्वर अक्षरातीत को प्राप्त करते हैं। जो श्री राज जी के अति सुन्दर किशोर स्वरूप को नहीं मानता, उसे सच्चे धर्म से दूर ही मानना चाहिये।

भावार्थ- जिस प्रकार कुरआन में परब्रह्म का स्वरूप किशोर माना गया है, उसी प्रकार वेद में "श्रुतो युवा स इन्द्रः", "आत्मानं धीरमजरं युवानम्" कहा गया है। पुराण संहिता व माहेश्वर तन्त्र में परब्रह्म को अति सुन्दर किशोर स्वरूप में दर्शाया गया है। इस प्रकार परब्रह्म के

स्वरूप को न मानने वाला न तो सच्चा मुसलमान है और
न ही सच्चा हिन्दू है।

प्रकरण ॥७॥ चौपाई ॥४३५॥

रूहों की बिने देखियो

इस प्रकरण में यह दर्शाया गया है कि इस नश्वर जगत में परमधाम की आत्माओं के आध्यात्मिक जीवन की नियमावली क्या है और उन्हें आत्म-जाग्रति के लिए क्या करना चाहिए।

जो उमत होवे अर्स की, सो नीके विचारो दिल।

बिने अपनी देख के, करो फैल देख मिसल॥१॥

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि है, उसे चाहिए कि इस प्रकरण में दिये गये तथ्यों पर अपने हृदय में अच्छी तरह से विचार करें। सच्चिदानन्द परब्रह्म की अर्धांगिनी होने के नाते उसे आध्यात्मिक जीवन की परम्पराओं पर विचार करना चाहिए और उसके अनुसार आचरण करना चाहिए।

कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन।

कैसो अपनो वजूद है, जो असल रुहों के तन॥२॥

उसे इस बात का गहन चिन्तन करना चाहिए कि हमारे प्राणवल्लभ का स्वरूप कैसा है और हमारा परमधाम कैसा है। इस नश्वर शरीर से भिन्न हमारे मूल परात्म के तन कैसे हैं, जिनसे हम अपने प्राणवल्लभ से लीला करते हैं।

तुम सबे जानत हो, तुमको कही खबर।

ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर॥३॥

तारतम वाणी के प्रकाश में प्रियतम अक्षरातीत ने तुम्हें मूल सम्बन्ध की पहचान करा दी है। इस बात को तुम अच्छी तरह से जानती हो। सच्चिदानन्द परब्रह्म की प्राणवल्लभा कहलाने का तुम्हें महान गौरव प्राप्त है, फिर भी तुम इस बात को भूल क्यों जाती हो?

कैसी बात दिल पैदा करी, जिनसे मांग्या खेल ए।

सो कैसा खेल ए किया, ए देखत हो तुम जे॥४॥

तुम्हारे हृदय में प्रियतम अक्षरातीत ने ऐसी कौन सी बात पैदा कर दी, जिसके कारण तुमने माया का खेल देखने की इच्छा की? तुम इस बात का भी चिन्तन करो कि जिस मायावी खेल को तुम देख रही हो, उसकी वास्तविकता क्या है।

भावार्थ- श्री राज जी ने इश्क और वहदत (प्रेम और एकत्व) की मारिफत की पहचान कराने के लिए सखियों के दिल में ये बात पैदा की कि हम प्रियतम अक्षरातीत को रिझाती हैं, इसलिए हमारा इश्क बड़ा है और हम आशिक हैं। जब बार-बार सबके मुख से ये बात निकलने लगी, तो खेल की भूमिका तैयार हुई।

दुनियां कैसी पैदा करी, ए जो चौदे तबक।

तिन सबों यों जानिया, किनों न पाया हक॥५॥

चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड कैसा है, जिसे तुम्हारे देखने के लिये बनाया गया है? इसमें रहने वाले सभी लोग यही जानते हैं कि हममें से किसी ने भी अब तक परब्रह्म को नहीं पाया है।

खोज खोज के सब थके, कई कहावें फिरके बुजरक।

पर तिन सारों ने यों कहया, गई न हमारी सक॥६॥

इस संसार में सच्चिदानन्द अक्षरातीत को सभी खोज-खोज कर थक गये। अनेक पन्थों के बड़े-बड़े विद्वानों, सिद्ध पुरुषों ने अन्त में यह कह दिया कि परब्रह्म के सम्बन्ध में हम अभी पूर्ण रूप से संशयरहित नहीं हुए हैं।

और खावंद जो खेल के, जाको दुनियां सब पूजत।

सो कहे हमों न पाइया, हक क्यों कर है कित॥७॥

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, और आदिनारायण इस मायावी खेल के स्वामी कहे जाते हैं। सारा संसार इनकी पूजा करता है, फिर भी वे कहते हैं कि हम इस प्रश्न का उत्तर अभी नहीं खोज पाये हैं कि सच्चिदानन्द परब्रह्म कहाँ और कैसा है?

भावार्थ- इस सम्बन्ध में माहेश्वर तन्त्र का यह कथन देखने योग्य है, जिसमें भगवान शिव स्वयं कहते हैं-

अस्मिन् अज्ञान पाथोधौ वयम् ब्रह्मादयोऽपि।

बुदबुदाकारतां प्राप्ताः तदच्छि वायु जृम्भिता॥

अज्ञानता के इस महासागर में मैं और ब्रह्मा आदि देवता पानी के बुलबुले जैसा अस्तित्व रखते हैं और उसी की कृपा रूपी वायु से बनते और मिटते रहते हैं।

हम रूहें भी आइयाँ इन खेल में, सो गैयां मांहें भूल।

सुध ना बिरानी आपनी, भया ऐसा हमारा सूल॥८॥

श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि परमधाम की हम आत्मायें इस खेल में आयी हुई हैं और यहाँ आकर प्रियतम तथा परमधाम को भूल गयी हैं। इस खेल में हमारा ऐसा हाल हो गया है कि न तो हमें अपनी और न दूसरे की सुध है।

इनमें फुरमान ल्याया रसूल, देने अपनी खबर आप।

फुरमान कोई ना खोल सके, जाथें होए हक मिलाप॥९॥

इस संसार में मुहम्मद स.अ.व. कुरआन का ज्ञान लेकर आए हैं, जिससे कि हमें अपनी तथा परब्रह्म की पहचान मिल सके। हमारे अतिरिक्त इस कुरआन के गुह्य रहस्यों को अन्य कोई भी नहीं जान सकता, जिससे कि उस

परब्रह्म से मिलन हो सके।

फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत।

ए खोल सके न त्रैगुन, यामें हमारी हकीकत॥१०॥

परब्रह्म के आदेश से शुकदेव जी द्वारा एक दूसरा ग्रन्थ भागवत लाया गया, जिसमें हमारी ब्रज और रास की लीला की वास्तविकता दर्शायी गई है। इसके रहस्यों को खोलने का सामर्थ्य ब्रह्मा, विष्णु, और शिव में भी नहीं है।

कुंजी ल्याए रुहअल्ला, जासों पावें सब फल।

ज्यों कर ताला खोलिए, सो जाने न कोई कल॥११॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी इस संसार में तारतम ज्ञान रूपी कुञ्जी लेकर आये हैं, जिससे सभी धर्मग्रन्थों के

रहस्य स्पष्ट हो जाते हैं। इसके पहले आज तक किसी को भी यह पता नहीं था कि धर्मग्रन्थों के रहस्य को कैसे खोला जाए (प्रकाश में लाया जाए)।

सो कुंजी साहेब ने, मेरे हाथ दई।

जिन बिध ताला खोलिए, सो सब हकीकत कही॥१२॥

प्रियतम अक्षरातीत ने तारतम ज्ञान की कुंजी मुझे प्रदान की और मुझे वह युक्ति भी प्रदान की जिससे सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य उजागर हो सकें।

सक परदा कोई न रहया, सब विध दई समझाए।

कहे खोल दे अर्स रूहों को, ए मिलसी तुझे आए॥१३॥

मेरे प्राणवल्लभ अक्षरातीत ने मुझे हर तरह से समझाया, जिससे अब मेरे हृदय में किसी भी प्रकार का संशय या

अज्ञान का आवरण नहीं रह गया। उन्होंने मुझसे कहा कि धर्मग्रन्थों के सभी रहस्यों को तुम प्रकाश में लाओ, जिससे परमधाम की सभी आत्मायें माया छोड़कर तुमसे आकर मिलें।

अब देखो दिल विचार के, कैसी बुजरक बात है तुम।

कैसा खेल तुम देखिया, कई विध देखाई हुकम॥१४॥

हे सुन्दरसाथ जी! अब अपने दिल में यह विचारपूर्वक देखिये कि आपकी महिमा कितनी बड़ी है। आपने किस प्रकार का यह स्वप्नमयी खेल देखा है तथा धनी के आदेश से आपने इसे कई प्रकार से देखा है।

चीन्हो इन खसम को, चीन्हो बका वतन।

और चीन्हो तुम आपको, देखो फैल करत विध किन॥१५॥

हे साथ जी! तारतम वाणी के प्रकाश में आप अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत की, अपने अखण्ड घर परमधाम की, तथा अपने निज स्वरूप की पहचान कीजिए, तथा यह भी विचार कीजिए कि इस मायावी जगत में आकर हम किस प्रकार का आचरण कर रहे हैं।

फुरमान भेज्या किनने, ल्याए ऊपर किन।

कौन लेके आइया, मांहेँ क्या खजाना धन॥१६॥

इस बात का भी विचार कीजिए कि कुरआन और भागवत के रूप में सन्देश भेजने वाला कौन है, किसके लिए भेजा गया है, इसे लाने वाला कौन है, तथा इन ग्रन्थों में कौन सी आध्यात्मिक सम्पदा छिपी है?

कौन ल्याया कुंजीय को, है कुंजी में क्या विचार।

किनने ताला खोलिया, खोल्या कौन सा द्वार॥१७॥

तारतम ज्ञान की कुञ्जी लाने वाला कौन है तथा इस तारतम ज्ञान रूपी कुञ्जी में कैसा तत्त्वज्ञान है? तारतम ज्ञान द्वारा धर्मग्रन्थों के रहस्यों को किसने स्पष्ट किया है? वह कौन सा द्वार है, जिसके द्वारा आप परमधाम की अनुभूति कर सकते हैं?

द्रष्टव्य— एकमात्र इश्क (प्रेम) द्वारा ही परमधाम का दरवाजा खोला जा सकता है।

क्या है इन दरबार में, दर्ई कहां की सुध।

सुध बका सारी नीके लेओ, विचारो आत्म बुध॥१८॥

परमधाम में कैसी शोभा और लीला है? हमें कहाँ की सुध दी गई है? अपनी आत्मा द्वारा ध्यान तथा बुद्धि

द्वारा विचार करके परमधाम की सारी यथार्थता को अच्छी तरह से ग्रहण कीजिए।

ए खेल किनने किया, तुम रूहें भेजी किन।

कुंजी कुलफ गिरो आपको, दिल दे देखो रोसन॥१९॥

माया का यह खेल किसने बनाया तथा आपको किसने इस खेल में भेजा? श्रीमुखवाणी के प्रकाश में अपने हृदय में तारतम ज्ञान रूपी कुञ्जी, धर्मग्रन्थों के रहस्यों, ब्रह्मसृष्टियों तथा अपने विषय में गहनता से विचार कीजिए।

एह विचार किए बिना, जो करत हैं फैल हाल।

जब होसी मिलावा जाहेर, तब तिनका कौन हवाल॥२०॥

उपरोक्त तथ्यों का विचार किये बिना, जो भी

सुन्दरसाथ करनी और रहनी में लगे हुए हैं अर्थात् जीवसृष्टि की तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उन्हें यह सोचना होगा कि खेल के समाप्त होने के पश्चात् जब वे परमधाम में मूल मिलावा में जाग्रत होंगी, उस समय उनकी क्या स्थिति होगी?

फरामोसी तुमें किन दई, अब तुमको कौन जगाए।

इन बातों नींद क्यों रहे, जो होवे अर्स अरवाए॥२१॥

माया की यह नींद आपको किसने दी है और अब आपको कौन जगा रहा है? यदि आप परमधाम की आत्मा हैं, तो इस बात पर विचार कीजिए कि ज्ञान के इतने अनमोल वचन सुनने के पश्चात् भी आपमें माया की इतनी नींद क्यों है?

मोमिन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत।

ए चोट काफरों न लगे, मोमिनो छेद निकसत॥२२॥

इस संसार में मोमिन और काफिर कहलाने वाले दो प्रकार के लोग होते हैं। उनमें यह अन्तर होता है कि उपरोक्त चौपाइयों में कहे हुए वचनों की चोट काफिरों को नहीं लगती, जबकि ब्रह्ममुनियों (मोमिनो) के हृदय को शब्दों की यह चोट छेदकर निकल जाती है अर्थात् वे विवेक लेकर दृढ़ संकल्प के साथ आत्म-जाग्रति के पथ पर निकल पड़ते हैं।

महामत कहे ए मोमिनो, क्यों न विचारो तुम।

कई बिध तुम वास्ते करी, क्यों भूलो इन खसम॥२३॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! उपरोक्त चौपाइयों में मेरे द्वारा कहे गये कथनों पर आप विचार

क्यों नहीं करते? अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत को आप क्यों भूल गये हैं, जिन्होंने आपको आनन्दित करने के लिए अनेक प्रकार की लीला दिखाई है।

प्रकरण ॥८॥ चौपाई ॥४५८॥

नूर नूरतजल्ला की पेहेचान

इस प्रकरण में अक्षर ब्रह्म तथा अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान दर्शायी गयी है।

बुलाइयां निसबत जान के, देखो मेहेर हक की ए।

हाए हाए तो भी इस्क न आवत, अरवा अर्स की जे॥१॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! आप प्राणेश्वर अक्षरातीत की इस अनुपम कृपा (मेहर) को देखिए कि वे आपको परमधाम के मूल सम्बन्ध से तारतम वाणी द्वारा बुला रहे हैं। हाय-हाय! आप परमधाम की ब्रह्मात्मा कहलाते हैं, फिर भी आपके अन्दर अपने प्राणेश के प्रति प्रेम नहीं पैदा हो रहा है। यह कितने आश्चर्य की बात है?

ए मेहेर भई मोमिनों पर, समझत नहीं कोए।

सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए॥२॥

परमधाम के ब्रह्ममुनियों पर प्रियतम की अपार मेहर हुई है, किन्तु इसे कोई भी नहीं समझ रहा है। इस कृपा का रहस्य तो उसे ही समझ में आयेगा, जिसे अपने प्राणवल्लभ की पहचान हो गयी हो।

खावंद अर्स अजीम का, सो कहूं नेक हकीकत।

इन हक बका से मोमिन, रखते हैं निसबत॥३॥

धाम के धनी उस पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द की मैं थोड़ी सी वास्तविकता बताता हूँ। ब्रह्मात्माओं का अक्षरातीत तथा परमधाम से अखण्ड सम्बन्ध है।

बका अव्वल से अबलो, किन किया न जाहेर सुभान।

नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान॥४॥

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक किसी ने भी अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत परब्रह्म के स्वरूप को उजागर नहीं किया था। उसका मैं थोड़ा सा विवरण देता हूँ, जिससे कि अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान हो जाये।

तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कई पैदास।

ऐसी बुजरक कुदरत, नूरजलाल के पास॥५॥

अक्षरातीत परब्रह्म के सत् अंग अक्षर ब्रह्म के पास ऐसी महान शक्ति है कि वे अपने एक पल में वैकुण्ठ सहित चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड जैसे अनेक ब्रह्माण्ड उत्पन्न कर सकते हैं।

ऐसे पल में पैदा करे, पल में करे फनाए।

ऐसा बल रखे कुदरत, नूरजलाल के॥६॥

अक्षर ब्रह्म की कुदरत, अर्थात् योगमाया, में ऐसी अलौकिक शक्ति है कि वह चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड जैसे अनेक लोकों को एक पल में पैदा कर सकती है और लय कर सकती है।

भावार्थ- "कुदरत को माया कही, गफलत मोह अंधेर" (सनन्ध ५/३६) के इस कथन में कुदरत (माया) का तात्पर्य कालमाया से है, योगमाया से नहीं। कालमाया असत, जड़, और दुःखमयी है, जबकि योगमाया चेतन है। अक्षर ब्रह्म चेतन हैं, इसलिए उनकी प्रकृति भी चेतन है। श्वेताश्वतर उपनिषद में कहा गया है- "मायां तु प्रकृतिं विद्धि मायिनं तू महेश्वरं" अर्थात् प्रकृति को माया कहते हैं। कालमाया (प्रकृति) जड़ है तथा इसके विपरीत

अक्षर ब्रह्म की प्रकृति चेतन है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि कुदरत, माया, और प्रकृति सब एकार्थवाची हैं।

इनमें कोई कायम करे, जो दिल आए चढ़त।

सो इंड सारा नूर में, जो दिल दीदों देखत॥७॥

इन ब्रह्माण्डों में जो ब्रह्माण्ड उनके दिल में अंकित हो जाते हैं, उसे वे योगमाया में अखण्ड कर लेते हैं। जिस ब्रह्माण्ड को वह जाग्रत अवस्था में अपने दिल में देख लेते हैं, वह सारा ब्रह्माण्ड नूर से भरपूर हो जाता है।

कायम होत जो नूर से, सो आवे न सब्द मांहें।

तो रोसनी नूरमकान की, क्यों आवे इन जुबांए॥८॥

अक्षर ब्रह्म द्वारा जो ब्रह्माण्ड अखण्ड किये जाते हैं,

उनमें इतना नूर होता है कि उसकी महिमा शब्दों में नहीं कही जा सकती, तो अक्षरधाम की नूरमयी ज्योति का वर्णन कर पाना इस जिह्वा से कैसे सम्भव है।

जब थक रही जुबां इतहीं, ए जो नूरें किया ख्याल।

तो आगे जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजलाल॥९॥

अक्षर ब्रह्म अपने दिल में जिस ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने का विचार कर लेते हैं, उस ब्रह्माण्ड की शोभा का वर्णन करने में जब वाणी थक जाती है, तो वह अक्षर ब्रह्म के बल की महिमा को कैसे कह सकती है।

ए बल नूर-जलाल को, जिन की एह कुदरत।

एह जुबां ना केहे सके, बुजरक बल सिफत॥१०॥

अक्षर ब्रह्म का यह अलौकिक बल है, जिनकी योगमाया

में ब्रह्माण्ड अखण्ड होते हैं तथा जिनके संकल्प से एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड पैदा और लय होते हैं। इस प्रकार, इस जिह्वा द्वारा अनन्त बल वाले अक्षर ब्रह्म की महिमा का वर्णन नहीं हो सकता।

सो नूर नूरजमाल के, दायम आवें दीदार।

ए जुबां अर्स अजीम की, क्यों कहे सिफत सुमार॥११॥

वह अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत के दर्शन के लिए प्रतिदिन आते हैं। इस प्रकार इस जिह्वा से परमधाम की महिमा का वर्णन कैसे हो सकता है।

नूर-जलाल की सिफत को, जुबां ना पोहोंचत।

तो नूरजमाल की सिफत को, क्यों कर पोहोंचे तित॥१२॥

जब अक्षर ब्रह्म की अनन्त महिमा का वर्णन करने में

इस जिह्वा से निकले शब्द असमर्थ हो जाते हैं, तो भला इन्हीं शब्दों से अक्षरातीत की शोभा का वर्णन कैसे सम्भव हो सकता है।

जुबां थकी बल नूर के, ऐसी सिफत कमाल।

तो इत आगूं जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजमाल॥१३॥

जब अक्षर ब्रह्म की अनन्त शक्ति की महिमा इतनी अद्भुत है जिसका वर्णन करने में जिह्वा थक जा रही है, तो यह जिह्वा भला अक्षरातीत की अनन्त महिमा का वर्णन कैसे कर सकती है।

जित चल न सके जबराईल, कहे मेरे पर जलत।

नूरतजल्ला की तजल्ली, ए जोत सेहे न सकत॥१४॥

जिस परमधाम में जिबरील एक कदम भी नहीं चल

सका और कहने लगा कि आगे चलने पर मेरे पर जलते हैं, अक्षरातीत की उस अनन्त जोत के तेज को मैं सहन करने में असमर्थ हूँ।

जाके नूर की ए रोसनी, ऐसी करी सिफत।

तिन का असल जो बातून, सो कैसी होसी सूरत॥१५॥

जिस परमधाम की नूरमयी ज्योति की ऐसी महिमा कही गई है, उस परमधाम के भी मूल प्रियतम अक्षरातीत की शोभा कैसी होगी?

भावार्थ- अक्षरातीत का हृदय ही नख से सिख तक श्रृंगार के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। "जो गुन हिरदे अन्दर, सो मुख देखे जाने जाए" (श्रृंगार २०/३६) के इस कथनानुसार श्री राज जी का अव्यक्त हृदय ही नख से सिख तक उनके श्रृंगार के रूप में झलक रहा है। इस

प्रकार, श्री राज जी का नख से सिख का श्रृंगार मारिफत स्वरूप (परमसत्य) है तथा सम्पूर्ण परमधाम उसकी हकीकत अर्थात् व्यक्त स्वरूप है।

परमधाम और श्री राज जी दोनों ही अनादि हैं और कोई एक-दूसरे का कार्य-कारण नहीं है, किन्तु लीलारूप में मारिफत और हकीकत के दृष्टान्त से समझाया गया है। इसे घनीभूत जल (बर्फ) से द्रवीभूत जल में परिवर्तित होने के दृष्टान्त से समझा जा सकता है। इस चौपाई के तीसरे चरण में कथित "तिन का असल जो बातून" का यही आशय है।

ऐसी खूबी सोभा सुन्दर, जो सांची सूरत हक।

नामै आसिक इन का, सब पर ए बुजरक॥१६॥

प्राणेश्वर अक्षरातीत का स्वरूप अखण्ड है और उनकी

शोभा अतिशय सुन्दर है। अनन्त प्रेम से भरपूर होने के कारण इन्हें आशिक (प्रेमी) कहते हैं। ये सर्वश्रेष्ठ हैं, अर्थात् इनके समान न कोई है, न होगा।

ए जो सब कहियत है, हक बिना कछु ए बात।

सो सब नूर की कुदरत, जो उपज फना हो जात॥१७॥

यह जो सारा ब्रह्माण्ड दिखाई दे रहा है, वह सब अक्षर ब्रह्म की योगमाया से उत्पन्न हुआ है और नष्ट हो जाने वाला है। इसमें अक्षरातीत का अखण्ड स्वरूप तो नहीं है, किन्तु उसकी सत्ता के बिना यह कुछ भी नहीं है।

पाइए इनसे बुजरकी, जो असल कहया एक।

खास रूहें याकी जात हैं, ए रूहअल्ला जाने विवेक॥१८॥

इस ब्रह्माण्ड को देखने से उस सच्चिदानन्द परब्रह्म की

अनन्त महिमा का बोध होता है, जो यथार्थ में "एकमेव अद्वितीयम्" कहा जाता है, अर्थात् वह एक है और उसके समान कोई भी नहीं है। सभी ब्रह्मसृष्टियाँ इन्हीं की अँगरूपा हैं। इस तथ्य को परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा श्री श्यामा जी यथार्थ रूप से जानती हैं।

आसिक तो भी एह है, और मासूक तो भी एह।

खूबी सोभा सब इनकी, प्यारा प्रेम सनेह॥१९॥

अपनी अँगनाओं तथा श्यामा जी के लिए ये अक्षरातीत आशिक भी हैं और माशूक भी हैं। सबमें इन्हीं की शोभा दृष्टिगोचर हो रही है तथा सभी तनों में इन्हीं का प्रेम-स्नेह क्रीड़ा कर रहा है।

मेहेरबान भी एह है, दाता न कोई या बिन।

हक बंदगी सिवाए जो कछू कहया, सो सब तले इजन॥२०॥

ये अक्षरातीत मेहर के सागर हैं। इनके समान अन्य कोई भी ऐसा नहीं है, जो सब कुछ देने में समर्थ हो। इन अक्षरातीत की इश्क बन्दगी (अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति) के अतिरिक्त यदि कोई वस्तु है, तो वह इनका हुक्म है जिससे सब कुछ होता है।

भावार्थ- श्री राज जी के दिल की इच्छा ही हुक्म (आदेश) है। परमधाम में जहाँ अखण्ड प्रेम की लीला है, वहीं योगमाया तथा कालमाया के ब्रह्माण्ड में हुक्म की लीला है। इस खेल में भी कोई सुन्दरसाथ अपनी आत्म-जाग्रति के लिए जहाँ इश्क (प्रेम) का मार्ग अपनाता है, वहीं प्रियतम के हुक्म की भी आशा करता है, क्योंकि वह जानता है कि धनी के हुक्म से ही सब

कुछ होता है। उपरोक्त चौपाई में धनी के इश्क एवं हुक्म, इन दोनों पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

अब कहूं इन रूहन को, जो खड़ियां तले कदम।

तुम क्यों न विचारो रूहसों, ऐसा अपना खसम॥२१॥

अब मैं परमधाम की उन आत्माओं से कह रहा हूँ, जो इस नश्वर जगत् में श्री राज जी के चरणों की छत्रछाया में खड़ी हैं। हे साथ जी! आप अपनी अन्तरात्मा में इस बात का विचार क्यों नहीं करते कि हमारा प्रियतम जब हमारे लिए इश्क और मेहर का सागर है, तो इनके प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है?

इन का बिछोहा सुन के, आपन रहत क्यों कर।

फिराक न आवत हमको, याद कर ऐसा घर॥२२॥

अपने प्राणवल्लभ से वियोग की बात सुनकर भी हम इस नश्वर जगत् में क्यों रह रहे हैं? हम अनन्त शोभा और आनन्द से भरपूर अपने परमधाम की याद तो करते हैं, किन्तु हमें विरह नहीं आ रहा है। यह कितने आश्चर्य की बात है।

आराम इस्क इन वतन का, हक का सुन्या आपन।

अजहूं न विरहा आवत, सुन के एह वचन॥२३॥

हम सभी प्रियतम की कही हुई तारतम वाणी का अवलोकन करके यह जानते हैं कि परमधाम में अनन्त आनन्द और प्रेम है। इस कथन को जानते हुए अभी भी हमारे हृदय में प्रियतम का विरह नहीं आ रहा है।

ऐसा कदीमी वतन, ऐसा इस्क आराम।

ऐसी मेहेरबानगी गिरो को, सुख देत हैं आठों जाम॥२४॥

हमारा परमधाम शाश्वत्, अनादि, और अखण्ड है। वहाँ अखण्ड इश्क (प्रेम) और आनन्द की ही लीला होती है। प्रियतम अक्षरातीत की अपनी आत्माओं के प्रति ऐसी प्रेममयी कृपा बरसती है कि वे अष्ट प्रहर चौंसठ घड़ी हमें अखण्ड आनन्द में डुबोये रखते हैं।

ऐसा हक जो कादर, सब विध काम पूरन।

ए सुन इस्क न आवत, तो कैसे हम मोमिन॥२५॥

हमारे प्राणवल्लभ सर्वसामर्थ्यवान हैं। हमारी हर प्रकार की प्रेममयी इच्छा को पूर्ण करने वाले हैं। इन कथनों को सुनकर भी यदि हमारे अन्दर प्रेम का अँकुर नहीं फूटता, तो कैसे हम ब्रह्ममुनि कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं।

ए जो सुकन हक के मैं कहे, तामें जरा न रही सक।

ए सुन के विरहा न आवत, सो ना इन घर माफक॥२६॥

अपने प्राणेश श्री राज जी के प्रति मैंने ये जो कुछ बातें कही हैं, उनमें नाम मात्र के लिए भी संशय नहीं है। यह सुनकर भी जिसके हृदय में विरह उत्पन्न नहीं होता, वह परमधाम के योग्य नहीं माना जा सकता।

भावार्थ— उपरोक्त चौपाई हमें आत्म-मन्थन के लिए विवश कर रही है कि हम विरह, प्रेम, एवं चितवनि के क्षेत्र में कहाँ खड़े हैं। ब्रज में वेद-ऋचायें तथा प्रतिबिम्ब की सखियाँ श्री कृष्ण जी के विरह में सौ वर्ष तक तड़प-तड़पकर अपना शरीर छोड़ देती हैं, किन्तु परमधाम के ब्रह्ममुनि कहलाकर भी हमारे पास एक घण्टा चितवनि के लिए समय नहीं होता।

यों चाहिए रुहन को, सुनते बिछोहा पिउ।

करते याद जो हक को, तबहीं निकस जाए जिउ॥२७॥

ब्रह्मसृष्टियों को चाहिए कि जब उन्हें प्रियतम के वियोग की बात सुनने को मिले और जैसे ही वे अपने प्राणवल्लभ की प्रेमभरी याद में खो जायें, उसी क्षण उनका जीव इस शरीर का परित्याग कर दे।

भावार्थ— उपरोक्त चौपाई अतिशयोक्ति अलंकार की भाषा में कही गई है। विरह की पीड़ा की अभिव्यक्ति ऐसे ही शब्दों में की जाती है, किन्तु इसका वास्तविक आशय यह है कि जब हम युगल स्वरूप की प्रेममयी चितवनि में बैठें, तो कुछ ही पलों में अपने शरीर और जीव भाव से ऊपर उठ जायें तथा अपनी आत्मा में परात्म का श्रृंगार सजकर मूल मिलावा में पहुँच जायें।

यदि शरीर का परित्याग करना ही प्रेम है, तो प्रेम

का सुख कौन लेगा और आगे का जागनी कार्य कौन करेगा? वस्तुतः जो शरीर और संसार के मोह से रहित हो जाता है, उसे मरा हुआ ही समझना चाहिए। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी का यह कथन देखने योग्य है—

एक हक बिना कछु न रखें, दुनी करी मुरदार।

अर्स किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार॥

किरन्तन ११८/१७

अगली अट्टाइसवीं चौपाई भी इसी सन्दर्भ में है।

फिराक सुनते हक की, वजूद पकड़े क्यों इत।

जो रूह असल वतन की, ए नहीं तिन की सिफत॥२८॥

जो अखण्ड परमधाम की रहने वाली ब्रह्मात्मा है, उसके लिए यह शोभा नहीं देता कि अपने प्राणेश्वर के वियोग की बातें सुनने के पश्चात् भी इस पञ्चभौतिक नश्वर तन को

पकड़े रहे।

खूबी खुसाली बुजरकी, सोभा सिफत मेहेरबान।

इस्क प्रेम वतन का, कायम सुख सुभान॥२९॥

मेहर के सागर श्री राज जी में अनन्त आह्लादिता, शोभा, महिमा आदि की विशेषतायें हैं। परमधाम का प्रेम तथा प्रियतम के सुख सदा ही अनादि और अखण्ड हैं।

कहूँ प्यार कर मोमिनो, दिल दे सुनियो तुम।

अरवा क्यों न उड़ावत, समझ हक इलम॥३०॥

हे साथ जी! मैं आपसे बहुत प्रेमपूर्वक एक बात कह रहा हूँ। इसे आप सच्चे हृदय से (दिल देकर) सुनिए। इस तारतम वाणी से अपने प्रियतम की पहचान कर आप अपनी आत्मा को उनके ऊपर समर्पित क्यों नहीं कर

देते हैं?

भावार्थ- आत्मा को उड़ाने का तात्पर्य है- शरीर और संसार के मोह से रहित होकर प्रेम में अपना सर्वस्व न्योछावर कर देना। शरीर छोड़ने का यहाँ कोई भी प्रसंग नहीं है।

कुदरत से पाइयत हैं, बुजरकी कादर।

सिफत लिखी दोऊ ठौर की, आवत न काहूँ नजर॥३१॥

ब्रह्म की महिमा उसकी प्रकृति की लीला से ही जानी जाती है। धर्मग्रन्थों (कुरआन, पुराण संहिता, तथा माहेश्वर तन्त्र) में अक्षरधाम और परमधाम की महिमा कई प्रकार से लिखी है, जो स्वप्न के जीवों की दृष्टि (समझ) में नहीं आती है।

तिन हकें मोमिन दिल को, अपना कहया अर्स।

कहया तुम भी उतरे अर्स से, यों दई सोभा अरस-परस॥३२॥

उस अक्षरातीत ने ब्रह्मात्माओं के हृदय को अपना धाम कहा है तथा यह भी कहा है कि तुम भी परमधाम से ही आये हो। इस प्रकार धाम धनी ने अपनी अँगनाओं को अपने समान ही शोभा दी है।

ए खावंद काहूँ न पाइया, खोज खोज थके सब मिल।

चौदे तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम अकल॥३३॥

सच्चिदानन्द परब्रह्म को सभी खोजते-खोजते थक गये, किन्तु कोई भी उन्हें पा नहीं सका। चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड के जीवों की स्वाप्निक बुद्धि परब्रह्म की पहचान नहीं कर पाती।

सो हादी देखावत जाहेर, अर्स खुदा का जे।

चौदे तबक चारों तरफों, सेहेरग से नजीक ए॥३४॥

श्री प्राणनाथ जी स्पष्ट रूप से ब्रह्मसृष्टियों को बता रहे हैं कि चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड को घेरकर अनन्त निराकार मण्डल है। उसके परे बेहद है, तथा उससे भी परे परमधाम है जिसमें विराजमान अक्षरातीत तुम्हारी प्राणनली (शाहरग) से भी निकट होकर तुम्हारे धाम-हृदय में बैठे हैं।

हाँसी करी अति बड़ी, हक आए तेहेकीक।

चौदे तबकों में नहीं, सो देखाए दिया नजीक॥३५॥

श्री राज जी ने हमारे साथ बहुत बड़ी हँसी की है कि चौदह लोक में खोजने से वे कहीं मिल नहीं सकते और न इस ब्रह्माण्ड के किसी व्यक्ति को मिले। किन्तु यह तो

निश्चित है कि परमधाम से आकर ब्रह्मसृष्टियों के धाम-हृदय में शाहरग से निकट होकर बैठे हैं। इस बात की पहचान उन्होंने तारतम वाणी से करा दी है।

महामत कहे हँसे हक, देख मोमिनोँ हाल।

आखिर बुलाए चलें वतन, करके इत खुसाल॥३६॥

श्री महामति जी कहते हैं कि इस नश्वर संसार में ब्रह्मसृष्टियों की जो स्थिति है, उसे देखकर राज जी हँस रहे हैं। वे कियामत की इस घड़ी में तारतम वाणी के प्रकाश में सबको अपने चरणों में बुला रहे हैं और जागनी लीला का आनन्द देकर सबको एकसाथ परमधाम लेकर जायेंगे।

प्रकरण ॥९॥ चौपाई ॥४९४॥

जहूरनामा किताब

इस प्रकरण में यह तथ्य दर्शाया गया है कि इस खुलासा ग्रन्थ में वर्णित अक्षरातीत जो अपने नूरमयी स्वरूप से परमधाम में विराजमान हैं, वे ब्रह्मात्माओं के धाम-हृदय में किस प्रकार प्रकट होकर बैठे हैं।

पढ़े तो हम है नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए।

कहूं माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए॥१॥

श्री महामति जी कहते हैं कि मैंने संसार के अन्य विद्वानों की तरह अपनी बुद्धि की चतुरता से संसार के धर्मग्रन्थों को नहीं पढ़ा है, किन्तु मेरे धाम-हृदय में बसरी और मलकी सूरत (मुहम्मद स.अ.व. और श्यामा जी) विराजमान हैं। इसलिए मैं धर्मग्रन्थों के हकीकत एवं मारिफत (सत्य एवं परमसत्य) के रहस्यों को प्रकट कर

रहा हूँ।

भावार्थ- इस चौपाई में दुनिया की चतुराई पढ़ने का आशय है, बुद्धि की चतुरता से धर्मग्रन्थों के ज्ञान को ग्रहण कर लेना। इसका यह भी आशय है कि मेरे द्वारा धर्मग्रन्थों के जो रहस्य उजागर हो रहे हैं, वे इस संसार की बुद्धि की चतुराई से नहीं कहे जा रहे हैं, अपितु मेरे धाम-हृदय से स्वयं अक्षरातीत विराजमान होकर कहलवा रहे हैं। उनके द्वारा धारण की गयी दोनों सूरतें मेरे अन्दर बैठकर धर्मग्रन्थों के रहस्यों को उजागर कर रही हैं।

अव्वल बीच और अबलों, सबों ढूँढ़या बनी आदम।

एती सुध किन न परी, कहाँ खुदा कौन हम॥२॥

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर मध्यकाल और आज दिन

तक, सभी लोगों ने उस परब्रह्म को खोजा, किन्तु किसी को भी यह बोध नहीं हो सका कि परब्रह्म कहाँ है तथा हम कौन हैं?

कौन आप कौन और है, ऐसा छल किया खसम।

सुध न खसम रसूल की, नहीं गिरो की गम॥३॥

धाम धनी ने हमें ऐसा छल-भरा संसार दिखाया है, जिसमें किसी को भी यह पहचान नहीं है कि हम कौन हैं तथा अन्य लोग कौन हैं? इसमें न तो किसी को परब्रह्म की सुधि है, न उनके सन्देशवाहक मुहम्मद स.अ.व. की, और न परब्रह्म की अङ्गरूपा ब्रह्मसृष्टियों की।

कौन रूहें कौन फरिस्ते, कौन आदम कौन जिन।

पढ़ पढ़ वेद कतेब को, पर हुआ न दिल रोसन॥४॥

किसी को भी यह भेद पता नहीं है कि ब्रह्मसृष्टियाँ कौन हैं, ईश्वरी सृष्टियाँ कौन हैं, मनुष्य और राक्षस कौन हैं? इसे जानने के लिए संसार के बड़े-बड़े विद्वान वेद-कतेब को पढ़ते रहे हैं, किन्तु किसी के भी हृदय में सत्य ज्ञान का प्रकाश नहीं हुआ।

अपनी अपनी खोजिया, पर पाया नहीं खुदाए।

थके सब नासूत में, पोहोंचे नहीं इसदाए॥५॥

सभी ने अपनी-अपनी उपासना पद्धतियों और अपने-अपने धर्मग्रन्थों से उस परमात्मा को खोजा, किन्तु कोई भी सफल नहीं हो सका। सभी लोग इस मृत्यु लोक में ही रह गये। कोई भी अक्षर, अक्षरातीत को नहीं जान सका।

आब हैयाती न पाइया, दौड़या सिकंदर।

काहूं न पाया ठौर कायम, यों कहे सब पैगंमर॥६॥

सिकन्दर जुलकरनैन ने अखण्ड जल रूपी ज्ञान एवं प्रेम पाने का बहुत प्रयास किया, किन्तु सफल नहीं हो सका। सभी पैगम्बर भी ऐसा ही कहते हैं कि किसी को भी अखण्ड धाम का ज्ञान नहीं हो सका।

भावार्थ— सू. १८ आ. ८३-१०१ में यह प्रसंग वर्णित है।

आप राह अपनी मिने, ढूँढ़या सब फिरकन।

कायम ठौर पाई नहीं, यों कह्या सबन॥७॥

सभी मत-पन्थों के अनुयायियों ने अपने-अपने मार्ग से परब्रह्म को खोजने का प्रयास किया, किन्तु अन्त में हारकर सभी ने यही कहा कि हमें अखण्ड धाम का पता

नहीं है।

कहे किताब लोक नासूत के, और मलकूती अकल।

छोड़ सुरिया सितारा, कोई आगूं न सके चल॥८॥

धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि इस पृथ्वी लोक के मनुष्य और वैकुण्ठ की बुद्धि रखने वाले देवता, सभी सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप या आदिनारायण) से आगे नहीं जा सके।

जाहेर लिया माएना, सरीयत कांड करम।

खुद खबर पाई नहीं, तार्थें पड़े सब भरम॥९॥

हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने अपने धर्मग्रन्थों का बाह्य अर्थ लिया, जिसके परिणामस्वरूप वे कर्मकाण्ड एवं शरीयत के बन्धनों में बन्ध गये। उन्हें अपने आत्म-

स्वरूप की ही पहचान नहीं हो पायी, इसलिए सब भ्रम में पड़े रह गए।

लड़ फिरके जुदे हुए, हिंदू मुसलमान।

और खलक केती कहूं, सब में लड़े गुमान॥१०॥

इस प्रकार हिन्दू और मुसलमानों के सभी पन्थ आपस में लड़कर अलग हो गये। इनके अतिरिक्त और भी मत-पन्थ हैं, जिनका मैं कहाँ तक वर्णन करूँ। सभी अपने अहंकार के कारण आपस में लड़ते हैं।

माणें ऊपर का सबों लिया, और लिया अहंकार।

फिरके फिरे सब हक से, बांधे जाए कतार॥११॥

सभी मत-पन्थों के अनुयायियों ने अपने-अपने धर्मग्रन्थों का बाह्य अर्थ ही लिया है और उसके साथ ही

अपने मन में यह अहंकार ले लिया कि मात्र हम ही सच्चे हैं, जिसका परिणाम यह हुआ कि वे परब्रह्म की खोज में असफल रहे। आज भी उनके अनुयायी उन्हीं की देखा-देखी चल रहे हैं।

कहे सब एक वजूद है, और सब में एकै दम।

सब कहे साहेब एक है, पर सबकी लड़े रसम॥१२॥

सभी मतों के अनुयायी यह अवश्य कहते हैं कि संसार के सभी लोगों का शरीर एक जैसा है और सबमें एक समान ही प्राण है। वे ये भी कहते हैं कि सबका परमात्मा एक है, किन्तु सभी अपने-अपने कर्मकाण्ड की रीति और परम्पराओं के लिए लड़ते हैं।

क्यों निसान कयामत के, क्यों कर फना आखिर।

कहे सब विध लिखी कुरान में, सो पाई न काहूँ खबर॥१३॥

कियामत के निशान कौन-कौन से हैं तथा आखिरत के समय इस संसार का प्रलय कैसे होगा? ये सारी बातें कुरआन में लिखी हुई हैं, ऐसा सभी लोग कहते हैं, किन्तु किसी को भी इसकी वास्तविकता की जानकारी नहीं हुई है।

क्यों कर लैलत कदर है, क्यों कर हौज कौसर।

ए सुध किनको न परी, कौन किताबें क्यों कर॥१४॥

लैल-तअल-कद्र की रात क्या है, हौज कौसर ताल कैसा है? इसकी यथार्थ जानकारी किसी को भी नहीं हो पायी। किन किताबों में इनका वर्णन है और क्यों किया गया है?

मनसूख करी सब किताबें, रानी सबों की उमत।

ए सुध किन को न परी, जो इनकी क्यों करी सिफत॥१५॥

कुरआन के अवरतण के पश्चात् पूर्व की सभी किताबों— तौरेत, इंजील, और जंबूर— को रद्द कर दिया तथा इनका अनुसरण करने वाले सभी फिरकों को भी रद्द कर दिया गया। यह जानकारी किसी को भी नहीं हो सकी कि आखिर कुरआन की इतनी प्रशंसा क्यों की गयी है।

भावार्थ— कुरआन में तौरेत, इंजील, तथा जंबूर का सार तत्त्व दर्शा दिया गया है। इंजील की रचना में मती, लूका, योहन्ना आदि का योगदान है, ईसा मसीह ने स्वयं कुछ नहीं लिखा है। इसके विपरीत कुरआन में जो कुछ लिखा है, वह जिबरील द्वारा मुहम्मद स.अ.व. के तन से कहलवाया गया है। यद्यपि कुरआन के अर्थ में विकृति अवश्य है, किन्तु जिबरील द्वारा कहलवाये जाने से

इसकी महत्ता सर्वोपरि है।

उपरोक्त चौपाई का गुह्य अर्थ यह है कि श्री प्राणनाथ जी ने तारतम वाणी देकर वेद-कतेब दोनों की ही उपयोगिता समाप्त कर दी। तारतम वाणी परब्रह्म के आवेश से कही गई है तथा जाग्रत बुद्धि की वाणी है। इसलिए इसके समान कोई भी धर्मग्रन्थ नहीं है। इस सम्बन्ध में इसी खुलासा १३/१३ की यह चौपाई देखने योग्य है—

मेटन लड़ाई बन्दन की, और जादे पैगंमर।

धनी आए वेद कतेब छुड़ावने, ए तीन बातें चित्त में धर॥

कौन सब पैगंमर हुए, क्यों कर निसान आखिर।

कहां से उतरे रूहें मोमिन, कहां से आए काफर॥१६॥

संसार में कौन-कौन से पैगम्बर हुए तथा कियामत के

निशान क्या हैं? ब्रह्मसृष्टियाँ इस नश्वर संसार में कहाँ से आयी हैं तथा काफिर कहलाने वाली जीवसृष्टि कहाँ से आयी है? तारतम ज्ञान के न होने से यह ज्ञान किसी को भी नहीं हुआ।

काजी कजा क्यों होएसी, क्यों होसी दुनी दीदार।

क्यों भिस्त क्यों दोजख, किन सिर कयामत मुद्दार॥१७॥

परब्रह्म न्यायधीश के रूप में न्याय क्यों करेंगे? संसार को उनका दर्शन क्यों होगा? न्याय के समय संसार के जीवों को बहिश्त का आनन्द तथा दोजक का दुःख क्यों दिया जायेगा, तथा संसार को अखण्ड करने का मुद्दा किनके सिर पर होगा?

क्यों असराफील आवसी, क्यों बजावसी सूर।

क्यों कर पहाड़ उड़सी, तब कौन नजीक कौन दूर॥१८॥

इस्राफिल फरिश्ता इस संसार में क्यों आयेगा? ज्ञान का सूर क्यों फूँकेगा? उसके सूर से पहाड़ जैसी गरिमा वाले बड़े-बड़े धर्माधिकारी किस प्रकार उड़ जायेंगे, अर्थात् अस्तित्वविहीन (गरिमा से रहित) हो जायेंगे?

भावार्थ- तारतम ज्ञान के बिना इन प्रश्नों का कोई भी उत्तर नहीं दे सकता, भले ही कोई दिन-रात कुरआन क्यों न पढ़े।

पोते नूह नबीय के, जादे पैगंमर।

सब दुनियां को खाएसी, आजूज माजूज क्यों कर॥१९॥

नूह नबी के तीन पुत्र साम, हाम, और हिसाम हैं, उसमें हिसाम (याफिस) के पुत्र आजूज-माजूज हैं। वे सारे

संसार को किस प्रकार खा जायेंगे?

कहया गधा बड़ा दज्जाल का, ऊँचा लग आसमान।

पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रान॥२०॥

कुरआन में कहा गया है कि दज्जाल के गधे की ऊँचाई आसमान तक है और सात समुद्रों का जल उसकी जाँघों तक भी नहीं पहुँच पा रहा है। आखिर क्यों?

ना पेहेचान दज्जाल की, ना दाभतूलअर्ज।

ए सुध काहूँ न परी, क्यों मगरब सूरज॥२१॥

किसी को भी न तो दज्जाल की पहचान थी और न दाब्ह-तुल-अर्ज जानवर की। किसी को भी यह ज्ञात नहीं हो सका था कि कियामत के समय सूर्य पूर्व के बदले पश्चिम में क्यों उगेगा?

ना सुध मोमिन गिनती, ना सुध तीन उमत।

माणे मगज खोले बिना, पाइए ना तफावत॥२२॥

अब तक किसी को भी न तो ब्रह्मसृष्टियों की संख्या का पता था और न तीनों सृष्टियों का ही ज्ञान था। कुरआन के गुह्य रहस्यों को खोले बिना इन तीनों में क्या भेद है, यह भी ज्ञान नहीं हो सकता था।

मुरदे क्यों कर उठसी, दुनियां चौदे तबक।

पढ़े वेद कतेब को, पर गई न काहूं की सक॥२३॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में मुरदे किस प्रकार उठेंगे? संसार के लोग वेद-कतेब को पढ़ते रहे, किन्तु किसी का भी संशय समाप्त नहीं हुआ।

जब मोहे हादी सुध दर्ई, ए खुले माएने तब।

तले ला मकान के, खुराक मौत की सब॥२४॥

जब मेरे धाम-हृदय में युगल स्वरूप विराजामन हुए और उन्होंने मेरे अन्दर अखण्ड ज्ञान का प्रकाश कर दिया, तब कुरआन के पूर्वोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर प्राप्त हो गया (सभी रहस्य स्पष्ट हो गये)। मुझे यह भी विदित हुआ कि निराकार के अन्दर जो कुछ भी है, वह काल के गाल में समा जाने वाला है।

कहे दुनियां ला मकान को, बेचून बेचगून।

खुदा याही को बूझहीं, बेसबी बेनिमून॥२५॥

संसार के जीव जड़ निराकार को ही परमात्मा मानते रहे हैं। इसे ही वे रूपरहित, निर्गुण, अद्वितीय, तथा अनुपम आदि विशेषणों से सम्बोधित करते रहे हैं।

भावार्थ- इस चौपाई में प्राचीन वेदान्तियों की विचारधारा दर्शायी गयी है, जो परमात्मा को "अशब्दं अस्पर्शं अरूपं अगन्धवत् च यत्" (कठोपनिषद) अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और गन्ध से रहित, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, सर्वत्र व्यापक, और निराकार मानते हैं।

याही को माया कहें, पैदास सब इन से।

कोई कहे ए करम है, सब बंधे इन ने॥२६॥

इसी निराकार को कुछ लोग माया भी कहते हैं। उनका कहना है कि सारी सृष्टि इससे ही उत्पन्न हुई है। कोई कहता है कि यह सब कर्म का स्वरूप है और सभी इसी से बन्धे हुए हैं।

भावार्थ- इस चौपाई की पहली पंक्ति आधुनिक वेदान्तियों तथा बौद्ध विचारधारा को प्रस्तुत करती है।

आधुनिक वेदान्त के प्रवर्तक आदिशंकराचार्य जी हैं, जो ब्रह्म और माया को अभिन्न मानते हैं। ब्रह्म से भिन्न किसी अन्य वस्तु की वे कल्पना ही नहीं करते। इसके विपरीत बौद्ध लोग परमात्मा का ही अस्तित्व स्वीकार नहीं करते। वे महाशून्य को ही सारी सृष्टि का मूल कारण मानते हैं, जो सूक्ष्मतम है और जिसमें सारी सृष्टि विलीन हो जाती है।

इस चौपाई की दूसरी पंक्ति जैन दर्शन की मान्यताओं के सन्दर्भ में है। जैन दर्शन की विचारधारा भी अनादि, सृष्टिकर्ता परमात्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं करती। वह प्रकृति के स्वरूप निराकार-निर्गुण का तो अस्तित्व मानती है, किन्तु यह भी मानती है कि यही सृष्टि का मूल कारण है तथा जीव अपने तप-त्याग से परमात्म तत्व को प्राप्त हो जाता है।

खुदा याही को कहें, याही को कहें काल।

आखिर सब को खाएसी, एही खेलावे ख्याल॥२७॥

इसी निराकार को ही कुछ लोग (मुस्लिम) खुदा मानते हैं, तो कुछ लोग (वैशेषिक दर्शन के अनुयायी) काल कहते हैं। वे ऐसी विचारधारा रखते हैं कि अन्ततोगत्वा यही निराकार समस्त सृष्टि को अपने में लीन कर लेता है। समस्त स्वाप्निक जगत् का संचालन भी यही कर रहा है।

यासों सुन्य निरगुन कहें, निराकार निरंजन।

यों नाम खुदाए के, बोहोत धरे फिरकन॥२८॥

जिस प्रकार हिन्दू परमात्मा को शून्य, निर्गुण, निराकार, तथा निरञ्जन कहते हैं, उसी प्रकार मुसलमानों के अनेक फिरकों (पन्थों) में इसे ही अनेक नामों से

सम्बोधित किया जाता है।

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर।

गोते खाए फना मिने, पोहोंचे न बका नजर॥२९॥

इस नश्वर संसार के लोग अखण्ड धाम (बेहद मण्डल) के विषय में बार-बार चिन्तन तो करते हैं, किन्तु वे अन्ततोगत्वा निराकार में ही भटकते रहते हैं। उनकी अन्तर्दृष्टि बेहद मण्डल या परमधाम में नहीं जा पाती।

विशेष- अक्षर ब्रह्म की पञ्चवासनायें (शिव जी, सनकादिक, विष्णु भगवान, कबीर जी, और शुकदेव जी) निराकार को पार कर बेहद में पहुँची। इनके अतिरिक्त अन्य कोई भी निराकार को पार नहीं कर सका।

ला याही को केहेवहीं, इला भी याही को।

सब कोई गोते खात हैं, ला इला के मौं॥३०॥

इसी निराकार को कुछ लोग लय होने वाला कहते हैं, तो कुछ लोग अखण्ड बेहद भी कहते हैं। इस प्रकार, क्षर-अक्षर के रहस्य को न समझने के कारण इसी निराकार को ही सब कुछ मानने वाले लोग अज्ञानता के अन्धकार में भटकते रहते हैं।

भावार्थ- बौद्ध दर्शन की "क्षणिकवाद" वाली विचारधारा किसी भी वस्तु को अखण्ड नहीं मानती। इस विचारधारा के अनुयायी, निराकार को भी लय हो जाने वाला या परिवर्तनशील मानते हैं। दूसरी ओर ब्रह्म को प्रकृति से सूक्ष्म मानने वाले प्राचीन वेदान्ती, इसी निराकार के अन्दर अखण्ड, सर्वव्यापक, प्रकाश स्वरूप परमात्मा का अस्तित्व मानते हैं।

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर।

सब तले ला फना के, एक हरफ ना चले ऊपर॥३१॥

इस स्वाज्ञिक जगत् की जीवसृष्टि अखण्ड धाम के सम्बन्ध में निरन्तर विचार तो करती है, किन्तु सभी लोग इस निराकार मण्डल से नीचे ही रह जाते हैं। वे इसके परे एक शब्द भी नहीं जान पाते।

मैं भी उन अंधेर में, हुती ना सुध दिन रात।

जो मेहेर मुझ पर भई, सो कहूं भाइयों को बात॥३२॥

अज्ञानता के उस अन्धकार में मैं भी इस प्रकार भटक रहा था कि मुझे दिन और रात्रि, अर्थात् ब्रह्म एवं माया, की सुधि नहीं थी। प्रियतम अक्षरातीत की मेरे ऊपर किस प्रकार कृपा हुई, उसे मैं आप सुन्दरसाथ को बता रहा हूँ।

विशेष- उपरोक्त कथन श्री महामति जी का है, श्री प्राणनाथ जी का नहीं। महामति श्री इन्द्रावती जी की शोभा का नाम है, किन्तु श्री प्राणनाथ जी का तात्पर्य अक्षरातीत से है। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी के ये कथन देखने योग्य हैं-

हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती कर ग्रही, कहे महामति मारा भरतार।

किरंतन ३५/४

महामत खेले अपने लाल सों, जो अछरातीत कह्यो।

किरंतन १६/१२

जब मोहे हादी सुध दई, पाया ला इला तब।

नूर-मकान नूर-तजल्ला, पाई अर्स हकीकत सब॥३३॥

जब सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने मुझे तारतम ज्ञान के प्रकाश में सुधि दी, तब मुझे क्षर-अक्षर के भेद का पता

चला, तथा अक्षरधाम एवं अक्षरातीत के अखण्ड परमधाम की भी सारी वास्तविकता का बोध हो गया।

जो मानो सो मानियो, दिल में ले ईमान।

मैं तो तेहेकीक कहूंगी, गिरो अपनी जान॥३४॥

हे साथ जी! मेरी आत्मा आपको परमधाम की ब्रह्मसृष्टि जानकर यथार्थ सत्य को व्यक्त कर रही है। जिसे मानना हो, वह मेरे कथनों पर विश्वास करके अपने हृदय में स्वीकार करे।

नफा ईमान का अब है, पीछे दुनियां मिलसी सब।

तोबा दरवाजे बन्द होएसी, कहा करसी ईमान तब॥३५॥

प्रियतम अक्षरातीत पर विश्वास करने का लाभ अभी (पाँचवें, छठे दिन की लीला में) है। बाद में (योगमाया में

होने वाली सातवें दिन की लीला में) सारा विश्व ही परब्रह्म के चरणों में आ जायेगा। तब प्रायश्चित का दरवाजा बन्द हो जायेगा अर्थात् प्रायश्चित का अवसर नहीं मिलेगा। उस स्थिति में परब्रह्म पर विश्वास करने का क्या फल मिलेगा?

भावार्थ- जागनी लीला में अपनी अज्ञानता को हटाकर परब्रह्म के चरणों में समर्पित होना पश्चाताप है, किन्तु योगमाया में न्याय की लीला में पश्चाताप की अग्नि में जलना होगा जिसे दोजक की अग्नि में जलना कहा गया है। योगमाया में दोजक की अग्नि में जलने वाले आठवीं बहिश्त को प्राप्त करेंगे, किन्तु जागनी लीला में अपनी भूलों को सुधारकर परब्रह्म पर विश्वास लाने वाले सातवीं बहिश्त को प्राप्त होंगे।

यदि यही जीव ब्रह्मसृष्टियों की तरह अँगना भाव

लेकर प्रेममयी चितवनि का मार्ग अपनाते हैं और अपने हृदय में श्री राज जी की छवि बसा लेते हैं, तो इन्हें सत्स्वरूप की पहली बहिःशत पाने का अधिकार भी प्राप्त हो सकता है। इस सम्बन्ध में स्वयं धाम धनी कहते हैं—

जो किन जीवे संग किया, ताको करुं न मेलो भंग।

सो रंगे भेलूं वासना, वासना सत को अंग॥

कलस हि. २३/६४

उपरोक्त कथन को पढ़कर हमें यह दृढ़ संकल्प लेना होगा कि सम्पूर्ण विश्व में तारतम वाणी एवं चितवनि का प्रचार करना हमारे जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए।

ईमान ल्याओ सो ल्याइओ, मैं केहेती हों बीतक।

पीछे तो सब ल्यावसी, ऐसा कहया मोहे हक॥३६॥

जिसे मेरे ऊपर विश्वास करना हो, करे, न करना हो, न

करे। मुझे प्रियतम अक्षरातीत ने भी कहा है कि योगमाया में न्याय के दिन तो सबको विश्वास करना ही पड़ेगा। अब मेरी आत्मा अपने प्रियतम के साथ होने वाले घटनाक्रम का वर्णन कर रही है।

रूह अल्ला अर्स अजीम से, मोसों आए कियो मिलाप।

कहे तुम आए अर्स से, मोहे भेजी बुलावन आप॥३७॥

परमधाम से श्यामा जी की आत्मा ने इस संसार में आकर श्री देवचन्द्र जी का तन धारण किया और उन्होंने मुझसे मिलकर कहा कि तुम परमधाम से माया का खेल देखने आयी हो। प्रियतम अक्षरातीत ने तुम्हें परमधाम वापस बुलाने के लिए मुझे भेजा है।

तुम आए खेल देखन को, सो किया कारन तुम।

ए खेल देख पीछे फिरो, आए बुलावन हम॥३८॥

माया का यह खेल तुम्हारे लिए ही बनाया गया है, जिसे देखने के लिए तुम्हारी आत्मा इस संसार में आयी है। इस खेल को देखकर तुम्हें परमधाम वापस लौटना है। मैं तुम्हें बुलाने के लिए आया हूँ।

तुम बैठे अपने वतन में, खेल देखत मिने ख्वाब।

हम आए तुमें देखावने, देख के फिरो सिताब॥३९॥

तुम अपने मूल तन से परमधाम में ही बैठे हो और तुम्हारी सुरता इस सपने के खेल को देख रही है। मैं तुम्हें यह खेल दिखाने के लिए आया हूँ। इसे देखकर तुम्हें शीघ्र परमधाम लौटना है।

इलम लदुन्नी देय के, खोल दई हकीकत।

सदर-तुल-मुंतहा अर्स अजीम, कही कायम की मारफत॥४०॥

उन्होंने मुझे तारतम ज्ञान देकर वास्तविक सत्य को दर्शा दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अक्षरधाम तथा अखण्ड परमधाम की भी पूर्ण पहचान करा दी।

दे साहेदी किताब की, खोल दिए पट पार।

ए खेल लैल का देखिया, तीसरा तकरार॥४१॥

उन्होंने धर्मग्रन्थों की साक्षी देकर निराकार के परे बेहद एवं परमधाम का ज्ञान दिया, और यह बताया कि तुम्हारी आत्मा लैल-तअल-कद्र के तीसरे भाग अर्थात् जागनी लीला का खेल देख रही है।

दो बेर लैलत कदर में, खेल में तुम उतरे।

चाहे मनोरथ मन में, सो हुए नहीं पूरे॥४२॥

इसके पहले तुम्हारी आत्मा लैल-तुल-कद्र की रात में ब्रज और रास की लीला में दो बार आ चुकी है। तुम्हारे मन में माया का खेल देखने की जो चाह थी, वह ब्रज और रास में पूरी नहीं हो पायी।

सो ए पट सब खोल के, दे साहेदी किताब।

कहया तीसरा तकरार, ए जो खेल दुख का अजाब॥४३॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने धर्मग्रन्थों (भागवत आदि) की साक्षी देकर सभी रहस्यों को खोल दिया और मुझे यह बताया कि तुम्हारी आत्मा खेल के इस तीसरे भाग (जागनी लीला) में आई है, जिसमें वह संसार का दुःख भरा खेल देख रही है।

इतहीं बैठे देखें रूहें, कोई आया नहीं गया।

तुम जानो घर दूर है, सेहेरा से नजीक कहया॥४४॥

परमधाम में बैठे-बैठे ब्रह्मसृष्टियाँ माया का खेल देख रही हैं। अपने मूल नूरमयी तन (परात्म) से न तो कोई इस खेल में आया है और न कोई गया है। तुम समझते हो कि तुम्हारा परमधाम निराकार-बेहद से भी परे है, किन्तु वह तो तुम्हारी प्राणनली से भी निकट है।

भावार्थ- परात्म की सुरता ही आत्मा है, जो इस संसार में पञ्चभौतिक तन धारण किये हुए जीव के ऊपर बैठकर मायावी खेल को देख रही है। सामान्यतः जीव के ही तन को आत्मा का तन कहकर सम्बोधित किया जाता है, किन्तु वास्तविकता यह है कि आत्मा का तन परात्म का प्रतिबिम्बित रूप है, जिसका चित्र संसार के किसी भी कैमरे से नहीं लिया जा सकता। उसे मात्र चितवनि में ही

धनी की कृपा से अनुभव किया जा सकता है।

परात्म का तन मूल मिलावा में धनी के सम्मुख बैठा है। उसका परमधाम से बाहर कहीं भी आना-जाना असम्भव है। जिस प्रकार परात्म के हृदय में युगल स्वरूप सहित सम्पूर्ण परमधाम विद्यमान है, उसी प्रकार आत्मा के धाम-हृदय में भी सम्पूर्ण परमधाम सहित युगल स्वरूप की छवि विराजमान होती है, जिसे चितवनि द्वारा शरीर और संसार से परे होकर आत्म-दृष्टि से देखा जा सकता है।

इस चौपाई को पढ़कर, हमें बाहर भटकने की अपेक्षा आत्मा के धाम-हृदय में अपने प्राणेश्वर को देखने का दृढ़ संकल्प करना चाहिए।

नहीं कायम चौदे तबक में, सो इत देखाए दिया।

सेहेरग से नजीक, अर्स बका में लिया॥४५॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में कहीं भी परमधाम नहीं है, किन्तु उस परमधाम को आत्मा के धाम-हृदय में ही प्राण की शाहरग नली से भी निकट दिखा दिया, जिसके परिणामस्वरूप मेरी आत्मा को ऐसा लगा कि मैं अखण्ड परमधाम में ही हूँ।

भावार्थ- चितवनि का मार्ग प्रेममयी और भावात्मक है। इसलिये युगल स्वरूप व परमधाम की शोभा का ध्यान करते समय परमधाम का लक्ष्य लेकर स्वयं को आत्मा के धाम-हृदय में केन्द्रित करना चाहिए, दोनों भौंहों के बीच या मस्तक (दसवें द्वार) में नहीं।

साहेदी खुदाए की, रुह अल्ला दई जब।

खुले अन्दर पट अर्स के, पाई सूरत खुदाए की तब॥४६॥

जब श्यामा जी ने परब्रह्म के अति सुन्दर किशोर स्वरूप की मुझे साक्षी दी, तो मेरे धाम-हृदय में अखण्ड परमधाम के दरवाजे खुल गये और मैंने अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत की अति सुन्दर छवि को देखा।

भावार्थ- हमारी आत्मा जीव के हृदय पर बैठकर जीव भाव में खो गई है और संसार के दुःख-भरे खेल को देखकर दुःख का अनुभव कर रही है। जब प्रेममयी चितवनि में उसकी दृष्टि शरीर, संसार, और जीव-भाव से परे हो जाती है, तो उसकी आत्मिक दृष्टि खुल जाती है और उसे अपनी आत्मा के धाम-हृदय में ही युगल स्वरूप के दर्शन हो जाते हैं।

अन्दर मेरे बैठ के, खोले पट द्वार।

ल्याए किल्ली अर्स अजीम से, ले बैठाए नूर के पार॥४७॥

मेरे धाम-हृदय में विराजमान होकर श्यामा जी ने परमधाम का दरवाजा खोल दिया। अपने परमधाम से लाए तारतम ज्ञान के प्रकाश में उन्होंने मुझे अक्षरधाम से परे परमधाम में विचरण करा दिया।

हक सूरत ठौर कायम, कबहूँ न पाया किन।

रूह अल्ला के इलम से, मेरी नजर खुली बातन॥४८॥

परब्रह्म का किशोर स्वरूप अखण्ड परमधाम में विराजमान है, जिसे आज दिन तक कोई भी जान नहीं पाया था। किन्तु श्यामा जी के तारतम ज्ञान से मेरी आत्मिक दृष्टि खुल गई और मैंने अपने प्राणवल्लभ को पा लिया।

ए इलम लिए ऐसा होत है, रूह अपनी साहेदी देत।

बैठ बीच ब्रह्मांड के, अर्स बका में लेत॥४९॥

जब तारतम वाणी का प्रकाश हमारे हृदय में आता है, तो हमारी आत्मा स्वतः ही अपनी साक्षी देने लगती है कि भले ही मैं इस नश्वर संसार में आयी हूँ, किन्तु मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं अपने अखण्ड परमधाम में बैठी हूँ।

अव्वल बीच और अब लों, ऐसा हुआ न दुनी में कोए।

कायम ठौर हक सूरत, इत देखावे सोए॥५०॥

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर मध्य और आज दिन तक, इस सृष्टि में श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त ऐसा कोई भी नहीं हुआ है जो इस नश्वर जगत में बैठे-बैठे अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत के अति किशोर स्वरूप का

दर्शन करा सके।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई को पढ़कर मुख से यह बरबस (अनायास) ही निकल पड़ता है-

तारीफ महंमद मेंहेदी की, ऐसी सुनी न कोई क्याहें।

कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नाहें॥

सनंध ३०/४३

अर्थात् श्री प्राणनाथ जी की महिमा के बराबर अब तक कोई भी स्वरूप न तो हुआ है, न है, और न कभी होगा। शेष चार दिनों की लीला (व्रज, रास, अरब, और नौतनपुरी) में निःसन्देह श्री राज जी ने ही लीला की है, किन्तु श्री प्राणनाथ जी के इस स्वरूप को जो शोभा मिली है, वह आज दिन तक न तो किसी को मिली है और न मिलेगी। किन्तु तथाकथित स्वयंभू विद्वानों द्वारा श्री प्राणनाथ जी को सन्त, कवि, आचार्य कहने में किसी

प्रकार की झिझक का अनुभव न करना और न थकना
अत्यन्त दुःखद है।

जो रुहें अर्स अजीम की, कहूं तिनको मेरी बीतक।

जो हुई इनायत मुझ पर, जिन बिध पाया हक॥५१॥

श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि परमधाम की
जो भी आत्माएँ हैं, उनसे मैं अपनी आपबीती बताती हूँ
कि किस प्रकार मेरे प्राणवल्लभ की मेरे ऊपर कृपा हुई
और कैसे मैंने उनको पाया।

कायम फना बीच दुनी के, हुती न तफावत।

मैं जो बेवरा करत हों, सो कदम हादी बरकत॥५२॥

आज दिन तक इस संसार के लोगों को अखण्ड धाम
तथा इस नश्वर ब्रह्माण्ड के भेद का पता नहीं था। मेरे

हृदय में श्री श्यामा जी के चरण कमल विराजमान हैं, जिनकी कृपा से मेरी आत्मा दोनों के भेद स्पष्ट करती है।

भावार्थ- वेद-कतेब के बड़े-बड़े विद्वान भी ब्रह्मानन्द (मुक्ति सुख) को इस नश्वर जगत में ही मानते थे। प्रकृति से परे त्रिगुणातीत धाम की किसी ने हल्की सी कल्पना तो की, किन्तु संशयरहित होकर कोई भी स्पष्ट रूप से नहीं कह सका।

नासूत और मलकूत की, ना ला मकान की सुध।

जबरूत लाहूत हाहूत, दर्ई हादी हिरदे बुध॥५३॥

इस संसार के लोगों को तो इस पृथ्वी और वैकुण्ठ लोक तथा निराकार की भी सुध नहीं थी। मेरे धाम-हृदय में विराजमान श्री श्यामा जी ने जाग्रत बुद्धि के प्रकाश में अक्षरधाम, परमधाम, तथा मूल मिलावा की

पहचान दी।

ए सुध पाए पीछे, हुआ बेवरा बुजरक।

ज्यों जाहेर मांहें दुनियां, त्यों बातून माहें हक॥५४॥

इनकी पहचान होने के पश्चात् मेरे हृदय में और अधिक महान ज्ञान का अवतरण हुआ। अब तो मेरी बाह्य दृष्टि में इन आँखों से संसार दिख रहा है, किन्तु मेरी आत्मिक (आन्तरिक) दृष्टि से मेरी आत्मा के धाम-हृदय में साक्षात् श्री राज जी दिखाई पड़ रहे हैं।

बंदगी सरीयत की, और हकीकत बंदगी।

नासूत दुनियां अर्स मोमिन, है तफावत एती॥५५॥

शरीयत (नियम/कर्मकाण्ड) की भक्ति और हकीकत (सत्यता अर्थात् प्रेम लक्षणा भक्ति) में उतना ही अन्तर

है, जितना पृथ्वीलोक के जीवों और परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों में होता है।

भावार्थ- शरीयत (नियम/कर्मकाण्ड) की भक्ति शरीर और इन्द्रियों से होती है। तरीकत (इन्द्रियनिग्रह) हृदय से होती है। हकीकत की बन्दगी आत्मा द्वारा प्रेम भाव से होती है, किन्तु मारिफत की बन्दगी आत्मा के उस गहन प्रेम में की जाती है जिसमें आत्मा स्वयं को भूल जाती है।

नासूत बीच फना के, अर्स कायम हमेसगी।

दुनियां ताल्लुक दिल की, रूह मोमिन खुदाए की॥५६॥

मृत्यु लोक नश्वर है तथा परमधाम हमेशा ही रहने वाला है। संसार के लोग अपने मन की इच्छाओं को पूर्ण करने में ही लगे रहते हैं, जबकि ब्रह्मसृष्टियों की आत्मायें

परब्रह्म से प्रेम करती हैं।

एता लिख्या बेवरा, सब किताबों मिने।

नुकसान नफा दोऊ देखत, तो भी छोड़े न हठ अपने॥५७॥

सभी धर्मग्रन्थों में नश्वर जगत तथा अखण्ड धाम का विवरण लिखा हुआ है। संसार के लोग यह अच्छी तरह से जानते हैं कि उनका लाभ किस में है तथा हानि किस में है, फिर भी वे अपना हठ छोड़ने के लिये तैयार नहीं होते।

इस्क बंदगी अल्लाह की, सो होत है हजूर।

फरज बंदगी जाहेरी, सो लिखी हक से दूर॥५८॥

परब्रह्म की प्रेममयी भक्ति उनका प्रत्यक्ष दर्शन कराती है, किन्तु कर्मकाण्ड आधारित थोपी गयी फर्ज बन्दगी

परब्रह्म से दूर करने वाली है।

भावार्थ- फर्ज का अर्थ होता है कर्त्तव्य। वह भक्ति जो केवल नियम का पालन करने के लिये औपचारिकतावश शरीर, इन्द्रियों, तथा मन से की जाती है, फर्ज बन्दगी कहलाती है।

जाहेर मैं केता कहूँ, खुदाए का जहूर।

वास्ते खास उमत के, ए करी है मजकूर॥५९॥

परब्रह्म के विषय में मैं वाणी से कितना कहूँ। ये बातें तो मैंने ब्रह्मसृष्टियों को प्रबोध देने के लिये कही हैं।

ऊपर ला मकान के, राह न मौत की तित।

नूर-मकान नूर-तजल्ला, अर्स हमेसगी जित॥६०॥

निराकार से परे काल की सत्ता नहीं है। बेहद मण्डल तथा अक्षरातीत के परमधाम में सर्वदा ही अखण्डता का साम्राज्य रहता है।

नूर-तजल्ला अर्स में, सूरत साहेब की।

दरगाह बीच रहेत हैं, रूहें हमेसगी॥६१॥

अक्षरातीत के परमधाम में श्री राज जी का अति सुन्दर किशोर स्वरूप विराजमान है। यहीं रंगमहल में ब्रह्मांगनायें अपने प्राणेश्वर के साथ नित्य लीला में मग्न रहती हैं।

बड़ी बड़ाई इन की, कोई नहीं इन समान।

रहे हजूर हक के, ए निसबत करी पेहेचान॥६२॥

इन आत्माओं की महिमा अपार है। इनके समान अन्य कोई भी नहीं है, क्योंकि ये प्रियतम अक्षरातीत की

अर्धांगिनी हैं। ये सर्वदा ही धाम धनी की सान्निध्यता में रहती हैं। परमधाम के मूल सम्बन्ध से ही परब्रह्म की पहचान होती है।

तब मैं दिल में यों लिया, करों कायम चौदे तबक।

मेरे खावंद के इलम से, सबों पोहोंचाऊं हक॥६३॥

तब मैंने अपने दिल में यह विचारा कि धाम धनी ने मेरे हृदय से जो यह ब्रह्मवाणी कहलवायी है, उससे मैं सबको सत्य की पहचान कराऊँ और सबको अक्षरातीत परब्रह्म के चरणों में लाकर चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड को मुक्ति दिलाऊँ।

ऐसा जब दिल में आइया, दिया जोस हकें बल।

उतरी किताबें कादर से, पोहोंच्या हुकम असल॥६४॥

जब मेरे हृदय में यह बात आई, तो धाम धनी ने मुझे अपने जोश की शक्ति दी। श्री राज जी की कृपा से परमधाम की ब्रह्मवाणी के कई ग्रन्थ अवतरित हुए। मेरे धाम-हृदय में श्री राज जी के हुक्म की शक्ति भी विराजमान हो गयी।

भावार्थ- इस चौपाई के चौथे चरण का आशय यह है कि मूल स्वरूप श्री राज जी द्वारा श्री महामति जी के धाम-हृदय में यह इच्छा पैदा की गई है कि ब्रह्मवाणी का प्रकाश फैलाकर इस ब्रह्माण्ड को अखण्ड करना है। मूल स्वरूप श्री राज जी जो अपने दिल में लेते हैं, वही उनका हुक्म है। वह पहले परात्म के दिल में आता है, उसके पश्चात् आत्मा के हृदय में आता है। यह प्रसंग अनूपशहर का है जब सनन्ध, कलश, और प्रकाश हिन्दुस्तानी की वाणी उतरी थी।

ए इनायत पेहेले भई, आए महंमद आप।

रुह अल्ला पेहेले दिल मिने, अहमद कियो मिलाप॥६५॥

परब्रह्म की संसार को अखण्ड करने की यह कृपा तो बहुत पहले ही हो गयी थी, जब मुहम्मद स.अ.व. अरब में आये थे और कुरआन में उन्होंने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि जब कियामत के समय ब्रह्मसृष्टियाँ इस संसार में आयेंगी तब संसार को अखण्ड मुक्ति मिलेगी। श्री श्यामा जी के हृदय में जब मुहम्मद स.अ.व. की आत्मा आयी, तो उन्हें अहमद कहा गया। वही स्वरूप श्री महामति जी के धाम-हृदय में विराजमान हुआ।

भावार्थ- कुरआन और हदीसों में वर्णित है कि अक्वल तो मुहम्मद व आखिर तो मुहम्मद अर्थात्

१. मुहम्मद मुस्तुफ़ा स.अ.व. (रसूलुल्लाह)

२. मुहम्मद ईसा मसीह (रुहुल्लाह)

३. मुहम्मद महदी (हुज्जतुल्लाह)

इस प्रकार अरब में आने वाले मुहम्मद रसूलुल्लाह बशरी सूरत हैं। मारवाड़ में अवतरित होने वाले मलकी सूरत ईसा रुहुल्लाह हैं, तथा हकी सूरत इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां हुज्जतुल्लाह हैं।

अरबी भाषा में मुहम्मद का अर्थ प्रशंसित होता है। म हम्द अर्थात् पूर्ण प्रशंसित। तुर्की भाषा में महंमद को महमत कहा जाता है, क्योंकि तुर्की भाषा में "द" का उच्चारण "त" के रूप में किया जाता है।

मुहम्मद शब्द व्यापक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। श्री श्यामा जी के पहले तन (श्री देवचन्द्र जी) के अन्दर ही मुहम्मद (अक्षर ब्रह्म) विराजमान हुए, तो उन्हें अहमद कहा गया। इतना अवश्य है कि वे मेड़ता में जाहिर हुए। मुहम्मद, अहमद, तथा महदी का स्वरूप ही

इमाम महदी अर्थात् प्राणनाथ होता है। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी का यह कथन देखने योग्य है—

महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।

अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम॥

खुलासा १५/२१

तब खुदाई इलम से, भई सबे पेहेचान।

ऐसी पाई निसबत, बूझा अपना कुरान॥६६॥

तब तारतम ज्ञान से मुझे श्री राजश्यामा जी तथा परमधाम की सारी पहचान हो गयी। प्रियतम से अपनी मूल निस्बत का पता चलने के कारण उस कुरआन की सारी वास्तविकता भी मुझे मालूम हो गयी, जिसे परमधाम से धनी ने हमारे लिये भेजा था।

सो कुरान मैं देखिया, सब पाइयां इसारत।

हाथ मुद्दा सब आइया, हक पेड़ जानी निसबत॥६७॥

इस प्रकार, जब मैंने कुरआन का अवलोकन किया, तो मुझे जागनी लीला से सम्बन्धित सारी जानकारी मिली। मुझे यह भी बोध हो गया कि प्रियतम अक्षरातीत मुझसे क्या करवाने वाले हैं। इसके अतिरिक्त धाम धनी से अपने मूल सम्बन्ध की भी पहचान हो गयी।

जो भेजी गिरो हक ने, ए जो खासल खास उमत।

ताए देऊं दोऊ साहेदी, ज्यों आवे असल लज्जत॥६८॥

अक्षरातीत परब्रह्म ने परमधाम से अपनी अँगरूपा आत्माओं को इस खेल में भेजा है। उन्हें मैं वेद-कतेब (सतगुरु धनी श्री देवचन्द्र जी व मुहम्मद स.अ.व.) की साक्षी देता हूँ, जिससे उन्हें अखण्ड परमधाम की

अनुभूति हो सके।

एह कायम न्यामतें, दोऊ से जुदी जुदी।

नूर-जमाल और नूर की, दर्ई दोऊ की साहेदी॥६९॥

इन दोनों स्वरूपों (सतगुरु धनी श्री देवचन्द्र जी व मुहम्मद स.अ.व.) से अलग-अलग रूपों में परमधाम की अखण्ड निधियाँ आयीं। इन दोनों स्वरूपों ने अक्षर और अक्षरातीत की पूर्ण साक्षी दी है।

महंमद कहे मैं उनसे, मोमिन मेरे भाई।

कुरान हदीसों बीच में, है उनों की बड़ाई॥७०॥

मुहम्मद स.अ.व. कहते हैं कि मैं परब्रह्म के नूर से हूँ और परमधाम के ब्रह्ममुनि (मोमिन) मेरे भाई हैं। कुरआन तथा हदीसों में मेरे इन भाइयों (ब्रह्ममुनियों) की अपार

महिमा गाई गयी है।

भावार्थ- मुहम्मद स.अ.व. के अन्दर अक्षर ब्रह्म की आत्मा विराजमान थी। यह सर्वविदित है कि अक्षर ब्रह्म परब्रह्म के सत अंग हैं तथा श्यामा जी आनन्द अंग हैं। परमधाम की वहदत में सभी आत्माएँ श्यामा जी की ही स्वरूपा हैं। यही कारण है कि मुहम्मद स.अ.व. ने परमधाम की आत्माओं (ब्रह्ममुनियों) को अपना भाई कहा है।

ए कलाम अल्ला में पेहेले लिख्या, सब छोड़ेंगे सक।

बरकत खास उमत की, सब लेसी इस्क॥७१॥

कुरआन में यह बात पहले से ही लिखी हुई है कि कियामत के समय तारतम ज्ञान के प्रकाश में सबके संशय समाप्त हो जायेंगे और ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से सभी

परब्रह्म के अनन्य प्रेम मार्ग का आश्रय लेंगे।

करसी कतल दज्जाल को, ईसे का इलम।

साफ दिल सब होएसी, जिनको पोहोंच्या दम॥७२॥

तारतम ज्ञान का अलौकिक प्रकाश सभी जीवों के हृदय में विराजमान अज्ञानता के अन्धकार को नष्ट कर देगा। जिनके हृदय में परब्रह्म के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास की शक्ति होगी, उन सबके हृदय अवश्य निर्मल हो जायेंगे।

कहे सब्द सब आगूंही, इत खुदा करसी कजाए।

हिसाब सबन का लेयके, भिस्त जो देसी ताए॥७३॥

यह बात पहले से ही लिखी हुई है कि इस संसार में स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म आखरूल ईमाम मुहम्मद महदी

साहिब्बुज्जमां श्री प्राणनाथ जी के रूप में प्रकट होकर सबका न्याय करेंगे और सबको उनके कर्मों के अनुसार बहिश्तों (अखण्ड मुक्ति धाम) में अखण्ड मुक्ति देंगे।

भावार्थ- कुरआन के सि. १३ सू. १२ सूर: यूसुफ़ आयत ५३ में लिखा है- "व मा अबरिअ..... अन्न रब्बी गफूसरहीमुन्" सूर: यूसुफ़ आयत ५७ "व लअजरुल अखिरति.....यत्तकून" अर्थात् और जो विश्वास एवं संयम से जीवन निर्वाह किए, उनके लिये पुनरुत्थान काल में सामान्य जन से प्रतिफल अत्यधिक है।

रूह अल्ला कुंजी ल्यावसी, मेंहेदी इमामत।

दरगाही रूहें आवसी, करसी महंमद सिफायत॥७४॥

कुरआन में यह भी लिखा है कि मलकी सूरत (सतगुरु

धनी श्री देवचन्द्र जी) तारतम ज्ञान रूपी कुञ्जी लेकर आयेंगे तथा आखरूल इमाम मुहम्मद महदी इमामत करेंगे अर्थात् ब्रह्मसृष्टियों का मार्गदर्शन करेंगे। परमधाम की आत्माएँ भी इस खेल में आयेंगी, जिन्हें श्री प्राणनाथ जी तारतम वाणी से सिखापन देंगे।

जेते कोई फिरके कहे, सब छोड़ देसी कुफर।

आवसी दीन इसलाम में, दिल साफ होए कर॥७५॥

संसार में जितने मत-पन्थ हैं, वे सभी तारतम ज्ञान के प्रकाश में कुफ्र (द्वेष, बेईमानी) छोड़ देंगे तथा अपने हृदय को निर्मल करके शान्ति देने वाले सच्चे धर्म (निजानन्द) की शरण में आ जायेंगे।

एह पट जिनको खुले, सो आए बीच इसलाम।

लिया दावा हकीकी दीन का, सिर ले अल्ला कलाम॥७६॥

जिनको इन रहस्यों का पता चल जायेगा, वे श्री प्राणनाथ जी द्वारा दर्शाये गये निजानन्द मार्ग का अनुशरण करेंगे। वे लोग तारतम वाणी के प्रत्येक कथन को शिरोधार्य करेंगे और दावे के साथ यह उद्धार प्रकट करेंगे कि हमने वास्तविक सत्य मार्ग का अनुशरण किया है।

जो बात मैं दिल में लई, सो हकें आगूं रखी बनाए।

इत काम बीच खुदाए के, काहूं दम ना मारयो जाए॥७७॥

जो भी बात मेरे दिल में आती है, उसे श्री राज जी पहले से निश्चित कर रखे होते हैं। जागनी लीला अक्षरातीत के निर्देशन में हो रही है। इसमें कोई भी व्यक्ति

अपनी शक्ति से हस्तक्षेप नहीं कर सकता है।

हुकम साहेब का इन विध, सो लेत सबे मिलाए।

खावंदे बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ़ ना सके पाए॥७८॥

परब्रह्म का आदेश ही ऐसा है कि वह संसार के सभी लोगों को मिलाकर एक सत्य का अनुयायी बना देगा। प्रियतम अक्षरातीत ने ऐसा बन्ध बाँधा है कि किसी में भी उसके विपरीत चलने का सामर्थ्य नहीं होगा, अर्थात् उन्होंने जो निश्चित कर रखा है, वह अवश्य होगा, उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सकेगा।

भावार्थ— बन्ध बाँधने का तात्पर्य है— हुकम द्वारा निश्चित करना। इसी प्रकार पाँव काढ़ने का आशय है— चलना।

अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर।

हुकम ऐसा कर छोड़या, काहू करनी न पड़े फिकर॥७९॥

प्रियतम अक्षरातीत ने ११०० वर्ष पहले ही अपनी भविष्यवाणियों के कथनों का मजबूत बन्ध बाँध दिया। अपने आदेश से उन्होंने ऐसा इसलिये कर दिया, जिससे कि सबको साक्षी मिल जाये और कियामत के समय जागनी के सम्बन्ध में किसी को भी चिन्ता न करनी पड़े।

महामत कहे सुनो मोमिनो, मौला अति बुजरक।

मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक॥८०॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! मेरी बात सुनिये। प्राणेश्वर अक्षरातीत की महिमा अनन्त है। जिनके ऊपर उनकी कृपा होती है, उसे वे अपने चरणों में आश्रय देते हैं।

प्रकरण ॥१०॥ चौपाई ॥५७४॥

दोनामा किताब – मंगला चरण

प्रकरण १२ एवं १३ में वेद-कतेब की मान्यताओं का एकीकरण किया है, जिससे संसार के मत-मतान्तरों में विरोध भाव समाप्त हो जाये। यह ग्यारहवाँ प्रकरण उसके मंगलाचरण के सम्बन्ध में कहा गया है।

अब कहूं विध निगम, देऊँ महंमद की गम।

जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम॥१॥

अब मैं एक ओर जहाँ वैदिक धर्मग्रन्थों की वास्तविकता दर्शा रहा हूँ, वहीं दूसरी ओर मुहम्मद स.अ.व. की पहुँच का विवरण भी दे रहा हूँ, जिससे संसार के लोगों का विरोध समाप्त हो जाये (मेरे-तेरे का भाव समाप्त हो जाये)। ऐसा करने से ही सभी एक परब्रह्म के प्रेम मार्ग पर चल सकेंगे।

भावार्थ- निगम का अर्थ वेद नहीं, अपितु वेदों की व्याख्या में लिखे हुए वैदिक ग्रन्थ होते हैं। मूल संहिता भाग के अतिरिक्त इसके अन्तर्गत ब्राह्मण, आरण्यक, तथा उपनिषद् आदि आते हैं। मनुस्मृति के कथन "निगमांश्चैव वैदिकान्" से यही स्पष्ट होता है।

कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन होए सब एक।

छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख॥२॥

अब मैं तारतम ज्ञान के प्रकाश में जाग्रत बुद्धि की विवेक दृष्टि से सभी धर्मग्रन्थों के गुह्य अर्थों का प्रकाश कर रहा हूँ, जिससे संसार के सभी मत-पन्थ एक होकर सत्य मार्ग का अनुसरण करें, और मत-पन्थ के आधार पर जिस प्रकार छल भरे प्रपञ्चों के कारण वेश-भूषा में भी भेद है, वह भी समाप्त हो जाये। श्री प्राणनाथ जी के

स्वरूप में विद्यमान जाग्रत बुद्धि को यह विशेष कार्य करना है।

भावार्थ- धर्मग्रन्थों के बाह्य अर्थ लेने एवं संकुचित दृष्टिकोण के कारण सभी मत-मतान्तरों में गहरा भेद प्रतीत होता है, किन्तु तत्त्वज्ञान की दृष्टि से देखा जाये तो सूक्ष्म अर्थ लेने पर इनमें कोई भी भेद नहीं है। कर्मकाण्डों की बाढ़ में तत्त्वज्ञान छिप जाता है तथा साम्प्रदायिक भेद के नाम पर वेशभूषा में परिवर्तन हो जाता है।

जैसे हिन्दू चोटी रखना तथा यज्ञोपवीत को धारण करना अपना कर्तव्य समझते हैं, तो मुसलमान दाढ़ी रखने एवं टोपी पहनने में गौरव का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार ईसाईयों की अपनी अलग वेशभूषा है। यथार्थता तो यह है कि इस प्रकार की वेशभूषा से

आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान का कोई विशेष गहरा सम्बन्ध नहीं है।

खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब।

पर पाया न काहूँ भेद, ताथें रही सबों उमेद॥३॥

वेदों को पढ़कर बहुत से लोगों ने परब्रह्म को खोजने का प्रयास किया। कुछ लोगों ने कतेब ग्रन्थों को पढ़कर भी खोजने का प्रयास किया, किन्तु कोई भी परमात्मा के धाम, स्वरूप आदि गुह्य विषयों को नहीं जान सका। इसलिए सबको यह आशा लगी रही कि जब श्री प्राणनाथ जी (आखरूल ईमाम मुहम्मद महदी) आयेंगे, तभी परब्रह्म की वास्तविक पहचान हो पायेगी।

सास्त्र सबे जो ग्रन्थ, ताके करते थे अनर्थ।

बिना इमाम न कोई समर्थ, जो पट खोल के करे अर्थ॥४॥

आज तक सभी विद्वान शास्त्रों के अर्थ का अनर्थ करते रहे थे। श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य किसी में भी यह सामर्थ्य नहीं था, जो स्वापनिक बुद्धि के आवरण को हटाकर वास्तविक अर्थ का प्रकाश करे।

भावार्थ— वेद व्यास द्वारा रचित एक ही वेदान्त दर्शन के टीका में द्वैत, अद्वैत, शुद्ध अद्वैत, विशिष्ट अद्वैत, त्रैत आदि विचारधारा के विद्वानों ने अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार अलग-अलग अर्थ किया है, जिन्हें पढ़कर यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि किसका अर्थ सत्य है। तारतम्य ज्ञान के प्रकाश में ही इस रहस्य को समझा जा सकता है कि किसी भी ग्रन्थ के कथन का आशय क्या है। वेदान्त दर्शन जैसी स्थिति प्रायः अन्य

धर्मग्रन्थों जैसे वेद, उपनिषद, गीता आदि की भी है।

हक नहीं मिने सृष्ट सुपन, ढूँढ़या ला के लोकन।

जो जुलमत से उतपन, दई साख आप मुख तिन॥५॥

निराकार से उत्पन्न होने वाली जीवसृष्टि ने अपने मुख से यह साक्षी दी है कि हमने वैकुण्ठ, निराकार तक सारा खोज डाला, लेकिन इस स्वप्नमयी जगत में ब्रह्म का स्वरूप नहीं है।

कई खोज करी निगम, पर पाई नहीं गम।

ए पैदा जिनके हुकम, सो पाया न किन खसम॥६॥

बड़े-बड़े मनीषियों ने वेदों का गहन अध्ययन करके परमात्मा को खोजना चाहा, लेकिन वे सफल नहीं हो सके। जिनके आदेश से इस सृष्टि की रचना हुई, उस

सच्चिदानन्द परब्रह्म को इस सृष्टि में कोई भी प्राप्त नहीं कर पाया।

कैयों ढूँढ़या चौदे भवन, ढूँढ़े चार मुक्त के जन।

नवधा के ढूँढ़े भिन भिन, न कछु खबर त्रैगुन॥७॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में बहुतों ने परब्रह्म को खोजा। इस प्रकार वैकुण्ठ की चार प्रकार की मुक्तियों (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य) में भी खोजा। नवधा भक्ति तथा अन्य प्रकार की भक्तियों से भी लोगों ने परब्रह्म को खोजने का प्रयास किया, किन्तु कोई भी सफल नहीं हो पाया। ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव जी ने भी कह दिया कि परब्रह्म को अभी तक हम नहीं जान पाये।

महाप्रले होसी जब, सरगुन न निरगुन तब।

निराकार न सुंन, केहेवे को नाहीं वचन॥८॥

जब महाप्रलय होगा, तब न तो यह सगुण जगत रहेगा और न निर्गुण जगत रहेगा। उस समय निराकार, शून्य भी नहीं रहेगा। उस समय शब्द का भी अस्तित्व नहीं रहेगा कि कुछ कहा-सुना जा सके।

भावार्थ- सगुण का अर्थ होता है गुण सहित और निर्गुण का अर्थ होता है गुण रहित। सामान्य अर्थ में सगुण को साकार तथा निर्गुण को निराकार माना जाता है, किन्तु वास्तविकता तो यह है कि प्रत्येक पदार्थ में सगुणता और निर्गुणता विद्यमान होती है। चेतन में जड़ के गुण नहीं होते और जड़ में चेतन के गुण नहीं होते। किन्तु उपरोक्त चौपाई में सगुण से आशय पृथ्वी आदि साकार लोकों से ही लिया गया है तथा निर्गुण से अभिप्राय निराकार

मोहसागर से है।

प्रायः निराकार और शून्य एकार्थवाची होते हैं। आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व आदि सभी शून्य-निराकार के ही अन्तर्गत माने जाते हैं। कारण प्रकृति या मोहसागर को भी इसी के अन्तर्गत माना जाता है।

नेत नेत कर तो गाया, जो ब्रह्म न नजरों आया।

जित देख्यो तित माया, तब नाम निगम धराया॥९॥

मनीषियों को जब परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं हो पाया, तब उन्होंने विवश होकर नेति-नेति कहा। वैदिक ग्रन्थों का आधार लेकर इन मनीषियों ने जिधर भी खोज की, उधर माया ही मिली। थक-हारकर उन्हें ब्रह्म को "नेति" शब्द से सम्बोधित करना पड़ा।

भावार्थ- चारों वेदों में "नेति, निराकार, दुर्गा, नर्क"

शब्द नहीं हैं। वेदों के व्याख्यान स्वरूप दर्शन आदि ग्रन्थों में "नेति" शब्द अवश्य प्रयोग किया गया है, जैसे सांख्य दर्शन का कथन है— "तत्त्वअभ्यासात् नेति नेति विवेक सिद्धिः।"

"नेति" शब्द का अर्थ है— ऐसा नहीं, अर्थात् इस सृष्टि में परब्रह्म के समान कोई भी रूप नहीं है। उससे तुलनात्मक रूप में ही यह कहा जाता है कि ब्रह्म के समान यह वस्तु नहीं है।

उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण का अभिप्राय यह नहीं मान लेना चाहिए कि वेदों का नाम निगम इसलिये पड़ा क्योंकि वे निराकार को पार नहीं कर सके। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि ऐसा है, तो निगम के स्थान पर निर्गम (निः+गम्) होना चाहिए। इस तरह की भाव वाली चौपाइयों में निराकार के लिये "अगम" शब्द का

प्रयोग पहले ही हो चुका होता है, जैसे "अगम जान के निगम कहाये" (सेवा पूजा) तथा—

वेद अगम केहे उलटे पीछे, नेत नेत कर गाया।

खबर न परी बिंद उपज्या कहां थें, ताथें नाम निगम धराया॥

किरंतन २/२

उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण तथा खुलासा ११/९ के चौथे चरण का भाव एक ही है। इसमें इस सत्य को दर्शाया गया है कि जिस निराकार को अगम कहा गया है, जब उसका स्वरूप वेदों में वर्णित स्वरूप के अनुकूल नहीं हुआ, तो हारकर विद्वानों को नेति-नेति (ऐसा नहीं है-ऐसा नहीं है) कहना पड़ा, तथा उसे वाणी से परे का विषय मानकर मौन रहना पड़ा।

उपरोक्त कथन की यथार्थता सागर ५/११८ के इस कथन से भी पुष्ट होती है कि "रूहें नाम धरत हैं

तिन।" प्रश्न यह है कि वह कौन सा नाम है, जिसको कहा जाता है?

इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि जो आत्मा प्रियतम के एक अंग की शोभा को छोड़कर दूसरे में चली जाती है, तो अन्य आशिक आत्माएँ उसका नाम लेती हैं कि तुमने ऐसा क्यों कर दिया?

ठीक यही स्थिति यहाँ पर भी है। वैदिक ज्ञान के आधार पर अनुभवगम्य न होने से उसे "नेति-नेति" का नाम दिया गया। ब्रह्म का नाम निगम नहीं है। अगम और निर्गम शब्द समानार्थक हैं। यहाँ इस चौपाई में आलंकारिक भावों में कहे जाने के कारण मुख्य शब्द "नेति" को छिपाकर कहने वाले का ही नाम प्रस्तुत कर दिया गया है।

यद्यपि वेद का अर्थ ब्रह्म भी होता है। इस दृष्टि से

निगम को ब्रह्म का समानार्थक शब्द माना जा सकता है, किन्तु मात्र ज्ञान दृष्टि से, स्वरूप दृष्टि से नहीं। वेदों में (अथर्ववेद के केन सूक्त) में ब्रह्मपुरी का वर्णन है, जो दर्शन ग्रन्थों में नहीं है, केन एवं मुण्डक उपनिषद में अवश्य है। इस प्रकार वेद का आशय ब्रह्म के निराकार होने से नहीं है।

वेद ने परम गुहा (एकादश) द्वार में ब्रह्म के साक्षात्कार का वर्णन किया है— "वेनः तत् पश्यत् परमं गुहां यदत्र विश्वं भवति एकनीड्म।" ऐसी स्थिति में वेदों का कथन साकार-निराकार से भिन्न त्रिगुणातीत स्वरूप के लिये है, जिसे आदित्यवर्णः, भर्गः, शुक्र, ज्योतिः आदि शब्दों से सम्बोधित किया गया है।

ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन वाचा रही इत हार।

ढूँढ़या कैयों कई प्रकार, पर चल्या न आगे विचार॥१०॥

सबने अनेक प्रकार से उसको ढूँढ़ा है, किन्तु निराकार से आगे उनकी विचारधारा नहीं चल पाई। अन्त में उन्हें थक-हारकर कहना पड़ा कि नश्वर जगत् में परब्रह्म नहीं है। हमारे मन और वाणी की शक्ति इस निराकार को पार नहीं कर पा रही है।

कई अवतार किताबाँ कर, बहु ग्यानी कहावें तीर्थकर।

औलिए अंबिए पैगंमर, हक की नाहीं काहू खबर॥११॥

हिन्दुओं में अनेक अवतारों (व्यास, कपिल आदि) की मान्यता है, जिन्होंने परमात्मा के विषय में अनेक ग्रन्थों की रचना की। जैनियों में चौबीस तीर्थकर हुए, जिन्हें सर्वज्ञता (सब कुछ जानने वाला) की शोभा प्राप्त हुई।

मुसलमानों में कई औलिये, अंबिये, तथा पैगम्बर हो गये हैं, किन्तु उन्होंने भी यही कहा कि हमें परब्रह्म की कोई भी पहचान नहीं है।

कहया इतथें आगे सुंन, निराकार निरगुन।

भी कह्या निरंजन, तार्थें अगम रह्या सबन॥१२॥

सबने यही कहा कि इस चौदह लोक के ब्रह्माण्ड के आगे शून्य है। इसके आगे निराकार, निर्गुण, या निरञ्जन कहा जाने वाला महाशून्य है। इसलिए परब्रह्म सबके लिए अगम ही रहे, अर्थात् उन तक कोई भी नहीं पहुँच सका।

कैयों ढूँढ़या होए दरवेस, फिरे जो देस विदेस।

पर पाया ना काहूँ भेस, आगूँ ला मकान कह्या नेस॥१३॥

परब्रह्म की खोज में अनेक लोग फकीरों का भेष धारण

कर देश-विदेश घूमते फिरे, लेकिन इनमें से कोई भी परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं कर पाया। उन्होंने थक-हारकर यही कहा कि यहाँ से आगे निराकार तक सब नश्वर है।

मंगलाचरन तमाम

प्रकरण ॥११॥ चौपाई ॥५८७॥

साखी- दौड़ करी सिकंदरे, ढूंढ़या हैयाती आब।

बका अर्स पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब॥१॥

सिकन्दर जुलकर्नेन (दो सहायकों वाला) ने अखण्ड जल रूपी प्रेम पाने के लिए बहुत प्रयास किया, किन्तु वह इस स्वप्नमयी जगत् को पार नहीं कर सका और अखण्ड परमधाम का प्रेममयी अमृत पाने से वंचित रह गया।

हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा न पाया किन।

तब हक का नाम निराकार, कहया निरंजन सुन॥२॥

हिन्दुओं में बड़े-बड़े ज्ञानी महापुरुष हुए जिन्होंने इस ब्रह्माण्ड में ऊपर-नीचे चारों ओर परमात्मा को खोजा, किन्तु वे थक-हारकर बैठ गये और उनमें से किसी को भी परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं हो सका। तब उन्होंने

परब्रह्म को निराकार, निरञ्जन, तथा शून्य कहकर सम्बोधित किया।

और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून।

कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून॥३॥

मुसलमानों ने भी अल्लाह तआला को बिना रूप का (निराकार) और निर्गुण कहा। उन्होंने कहा कि वह अनुपम और अद्वितीय तो है, किन्तु उस परब्रह्म की कोई शक्ल (आकृति) नहीं है।

इत थें आए महंमद, ल्याए फुरमान हकीकत।

देखाए खोल माएने, अर्स हक सूरत॥४॥

परमधाम से मुहम्मद स.अ.व. आये और कुरआन द्वारा यथार्थ सत्य ज्ञान ले आये। उन्होंने कुरआन के कथनों

को स्पष्ट करते हुए बताया कि परमधाम में परब्रह्म का अति सुन्दर किशोर स्वरूप है।

मैं आया हक का हुकम, हक आवेगा आखिरत।

कौल किया हकें मुझसों, मैं ल्याया हक मारफत॥५॥

मुहम्मद स.अ.व. ने संसार में कहा कि मैं परब्रह्म के आदेश से आया हूँ तथा स्वयं परब्रह्म कियामत के समय इमाम महदी के रूप में आयेंगे। परब्रह्म ने कियामत के समय इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के रूप में आने का मुझे वचन दिया है। मैं उनकी पहचान के लिए यह कुरआन लेकर आया हूँ।

उतरी अरवाहें अर्स से, रूहें बारे हजार।

और उतरी गिरो फरिस्ते, और कुंन से हुआ संसार॥६॥

परमधाम से माया का खेल देखने के लिए बारह हजार आत्माएँ इस संसार में आयी हैं। उनके साथ ईश्वरी सृष्टि भी आयी हुई है। कुन्न कहने से समस्त जीवसृष्टि उत्पन्न हुई है।

महंमद कहे मैं उमत पर, ल्याया हक फुरमान।

जो लेवे मेरी हकीकत, ताए होवे हक पेहेचान॥७॥

मुहम्मद स.अ.व. कहते हैं कि मैं ब्रह्मसृष्टियों के लिए कुरआन के रूप में परब्रह्म का सन्देश लेकर आया हूँ। जो इसमें लिखे हुए परब्रह्म के कथनों की वास्तविकता को समझ जायेंगे, उन्हें निश्चित ही परब्रह्म की पहचान हो जायेगी।

सात तबक तले जिमी के, तिन पर है नासूत।

तिन पर हैं कई फरिस्ते, तिन पर है मलकूत॥८॥

इस पृथ्वी लोक के नीचे सात लोक हैं, जिनके ऊपर यह मृत्यु लोक है। इनके ऊपर देवताओं के पाँच लोक और हैं। इनके ऊपर सातवाँ लोक वैकुण्ठ लोक है।

भावार्थ— नीचे के सात पाताल लोक पृथ्वी पर ही स्थित हैं। पर्वत के नीचे के सभी समुद्री भाग पाताल लोक हैं, और श्रीमद्भागवत में कथित अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, और पाताल पृथ्वी के ऊपर ही हैं। पृथ्वी के ऊपर के पाँच लोक भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, और तपलोक हैं। इनमें सम्प्रज्ञात समाधि को प्राप्त सिद्ध पुरुष विचरण किया करते हैं। इन तेरह लोकों के ऊपर चौदहवाँ लोक वैकुण्ठ है।

ला हवा मलकूत पर, ला पर नूर मकान।

नूर पार नूर तजल्ला, मैं तहां से ल्याया फुरमान॥९॥

वैकुण्ठ के ऊपर निराकार का मण्डल है, जिसके परे बेहद मण्डल (अक्षरधाम) है। उसके भी परे अक्षरातीत का परमधाम है, जहाँ से मैं उनके आदेश स्वरूप इस कुरआन को लेकर आया हूँ।

जबराईल पोहोंच्या नूर लग, मैं पोहोंच्या पार हजूर।

मैं वास्ते उमत के, बोहोत करी मजकूर॥१०॥

जिबरील फरिश्ता बेहद मण्डल के सत्स्वरूप तक गया। मैंने उसके भी परे परमधाम के रंगमहल के मूल मिलावा में विराजमान अक्षरातीत का दर्शन किया। मैंने उनसे ब्रह्मसृष्टियों के सम्बन्ध में बहुत अधिक बातें की।

कहया सुभाने मुझको, हरफ नब्बे हजार।

कहया तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार॥११॥

परब्रह्म ने मुझसे बातचीत में नब्बे हजार शब्द कहे, और यह कहा कि इसमें शरीयत के तीस हजार शब्दों को स्पष्ट करना, और तीस तुम्हारी इच्छा पर है, उन्हें छिपा देना या संकेतों में उजागर कर देना।

बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए।

बका दरवाजे खोलसी, आखिर को हम आए॥१२॥

शेष जो तीस हजार शब्द बचते हैं, उन्हें पूर्णतया छिपाकर रखना। जब कियामत के समय मैं इमाम महदी के रूप में आऊँगा, तो उनके भेदों को स्पष्ट करके अखण्ड परमधाम का मार्ग दर्शाऊँगा।

कौल किया हकें मुझ से, हम आवेंगे आखिर।

ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर॥१३॥

परब्रह्म ने मुझे वचन दिया है कि कियामत के समय में मैं श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के रूप में आऊँगा। ब्रह्मसृष्टियों को यह बात सुनकर विश्वास हो जाए, इसलिए तुम पहले से जाकर कुरआन द्वारा यह सूचना दे दो।

होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार।

भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार॥१४॥

परब्रह्म सबके न्यायाधीश बनकर न्याय करेंगे और सारे संसार को दर्शन देंगे। वे ब्रह्मसृष्टियों को अक्षर से परे परमधाम ले जायेंगे तथा जीवों को बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

ईसा मेंहेदी जबराईल, और असराफील इमाम।

मार दज्जाल एक दीन करसी, खोलसी अल्ला कलाम॥१५॥

कियामत के समय में इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के स्वरूप में श्यामा जी, परब्रह्म का जोश, और जाग्रत बुद्धि विद्यमान होंगे, तथा कुरआन के गुह्य भेदों को खोलकर अज्ञानता का अन्धकार दूर करेंगे। इसके अतिरिक्त, वे सारे संसार को एक सत्य धर्म में ले चलेंगे।

सो ए कौल माने नहीं, हिंदू मुसलमान।

महंमद कहे जाहेर, पर ए ल्यावे ना ईमान॥१६॥

किन्तु कुरआन के इन कथनों को मानने के लिए न तो हिन्दू तैयार हैं और न मुसलमान। मुहम्मद स.अ.व. ने कुरआन में उपरोक्त सारी बातें स्पष्ट रूप से कही हैं, लेकिन उनके ऊपर कोई भी विश्वास करने के लिए तैयार

नहीं हुआ।

तो भी न मानें हक सूरत, पातसाह अबलीस दिलों जिन।
 कहे हक न किनहूं देखिया, खुदा निराकार है सुन॥१७॥

जिन जीवों के दिल पर इब्लीश रूपी अज्ञान का शासन है, वह परब्रह्म का स्वरूप नहीं मानते। वे दावे के साथ कहते हैं कि जब परब्रह्म को किसी ने देखा ही नहीं है, तो उसे निराकार-शून्य के अतिरिक्त क्या माना जाए?

भावार्थ- शून्य (आकाश) का रंग काला होता है। इसी प्रकार अहंकार, महत्तत्त्व, तथा कारण प्रकृति को भी काले रंग से ही दर्शाया जा सकता है, क्योंकि "तम आसीत् तमसां गूळहमग्रे" ऋग्वेद के नासदीय सूक्त के इस मन्त्र के कथनानुसार यह कारण रूप सम्पूर्ण जगत् अन्धकार से आवृत्त था। इससे स्पष्ट होता है कि सूक्ष्म

या कारण प्रकृति को अन्धकारमयी (काले रंग का) माना जाता है। किन्तु इतना अवश्य है कि कारण प्रकृति को किसी रंग के बन्धन में नहीं बाँधा जा सकता, क्योंकि वह अति सूक्ष्म है। इसके विपरीत परमात्मा को सभी ज्योतिर्मयी, तेजोमयी ही मानते हैं, भले ही उनकी आकृति न मानें। इसी प्रकार मुसलमान भी नूर (प्रकाश) के रूप में अल्लाह तआला के स्वरूप की कल्पना करते हैं।

सोई कौल सरीयत ने, पकड़ लिया इनों से।

कौल तोड़त रसूल के, दुस्मन बैठा दिल में॥१८॥

इन्हीं हिन्दुओं की देखा-देखी शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमानों ने भी अल्लाह ताला (परब्रह्म) को रूप से रहित, निराकार कहना प्रारम्भ कर दिया। ऐसा

करके ये मुहम्मद स.अ.व. के कथनों को झूठा सिद्ध करने में लगे हैं। करते भी क्या? इनके दिल में इनका शत्रु बनकर इब्लीश (अज्ञान) बैठा है।

आखिर आए रूहअल्ला, सो लीजो कर आकीन।

ए समझेगा बेवरा, सोई महंमद दीन॥१९॥

कुरआन में लिखा है कि कियामत के समय जब रूहअल्ला (श्यामा जी) का आगमन होगा, तो उनके कथनों पर विश्वास करना। जो इस तथ्य को समझकर अंगीकार करेगा, वह श्री प्राणनाथ जी के दर्शाये हुए निजानन्द मार्ग का अनुयायी कहलायेगा।

जो कछू कहया महंमदे, ईसे भी कहया सोए।

ए माएने सो समझहीं, जो अरवा अर्स की होए॥२०॥

मुहम्मद स.अ.व. ने जैसा कहा है, वैसा ही धनी श्री देवचन्द्र जी ने भी कहा है, किन्तु इस रहस्य को मात्र परमधाम की आत्माएँ ही समझ सकती हैं।

सात लोक तले जिमी के, मृत लोक है तिन पर।

इंद्र रुद्र ब्रह्मा बीच में, ऊपर विष्णु बैकुण्ठ घर॥२१॥

इस पृथ्वी लोक के नीचे सात पाताल लोक हैं, आठवाँ लोक पृथ्वी लोक (मृत्यु लोक) है। पृथ्वी लोक से ऊपर के लोकों में इन्द्र, शिव, ब्रह्मा आदि देवी-देवता रहते हैं।

भावार्थ- वैदिक या वैज्ञानिक दृष्टि से नीचे के सात पाताल लोकों को पृथ्वी पर ही समुद्र के किनारे स्थित भू भाग मानना चाहिए, क्योंकि यदि उन्हें पृथ्वी से अलग माना जाये, तो उन्हें आकाश में मानना पड़ेगा। आकाश में स्थित प्रत्येक ग्रह-नक्षत्र गतिमान है, तो उसे पृथ्वी से

नीचे कहना सम्भव नहीं है। उपरोक्त कथन श्रीमद्भागवत् का है, जिसे उदाहरण के रूप में यहाँ दर्शाया गया है।

यदि दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए, तो नीचे के सात लोक तमोगुणी प्राणियों के हैं, जो अज्ञानता के अन्धकार और भोग से परिपूर्ण हैं। शेष सात लोक प्रकाशमयी हैं, जिसमें पृथ्वी लोक के प्राणी रजोगुणी हैं। ऊपर के छह लोक एक-दूसरे से उत्तरोत्तर सात्विक होते चले गये हैं। इस प्रकार ये देव लोक (सिद्ध पुरुषों के लोक) कहे गये हैं।

इस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि को सात्विक, राजस्, और तामस् के आधार पर बाँटा जा सकता है। सामान्य रूप से पृथ्वी पर तीनों प्रकार की सृष्टि पायी जाती है। उसमें साधना द्वारा सिद्धावस्था (सम्प्रज्ञात समाधि) को प्राप्त होने वाले देव लोक के वासी माने जाते हैं, तथा विषय-

भोगों एवं पाप कर्मों में लिपटे रहने वाले प्राणी पाताल लोक के निवासी माने जाते हैं।

निराकार बैकुंठ पर, तिन पर अछर ब्रह्म।

अछरातीत ब्रह्म तिन पर, यों कहे ईसे का इलम॥२२॥

वैकुण्ठ के ऊपर निराकार का आवरण है, जिसके ऊपर अक्षर ब्रह्म है। अक्षर ब्रह्म के ऊपर अक्षरातीत परब्रह्म है। ऐसा श्री देवचन्द्र जी का तारतम ज्ञान कहता है।

ए बेवरा वेद कतेब का, दोनों की हकीकत।

इलम एकै बिध का, दोऊ की एक सरत॥२३॥

उपरोक्त विवरण वेद और कतेब का है, जिसमें दोनों द्वारा कहे गये यथार्थ सत्य को दर्शाया गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि दोनों का ज्ञान एक ही सत्य का उद्घोष

करता है। दोनों की मान्यता भी एक जैसी ही है कि श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) द्वारा ही सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य स्पष्ट होंगे।

ईसे महंमद मेंहेदी का, इन तीनों का एक इलम।

हक नहीं ब्रह्मांड में, ए हुआ पैदा जिनके हुकम॥२४॥

बसरी सूरत (मुहम्मद स.अ.व.), मलकी सूरत (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी), तथा हकी सूरत (श्री प्राणनाथ जी) का ज्ञान एक समान है, जिसके अनुसार जिस परब्रह्म के आदेश से यह ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ है, उस परब्रह्म का स्वरूप इस ब्रह्माण्ड में नहीं है।

भावार्थ— उपरोक्त चौपाई के कथनानुसार महदी का तात्पर्य महामति से है। जिस प्रकार महामति और प्रियतम प्राणनाथ को संयुक्त रूप में महामति प्राणनाथ

कहा जाता है, उसी प्रकार इमाम महदी को समझना चाहिए। इस सन्दर्भ में तारतम वाणी का यह कथन है—

महंमद हुआ मेंहेदी, अहमद कहलाया सही।

खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई॥

सनन्ध ४२/१२

महंमद आया इसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।

अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम॥

खुलासा १५/२१

अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजी खूबी गिरो इसलाम।

तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखिर आए बीच जहूद॥

बड़ा कयामतनामा ४/३६

उपरोक्त चौपाइयों का कथन यह सिद्ध करता है कि तीनों सूरतें, जिन्हें अलिफ, लाम, मीम या मुहम्मद,

अहमद, महदी कहते हैं, ये श्री प्राणनाथ जी (इमाम) के स्वरूप में एकाकार होती हैं।

इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि अव्वल का मुहम्मद आखिर में महदी के रूप में शोभायमान हुआ। मुहम्मद को तुर्की भाषा में महमत तथा हिन्दी/संस्कृत में महामति कहते हैं, जिसका तात्पर्य है— ऐसा स्वरूप जिससे परमधाम का महानतम ज्ञान प्रकट हुआ हो।

इस स्वरूप में परब्रह्म की निज बुद्धि तथा अक्षर ब्रह्म की जाग्रत बुद्धि के साथ परब्रह्म की चिद्धन शक्ति आवेश रूप में विद्यमान हुई। इसमें परब्रह्म के सत् अंग तथा आनन्द अंग की भी शक्ति विराजमान हुई है। इसलिये इस स्वरूप के समान महिमावान अब तक न तो कोई हुआ है और न कोई होगा, क्योंकि "अव्वल तो मुहम्मद आखिर तो मुहम्मद" अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर

आज तक प्रशंसित की महिमा सर्वव्याप्त है।

दुनियां बीच ब्रह्मांड के, ऐसा होए जो इलम लिए ए।

हक नजीक सेहेरग से, बीच बका बैठावे ले॥२५॥

इस संसार में जिस किसी को तारतम ज्ञान का प्रकाश मिल जाये, तो उसे परब्रह्म प्राण की नली से भी अधिक निकट प्रतीत होते हैं और उसे लगता है कि जैसे मेरी आत्मा परमधाम में बैठी है।

करम कांड और सरीयत, ए तब मानें महंमद।

जब ईसा और इमाम, होवें दोऊ साहेद॥२६॥

कर्मकाण्ड के मार्ग पर चलने वाले हिन्दू मुहम्मद स.अ.व. को तब सत्य मानेंगे, जब सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी के

प्रकाश में उन्हें सत्य की साक्षी मिल जाये।

हिंदू न माने कौल महंमद, न शरीयत मुसलमान।

यों जान चौथे आसमान से, आया ईसा देने ईमान॥२७॥

मुहम्मद स.अ.व. की बात न तो हिन्दू मानते हैं और न शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान ही मानते हैं। इसलिए सबको विश्वास दिलाने के लिए परमधाम से परब्रह्म की अह्लादिनी शक्ति श्यामा जी की आत्मा इस नश्वर जगत् में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के रूप में आयीं।

और आए इमाम, ऊपर अपनी सरत।

दे साहेदी महंमद की, करे इमामत॥२८॥

इनके अतिरिक्त अपने निश्चित किये हुए समय पर परब्रह्म

स्वरूप श्री प्राणनाथ जी आये हैं, जो मुहम्मद स.अ.व. के कथनों की साक्षी देकर सबको परमधाम का मार्ग दर्शा रहे हैं।

ईसा इमाम उमत को कहे, चलो हुकम माफक।

दे साहेदी महंमद की, दूर करे सब सक॥२९॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी ब्रह्मसृष्टियों से कहते हैं कि हे साथ जी! श्री राज जी के आदेशानुसार अपना आध्यात्मिक जीवन व्यतीत कीजिए। वे मुहम्मद स.अ.व. के कथनों की साक्षी देकर सबके संशय मिटा रहे हैं।

भावार्थ— उपरोक्त चौपाई में कथित श्यामा जी को श्री प्राणनाथ जी से अलग नहीं समझना चाहिए, अपितु वे उनके ही स्वरूप (श्री महामति जी के धाम-हृदय) में

विराजमान हैं।

पेहेले लिख्या फुरमान में, आवसी ईसा इमाम हजरत।

मारेगा दज्जाल को, करसी एक दीन आखिरत॥३०॥

कुरआन में मुहम्मद स.अ.व. ने पहले ही लिख रखा है कि कियामत के समय में ईसा रुहअल्ला (श्यामा जी) तथा इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) आयेंगे, और अज्ञान रूपी दज्जाल को मारकर सारे संसार को एक सत्य धर्म पर चलायेंगे।

वेदों कहया आवसी, बुध ईस्वरों का ईस।

मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस॥३१॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि ईश्वरों के भी ईश्वर विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप आयेंगे और वे

कलियुग की आसुरी शक्ति को नष्ट करेंगे तथा सभी प्राणियों को अखण्ड मुक्ति देंगे।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में वेद का तात्पर्य वेदों के संहिता भाग से नहीं है, अपितु समस्त हिन्दू धर्मग्रन्थों (पुराण आदि) से भी है।

बुध ब्रह्मसृष्टी वास्ते, आवसी कहया वेद।

ए बात है उमत की, कोई और न जाने भेद॥३२॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों (पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र आदि) में कहा गया है कि ब्रह्मसृष्टियों के लिए विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी आयेंगे। यह बात ब्रह्मसृष्टियों के लिए कही गयी है, इसलिए इस बात को उनके अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं जान सकता।

जो नेत नेत कहया निगमे, सब लगे तिन सब्द।

माणे निराकार पार के, क्यों समझे दुनियां हृद॥३३॥

वैदिक साहित्य में कथित "नेति" शब्द में ही सभी लोग उलझ गये। निराकार पार के सम्बन्ध में कहे गए इस कथन को भला इस संसार के जीव कैसे समझ सकते हैं।

भावार्थ- "नेति" का तात्पर्य है- ऐसा नहीं। यह कथन बेहद मण्डल और परमधाम के लिये है। जब इस नश्वर जगत् में कोई ब्रह्मरूप पदार्थ ही नहीं है, तो ब्रह्म के स्वरूप से उसकी उपमा कैसे दी जा सकती है?

पेहेले हवा कही मलकूत पर, सब सोई रहे पकड़।

पाई न हकीकत कुरान की, तो कोई सक्या न ऊपर चढ़॥३४॥

वैकुण्ठ (मलकूत) से परे निराकार का आवरण कहा गया है। सभी ने इसी निराकार को ही परब्रह्म (अल्लाह

तआला) मान लिया। तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण, कोई भी कुरआन की वास्तविकता को नहीं समझ सका और निराकार के परे नहीं जा सका।

वेद कहे उत दुनी की, पोहोंचे न मन अकल।

कहे कतेब छोड़ सुरिया को, आगे पोहोंचे न अर्स असल॥३५॥

वेदों में कहा गया है कि इस संसार के मन एवं बुद्धि की शक्ति निराकार से परे नहीं जा सकती। कतेब ग्रन्थों का कथन है कि ज्योति स्वरूप (सुरैया सितारा) को छोड़कर इस संसार की बुद्धि अखण्ड परमधाम में नहीं जा सकती।

निगमें गम कही ब्रह्म की, क्यों समझे ख्वाबी दम।

सो ए करूँ सब जाहेर, रूह अल्ला के इलम॥३६॥

यद्यपि वेदों में परब्रह्म की पहचान बतायी गयी है, किन्तु उसे स्वाप्निक जीव भला कैसे समझ सकते हैं। किन्तु वेदों के उन गुह्य रहस्यों को मैं तारतम ज्ञान के प्रकाश में स्पष्ट कर रहा हूँ।

कहूँ ईसे के इलम की, जो है हकीकत।

हक बका अर्स उमत, जाहेर करी मारफत॥३७॥

मैं श्यामा जी के तारतम ज्ञान की वास्तविकता को दर्शा रहा हूँ। तारतम वाणी ने अखण्ड परमधाम, श्री राज जी, एवं ब्रह्मसृष्टियों की पूर्ण पहचान को उजागर कर दिया है।

नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम।

सब में उमत और दुनियाँ, सोई खुदा सोई ब्रह्म॥३८॥

अलग-अलग धर्मग्रन्थों की अलग-अलग भाषाओं में

परब्रह्म के अलग-अलग नामों की अवधारणा (भावना) की गयी है, किन्तु इनका आशय एक ही है। सभी मतों के अनुयायियों ने अपनी-अपनी अलग-अलग परम्परायें (रीति-रिवाज) भी बना रखी हैं। इन सभी सम्प्रदायों में ब्रह्मसृष्टियाँ, ईश्वरीय सृष्टियाँ, तथा जीव सृष्टियाँ सम्मिलित हैं। मुस्लिम लोग जिसे खुदा कहते हैं, हिन्दू उसे ही परब्रह्म कहते हैं।

भावार्थ- सनंध ग्रन्थ १३/२ में कहा गया है-

भोम भली भरत खण्ड की, जहां आई निध नेहेचल।

और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।।

इससे यह स्पष्ट होता है कि ब्रह्मसृष्टियाँ और ईश्वरीय सृष्टियाँ मात्र भरतखण्ड में ही आयी हैं। भरतखण्ड से तात्पर्य सम्पूर्ण भारत, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बर्मा, बांग्लादेश आदि से है।

लोक चौदे कहे वेद ने, सोई कतेब चौदे तबक।

वेद कहे ब्रह्म एक है, कतेब कहे एक हक॥३९॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों में चौदह लोकों का वर्णन है। इसी प्रकार कतेब में १४ तबकों का वर्णन है। वेद कहते हैं कि परब्रह्म एक है। इसी प्रकार कतेब का कथन है कि अल्लाहतआला एक है।

भावार्थ- पुराण संहिता २०/७, योग दर्शन ३/२६ के व्यास भाष्य, माहेश्वर तन्त्र ८/१०, एवं श्रीमद्भागवत् में १४ लोकों का वर्णन है। उपनिषदों का कथन है- "एकमेवाद्वितीयम्"। इसी प्रकार कुरआन पारः अम्मः ३० सूरः इख्लास ११२ आयत १ का सन्देश है- "कुल्ल हु अल्ला अहद"।

तीन सृष्टि कही वेद ने, उमत तीन कतेब।

लेने न देवे माएने, दिल आड़ा दुस्मन फरेब॥४०॥

वेद में तीन सृष्टियों का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार कतेब में भी तीन प्रकार की सृष्टि कही गयी है। सबके हृदय में अज्ञान रूपी शैतान बैठा है, जो किसी को भी धर्मग्रन्थों का वास्तविक आशय समझने नहीं देता।

भावार्थ— कुरआन के सि. ३० सू. ९५ आ. १-५ में मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) को खजूर, मुस्लिम (ईश्वरीय सृष्टि) को अँगूर, तथा जीवसृष्टि को घास की उपमा से वर्णित किया गया है। इसी प्रकार, तीसरे सिपारे की तफसीर हुसैनी में दी गयी व्याख्या में तीनों सृष्टियों का वर्णन है। अथर्ववेद १०/८/३, पुराण संहिता २७/७६, तथा माहेश्वर तन्त्र १६/३९,४० में तीनों सृष्टियों का वर्णन किया गया है।

दोऊ कहे वजूद एक है, अरवा सबमें एक।

वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक॥४१॥

वेद-कतेब दोनों का कथन है कि भले ही सभी लोगों के शरीर अलग-अलग देशों में भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु उनकी आकृति एक जैसी है तथा उनमें विद्यमान चैतन्य (जीव, रूह) भी एक जैसा ही है। वेद-कतेब तो सबको समान ज्ञान देते हैं, किन्तु किसी में भी यह विवेक दृष्टि जाग्रत नहीं होती कि हम सारे विश्व को अपना परिवार मानें।

भावार्थ- यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के ७वें मन्त्र में कथित "तत्र कः मोहः कः शोकः यो एकत्वमनुपश्यतः" में यही तत्त्व दर्शाया गया है।

इसी प्रकार कुरआन के सि. १२ सूरः हूद आ. ७ तथा कुरआन पारः अम्मः ३० सूरः इख्लास ११२ आयत १ का सन्देश है- "कुल्ल हु..... अहदुन"

अर्थात् संसार के सभी प्राणियों के पूर्वज एक हैं तथा सभी का परमात्मा भी एक ही है।

जो कछू कहया कतेब ने, सोई कहया वेद।

दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाए भेद॥४२॥

कतेब ग्रन्थों में जो कुछ कहा गया है, वेदों में भी वैसा ही कहा गया है। दोनों विचारधाराओं (शामी तथा हामी) के अनुयायी एक ही परब्रह्म की उपासना करते हैं, किन्तु शुद्ध आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान न होने के कारण आपस में लड़ते रहते हैं।

भावार्थ— विरोध केवल हिन्दू-मुस्लिम में ही नहीं है, अपितु हिन्दुओं के लगभग सभी १००० पन्थों में वैचारिक मतभेद रहता है। पौराणिक हिन्दुओं, सिखों, जैनियों, तथा बौद्धों में भी कुछ मतभेद रहता है।

मुसलमानों में शिया, सुन्नी, तथा इनके सभी फिरकों में प्रायः हिंसात्मक विरोध रहता है। इसी प्रकार क्रिश्चियनों एवं यहूदियों का रक्तरंजित विरोध संसार-भर में प्रसिद्ध है। वस्तुतः तारतम वाणी के प्रकाश में शुद्ध आध्यात्मिक तत्वज्ञान ही सारे विश्व को एक कर सकता है।

बोली सबों जुदी परी, नाम जुदे धरे सबन।

चलन जुदा कर दिया, ताथें समझ न परी किन॥४३॥

संसार में अनेक प्रकार की भाषाएँ हैं, इसलिए भिन्न-भिन्न मत-पन्थों ने परब्रह्म के अलग-अलग नामों की भावना की है। सबका रहन-सहन और परम्पराएँ भी अलग-अलग हैं, इसलिए कोई भी परमसत्य को समझ नहीं पाया।

भावार्थ- वेद की भाषा संस्कृत है, कुरआन की भाषा

अरबी, तथा बाईबल की मूल भाषा हिब्रू है जो वर्तमान में अंग्रेजी में अधिक प्रचलित है। सामान्यतः एक मत का अनुयायी दूसरे मत की भाषा को नहीं जानता। उदाहरण के लिए वेद को पढ़ने वाला अरबी को नहीं जानता और अरबी को पढ़ा हुआ व्यक्ति वेद की भाषा नहीं जानता। वेश-भूषा, कर्मकाण्ड, और परम्पराओं की विभिन्नता के कारण भी दूरी बनी रहती है। वैचारिक कट्टरता तथा इतिहास के कड़वे अनुभव भी समाज में समरसता स्थापित नहीं होने देते। यद्यपि वर्तमान समय में सभी धर्मग्रन्थों का टीका उपलब्ध है, किन्तु तारतम्य वाणी के प्रकाश में ही सभी धर्मग्रन्थों का एकीकरण हो पाना सम्भव है।

ताथें हुई बड़ी उरझन, सो सुरझाऊँ दोए।

नाम निसान जाहेर करूँ, ज्यों समझे सब कोए॥४४॥

इस प्रकार वेद-कतेब दोनों की मान्यताओं में बहुत अधिक उलझन है, जिसे मैं तारतम वाणी के प्रकाश में सुलझा रहा हूँ। मैं दोनों विचारधाराओं के सिद्धान्तों, दार्शनिक पक्षों, परम्पराओं में प्रयुक्त होने वाले नामों तथा संकेतों को प्रकट कर रहा हूँ, जिससे वास्तविक सत्य सबको समझ में आ सके।

विष्णु अजाजील फरिस्ता, ब्रह्मा मैकाईल।

जबराईल जोस धनीय का, रूद्र तामस अजराईल॥४५॥

वेद पक्ष में जिन्हें विष्णु, ब्रह्मा, परब्रह्म का जोश, और शिव कहते हैं, कतेब परम्परा में उन्हें अजाजील, मैकाईल, जिबरील, तथा अजराईल कहते हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में विष्णु का तात्पर्य महाविष्णु से है क्योंकि महाविष्णु (आदिनारायण) ही सृष्टिकर्ता है और उसी की चेतना का प्रतिभास सभी जीवों के रूप में है। बेहद वाणी में कहा है-

कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं ना सुनी।
 खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी॥
 फेर पूछे सिव विष्णु को, कहे ब्रह्मांड और।
 और ब्रह्मांड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर॥

प्रकास हि. ३१/५,६

जब करोड़ों ब्रह्माण्ड हैं तो करोड़ों विष्णु होने चाहिए, किन्तु सारी सृष्टि को बनाने वाला आदिनारायण एक ही होना चाहिये, जिसे कतेब पक्ष में अजाजील कहा गया है।

बुध ब्रह्मा मन नारद, मिल व्यासे बाँधे करम।

ए सरीयत है वेद की, जासों परे सब भरम॥४६॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों में ब्रह्मा जी को बुद्धि का स्वामी माना गया है, नारद जी को मन की तरह सर्वत्र गमन करने वाला कहा गया है, तथा ऐसा माना जाता है कि वेद व्यास जी ने पुराणों द्वारा कर्मकाण्ड का बन्धन बाँध दिया है। इस प्रकार सभी पौराणिक कर्मकाण्ड के कारण भ्रम में पड़ गये।

भावार्थ- पुराणों में ब्रह्मा जी को बुद्धि का स्वामी कहा गया है, किन्तु वेद में नहीं। व्यास उपाधिधारी विद्वानों ने अठारह पुराणों की रचना की है। वेद व्यास जी के शिष्य जैमिनी महर्षि ने पूर्व मीमांसा के रूप में कर्मकाण्डपरक ग्रन्थ लिखा है। अठारह पुराणों के अन्दर बहुत अधिक विरोधाभास है, तथा अनेक देवी-देवताओं की उपासना

और वेद विरुद्ध मिथ्या कर्मकाण्डों के कारण समस्त हिन्दू समाज भ्रम में बना रहता है।

वेदें नारद कहयो मन विष्णु को, जाको सराप्यो प्रजापत।

राह ब्रह्म की भान के, सबों विष्णु बतावत॥४७॥

पौराणिक ग्रन्थों में नारद जी को विष्णु भगवान का मन कहा गया है। प्रजापति ब्रह्मा जी ने नारद जी को एक स्थान पर स्थिर न रहने का श्राप दिया था। नारद जी संसार के लोगों को एक परब्रह्म की भक्ति से हटाकर सबको विष्णु की भक्ति में लगाते हैं।

भावार्थ- भागवत आदि कई पुराणों में नारद जी को देवर्षि के रूप में वर्णित किया गया है। ऐसी पौराणिक मान्यता है कि ब्रह्मा जी के चारों मानसी पुत्रों सनक, सनन्दन, सनातन, तथा सनतकुमार को वैराग्य की

शिक्षा देकर नारद जी ने विरक्त बना दिया था। इसलिए ब्रह्मा जी ने नारद जी को श्राप दे दिया कि तुम कहीं भी दो घड़ी से अधिक नहीं ठहर सकते हो।

प्रत्येक प्राणी का मन बहुत चंचल होता है। उसकी चंचलता को दर्शाने के लिए पौराणिक कथानकों में नारद जी को मन तथा विष्णु भगवान को उसका स्वामी जीव कहा गया है। यह सारा प्रसंग आलंकारिक है, ऐतिहासिक नहीं। "विष्णु व्याप्तौ" धातु से विष्णु शब्द की उत्पत्ति होती है, जिसका अर्थ होता है सर्वव्यापक सत्ता वाला ब्रह्म। इस प्रकार वैदिक मान्यता में विष्णु का अर्थ सर्वत्र सत्ता वाला व्यापक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि ऐतिहासिक पुरुष हैं, जो जीव हैं, ब्रह्म नहीं। इनके नामों का अर्थ अवश्य ही ब्रह्म पर घटित होता है, क्योंकि ये वेद से लिए गये हैं।

वैष्णव आचार्यों द्वारा रचित पुराणों (श्रीमद्भागवत्, विष्णु पुराण आदि) में विष्णु भगवान को सृष्टिकर्ता और नारद जी को उनका भक्त बताया गया है। उपरोक्त चौपाई में यही प्रसंग दर्शाया गया है। किन्तु दार्शनिक पक्ष में जीव मन का स्वामी है। रज और तम से ग्रसित होकर मन चंचल बना रहता है तथा समस्त प्राणी मात्र को भटकाता रहता है। इस कथानक को दर्शाने के लिए विष्णु और नारद का यहाँ प्रसंग दिया गया है। अन्यथा नारद का अर्थ होता है ज्ञान देने वाला।

दम अबलीस अजाजील को, जाए कुराने कही लानत।

सो बैठ दुनी के दिल पर, चलावे सरीयत॥४८॥

इब्लीस अजाजील के मन की शक्ति है, जिसे कुरआन में लानत (धिक्कार) कही गयी है। वह संसार के जीवों पर

बैठकर उन्हें परब्रह्म के प्रेम मार्ग से हटा देता है और शरीयत में भटकाए रखता है।

अजाजील दम सब दिलों, बैठा अबलीस ले लानत।

बीच तौहीद राह छुड़ाए के, दाएं बाएं बतावत॥४९॥

अजाजील का जीव सबके अन्दर है, जिनके दिल पर वह इब्लीस बैठा है जिसको लानत लगी है। वह इब्लीस अद्वैत ब्रह्म की उपासना छुड़ाकर सबको इधर-उधर भटकाता रहता है।

सोई अबलीस सबन के, दिल पर हुआ पातसाह।

एही दुस्मन दुनी का, जिन मारी सबों की राह॥५०॥

इस प्रकार वह इब्लीस सबके हृदय का स्वामी बना हुआ है और सभी जीवों का शत्रु भी है क्योंकि सबको

परब्रह्म से हटाकर माया में उलझाये रखता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में कुरआन के इस कथानक द्वारा जीव और मन के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। रज और तम के बन्धन में पड़ा हुआ मन अज्ञान रूपी अन्धकार से ग्रसित होता है। जिसके कारण वह अपने स्वामी अजाजील को भी भटका देता है और अहं के कारण अजाजील आदम पर सज्दा (प्रणाम) नहीं करता, जिसके कारण अजाजील, इब्लीस दोनों को इस नश्वर जगत् में आना पड़ता है।

इस कथानक को यदि हम दार्शनिक पक्ष में देखें, तो सभी प्राणियों के हृदय में चैतन्य जीव विराजामन है, जो स्थूल, सूक्ष्म, और कारण शरीर तीनों का स्वामी है। मन कारण शरीर का अंग है, किन्तु जब मन पर रज और तम का प्रभाव अधिक हो जाता है, तो वह दृष्टा जीव को भी

अज्ञानता के बन्धन में बाँध देता है तथा परब्रह्म के साक्षात्कार से वंचित कर देता है। यही कारण है कि कतेब ग्रन्थों में उसे शैतान या दज्जाल की संज्ञा दी गई है। इब्लीस को कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं मानना चाहिए, अपितु यह महत्त्व से उत्पन्न होने वाला जड़ पदार्थ है, जो जीव की चैतन्यता से चेतन होकर जीव को भी परब्रह्म से अलग किये रहता है।

सभी प्राणियों का जीव अजाजील (आदिनारायण) का ही प्रतिभास है, जिसे वेदान्त की भाषा में चिदाभास कहते हैं, किन्तु तमोगुण के अज्ञान रूपी अन्धकार से आक्रान्त मन की नारद जी से तुलना करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। चंचलता के कारण अवश्य नारद जी की मन से उपमा दी गई है, किन्तु तारतम्य वाणी के किसी भी प्रसंग में नारद जी को शैतान या इब्लीस नहीं

लिखा है। यह तो वेद और कतेब में दार्शनिक सिद्धान्तों को कथानकों द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है।

मलकूत कहा बैकुंठ को, मोहतत्व अंधेरी पाल।

अछर को नूरजलाल, अछरातीत नूरजमाल॥५१॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों में जिसे वैकुण्ठ और मोहत्तत्व कहते हैं, कतेब परम्परा में उसे मलकूत और अन्धेरी पाल (जुलमत) कहते हैं। इसी प्रकार, जिसको अक्षर और अक्षरातीत कहते हैं, कतेब में उसे नूरजलाल और नूरजमाल कहते हैं।

ब्रह्मसृष्ट कहे मोमिन को, कुमारका फरिस्ते नाम।

तौर अछर सदरतुलमुंतहा, अरसुल्अजीम सो धाम॥५२॥

ब्रह्मसृष्टियों को कतेब पक्ष में मोमिन कहा जाता है तथा

ईश्वरीसृष्टियों को फरिश्ते कहकर सम्बोधित किया जाता है। अक्षरधाम को सिद्र-तुल-मुन्तहा तथा परमधाम को अर्श-ए-अजीम कहते हैं।

भावार्थ- कुरआन के तीसवें पारे की इन्ना इन्जुलना सूरत में ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि के इस खेल में आने का वर्णन है।

श्री ठकुरानी जी रुहअल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी स्याम।

सखियां रूहें दरगाह की, सुरत अछर फरिस्ते नाम॥५३॥

श्री श्यामा जी को रुहअल्लाह कहा गया है। जिनको श्याम या श्री कृष्ण जी कहते हैं, उनको कुरआन में मुहम्मद स.अ.व. कहा गया है। परमधाम की सखियों को दरगाह की रूहें कहा गया है तथा अक्षर ब्रह्म की सुरताओं को फरिश्ते कहा गया है।

बुध जी को असराफील, विजया अभिनन्द इमाम।

उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम॥५४॥

जाग्रत बुद्धि को कुरआन में इस्राफील कहा गया है, उसी प्रकार विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप को आखरूल जमां इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां कहा गया है। सबकी अलग-अलग बोली होने के कारण अलग-अलग नाम हैं। यही कारण है कि सब लोग आपस में उलझकर परमसत्य से वंचित हो जाते हैं।

बाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख।

अन्दर दोऊ के गफलत, लड़त वास्ते भाख॥५५॥

अन्यथा वेद और कतेब दोनों ही परमसत्य की साक्षी देते हैं, किन्तु भाषा भेद के कारण दोनों ही एक-दूसरे के कथनों को नहीं समझ पाते। परिणामतः दोनों में एक-

दूसरे के प्रति संशय बना रहता है और आपस में लड़ते रहते हैं।

प्रकरण ॥१२॥ चौपाई ॥६४२॥

कंसे काला-गृह में, किए वसुदेव देवकी बन्ध।

भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अन्ध॥१॥

श्रीमद्भागवत् में वर्णित है कि कंस ने वसुदेव तथा देवकी को कारागृह में बन्द कर दिया। वह अपनी राज्य सत्ता के मद में इतना अन्धा हो गया कि उसने अपने सभी छः भान्जों की हत्या कर डाली।

नूह काफर की बन्ध में, रहे साल चालीस।

बेटे मारे कई दुख दिए, तो भी काफर न छोड़ी रीस॥२॥

कुरआन में कहा गया है कि पैगम्बर नूह चालीस वर्षों तक काफिर की कैद में रहे। काफिर ने उनके कई पुत्रों को मार डाला तथा उन्हें बहुत कष्ट दिया। इतना करने पर भी उसका वैर एवं क्रोध कम नहीं हुआ।

भावार्थ— यह प्रसंग कुरआन के सि. १२ सू. ११ आ.

२६ में है।

कहे वेद बैकुंठ से, आए चतुरभुज दिया दीदार।

वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया नन्द द्वार॥३॥

श्रीमद्भागवत् के दशम् स्कन्ध में वर्णित है कि वैकुण्ठ से चतुर्भुज स्वरूप विष्णु भगवान आये तथा उन्होंने कारागार में ही वसुदेव-देवकी को दर्शन देकर समझाया कि अभी आपको जो पुत्र पैदा होने वाला है, उसे ब्रज में नन्द के घर पहुँचा देना। वसुदेव जी ने वैसा ही किया।

मलकूत से फरिस्ता, नूह समझाया आए।

नसीहत कर पीछा फिरया, नूहें स्याम दिया पोहोंचाए॥४॥

कुरआन के सि. १२ सू. ११ आ. १०१ में कहा गया है कि मलकूत से फरिश्ते ने आकर नूह पैगम्बर को

समझाया और वापस लौट गया। उनके कथनानुसार नूह पैगम्बर ने अपने पुत्र श्याम को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया।

अहीरों की कोम में, जित महत्तर नन्द कल्यान।

सुख लिया बृज वधुएं, औरों न हुई पेहेचान॥५॥

ब्रज मण्डल के यदुवंशियों में नन्द जी तथा कल्याण जी सबमें प्रमुख (मुखिया) थे। ब्रज की गोपियों ने श्री कृष्ण जी के स्वरूप को पहचान कर उनके प्रेम का सुख लिया। अन्य कोई श्री कृष्ण जी की यथार्थ पहचान नहीं कर सका।

महत्तरों की कोम में, जित हूद कील सिरदार।

जोत रसूल टापू मिने, दिया जबरईलें आहार॥६॥

यहूदियों के वंश में हूद और कील सरदार थे। टापू में अपनी किशती पर सुरक्षित नूह पैगम्बर को जिबरील फरिश्ते ने प्रकट होकर नयी मानव सृष्टि का निर्देश दिया (आत्मिक आहार दिया)।

खेल हुआ जो लैल में, तकरार जो अव्वल।

उतरीं रूहें फरिस्ते, अरस के असल॥७॥

इस मायावी रात्रि में जो खेल हुआ, उसके पहले भाग अर्थात् व्रज में परमधाम से ब्रह्मसृष्टियाँ और अक्षरधाम से ईश्वरीय सृष्टियाँ प्रकट हुई।

भावार्थ— उपरोक्त प्रसंग कुरआन के सि. ३० सू. ९७ आ. १-५ "अिन्ना अन्जल्लाहु..... हत्ता मत् लैअिल फ़ज्जिर" में वर्णित है।

सात रात आठ दिन का, सुकें कहया इन्द्र कोप।

भेजी वाए जल अगनी, प्रले को मृतलोक॥८॥

श्रीमद्भागवत् के दशम् स्कन्ध में शुकदेव जी ने ब्रज पर इन्द्र के कोप का वर्णन किया है, जिसमें देवराज इन्द्र ने इस मृत्यु लोक का प्रलय करने के लिए सात रात-आठ दिन तक निरन्तर वर्षा की। इस कार्य में उन्होंने अपनी जल, वायु, तथा अग्नि की सम्पूर्ण शक्ति लगा दी।

तब गोवर्धन तले, स्यामें राख्यो गोकुल।

जल प्रले के फिरवले, अंदर न हुआ दखल॥९॥

तब गोवर्धन के नीचे श्री कृष्ण जी ने सम्पूर्ण गोकुल की रक्षा की। मूसलाधार जल की वर्षा करने वाले प्रलयकालीन बादल वापस लौट गये और ब्रज में नाम मात्र को भी जल प्रवेश नहीं कर पाया।

सात रात आठ दिन का, हुआ तोफान हूद महत्तर।

राखी रूहें कोहतूर तले, डूब मुए काफर॥१०॥

कुरआन के सि. १२ सू. ११ आ. ४३-४४ "काल सआबी..... क़ौमिज़्ज़ालिमीन" में वर्णित है कि हूद नबी के घर सात रात-आठ दिन तक भयंकर तूफान आया, जिसमें कोहतूर पर्वत के नीचे सभी ब्रह्मसृष्टियों की रक्षा हुई और काफिर डूब गये।

हूद कहया नंदजीय को, टापू बृज अखंड।

कोहतूर गोवरधन कहया, न्यारा जो ब्रह्मांड॥११॥

कुरआन में जिसे हूद कहा गया है, श्रीमद्भागवत् में उन्हें नन्द जी कहा गया है। टापू अखण्ड ब्रज है तथा कोहतूर ही गोवर्धन पर्वत है जो अब इस ब्रह्माण्ड से अलग है।

जोगमाया की नाव कर, तित सखियां लई बुलाए।

सो सोभा है अति बड़ी, जित सुख लीला खेलाए॥१२॥

श्री कृष्ण जी ने योगमाया रूपी नौका में सभी सखियों को बुला लिया और नित्य वृन्दावन में महारास की प्रेममयी लीला की, जिसकी शोभा बहुत अधिक है।

समारी किस्तीय को, तित मोमिन लिए चढ़ाए।

सो स्याम चिराग महंमद की, जिन मोमिन पार पोहोँचाए॥१३॥

नूर पैगम्बर ने नौका बनाकर सभी मोमिनों को उसमें चढ़ा लिया, और श्याम जिसमें मुहम्मद स.अ.व. की ज्योति थी, उन्होंने मोमिनों को तूफान से पार पहुँचाया।

भावार्थ— अक्षरातीत के सत अंग अक्षर ब्रह्म हैं, जिन्होंने व्रज-रास में श्री कृष्ण जी के तन में लीला की। इस सम्बन्ध में प्रगट वाणी में कहा गया है—

मूल सूरत अछर की जेह, जिन चाहया देखों प्रेम सनेह।
सो सूरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस॥

प्रकास हि. ३७/२९

वह अक्षर की आत्मा अरब में आती है, जिन्हें मुहम्मद स.अ.व. कहा गया है। सही हदीस में वर्णित है कि "अनामिन नूरिल्लाहु व कुल शैअं मिन्नूरी" अर्थात् मैं (मुहम्मद) अल्लाह (परब्रह्म) के नूर से हूँ व सृष्टि मेरे नूर से है। मन्कूला रिवायत है कि "अव्वल मा खल्कुल्लाहु नूरी" अर्थात् मैं अल्लाह के नूर से ओत-प्रोत हूँ।

अक्षरातीत परब्रह्म के सत अंग अक्षर ब्रह्म हैं। यद्यपि परमधाम में कोई नयी वस्तु नहीं हो सकती, किन्तु अक्षरातीत का परमसत्य (मारिफत) स्वरूप हृदय जब सत्य (हकीकत) के रूप में प्रकट होगा तो वह श्यामा जी, सखियों, अक्षर ब्रह्म आदि के रूप में दृष्टिगोचर

होगा। इसी को कुरआन की भाषा में कहा गया है कि श्याम के अन्दर मुहम्मद स.अ.व. का प्रकाश (नूर) था, अर्थात् अक्षर की आत्मा थी।

वेदें कहया स्याम बृज में, आए नन्द के घर।

पीछे आए रास में, इत हुई नहीं फजर॥१४॥

भागवत में कहा गया है कि श्री कृष्ण जी ब्रज में नन्द के घर आये थे। इसके पश्चात् उस रास में आये, जहाँ अब तक प्रातःकाल नहीं हुआ है अर्थात् रास की रात्रि अखण्ड है।

कालमाया इंड पेहेले रच्यो, जोगमाया रचियो और।

फेर तीसरो कालमाया रच्यो, जाने एही इंड वाही ठौर॥१५॥

कालमाया का यह ब्रह्माण्ड पहले बना जिसमें ब्रज लीला

हुई, इसके पश्चात् योगमाया में नित्य वृन्दावन का नया ब्रह्माण्ड बना जिसमें महारास की लीला हुई। पुनः कालमाया का तीसरा ब्रह्माण्ड बनाया गया है, जिसमें रहने वाले यही समझते हैं कि यह पहले वाला ही ब्रह्माण्ड है।

पहेला तकरार हूद घर, दूजा किस्ती पर।

तीसरा भया फजर का, जाने वाही लैलत कदर॥१६॥

लैल-तुल-कद्र की रात्रि का पहला तकरार हूद नबी के घर हुआ। दूसरी बार किस्ती को पार किया, और तीसरी बार यह फज्र (ज्ञान से सवेरा) होने का ब्रह्माण्ड बना। इसके रहस्य को न जानने वाले अभी भी यही समझते हैं कि अभी भी लैल-तअल-कद्र की रात्रि का वही भाग है अर्थात् यह पहले वाला ही ब्रह्माण्ड है।

किस्ती नूह नबीय की, लिए अपने तन चढ़ाए।

स्याम बेटा नूह नबी का, फिरया किस्ती पार पोहोंचाए॥१७॥

नूह नूबी ने अपनी बनाई हुई किस्ती में अपने प्रिय मोमिनों को चढ़ा लिया। नूह नबी का बेटा श्याम था, जिसने किस्ती द्वारा सबको तूफान से निकालकर पार पहुँचा दिया।

कहे कुरान डूबे काफर, नूह नबी तोफान।

मोमिन सबे किस्ती चढ़े, ए नई हुई जहान॥१८॥

कुरआन में लिखा है कि नूह नबी के यहाँ आये हुए तूफान में सभी काफिर डूब गये। उनकी किस्ती पर चढ़कर सभी मोमिन तूफान से निकलकर सुरक्षित पहुँच गये। उसके पश्चात् इस नये संसार की रचना हुई।

भावार्थ- कुरआन सि. १२ सूरतु हूद ११ आ. ४३ में

यह प्रसंग वर्णित है। उपरोक्त चौपाइयों का आशय यह है कि ब्रज लीला के पश्चात् रास की लीला हुई। योगमाया रूपी नौका में बैठकर सभी ब्रह्मसृष्टियाँ महारास में पहुँची थीं।

कहया वेदें कृष्ण अवतार की, पेहेले आए बृज के माहें।
रहे रात पीछली लग, फजर इंड तीसरा इहाँए॥१९॥

भागवत में दशवें स्कन्ध में कहा गया है कि श्री कृष्ण जी सबसे पहले ब्रज में आये, जहाँ उन्होंने ग्यारह वर्ष बावन दिन लीला की। उसके पश्चात् महारास में गये, अर्थात् लैल-तअल-कद्र के पिछले भाग तक उन्होंने रास में लीला की। उसके पश्चात् यह तीसरा नया जागनी का ब्रह्माण्ड है, जिसमें तारतम ज्ञान से उजाला फैल गया।

भावार्थ- लैल-तअल-कद्र की रात्रि के तीन तकरार अर्थात् भाग हैं- ब्रज, रास, और जागनी। ब्रज की लीला पूर्ण निद्रा में हुई, रास की लीला में कुछ नींद कुछ जाग्रति थी। लैल-तअल-कद्र के तीसरे भाग में जब तक तारतम ज्ञान का अवतरण नहीं हुआ था, तब तक अन्धेरा ही था। ज्ञान का पूर्ण प्रकाश तो हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी द्वारा फैला है, जिसमें अज्ञानता का कोई अन्धकार नहीं रह गया है।

आगूं नूह तोफान के, दो तकरार भए लैल।

दोए पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल॥२०॥

इस ब्रह्माण्ड से पहले लैल की रात्रि में दो खेल ब्रज और रास के (हूद नबी के घर तथा नूह नबी के घर तूफान आने के) हो चुके हैं। इन दोनों लीलाओं के पश्चात् यह

तीसरा ब्रह्माण्ड जागनी का बना है, जिसमें तारतम ज्ञान से उजाला फैल गया है।

कहे महंमद दिन खुदाए का, दुनियां के साल हजार।

लैलत कदर की फजर को, पावे दुनियाँ सब दीदार॥२१॥

मुहम्मद स.अ.व. कहते हैं कि खुदा का एक दिन दुनिया के हजार वर्षों के बराबर होता है। लैल-तअल-कदर की रात के अन्तिम भाग में जब तारतम ज्ञान से उजाला होगा, तो सारे संसार को इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के रूप में परब्रह्म का दर्शन होगा।

लैल बड़ी महीने हजार से, ए बताए दई सरत।

सोई फजर सदी अग्यारहीं, ए देखो दिन कयामत॥२२॥

लैल-तअल-कदर की रात्रि के तीसरे भाग की रात्रि

हजार महीनों से भी बड़ी कही गयी है। इसके पश्चात् ग्यारहवीं सदी में ज्ञान का उजाला फैलना है और यही समय कियामत के आने का है, ऐसा कुरआन में लिखा है।

भावार्थ— हजार महीने में ८३ वर्ष और चार माह होते हैं। वि.सं. १६३८ + ८३ वर्ष अर्थात् यह समय १७२२ तक पूर्ण हो जाता है। इसके पश्चात् तारतम ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैलने लगता है।

ब्रह्मसृष्टी सखियां स्याम संग, खेले बृज रास के मांहें।
 ए सुनियो तुम बेवरा, खेल फजर तीसरा इहांए॥२३॥
 हे साथ जी! आप यह विवरण ध्यान से सुनिए।
 ब्रह्मसृष्टियों ने ब्रज-रास में श्री कृष्ण जी के साथ लीला की और उसके पश्चात् इस तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में

आयी हैं, जिसमें तारतम ज्ञान से उजाला हुआ।

ए जो खेल देखाया रूहन को, ताके हुए तीन तकरार।

सो ए कहूं मैं बेवरा, ए जो फजर कार गुजार॥२४॥

ब्रह्मसृष्टियों को जो यह खेल दिखाया गया है, उसके तीन भाग होते हैं— ब्रज, रास, और जागनी। इसमें जागनी ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान के उजाले की जो लीला हुई है, उसका मैं स्पष्ट रूप से विवरण दे रहा हूँ।

कालमाया जोगमाया, बीच कहे प्रले दोए।

एह खेल भया तीसरा, माएने बुध जी बिना न होए॥२५॥

कालमाया के ब्रह्माण्ड में जो ब्रज लीला और योगमाया के ब्रह्माण्ड में जो रास लीला खेली गयी, उसके बीच में दो प्रलय हुए। पहला प्रलय इन्द्र कोप का है तथा दूसरा

व्रज से रास में जाते समय का है। उसके पश्चात् यह जागनी का तीसरा ब्रह्माण्ड बना है। यह रहस्य श्री प्राणनाथ जी के बिना कोई भी उजागर नहीं कर सकता।

एक तोफान हूद के, और किस्ती बयान।

प्रले दोऊ जाहेर लिखे, मिने रसूल फुरमान॥२६॥

कुरआन में मुहम्मद स.अ.व. ने कहा है कि व्रज, रास के बीच में दो स्पष्ट रूप से प्रलय हुए। एक हूद के घर तूफान आना और दूसरा नूह नबी के घर तूफान आना, जिसमें योगमाया रूपी किस्ती द्वारा मोमिनों की रक्षा हुई।

पेहेले भाई दोऊ अवतरे, एक स्याम दूजा हलधर।

स्याम सरूप ब्रह्म का, खेले रास जो लीला कर॥२७॥

व्रज में दो भाई अवतरित हुए। एक श्री कृष्ण, दूसरे

बलराम। श्री कृष्ण में परब्रह्म का स्वरूप विराजमान हुआ, जिन्होंने योगमाया में रास लीला की।

दो बेटे नूह नबीय के, एक स्याम दूजा हिसाम।

स्यामें समारी किस्ती मिने, दिया रूहों को आराम॥२८॥

कुरआन में कहा है कि नूह नबी के दो पुत्र हुए— एक श्याम और दूसरा हिसाम। श्याम ने किस्ती द्वारा मोमिनों को नित्य वृन्दावन में पहुँचाया और आत्माओं को रास का आनन्द दिया।

हलधर आतम नारायण, जो आया हिंदुस्तान।

साहेब कहया हिंदुअन का, संग गीता भागवत ग्यान॥२९॥

बलराम जी के अन्दर नारायण की आत्मा है, जो हिन्दुस्तान में आये। इन्हें हिन्दुओं का परमात्मा कहा

जाता है, और अपने साथ गीता और भागवत का ज्ञान लेकर आये हैं।

भावार्थ- पौराणिक मान्यता के अनुसार बलराम जी को शेषावतार कहा जाता है। जिस प्रकार रामावतार में राम-लक्ष्मण की जोड़ी अवतारी मानी जाती थी, उसी प्रकार श्री कृष्णावतार में श्री कृष्ण-बलराम की जोड़ी अवतारी मानी जाती थी। श्रीमद्भागवत् के अनुसार आदिनारायण के चार व्यूह माने जाते हैं- १. वासुदेव २. संकर्षण ३. प्रद्युम्न ४. अनिरुद्ध। इसी संकर्षण के अवतार बलराम जी माने जाते हैं। उपरोक्त चौपाई में बलराम जी के अन्दर नारायण की आत्मा (जीव) कहे जाने का यही कारण है।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि महाभारत के युद्ध में गीता का उपदेश योगेश्वर श्री कृष्ण जी ने दिया था, बलराम जी

ने नहीं। बलराम जी तो युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही तीर्थयात्रा के लिये निकल पड़े थे। एक ही नारायण के व्यूह होने के कारण श्री कृष्ण-बलराम को एक मानकर कथानक की संगति बैठाई गयी है। महाभारत के युद्ध में भाग लेने वाले श्री कृष्ण विष्णुरूप योगेश्वर हैं, जिन्होंने ब्राह्मी अवस्था में गीता का ज्ञान दिया। श्रीमद्भागवत् के कुछ अंशों में (उद्धव को सम्बोधन आदि) भी उनका कहा हुआ ज्ञान है, इसलिये गीता के साथ यहाँ भागवत का भी नाम आ गया है।

बेटा नूह नबीय का, कहया हिंद का बाप हिसाम।

सो तोफान के पीछे, आया हिंद मुकाम॥३०॥

नूह नबी के पुत्र का नाम हिसाम है, जो हिन्दुस्तान के पिता कहलाये। वे तूफान के पश्चात् हिन्दुस्तान में आ गये

थे।

स्याम रास से बरारब, ल्याया साहेब का फुरमान।

हकीकत अखण्ड धाम की, तिन बांधी सब जहान॥३१॥

रास लीला करने के पश्चात् श्री कृष्ण जी अरब में परब्रह्म का आदेश-ग्रन्थ कुरआन लेकर अवतरित हुए। इसमें उन्होंने अखण्ड परमधाम का ज्ञान दिया तथा सारे संसार को कियामत का वास्ता देकर शरीयत के नियमों से बाँधा।

सो बुध जी सुर असुरन पे, लेसी वेद कतेब छीन।

कहे असुराई मेट के, देसी सबों आकीन॥३२॥

अब श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी प्रकट हो गये हैं, जो हिन्दुओं तथा

मुसलमानों से वेद और कतेब की शक्ति छीन लेंगे, अर्थात् तारतम वाणी का प्रकाश देकर उन्हें वेद-कतेब के बाह्य अर्थों में भटकना छुड़ायेंगे तथा एक परमसत्य का बोध करायेंगे। इस प्रकार वे संसार की तमोगुणी अज्ञानता के अन्धकार को समाप्त करके, सबको एक परब्रह्म तथा परमधाम पर विश्वास दिलायेंगे।

बाप फारस रूम आरब का, कहया फुरमाने स्याम।

फुरमान ल्याए वास्ते, रसूल धराया नाम॥३३॥

कुरआन में श्याम को ईरान, रोम, तथा अरब का पिता कहा गया है। अरब में कुरआन लाने के कारण ही उन्हें रसूल (सन्देशवाहक) कहा गया।

वेद कतेब सबन पे, लेसी छीन बुधजी।

खोल माएने देसी मुक्त, बीच बैठ ब्रह्मसृष्टी॥३४॥

विजयाभिनन्द बुद्ध श्री प्राणनाथ जी वेद और कतेब को सबसे छीन लेंगे। वे ब्रह्मसृष्टियों के बीच बैठकर उसके गुह्य भेदों को उजागर करेंगे तथा सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति देंगे।

भावार्थ— तारतम वाणी के प्रकाश में जब सभी धर्मग्रन्थों के भेद स्पष्ट हो जायेंगे और एक सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान हो जायेगी, तो बाह्य अर्थों में भटकने वाले लोग अपने धर्मग्रन्थों को महत्वहीन समझेंगे। इसे ही आलंकारिक भाषा में वेद-कतेब को छीनना कहा गया है।

ए खिताब महंमद मेंहेदी पे, जाकी करे मुसाफ सिफत।

सो महंमद मेंहेदी खोलसी, आखिर अपनी बीच उमत॥३५॥

यह सारी शोभा आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां (श्री प्राणनाथ जी) की है, जिनकी कुरआन में इतनी महिमा गायी गयी है। इसके वास्तविक भेदों को श्री प्राणनाथ जी कियामत के समय अपनी आत्माओं के बीच विराजमान होकर प्रकट करेंगे।

अवतार तले विष्णु के, विष्णु करे स्याम की सिफत।

इन विध लिख्या वेद में, सो आए स्याम बुध जी इत॥३६॥

सभी अवतार विष्णु के अंश से हैं और विष्णु भगवान अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण सबलिक में स्थित श्री कृष्ण जी का ध्यान करते हैं। हिन्दू धर्मग्रन्थों (माहेश्वर तन्त्र अध्याय ४) में इस प्रकार लिखा है। श्री कृष्ण जी के तन

में लीला करने वाला श्याम स्वरूप (आत्म अक्षर जोश धनी धाम), जाग्रत बुद्धि के साथ, इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में हैं।

लिखी अनेकों बुजरकियां, पैगंमरों के नाम।

ए मुकरर सब महंमद पे, सो महंमद कहा जो स्याम॥३७॥

कुरआन में बहुत से पैगम्बरों की महिमा का गुणगान किया गया है, किन्तु वह सारी महिमा मुहम्मद स.अ.व. के हकी स्वरूप आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी के लिये है। मुहम्मद स.अ.व. का स्वरूप वही था, जो ब्रज-रास में श्री कृष्ण जी (अक्षर ब्रह्म की आत्मा) का था।

तीर्थकरों सबों खोजिया, और खोज करी अवतार।

तो बुजरकी इत कहाँ रही, जो कायम न खोले द्वार॥३८॥

सभी तीर्थकरों तथा सभी अवतारों ने सच्चिदानन्द परब्रह्म की बहुत खोज की, किन्तु जब उन्हें अखण्ड धाम का साक्षात्कार ही नहीं हो सका, तो उनकी महानता कहाँ रही?

अवतारों इत क्या किया, जो दर्ई न बका की सुध।

तो लो द्वार मूंदे रहे, आए खोले विजया-अभिनन्द-बुध॥३९॥

जब सभी अवतार किसी को भी अखण्ड परमधाम का ज्ञान ही नहीं दे सके, तो उन्होंने कौन सा महान कार्य कर दिया? जब तक श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी नहीं आये थे, तब तक अखण्ड धाम का ज्ञान इस संसार में था ही नहीं।

सिफत सब पैगंमरों की, मांहें लिखी अल्ला कलाम।

उमत सबे रानी गई, इनों किन को दिया पैगाम॥४०॥

कुरआन में सभी पैगम्बरों की महिमा गायी गयी है, किन्तु उनके अनुयायी सभी अन्धकार में भटक गये, तो प्रश्न यह होता है कि उन्होंने किसको परब्रह्म का सन्देश देकर सत्य मार्ग पर लगाया था?

लिखी बड़ाई पैगंमरों, तिन की कहां गई नसीहत।

अजूं ठाढ़ी उनों की उमतें, देखो पत्थर आग पूजत॥४१॥

कुरआन में जिन पैगम्बरों की इतनी महिमा गायी गयी है, उनकी शिक्षा का क्या लाभ हुआ? यह विचारणीय प्रश्न है। यदि गम्भीरतापूर्वक देखा जाये, तो आज भी उनके अनुयायी पत्थरों तथा अग्नि आदि जड़ पदार्थों की पूजा कर रहे हैं।

भावार्थ- पारसी लोग जहाँ अग्नि की पूजा करते हैं, वहीं मुस्लिम लोग भी कब्रों तथा मजारों पर चादर आदि चढ़ाते हैं और मन्नत माँगते हैं। यह भी एक प्रकार की जड़ पूजा है। यही स्थिति ईसाइयों की भी है।

करी किताबें मनसूख, हुए जमाने रद।

ना मोमिन पीछे तोफान के, जो लो आखिर आए महंमद।।४२।।

यही कारण है कि अब तक की अवतरित हुई सभी किताबों (तौरेत, इंजील आदि) और बीते हुए युगों की महिमा को समाप्त प्रायः कर दिया गया, क्योंकि रास लीला के पश्चात् जब तक मल्की मुहम्मद (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) नहीं आये थे, तब तक इस संसार में ब्रह्मसृष्टियाँ ही नहीं आयी थीं।

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों और अक्षरातीत के इस संसार में

आने पर पैगम्बरों तथा उनके ग्रन्थों की महत्ता नगण्य हो गयी। इसे ही रद्द करना कहा गया है।

रात बड़ी है रास की, कही सुके और व्यास।

ता बीच लीला अखंड, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टी प्रकास॥४३॥

शुकदेव और व्यास जी ने भागवत में रास की रात्रि को बहुत बड़ी (अनन्त) कहा है, जिसमें परब्रह्म और ब्रह्मसृष्टियों के बीच होने वाली रास लीला अभी भी अखण्ड रूप से हो रही है।

मृतलोक और स्वर्ग की, ब्रह्मा और नारायण।

रास रात के बीच में, ए चारों दरम्यान॥४४॥

रास की रात्रि इतनी बड़ी है कि इस पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक, ब्रह्मा, और नारायण की रात्रि भी इसके समक्ष

छोटी पड़ती है।

भावार्थ- रास लीला सबलिक के महाकारण में हो रही है, जो अखण्ड है। इस रात्रि को अनन्त ही कहा जायेगा, इसलिए इस रात्रि की तुलना क्षर जगत् की किसी भी रात्रि से नहीं की जा सकती।

रात कही कदर की, बोहोत बड़ी है सोए।

फिरत चिरागें इनमें, चांद सूर ए दोए॥४५॥

कुरआन में लैल-तअल-कद्र की रात्रि को बहुत बड़ी कहा गया है। इस रात्रि में चन्द्रमा और सूर्य दो दीपक के समान घूमते हुए कहे गये हैं।

भावार्थ- लैल-तअल-कद्र की रात्रि के तीन भाग हैं, जिसमें ब्रज, रास, और जागनी के तीनों ब्रह्माण्ड समाहित हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में इस संसार में

इससे बड़ी कोई रात्रि हो ही नहीं सकती। ब्रज की लीला दिन और रात दोनों समय की है। यही स्थिति जागनी लीला की है। इस प्रकार दोनों लीलाओं में सूर्य और चन्द्रमा दोनों का अस्तित्व है, जबकि रास की रात्रि में केवल चन्द्रमा का अस्तित्व है।

ब्रह्मलीला तीनों ब्रह्मांड की, सो जाहेर होसी सुख ब्रह्म।

दे मुक्त सब दुनी को, ब्रह्मसृष्टी लेसी कदम॥४६॥

ब्रह्मसृष्टियों को सुख देने के लिए तीनों ब्रह्माण्डों में होने वाली ब्रह्मलीला तारतम वाणी से उजागर हो जायेगी। ब्रह्मसृष्टियाँ इस ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति देकर धनी के चरणों में अपने मूल तन में जाग्रत हो जायेंगी।

मोमिन तीनों तकरार में, जाहेर होसी लैलत कदर।

एक दीन होसी दुनी में, सुख कायम बखत फजर॥४७॥

कियामत के समय में जब तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलेगा, तो लैल-तुल-कद्र के तीनों तकरार में मोमिनों के साथ होने वाली लीला जाहिर हो जायेगी और सारे संसार में एक सत्य धर्म की स्थापना होगी। तत्पश्चात् सबको अखण्ड मुक्ति का सुख प्राप्त होगा।

ब्रह्मसृष्टी प्रेम लच्छ में, कुमारिका ईस्वर।

तीसरी जीवसृष्ट दुनियां, वेद केहेत यों कर॥४८॥

वेदों (हिन्दू धर्मग्रन्थों) में कहा गया है कि ब्रह्मसृष्टियाँ प्रेममयी लक्षणों वाली होती हैं। कुमारिकाओं को ईश्वरीसृष्टि कहा गया है, और तीसरी जीवसृष्टि है जो मायावी होती है।

खास रूहें उमत की, और मुतकी दीन इसलाम।

और तीसरी खलक, ए तीनों कहे अल्ला कलाम॥४९॥

कुरआन में तीन प्रकार की सृष्टि कही गयी है। ब्रह्मसृष्टियों को खास उम्मत कहा गया है। ईश्वरीय सृष्टि को सच्चे धर्म एवं परब्रह्म पर श्रद्धा रखने वाली मुतकी, और जीवसृष्टि को आम खलक कहा गया है।

भावार्थ— कहीं-कहीं पर ब्रह्मसृष्टि को खासल खास तथा ईश्वरीय सृष्टि को खास भी कहा गया है। इसे अटूट विश्वास रखने वाली भी कहा जाता है। कुरआन के सि. १८ सू. २३ आ. १२ "व ल-कद्..... मिन् तीन" तथा पार: १७ सूरत २२ आयत ७८ "मुस्लिमीन्" और पा. १८ सू. २३ आ. १ "मुअमिनून्" में यह प्रसंग वर्णित है।

ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत से, ईश्वरी सृष्टि अछर से।

जीव सृष्टि बैकुंठ की, ए जो गफलत में॥५०॥

ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत की अङ्गरूपा है, ईश्वरी सृष्टि अक्षरधाम से आयी है, तथा जीवसृष्टि वैकुण्ठ की है जो संशयात्मक होने के कारण जन्म-मरण के चक्र में भटकती रहती है।

रूहें उमत कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती।

और आम खलक तारीक से, सो सब कुंन से मलकूती॥५१॥

कुरआन में रूहों को लाहूत अर्थात् परमधाम से आया हुआ कहा गया है, फरिश्तों को जबरूत (अक्षरधाम) से आया हुआ कहा गया है, तथा आम खलक अर्थात् जीवसृष्टि मोहसागर से कुन्न कहने से उत्पन्न हुई है। इसका मूल घर वैकुण्ठ है।

बुध नेहेकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर।

असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजूर॥५२॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों में लिखा है कि श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक (श्री प्राणनाथ जी) प्रकट होकर अज्ञान रूपी कलियुग को नष्ट कर देंगे तथा तारतम ज्ञान के प्रकाश में सबके हृदय में विद्यमान तमोगुणी (पाश्विक) प्रवृत्तियों को समाप्त कर अखण्ड मुक्ति को प्रदान करेंगे।

विजिया-अभिनन्द-बुध जी, लिखी एही सरत।

ब्रह्मसृष्ट जाहेर होए के, सब को देसी मुक्त॥५३॥

धर्मग्रन्थों में ऐसा लिखा हुआ है कि विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक श्री प्राणनाथ जी और ब्रह्ममुनि इस संसार में तारतम वाणी के प्रकाश में उजागर हो जायेंगे तथा सबको अखण्ड मुक्ति देंगे।

ईसे के इलम से, होसी सबे एक दीन।

ए दज्जाल को मार के, देसी सबों आकीन॥५४॥

कुरआन का कथन है कि तारतम ज्ञान के प्रकाश में सारा संसार एक सत्य धर्म को मानने लगेगा। परब्रह्म के आनन्द स्वरूप श्यामा जी (रुहुल्लाह) द्वारा अज्ञान रूपी दज्जाल को मारकर एक परमसत्य पर विश्वास दिलाया जायेगा।

चरन रज ब्रह्मसृष्ट की, ढूँढ़ थके त्रैगुन।

कई विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन॥५५॥

ब्रह्मसृष्टियों की चरणरज पाने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि ने अनेक प्रकार की कठोर तपस्यायें की तथा ढूँढते-ढूँढते थक गये, किन्तु प्राप्ति नहीं हुई। ऐसा श्रीमद्भागवत् के वचनों में कहा गया है।

भावार्थ- श्रीमद्भागवत् स्कन्ध १० अध्याय १४ श्लोक ३४ में ब्रह्मा जी द्वारा श्री कृष्ण जी की स्तुति करते हुए कहा गया है-

तद् भूरिभाग्यमिह जन्म किमप्यटव्यां यद् गोकुलेऽपि कतमाड प्रियरजोऽभिषेकम्।

यज्जीवितं तु निखिलं भगवान् मुकुन्दस्त्वद्यापि यत्पदरजः श्रुतिमृग्यमेव॥

हे प्रभो! इस ब्रज भूमि के किसी वन में और विशेष करके गोकुल में किसी भी योनि में जन्म हो जाये, तो वह हमारे लिये सौभाग्य की बात होगी, क्योंकि यहाँ जन्म हो जाने पर आपके किसी न किसी प्रेमी के चरणों की धूलि अपने ऊपर पड़ ही जायेगी। आपके प्रेमी ब्रजवासियों का सम्पूर्ण जीवन आपका ही है। आप ही उनके जीवन के एकमात्र सर्वस्व हैं। इसलिये उनके चरणों की धूलि का मिलना आपके ही चरणों की धूलि मिलना है और आपके चरणों की धूलि को तो श्रुतियाँ भी अनादि काल से अब

तक ढूँढ ही रही हैं।

करसी पाक चौदे तबक को, लाहूती उमत।

देसी भिस्त सबन को, ऐसी कुरान में सिफत॥५६॥

कुरआन में ब्रह्मसृष्टियों की इस प्रकार महिमा गाई गयी है कि वह चौदह लोकों के इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को पवित्र करेंगी तथा सबको अखण्ड मुक्ति देंगी।

भावार्थ- कुरआन के सि. ३० सू. १७. आ. ३-५ में यह प्रसंग लिखा हुआ है कि "लैल-तुल-क़दरि.....फ़ज़रि" अर्थात् उसमें फरिश्ते व रूह अपने परवरदिगार के हुक्म से (पृथ्वी) पर अवतरित होते हैं। हर कार्य हेतु वह रात सुबह तक है।

पा. ३० सू. ९४ आ. १७ "व सयुजन्नबुहल.....अत्क" अर्थात् एवं सर्वश्रेष्ठ संयमी को बचा लेंगे।

पा. २९ सू. ७२ आ. १ "अिन्ना असलिना..... अलीमुन" अर्थात् हमने नूह को उसके समुदाय में अवतरित किया।

आयत- २८ "रब्बिगफिरली..... वल मुअमिनात्" अर्थात् ऐ परब्रह्म! मुझको और मेरे माता-पिता एवं जो मेरा समुदाय है, उनको क्षमा प्रदान कर ताकि वह आपकी कृपा दृष्टि में आ जायें।

बरस मास और दिन लिखे, सरत भांत बिध सब।

बड़ाई ब्रह्मसृष्ट की, ए जो लीला होत है अब॥५७॥

इस समय जो जागनी लीला हो रही है, उसके सम्बन्ध में तथा ब्रह्मसृष्टियों के इस संसार में आने के सम्बन्ध में वर्ष, मास, और दिन की भी तिथि लिखी हुई है। यह भी लिखा हुआ है कि किस प्रकार से कहाँ-कहाँ प्रकट

होकर लीला करेंगी। इस प्रकार, धर्मग्रन्थों में ब्रह्मसृष्टियों की अपार महिमा गाई गयी है।

भावार्थ- पुराण संहिता के अध्याय ३१ श्लोक ३२, ३३ में यह बताया गया है कि वे किस समय इस संसार में आयेंगी तथा इसी अध्याय के श्लोक ७२ से ७६ तक में यह बताया गया है कि वे भारत के किस प्रान्त में कितनी संख्या में आयेंगी। श्लोक ७७ से लेकर ८० तक में यह दर्शाया गया है कि उनके स्पर्श एवं वार्ता मात्र से संसार के प्राणी किस प्रकार पवित्र हो जायेंगे। श्लोक ५२ से लेकर ७० तक में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार परमधाम की दो आत्माएँ श्री देवचन्द्र जी तथा मिहिरराज जी के नाम वाले तन को धारण करेंगी।

साल मास और दिन लिखे, कौल कयामत हकीकत।

सिफत उमत मोमिनो, ए जो जाहेर होत आखिरत॥५८॥

कुरआन में कियामत के प्रकट होने के सम्बन्ध में वर्ष, मास, और दिन की भी तिथि लिखी हुई है। इसी प्रकार, मोमिनो (ब्रह्ममुनियो) की महिमा भी लिखी हुई है, जो अब कियामत के समय जाहिर हो रही है।

विजिया-अभिनंद-बुधजी, और नेहेकलंक अवतार।

कायम करसी सब दुनियां, त्रिगुन को पोहोंचावें पार॥५९॥

धर्मग्रन्थों में लिखा हुआ है कि विजयाभिनन्द बुद्ध (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) और विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक (श्री प्राणनाथ जी)– ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव सहित संसार के सभी जीवों को निराकार से पार करके बेहद मण्डल में मुक्ति देंगे।

भावार्थ- यह प्रसंग बृहद्सदाशिव संहिता के श्लोक १८, १९, तथा पुराण संहिता अध्याय ३१ श्लोक १०३, १०४, एवं बुद्ध गीता में वर्णित है।

महंमद मेंहेदी आवसी, और ईसा हजरत।

ले हिसाब भिस्त देसी सबों, कायम करसी इन सरत॥६०॥

कुरआन में लिखा है कि हज़रत ईसा (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) तथा आखरूल इमाम मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी) कियामत के समय संसार में आयेंगे और सबके कर्मों के अनुसार बेहद मण्डल में अखण्ड मुक्ति देंगे।

अखंड वतन इत जाहेर, और जाहेर सुख ब्रह्म।

बुध विजिया-अभिनंद जाहेर, जाहेर काटे दुनी के करम॥६१॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों में लिखा है कि विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक (श्री प्राणनाथ जी) इस संसार में आकर जीवों को शुभ-अशुभ कर्मों के बन्धन से मुक्त कर अखण्ड मुक्ति देंगे, तथा तारतम वाणी के प्रकाश में अखण्ड परमधाम की शोभा, लीला, एवं अक्षरातीत का अखण्ड आनन्द प्रकाशित हो जायेंगे।

विशेष- पुराण संहिता तथा माहेश्वर तन्त्र में इस विषय से सम्बन्धित विशेष सामाग्री है।

भिस्त होसी इत जाहेर, और जाहेर दोजक।

काजी कजा इत जाहेर, और जाहेर होसी सबों हक॥६२॥

कुरआन में लिखा है कि जब आखरुल इमाम मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी) तारतम वाणी के प्रकाश में न्याय करेंगे, तो संसार के सभी प्राणियों को सच्चिदानन्द

परब्रह्म की पहचान हो जायेगी, तथा सबको यह भी विदित हो जायेगा कि बेहद मण्डल में अखण्ड होने वाली आठ बहिश्ते कौन-कौन सी है, किस-किस को उसकी प्राप्ति होगी, तथा यह भी मालूम हो जायेगा कि परब्रह्म पर विश्वास न करने वालों को किस प्रकार प्रायश्चित (दोजख) की अग्नि में जलना पड़ेगा।

कई हुए ब्रह्मांड कई होएसी, पर ए लीला न हुई कब।

विलास बड़ो ब्रह्मसृष्ट में, सुख नयो पसरसी अब॥६३॥

अब तक अक्षर ब्रह्म द्वारा असंख्य ब्रह्माण्ड बन चुके हैं, लय हो चुके हैं, तथा भविष्य में बनते रहेंगे, किन्तु इस समय जो जागनी लीला चल रही है, वैसी न तो कभी हुई है और न कभी होगी। तारतम वाणी के प्रकाश में जाग्रत होने वाली ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम के अपार सुखों का

अनुभव होगा। जाग्रत हो जाने से उन्हें अब विशेष प्रकार के नये सुख का अनुभव होगा।

कई दुनी हुई कई होएसी, पर कबू न जाहेर उमत।

दे भिस्त चौदे तबकों, करें बखत रोज कयामत॥६४॥

अब तक असंख्य बार दुनिया बनकर लय हो गयी तथा भविष्य में भी बनती रहेगी, किन्तु आज दिन तक परमधाम की आत्माएँ (रूहें) इस संसार में कभी जाहिर नहीं हुई थीं। कुरआन में कहा गया है कि कियामत के समय परमधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ चौदह लोक वाले इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के जीवों को आठ बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति देंगी।

रसम करम कांड की, हुती एते दिन।

अब इलम बुधजीयके, दर्ई सबों प्रेम लछन॥६५॥

आज दिन तक इस संसार में कर्मकाण्ड के नियमों का पालन होता रहा है। अब जाग्रत बुद्धि के ज्ञान ने सभी को अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति का मार्ग बता दिया है।

सरीयत बंदगी करे फरज ज्यों, सो करते एते दिन।

महंमद मेंहेदी जाहेर होए के, इस्क दिया सबन॥६६॥

आज दिन तक लोग शरीयत की बन्दगी (कलमा, रोजा, निमाज, हज, और जकात) को ही अपना कर्त्तव्य समझकर निभाते रहे हैं। अब श्री प्राणनाथ जी ने आकर सबको इश्क (प्रेम) का मार्ग दर्शाया है।

पेहेचान बुध नेहेकलंक, और पेहेचान ब्रह्मसृष्ट।

याकी अस्तुत निगम करे, किन सुन्या न देख्या दृष्ट॥६७॥

श्रीमुखवाणी के प्रकाश में सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी एवं विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी तथा उन ब्रह्मसृष्टियों की पहचान सभी को हो गयी है, जिनकी महिमा वेद भी गाते हैं। जिन्हें न तो अब तक किसी ने देखा था और न किसी से कुछ सुना ही था।

पेहेचान महंमद रूहअल्ला, और पेहेचान मोमिन।

तोरा सबों पर इनका, यों कहे कुरान रोसन॥६८॥

इल्म-ए-लुदुन्नी (तारतम ज्ञान) ने उन रूहुल्लाहु (श्यामा जी), आखरूल इमाम मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी), तथा उन मोमिनों (ब्रह्ममुनियों) की पहचान करा दी है, जिनके विषय में कुरआन का कथन

है कि सारे संसार पर इन्हीं का आदेश चलेगा।

तीन सरूप कहे वेद ने, बाल किसोर बुढ़ापन।

बृज रास प्रभात को, ए बुध जी को रोसन॥६९॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों में बाल, किशोर, तथा वृद्धावस्था का वर्णन किया गया है। श्री प्राणनाथ जी ने इस रहस्य को प्रकट कर दिया कि ब्रज की लीला बाल्यावस्था जैसी है, रास की लीला किशोरावस्था की है, तथा जागनी की लीला ज्ञान के उजाले की है।

भावार्थ- "अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदा" अर्थात् ज्ञान से रहित व्यक्ति बालक कहलाता है तथा ज्ञान देने वाला वृद्ध कहा जाता है। ब्रज लीला में अक्षर ब्रह्म को पूरी नींद थी, इसलिये उसे बाल स्वरूप की लीला के अन्तर्गत माना गया। रास में प्रेम का विलास

था, जो कुछ नींद और कुछ जाग्रति का था, अतः उसे किशोर स्वरूप की लीला कहा गया। जागनी ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान का अवतरण हुआ है, इसलिये इस स्वरूप को ज्ञान वाला (वृद्धावस्था का) स्वरूप कहा जाता है।

ब्रह्मलीला ब्रह्मसृष्ट में, चढ़ती चढ़ती कहे वेद।

प्रेम लच्छ दोऊ कहे, किए जाहेर बुधजीएँ भेद॥७०॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों (पुराण संहिता तथा माहेश्वर तन्त्र) में कहा गया है कि परब्रह्म तथा ब्रह्मसृष्टियों के मध्य होने वाली ब्रह्मलीला में प्रेम की उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी है। इस रहस्य को भी श्री प्राणनाथ जी ने प्रकट किया है।

भावार्थ— ब्रज, रास की लीला में प्रेम लक्ष्यविहीन था। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी का कथन है—

ब्रह्मसृष्ट हुती ब्रज रास में, प्रेम हुतो लछ बिन।

सिनगार १/४७

व्रज में न मूल सम्बन्ध का पूर्ण ज्ञान था और न मूल घर का। रास में सम्बन्ध का पता तो था, किन्तु घर का पता नहीं था। इस जागनी लीला में घर का भी पता है तथा मूल सम्बन्ध का भी पता है। तारतम वाणी द्वारा जाग्रत होने वाली आत्मा व्रज के ५२ दिन के वियोग की लीला जैसी भूल नहीं कर सकती। इस प्रकार, जागनी लीला का प्रेम अधिक परिपक्व है।

साहेब के संसार में, आए तीन सरूप।

सो कुरान यों केहेवहीं, सुंदर रूप अनूप॥७१॥

कुरआन में कहा गया है कि परब्रह्म के आदेश से बनाये गये इस संसार में अति सुन्दर तीन स्वरूप आये।

एक बाल दूजा किसोर, तीसरा बुढ़ापन।

सुंदरता सुग्यान की, बढ़त जात अति घन॥७२॥

पहला स्वरूप बालक का था जो ब्रज में था। रास का स्वरूप किशोरावस्था का था, तथा तीसरा स्वरूप जागनी का है जो ज्ञान स्वरूप (वृद्धावस्था का) है। इसी ज्ञान स्वरूप अवस्था में श्री प्राणनाथ जी आये हैं। इस तीसरे स्वरूप में ज्ञान की सुन्दरता है, जो पल-पल अत्यधिक होती जा रही है।

ज्यों चढ़ती अवस्था, बाल किसोर बुढ़ापन।

यों बुध जाग्रत नूर की, भई अधिक जोत रोसन॥७३॥

जिस प्रकार बाल्यावस्था से किशोरावस्था तत्पश्चात् वृद्धावस्था में उम्र की अधिकता होती जाती है, उसी प्रकार तीनों अवस्थाओं की लीला (ब्रज, रास, एवं

जागनी) में जाग्रत बुद्धि के ज्ञान का प्रकाश उत्तरोत्तर बढ़ता गया है।

ए केहेती हों प्रगट, ज्यों रहे न संसे किन।

खोल माएने मगज मुसाफ के, सब भाने विकल्प मन॥७४॥

उपरोक्त बातों को मैंने प्रत्यक्ष रूप से इसलिये कहा है कि किसी के भी मन में किसी प्रकार का संशय न रह जाये। मैं सभी धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्यों को इसलिये स्पष्ट कर रहा हूँ, जिससे कि मन के सभी संशय समाप्त हो जायें।

श्री कृष्णजीएँ बृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टी मन काम।

सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम॥७५॥

ब्रह्मसृष्टियों के मन में जो प्रेम की इच्छा थी, श्री कृष्ण

जी ने ब्रज और रास में उसे पूर्ण किया। वही स्वरूप जब अरब में कुरआन लेकर आया, तो वह रसूल कहलाया।

चौथा सरूप ईसा रूह अल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम।

पाँचवां सरूप निज बुध का, खोल माएने भए इमाम॥७६॥

चौथा स्वरूप धनी श्री देवचन्द्र जी का है, जो तारतम ज्ञान द्वारा परमधाम की वास्तविकता को इस संसार में लेकर आये हैं। पाँचवा स्वरूप परब्रह्म की निजबुद्धि का है, जो सभी धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करके आखरूल इमाम मुहम्मद महदी के रूप में शोभायमान हुए।

द्रष्टव्य- निजबुद्धि अक्षरातीत की है, जिसमें इश्क का रस होता है। जाग्रत बुद्धि अक्षर ब्रह्म की है, जो विशुद्ध ज्ञानमयी होती है। यद्यपि ये दोनों ही जाग्रत हैं, किन्तु

इनकी लीला की भूमिका अलग-अलग है।

ए भी पाँच सरूप का, है बेवरा मांहें कुरान।

जो कछू लिख्या भागवत में, सोई साख फुरमान॥७७॥

कुरआन में भी इन पाँचों स्वरूपों (ब्रज, रास, अरब, श्री देवचन्द्र जी, तथा श्री प्राणनाथ जी) का विवरण दिया गया है। जो कुछ भागवत में लिखा हुआ है, उसकी साक्षी कुरआन में भी है।

एही बड़ी इसारत, इमाम की पेहेचान।

सबको सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान॥७८॥

कुरआन में ऐसा कहा गया है कि इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी संसार के सभी मतों के अनुयायियों को उनके ही धर्मग्रन्थों से समझाएंगे। श्री प्राणनाथ जी की

पहचान के लिए यह एक बहुत बड़ी सांकेतिक बात (तथ्य) है।

वेद कहे बुध इनपे, और बुध सुपन।

एही सब को जगाए के, देसी मुक्त त्रैगुन॥७९॥

हिन्दू धर्मग्रन्थों (पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र, बुद्ध गीता, बृहद् सदाशिव संहिता आदि) में कहा गया है कि श्री प्राणनाथ जी के पास जाग्रत बुद्धि है, जबकि संसार के लोगों के पास स्वप्न की बुद्धि है। यही श्री प्राणनाथ जी ब्रह्मा, विष्णु, शिव सहित संसार के सभी जीवों को जाग्रत कर अखण्ड मुक्ति देंगे।

हिन्दू कहे धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम।

कहया हमारा होएसी, साहेब आगे हम॥८०॥

हिन्दू कहते हैं कि हमारे भविष्य के ग्रन्थों में लिखा है कि कलियुग के प्रथम चरण में सच्चिदानन्द परब्रह्म स्वयं आयेंगे। हमारा यह कथन उस समय पूर्णतया सच होगा, जब हम परब्रह्म के सन्मुख होकर उनका दर्शन करेंगे।

भावार्थ- पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र, बृहद् सदाशिव संहिता, भविष्य दीपिका, भविष्योत्तर पुराण, श्रीमद्भागवत् आदि ग्रन्थों में परब्रह्म के प्रकट होने का वर्णन किया गया है। पुराण संहिता में तो स्पष्ट कहा गया है—

अगाधाज्ञानजलधौ पतितासु प्रियासु च।

स्वयं कृपामहाम्भोधौ ममज्ज पुरुषोत्तमः॥

अर्थात् अज्ञान के अगाध सागर में प्रियाओं के गिर जाने पर प्रियतम परब्रह्म स्वयं अपने कृपा रूपी महासागर में उन्हें स्नान करायेंगे।

मुसलमान कहें आवसी, सो हमारा खसम।

लिख्या है कतेब में, आगे नबी हमारा हम॥८१॥

मुसलमान कहते हैं कि कियामत के समय हमारा अल्लाह तआला आयेगा। यह बात हमारे धर्मग्रन्थों में लिखी है कि हमारे मुहम्मद स.अ.व. भी अल्लाह तआला के साथ होंगे और हम उनका दर्शन करेंगे।

ईसा अल्ला आवसी, कहे किताब फिरंगान।

किल्ली भिस्त जो याही पे, खोल देसी नसरान॥८२॥

ईसाइयों के धर्मग्रन्थ बाइबिल में लिखा है कि ईसा मसीह आयेंगे। उनके पास बहिश्तों की कुञ्जी होगी और ईसाइयों को वह बहिश्तों में अखण्ड करायेंगे।

भावार्थ— बाइबिल के New testament में कहा गया है—

My sheep recognize my voice; I know them, and they follow me. (John 10:27)

Yes, be patient and take courage, for the coming of the Lord is near. The great Judge is coming. (James 5:8–9)

यों लड़ के लोक जुदे हुए, पर खसम न होवे दोए।

रब आलम का ना टरे, जो सिर पटके कोए॥८३॥

इस प्रकार आपस में लड़कर संसार के सभी लोग अलग-अलग मत-पन्थों में बँट गये, किन्तु परमात्मा तो दो नहीं हो सकते। भले कोई कितना ही सिर पटके अर्थात् कोई कितना भी प्रयास क्यों न करे, संसार का एक ही परब्रह्म है, उसके समान कोई भी दूसरा नहीं है। अलग-अलग मतों के अलग-अलग परमात्मा नहीं हो

सकते।

यों सब जाहेर पुकारहीं, कोई माएने ना समझत।

ए माएने मगज इमाम पे, दूजा कौन खोले मारफत॥८४॥

इस प्रकार सभी मतों के लोग अलग-अलग नामों से परमात्मा को पुकारते हैं, किन्तु धर्मग्रन्थों के यथार्थ आशय को न समझने के कारण परमात्मा के सम्बन्ध में अलग-अलग मान्यता गढ़ लेते हैं। धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्य तो श्री प्राणनाथ जी के पास हैं और उनके अतिरिक्त और कौन दूसरा हो सकता है जो एक सच्चिदानन्द परब्रह्म की वास्तविक पहचान दे सके।

यों आए तीनों सरूप, धर धर जुदे नाम।

सो कारन ब्रह्म उमत के, गुझ जाहेर किए अलाम॥८५॥

इस प्रकार ब्रह्मसृष्टियों के लिए ये तीनों स्वरूप अलग-अलग नामों से इस संसार में अवतरित हुए। श्री प्राणनाथ जी ने धर्मग्रन्थों के सभी गुह्य भेदों को ब्रह्मसृष्टियों के लिए जाहिर किया है।

भावार्थ- तीनों स्वरूपों के नाम इस प्रकार हैं- पहला बाल मुकुन्द, दूसरा बांके बिहारी, तीसरा श्री प्राणनाथ जी।

सुर असुर अदयाप के, करत लड़ाई दोए।

ए द्वेष साहेब बिना, मेट ना सके कोए॥८६॥

सृष्टि के प्रारम्भ से ही सुर और असुर दोनों आपस में लड़ते रहे हैं। इनके द्वेष को श्री प्राणनाथ जी के बिना भला और कौन मिटा सकता है।

द्वेष जो लाग्या पेड़ से, सब सोई रहे पकर।

साधो द्वेष मिटावने, उपाय थके कर कर॥८७॥

सृष्टि के प्रारम्भ से ही जो सुर और असुरों में द्वेष प्रारम्भ हुआ, आज भी उनके वंशजों ने उसी वैर भाव को बनाये रखा है। अनेक बड़े-बड़े सन्तों ने इस द्वेष को मिटाने का प्रयास किया, लेकिन कोई भी सफल नहीं हो सका।

कई अवतारों बल किए, कई बल किए तीर्थकर।

द्वेष अद्यापी ना मिट्या, कई फरिस्ते पैगंमर॥८८॥

इस द्वेष को मिटाने के लिए कई अवतारों तथा तीर्थकरों ने बहुत प्रयास किया। इसी प्रकार असुर पक्ष के कई फरिश्तों और पैगम्बरों ने भी इस द्वेष भावना को समाप्त करने का प्रयास किया, किन्तु वह द्वेष अब तक भी मिट नहीं पाया।

भावार्थ- सतोगुण और तमोगुण एक-दूसरे के विपरीत गुण वाले हैं, इसलिए विपरीत स्वभाव वाले मनुष्य में संघर्ष होना स्वाभाविक है। देवता सतोगुण के प्रतीक हैं तथा असुर तमोगुण के प्रतीक हैं। देवताओं के वंशज वर्तमान में हिन्दू हैं तथा असुरों के वंशज मुसलमान हैं। इसी प्रकरण की ९२ चौपाई में कहा गया है- "वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान।"

उपरोक्त कथन से यह सिद्ध है कि हिन्दुओं को देव तथा मुसलमानों को असुर कहा गया है, किन्तु यह ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि जो माँस खाता है, शराब पीता है, दुराचार करता है, दूसरों के धन का अपहरण करता है, भले ही वह हिन्दू घर में क्यों न पैदा हुआ हो, असुर ही कहलायेगा। इसके विपरीत, मुस्लिम घर में जन्म लेने पर भी यदि कोई सूफी फकीर की तरह जीवन व्यतीत

करता हैं, माँस और शराब से दूर रहता है, तो वह देवता कहलाने के योग्य है, जैसे— रहीम, रसखान, राबिया बसरी, हव्वा खातून, लाली बीबी, मलिक मुहम्मद जायसी, साईं बुल्लेशाह आदि। रावण विश्रवा मुनि का पुत्र था तथा पुलत्स्य मुनि का पोता था, फिर भी माँसाहार आदि बुरे कर्मों के कारण राक्षस कहलाया। कंस भी श्री कृष्ण का सगा मामा था, किन्तु वह भी राक्षस कहलाया।

इससे यह स्पष्ट है कि मनुष्य अपने आचरण से ही देवता या राक्षस बनता है। सामान्यतया भारतीय संस्कृति में माँसाहार, शराब, परस्त्री गमन आदि कार्यों को महापाप समझा जाता है, इसलिए इसको देवभूमि कहते हैं। भारत से बाहर अन्य सभी देशों में माँसाहार, शराब, हिंसा, दुराचार आदि पाप कर्मों की अधिकता है, इसलिए वहाँ की प्रजा को आसुरी प्रजा कहा जाता है।

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन।

सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन॥८९॥

श्री प्राणनाथ जी इस संसार में तीन कार्य करने के लिए आये हैं। चाहे लौकिक विवाद हो या धार्मिक, सबका समाधान करके प्रेम और शान्ति का साम्राज्य स्थापित करना उनका मूल उद्देश्य है।

बोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और।

वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर॥९०॥

तारतम वाणी का प्रकाश देकर हिन्दुओं तथा मुसलमानों के झगड़ों को मिटाने, वंशवाद के आधार पर पैगम्बरी के विवादों को समाप्त करने, और एक परमसत्य की पहचान देकर हिन्दुओं एवं मुसलमानों से वेद-कतेब छुड़ाने के लिये धाम धनी इस संसार में आए।

दो बेटे रूह अल्ला के, एक नसली और नजरी।

भई लड़ाई इन वास्ते, मसनन्द पैगंमरी॥९१॥

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के दो पुत्र थे— नस्ली अर्थात् शरीरजन्य बिहारी जी, और नजरी अर्थात् मानसिक पुत्र श्री मिहिरराज जी। इन दोनों में आध्यात्मिक सन्देशवाहक की प्रमुखता (पैगम्बर की गादी) प्राप्त करने के लिये विरोध हो गया।

वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान।

मूल माएने उलटाए के, कई जाहेर किए तोफान॥९२॥

हिन्दुओं में वेद का अवतरण हुआ तथा मुसलमानों में कुरआन अवतरित हुआ। इन दोनों ने अपने धर्मग्रन्थों के मूल कथन के विपरीत अर्थ किया, जिसके परिणाम स्वरूप दोनों में बहुत से भयंकर युद्ध हुए।

मेटन लड़ाई बन्दन की, और जादे पैगंमर।

धनी आए वेद छुड़ावने, ए तीन बातें चित्त धर॥९३॥

हिन्दू-मुसलमानों के झगड़ों को समाप्त करने, वंशवाद के आधार पर धार्मिक नेतृत्व का अधिकार प्राप्त करने के लिये होने वाले विवादों को समाप्त करने, तथा तारतम वाणी के प्रकाश में वेदों के गुह्य अर्थों द्वारा एक परब्रह्म की पहचान कराकर वेदों के बाह्य अर्थों में भटकने से बचाने के लिये धाम धनी संसार में आये।

भावार्थ- परब्रह्म के उपासकों (हिन्दुओं) तथा खुदा के बन्दों (मुसलमानों) का विरोध तारतम वाणी के प्रकाश में परमसत्य का बोध होने पर ही समाप्त होगा। आध्यात्मिक क्षेत्र में धर्मग्रन्थ (तारतम वाणी, वेद, कुरआन आदि) के कथन को नकारकर, यदि ऐसे व्यक्ति के कथन को प्राथमिकता दी जाती है जो न तो स्वयं धर्मग्रन्थों के

रहस्य को जानता हो और न आध्यात्मिक अनुभूतियों से सुशोभित हो, तो ऐसी स्थिति में समाज आध्यात्मिक पतन के मार्ग पर चल पड़ता है। वंशवाद के आधार पर या कुछ व्यक्तियों (ट्रस्टियों) की सहमति से यदि आध्यात्मिक व्यक्तित्व से रहित व्यक्तियों को किसी स्थान विशेष का प्रमुख घोषित कर दिया जाता है और गादी परम्परा की ओट में उसके कथन को अन्तिम सत्य मानने के लिये विवश किया जाता है, तो समाज का बौद्धिक, आध्यात्मिक, तथा नैतिक पतन निश्चित है।

श्री प्राणनाथ जी को किसी भी स्थिति में यह विकृत परम्परा स्वीकार नहीं थी, इसलिये अपनी अन्तर्धान लीला के पश्चात् अपनी प्रेरणा से उन्होंने अपने सिंहासन पर तारतम वाणी को पधरवाया, जिससे ब्रह्मवाणी के कथनों की प्राथमिकता हो, व्यक्ति विशेष की नहीं। सत्य

को झुठलाकर एक दर्जी और एक बढ़ई की सम्मिलित रचना "गादी" की महिमा फैलाना समाज के अधःपतन का संकेत देता है। किसी अलौकिक व्यक्तित्व के आसन का सम्मान करना तो ठीक है, किन्तु उसकी आरती, पूजा, एवं भोग किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।

जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध।

मन चाहया सरूप होए के, कारज किए सब सिध॥९४॥

जिसके हृदय में जैसी भावना थी, उसे धाम धनी उसी रूप में मिले। उसके भावों के अनुरूप ही प्रियतम अक्षरातीत ने स्वरूप धारण किया तथा उसकी सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूर्ण किया।

भावार्थ— जब श्री प्राणनाथ जी बंगला जी में चर्चा करते थे, तो सुन्दरसाथ को उनके भावों के अनुसार युगल

स्वरूप श्री राजश्यामा जी, बाल मुकुन्द, रास बिहारी श्री कृष्ण, मुहम्मद स.अ.व., तथा सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के रूप में दर्शन हुआ करते थे। सुन्दरसाथ को आवेश लीला के समय यह सौभाग्य प्राप्त होता था, जिसमें वे अपनी भौतिक आँखों से ही प्रत्यक्ष दर्शन करते थे।

सो बुध इमाम जाहेर भए, तब खुले सब कागद।

सुख तो सांचो को दिए, और झूठे हुए सब रद॥९५॥

विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक आखरूल इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने के पश्चात् सभी धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्य स्पष्ट हो गये। उनकी कृपा की छत्रछाया में सत्य की राह पर चलने वालों ने अखण्ड सुख प्राप्त किया तथा मिथ्या मार्ग पर चलकर उनसे दूर रहने वाले कुछ

भी प्राप्त नहीं कर पाये।

वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल।

मगज माएने जाहेर किए, माहें गुझ हुते जो बोल॥९६॥

वेदान्त दर्शन, गीता, तथा भागवत में आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान की जो उच्चतम् बातें संकेतों में कही गयी थीं, श्री प्राणनाथ जी ने उनके गुह्यतम् रहस्यों को प्रकाश में ला दिया।

अंजील जंबूर तौरेत, चौथी जो फुरकान।

ए माएने मगज गुझ थे, सो जाहेर किए बयान॥९७॥

इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ने इंजील, जम्बूर, तौरेत, तथा चौथे ग्रन्थ कुरआन के भी अत्यन्त छिपे हुए गुह्य भेदों को तारतम वाणी द्वारा उजागर कर दिया।

ए कागद उमत ब्रह्मसृष्ट को, सोभा आई तिन पास।

माणे इन रोसन किए, तब झूठे भए निरास॥९८॥

इन सभी धर्मग्रन्थों में ब्रह्मसृष्टियों की पहचान छिपी हुई थी। जब तारतम वाणी के प्रकाश में ब्रह्मसृष्टियों ने इन ग्रन्थों के गुह्य रहस्यों को उजागर किया, तो इस अलौकिक कार्य की उन्हें शोभा मिली। परिणाम स्वरूप, जीवसृष्टि के झूठे प्रचारक, जो इन पर अपना दावा करते थे, निराश हो गये।

जब हक हादी जाहेर भए, और अर्स उमत।

सब किताबें रोसन भई, ऊगी फजर मारफत॥९९॥

जब तारतम वाणी के प्रकाश में परमधाम सहित श्री राजश्यामा जी और ब्रह्मसृष्टियों की शोभा, लीला, एवं गरिमा उजागर हो गयी, तो सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य

स्पष्ट हो गये तथा परब्रह्म की पहचान होने से सर्वत्र ही उजाला हो गया।

कहे काफर असुर एक दूसरे, करते लड़ाई मिल।

फुरमान जब रोसन भया, तब पाक हुए सब दिल॥१००॥

मुसलमान हिन्दुओं को काफिर कहते थे तथा हिन्दू मुसलमानों को असुर कहा करते थे। इस प्रकार दोनों आपस में लड़ते रहते थे, किन्तु तारतम वाणी के प्रकाश में जब कुरआन और भागवत के सभी रहस्य स्पष्ट हो गये, तो सबके हृदय में विद्यमान वैर भाव समाप्त हो गया और वे पवित्र हो गये।

भावार्थ— भाषा भेद तथा अनभिज्ञता के कारण यदि कोई हिन्दू कलमा ना पढ़े, मुहम्मद स.अ.व. पर इमान ना लाये, तो उसे किसी भी दृष्टि से काफिर नहीं कहा जा

सकता। जो हिन्दू एक सच्चिदानन्द परब्रह्म पर अटूट आस्था रखे, वेद का स्वाध्याय करे, और पवित्र धार्मिक जीवन जिये, तो उसे काफिर कैसे कहा जा सकता है?

इसी प्रकार मुसलमानों में जो सात्विक आहार करते हैं, बुरे कर्मों से पृथक रहते हैं, तथा सूफियाना जिन्दगी बिताते हैं, उन्हें किसी भी दृष्टि से असुर नहीं कहा जा सकता।

प्रत्येक सम्प्रदाय या वर्ग विशेष में अच्छे-बुरे लोग कम या अधिक मात्रा में अवश्य होते हैं, इसलिए किसी भी सम्प्रदाय के अनुयायियों या वर्ग विशेष को पूर्णतया अच्छा या बुरा नहीं कहा जा सकता।

रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन।

रब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन॥१०१॥

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक संशय और अज्ञानता से भरी हुई जो रात्रि चल रही थी, वह समाप्त हो गयी है। अब तारतम ज्ञान का उजाला फैलने से दिन का समय हो गया है तथा सबके परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी प्रकट हो गये हैं। अब हिन्दू और मुसलमान उनके चरणों में आ रहे हैं।

हाँसी हुई अति बड़ी, झूठों बड़ी जलन।

मेला अति बड़ा हुआ, आखिर सुख सबन॥१०२॥

श्रीमुखवाणी द्वारा परमसत्य के उजागर होने से मिथ्या मार्ग का आलम्बन करने वालों की बड़ी हँसी हुई, जिससे वे ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगे। श्री जी के चरणों में आने वाले सुन्दरसाथ का एक बहुत बड़ा समूह एकत्रित हो गया है। उन सुन्दरसाथ को कियामत की इस घड़ी में

परमधाम के अखण्ड सुखों का अनुभव हुआ।

भावार्थ- इस चौपाई में औरंगजेब के दरबार के अधिकारियों, औरंगाबाद के फतेह मुहम्मद, तथा हिन्दू धर्म के कई विद्वानों की तरफ संकेत किया गया है। ये वही झूठे लोग हैं, जिन्हें अन्त में पछताना पड़ा।

बिना सुख कोई न रहया, सब मन काम पूरन।

अंधेरी कछू न रही, भए चौदे तबक रोसन॥१०३॥

श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आने वाला एक भी सुन्दरसाथ ऐसा नहीं रहा, जिसे परमधाम के अखण्ड सुखों का अनुभव न हो। सबके मन में जो भी आध्यात्मिक इच्छाएँ थीं, वे पूर्ण हो गयीं। किसी के भी मन में किसी भी प्रकार का अज्ञान-भरा संशय नहीं रहा। ऐसा लगने लगा, मानो यह सारा ब्रह्माण्ड ही तारतम

ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित हो रहा है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का कथन श्री पद्मावती पुरी धाम में होने वाली लीला के सम्बन्ध में है। चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलने की बात अतिशयोक्ति अलंकार के रूप में कही गई। योगमाया के ब्रह्माण्ड में सातवें दिन की लीला में यह कथन पूर्ण रूप से चरितार्थ होगा।

मोह तत्व अहं उड़यो, जो परदा ऊपर त्रैगुन।

ए सब बीच द्वैत के, निराकार निरंजन सुन॥१०४॥

श्रीमुखवाणी के उजाले से सत, रज, तम के बन्धन में रहने वाली जीवसृष्टि के हृदय में मोहतत्व-अहंकार का आवरण समाप्त हो गया, अर्थात् उसे यह बोध हो गया कि निराकार, निरञ्जन, या शून्य कहा जाने वाला यह

मोहतत्व-अहंकार का आवरण ही माया है, जो हमें इस द्वैत जगत् में बाँधे है। इससे परे ही स्वलीला अद्वैत ब्रह्म का अखण्ड धाम है।

वचन थके सब इतलों, आगे चले न मनसा वाच।

सुपन सृष्ट खोजे सास्त्रों, पर पाया न अखंड घर सांच॥१०५॥

इसी निराकार तक सभी मनीषियों और धर्मग्रन्थों के वचन आकर रुक जाते थे। किसी के भी मन और वाणी की पहुँच इसके परे नहीं जा पाती थी। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक जीवसृष्टि शास्त्रों में खोजती रही, किन्तु किसी को भी नित्य और शाश्वत धाम की पहचान नहीं हो पायी।

अछरब्रह्म जाहेर किया, जित उतपत फरिस्तों नूर।

घर जबराईल जबरूत, जो नेहेचल सदा हजूर॥१०६॥

कुलजुम स्वरूप की वाणी ने उस अक्षर ब्रह्म की पहचान दी है, जिनसे नूरमयी फरिस्तों की उत्पत्ति हुई है। जोश के फरिश्ते जिबरील का मूल स्थान अक्षरधाम (सत्स्वरूप) है, जो हमेशा अखण्ड और शाश्वत है।

और धाम अछरातीत, नूरतजल्ला अर्स।

रूह बड़ी ब्रह्मसृष्ट की, जो है अरस-परस॥१०७॥

इसके अतिरिक्त अक्षरातीत के उस स्वलीला अद्वैत परमधाम का भी ज्ञान प्रकट हो गया, जिसमें परब्रह्म की अह्लादिनी शक्ति श्यामा जी और ब्रह्मसृष्टियाँ लीला करती हैं। ये आपस में अरस-परस हैं, अर्थात् सबके हृदय में वहदत (एकदिली) का साम्राज्य है।

ए लीला सब प्रगट करी, महंमद ईसा बुधजी आए।

ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए॥१०८॥

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में तीनों स्वरूप (मुहम्मद स.अ.व., सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी, तथा श्री बुद्ध जी) विराजमान हैं। इन तीनों ने मिलकर तारतम वाणी से सबको जाग्रत कर दिया तथा परमधाम की सारी लीला को प्रकट कर दिया।

भावार्थ— प्रायः तीनों स्वरूपों के वर्णन के प्रसंग में बसरी और मलकी सूरत के साथ हकी सूरत (महदी, महामति) का प्रयोग होता है, किन्तु उपरोक्त चौपाई में बुद्ध जी शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका तात्पर्य जाग्रत बुद्धि से है। इमाम या प्राणनाथ जी का स्वरूप परब्रह्म के उस आवेश स्वरूप के लिये प्रयोग होता है, जो इस जागनी ब्रह्माण्ड में प्रकट हुआ है। कहीं-कहीं पर श्री

प्राणनाथ जी के लिये श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक के स्थान पर संक्षिप्त रूप में बुद्ध जी भी कहा गया है।

भिस्त दर्ई सबन को, चढ़े अछर नूर की दृष्ट।

कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट॥१०९॥

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी की कृपा दृष्टि से इस ब्रह्माण्ड में जो स्वप्नमयी सम्पूर्ण जीवसृष्टि है, वह बेहद मण्डल की आठ बहिश्यों को प्राप्त होगी, जिससे वह अक्षरब्रह्म की जाग्रत दृष्टि में आ जाने से अखण्ड सुख का रसपान किया करेगी।

दूजी सृष्ट जो जबरूती, जो ईस्वरी कही।

अधिक सुख अछर में, दिल नूर चुभ रही॥११०॥

अक्षरधाम (सत्स्वरूप) में रहने वाली जो दूसरी सृष्टि

ईश्वरी है, वह अक्षर के हृदय सत्स्वरूप में अखण्ड हो जायेगी, जिससे उसे बेहद का अपार सुख मिलेगा।

और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टी घर धाम।

इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम॥१११॥

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को कुरआन में लाहूती उम्मत कहा गया है। श्री प्राणनाथ जी ने इनको परमधाम के सुखों का अनुभव कराया और इनकी मनोकामनाओं को पूर्ण किया।

भावार्थ- परमधाम में ब्रह्मसृष्टियों ने श्री राज जी की प्रेरणा से माया का खेल देखने की इच्छा की थी, जो पूर्ण हुई। इसके अतिरिक्त, उन्हें अपने और श्री राज जी के मूल सम्बन्ध की मारिफत की भी पहचान हुई।

मुक्त दई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर।

रुहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर॥११२॥

श्री प्राणनाथ जी ने सम्पूर्ण जीवसृष्टि को अखण्ड मुक्ति दी तथा तारतम वाणी के प्रकाश में ईश्वरी सृष्टि और अक्षर ब्रह्म को भी जाग्रत किया। जब ब्रह्मसृष्टि अपने मूल तनों में जाग्रत हो जायेगी, तब यह मायावी ब्रह्माण्ड समाप्त हो जायेगा और बेहद मण्डल में चर-अचर प्राणियों सहित यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अखण्ड सुख का रसपान करेगा।

करनी करम कछू ना रह्या, धनी बड़े कृपाल।

सो बुधजीएँ मारया, जो त्रैलोकी का काल॥११३॥

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी कृपा के सागर हैं। उन्होंने इस संसार के उन जीवों को भी अखण्ड मुक्ति प्रदान की,

जिन्होंने कुछ भी श्रेष्ठ आचरण नहीं किया था। जो अज्ञान रूपी राक्षस तीनों लोकों (मृत्यु लोक, स्वर्ग लोक, तथा वैकुण्ठ लोक) के प्राणियों को जन्म-मरण के चक्र रूपी काल के अधीन किये रहता था, उसे जाग्रत बुद्धि के ज्ञान से मार डाला और परमधाम का ज्ञान देकर अखण्ड मुक्ति का दरवाजा खोल दिया।

द्रष्टव्य- उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण में त्रैलोकी से आशय चौदह लोक के इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से है।

प्रकरण ॥१३॥ चौपाई ॥७५५॥

कुरान की कहूं

इस प्रकरण में कुरआन की यथार्थता पर प्रकाश डाला गया है।

अब कहूं कुरान की, सब विध हकीकत।

मगज मायने खोले बिना, क्यों पाइए मारफत॥१॥

श्री महामति जी कहते हैं कि अब मैं कुरआन के यथार्थ सत्य को स्पष्ट रूप से दर्शा रहा हूँ। इसमें संकेतों में कहे हुए रहस्यों को जब तक प्रकट नहीं किया जाता, तब तक परब्रह्म की पहचान नहीं हो सकती।

बिध सारी यामें लिखी, जार्थें न रहे अग्यान।

माणे ऊपर के लेय के, कर बैठे अपना कुरान॥२॥

कुरआन में आध्यात्मिक तत्वज्ञान इस प्रकार से लिखा गया है कि अज्ञान रह ही नहीं सकता। शरीयत पर चलने वाले मुसलमानों ने केवल बाह्य अर्थों को ही ग्रहण किया है और कुरआन पर अपने अधिकार का दावा किये बैठे हैं।

आरबों सों ऐसा कह्या, कागद ए परवान।

आवसी रब आलम का, तब खोलसी कुरान॥३॥

मुहम्मद स.अ.व. ने ऐसा कहा है कि यह कुरआन परब्रह्म का सन्देश है। जब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी आखरुल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आयेंगे, तो कुरआन के गुह्य अर्थों को प्रकट करेंगे।

कागद में ऐसा लिख्या, आवेगा साहेब।

अंदर अर्थ खोलसी, सब जाहेर होसी तब॥४॥

कुरआन में ऐसा लिखा है कि कियामत के समय में स्वयं परब्रह्म आयेंगे और कुरआन के गुह्य अर्थों को स्पष्ट करेंगे, तब सच्चिदानन्द परब्रह्म तथा परमधाम का सारा ज्ञान प्रकट हो जायेगा।

भावार्थ- कुरआन के सि. १७ सू. २२ आ. ४७ में यह प्रसंग इस प्रकार लिखा हुआ है- "व यस्तऽजिलूनक..... व अिन्न यौमिन..... तअद्वून" अर्थात् और जो दण्ड हेतु शीघ्रता कर रहे हैं, परब्रह्म अपना वचन निःसन्देह पूर्ण करता है। अन्ततः परब्रह्म का एक दिन संसार के सहस्र सालों के समकक्ष है।

पा. २९. सू. ७५ आयत ८-९ "व जुमिअश्शमसु व ल्कमरू" अर्थात् एवं चन्द्रमा में ग्रहण लगेगा एवं सूर्य व

चन्द्रमा एकत्र हो जायेंगे। यह कथन वि.सं. १७३५ में घटित होता है, जब एक ही महीने में दोनों ग्रहण पड़े थे।

दुनियां चौदे तबकों, और मिलो त्रैगुन।

माणे मगज मुसाफ के, कोई खोले न हम बिन॥५॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड के सभी प्राणी (ऋषि-मुनि, देवता, तीर्थंकर, अवतार, फकीर, पैगम्बर आदि) और ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी मिलकर यदि कुरआन के भेदों को खोलना चाहें, तो भी यह उनके लिए सम्भव नहीं है। यह शोभा परमधाम की हम ब्रह्मात्माओं के लिए है।

धनी माणे खोलसी, सत जानियो सोए।

साहेब बिना ए माणे, और खोल न सके कोए॥६॥

तुम इस बात को सत्य मानना कि एकमात्र परब्रह्म ही इमाम महदी के रूप में कुरआन के भेदों को खोलेंगे। परब्रह्म (श्री जी साहिब जी) के बिना इसके भेदों को अन्य कोई दूसरा नहीं खोल सकता।

नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत।

फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित॥७॥

सभी धर्मग्रन्थों में परब्रह्म के अलग-अलग नाम लिखे गये हैं, किन्तु संकेतों में उसी एक के ही आने का वर्णन किया है। जो कुरआन के गुह्य भेदों को स्पष्ट कर दे, उसे ही साक्षात् परब्रह्म का स्वरूप मान लेना।

गुझ अर्थ यामें लिखे, सो समझे कैसे कर।

अर्थ ऊपर का लेय के, अकस लेत दिल धर॥८॥

कुरआन में संकेतों में परब्रह्म और परमधाम से सम्बन्धित गुह्य बातें लिखी हैं। कुरआन के बाह्य अर्थ लेने वाले मुसलमान भला इन गुह्य बातों को कैसे समझ सकते हैं? शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान कुरआन की आयतों का बाह्य अर्थ लेकर दूसरी विचारधारा के अनुयायियों के प्रति अपने दिल में वैर की भावना रखते हैं।

बड़ी सोभा अहेल किताब की, लिखी मिने कुरान।

सो आरब जाने आपको, ए जो धनी फुरमान॥९॥

कुरआन में कुरआन के ज्ञान के वारिस (उत्तराधिकारी) मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) की बहुत अधिक महिमा गाई गयी है। किन्तु अरब में रहने वाले मुसलमान स्वयं को कुरआन का उत्तराधिकारी मानते हैं, जिसे अल्लाह

तआला (परब्रह्म) ने भेजा है।

अहेल किताब जानें आपको, और सब जाने कुफरान।

फजर होसी माएने खुले, तब होसी पेहेचान॥१०॥

ये अरब के मुसलमान स्वयं को कुरआन का वारिस मोमिन मानते हैं और शेष सबको मायावी जीव कहते हैं। कियामत के समय जब तारतम वाणी के प्रकाश में कुरआन के गुह्य भेद स्पष्ट हो जायेंगे, तब सबको यह पहचान होगी कि कौन ब्रह्मसृष्टि (मोमिन) है और कौन जीव है।

एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार।

ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरो पार॥११॥

कुरआन में परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों की संख्या बारह

हजार लिखी है, किन्तु अरब के मुसलमान तो करोड़ों से भी अधिक है।

भावार्थ- वर्तमान युग में सम्पूर्ण विश्व के मुसलमानों की संख्या गिनी जा चुकी है, इसलिए उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण में अनगिनत शब्द का प्रयोग अतिशयोक्ति अलंकार के रूप में किया गया है।

एता भी न विचारहीं, होए खावंद बैठे सब।

फैल न देखें अपने, लिया मोमिनों का मरातब॥१२॥

कुरआन के वारिस होने का दावा करने वाले अरब के ये मुसलमान इतना भी नहीं सोचते हैं कि कुरआन के कथनानुसार तो हम सब मोमिन नहीं हो सकते क्योंकि हमारी संख्या बारह हजार से अधिक है। ये अपने आचरण को नहीं देखते कि हमारा व्यवहार क्या मोमिनों

जैसा है, जो हम मोमिनों का दावा लेकर बैठे हैं।

सहूर न करें दिल से, कहया नाजी फिरका एक।

और बहत्तर नारी कहे, पर पावें नहीं विवेक॥१३॥

वे अपने दिल में गम्भीरता से विचार भी नहीं करते कि जब कुरआन में मुहम्मद स.अ.व. के ७३ फिरकों में मात्र एक फिरका ही नाजी कहा गया है तथा ७२ फिरके दोजकी कहे गये हैं, तो अरब के हम सभी मुसलमान नाजी फिरके में कैसे हो सकते हैं? किन्तु ये क्या करें? इतना सोचने की उनमें विवेकशक्ति ही नहीं है।

लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर।

परदा कानों आंखों पर, तो न सके अर्थ कर॥१४॥

कुरआन में लिखा है कि जीवसृष्टि के दिलों पर इब्लीस

का स्वामित्व है, इसलिए उनके दिलों पर ताले लगे हैं। इनकी आँखों और कानों पर पर्दा है, अर्थात् न तो ये आँखों से सत्य की पहचान कर सकते हैं और न कानों से सत्य को सुन सकते हैं। ऐसी स्थिति में ये भला कुरआन के गुह्य अर्थों को कैसे जान सकते हैं?

कागद एक उमत का, और हुआ झूठों सों छल।

माणे जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठों बल॥१५॥

यह कुरआन मात्र नाजी फिरके (मोमिनों) के लिए आया है। शेष फिरकों के साथ छल हुआ है, अर्थात् भ्रमवश ये झूठे ७२ फिरके सोचते हैं कि कुरआन सिर्फ हमारे लिए आया है। जब कुरआन के गुह्य भेद उजागर हो गये, तो स्वयं को मोमिन होने का मिथ्या दावा करने वाले इन ७२ फिरकों में कोई बल नहीं रहा।

एह विध साख कुरान में, जाहेर लिखी हकीकत।

सो धनी आए जहूदों मिने, ओ आरबों में ढूढ़त॥१६॥

इस प्रकार, कुरआन में कियामत के समय परब्रह्म के आने की साक्षी लिखी है, जिसके अनुसार सच्चिदानन्द परब्रह्म (इमाम महदी) हिन्दुओं में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आ गये हैं। जबकि अरब के मुसलमान अरब में उनके आने की बात देख रहे हैं।

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं मांहें।

जाहेर परस्त जो आरब, सो इसारत समझत नाहें॥१७॥

कुरआन में लिखा है कि जब अल्लाह तआला आयेंगे तो उनके मुख पर पर्दा होगा, अर्थात् ये हिन्दुओं में प्रकट होंगे। शरीयत की राह पर चलने वाले अरब के ये मुसलमान, कुरआन में संकेतों में कही हुई इन बातों का

अर्थ नहीं समझ पा रहे हैं।

भावार्थ- कुरआन के सि. २७ सू. ५७ आ. ६-९ में लिखा है- "यूलिज़ुल्लै-ल फिन्नहारि.....ल-रअफूर्हीम" अर्थात् परब्रह्म हर किसी के दिल की बात जानता है। वह रात और दिन का मालिक है। अतः उस पर ईमान ले आइये, जिसका वह पहले आपसे वचन दे चुका है (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ "अलस्तू बिरब्बि कुंम", तब प्रत्युत्तर में रुहों ने कहा "कालू बला" अर्थात् निःसन्देह आप हमारे स्वामी हैं)। अभी भी अगर आपको विश्वास न हो, तो वह अपने बन्दों को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिये अवतरित करते हैं।

कुरआन के पारः २८ सूरः ५८ आयत ६ "यौमयबअसू.....कुल्लि शैअिन शहीदन" अर्थात् कियामत के दिन जब परब्रह्म सबको जीवित करेगा, तो वह उनको

प्रतिफल देगा, क्योंकि परब्रह्म ने हर चीज़ की गणना की हुई है, परन्तु मानव भूल गया है और हर चीज़ परब्रह्म के सम्मुख है (परब्रह्म ८ पायों के तख्त पर विराजमान होकर सबको दीदार देगा, क्योंकि परब्रह्म नूरमयी है, अतः वह स्वयं पृथ्वी पर उपस्थित नहीं हो सकता। इसलिये ईमाम महदी साहिब्बुज्जमां को हुज्जतुल्लाह या बकैतुल्लाह कहा है, जिसका तात्पर्य ईश्वरीय गुणों से ओत-प्रोत होना है। प्राणनाथ जी के अन्दर ही इन शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ, और उनके भौतिक तन के भारतवर्ष के गुजरात प्रान्त में जन्म लेने के कारण, उनका भौतिक नाम मिहिरराज व उनके पिता का नाम केशव ठाकुर हुआ, जो कि हिन्दू समुदाय के अन्तर्गत एक सम्माननीय परिवार है)।

यद्यपि मुहम्मद साहब का कथन है— "अना जिस्महु

व इस्महु व लुगाद वल लिसान" (सही बुखारी शरीफ़ से उद्धृत) कि उनका नाम मेरा नाम, उनकी वंशावली मेरी वंशावली, उनका शरीर मेरा शरीर, अर्थात् उनके समस्त गुण-अंग-इन्द्रियाँ मेरे हैं जैसे कि रूप, रंग, कद, काठी, माथा, आँख, नाक, कान, मुँह इत्यादि। अर्थात् उनका नाम व उपाधि मुहम्मद स.अ.व. की भांति ही सरदार महमत साहिब्बुज्रमां है। यह तुर्की का महमत शब्द अरबी के मुहम्मद का समानार्थी है। मिहिरराज जी का नाम व उपाधि कुल्जुम के अधिकतर प्रकरणों में "महमत कहे ए मोमिनो" से ही सम्बोधित है।

प्रकरण ॥१४॥ चौपाई ॥७७२॥

कुरान के निसान कयामत के जाहेर हुए

इस प्रकरण में कुरआन में वर्णित कियामत के संकेतों का गुह्य अर्थ दर्शाया गया है।

बरस नब्बे हजार पर, गुजरे एते दिन।

कयामत लिखी कुरान में, सो ए न पाई किन॥१॥

कुरआन में लिखा है कि मुहम्मद स.अ.व. के देह-त्याग के एक हजार नब्बे वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात् कियामत आयेगी, किन्तु इस गुह्य रहस्य को अब तक कोई समझ नहीं पाया था।

कई पढ़ पढ़ काजी हुए, कई आलम आरिफ।

माणे मगज मुसाफ के, किन खोल्या ना एक हरफ॥२॥

कुरआन पढ़-पढ़ कर बहुत से लोग काजी हो गये, तो बहुत से लोग विद्वान और ब्रह्मज्ञानी भी कहलाने लगे, किन्तु उनमें से किसी ने भी कुरआन के गुह्य रहस्यों के एक शब्द का भी अर्थ स्पष्ट नहीं किया।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में कुरआन के हरुफ-ए-मुक्तेआत अलिफ-लाम-मीम, ऐन, गैन आदि की ओर संकेत किया गया है, जिसके रहस्य को तारतम ज्ञान के बिना कोई नहीं समझ सकता।

लिख्या जाहेर कुरान में, और माजजे सब रद।

सांचा माजजा इमाम पे, जो ले उतरया अहमद।।३।।

कुरआन में यह बात प्रत्यक्ष रूप से लिखी हुई है कि अब तक के सभी चमत्कार रद्द हो गये। सबसे सच्चा चमत्कार तो आखरुल इमाम मुहम्मद महदी के पास

होगा, जिनके हृदय में सभी धर्मग्रन्थों के रहस्यों को खोलने वाली तारतम ज्ञान की कुञ्जी होगी, जिसे मलकी सूरत सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी परमधाम से लाकर सौपेंगे।

करामात कलाम अल्लाह की, सांची कहियत हैं सोए।

लिख्या है कुरान में, सो बिना इमाम न होए॥४॥

कुरआन में लिखे हुए चमत्कारों को सत्य कहा जाता है। कुरआन में यह भी लिखा है कि कियामत का सबसे बड़ा चमत्कार इमाम महदी के बिना पूर्ण नहीं होगा।

भावार्थ— कुरआन के पार: २७ सूर: ५७ आयत १० में लिखा है— "लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्जि" अर्थात् यद्यपि आकाशों व पृथ्वी का स्वामी परब्रह्म है, उनका पृथ्वी पर अधिकारी श्री प्राणनाथ जी ही हैं।

पारः २८ सूरः ५८ आयत ६ "यौ- म यब्असुहुमुल्लाह..... कुल्लि शैइन् शहीद" अर्थात् जिस दिन परब्रह्म सबको पुनरोत्थान के समय उठायेगा, तो उन्हें उनके कर्मफल प्रदान किये जायेंगे, जिनको वह भूल गये थे (अतः परब्रह्म का उत्तराधिकारी उनको उनके कर्मों के अनुसार प्रतिफल प्रदान करेगा) क्योंकि हर वस्तु परब्रह्म के सम्मुख उपस्थित है।

पढ़या नाहीं फारसी, ना कछू हरफ आरब।

सुन्या न कान कुरान को, और खोलत माएने सब॥५॥

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि न तो मैंने फारसी पढ़ी है और न ही अरबी का कोई शब्द पढ़ा है। मैंने अपने कानों से कुरआन भी नहीं सुना है, किन्तु कुरआन के सभी गुह्य रहस्यों को मैंने ही खोला है।

भावार्थ- इस चौपाई को पढ़कर श्री प्राणनाथ जी को आचार्य, कवि, महापुरुष आदि मानवीय दृष्टिकोण से देखने वाले उन तथाकथित स्वयंभू विद्वानों को यह आत्ममन्थन करना चाहिए कि वे किस प्रमाण के आधार पर कहते हैं कि श्री प्राणनाथ जी कुछ वर्ष अरब में रहे थे तो अरबी भाषा सीख गये थे।

श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप तो वह स्वरूप है, जिसमें कुरआन के नब्बे हजार हरुफ कहने वाले श्री राज जी बैठे हैं। सुनने वाले मुहम्मद स.अ.व. (अक्षर की आत्मा) बैठे हैं, आयतों को लाने वाला जिबरील बैठा है, कुरआन के भेदों को प्रकट करने वाला इस्राफील बैठा है, मारिफत (परमसत्य) को उजागर करने के लिए परब्रह्म की अह्लादिनी शक्ति (मलकी सूरत) विराजमान है। ऐसे स्वरूप को कुरआन पढ़ाने का सामर्थ्य किस मुल्ला या

मौलवी में हो सकता है।

यदि यह कहा जाये कि श्री प्राणनाथ जी सर्वज्ञ हैं, तो दिल्ली में बाईस प्रश्नों की पत्री को फारसी में अनुवाद कराने तथा तफसीर हुसैनी को सुनने के लिए कायमुल्ला की सहायता क्यों लेनी पड़ी? इसी प्रकार मन्दसौर में कुरआन की टीका कराने के लिए इब्राहिम की सहायता क्यों लेनी पड़ी?

इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि प्रकृति की मर्यादा निभाने के लिए ही श्रीजी ने स्वयं को चमत्कारों से दूर रखने का प्रयास किया, ताकि वे अपने स्वरूप को कुछ सीमा तक छिपाये रख सकें। यदि वे स्वयं कुरआन की टीका कर देते, तो उनकी इस अलौकिक शक्ति से प्रभावित होकर वे सुन्दरसाथ भी अपना सर्वस्व त्याग करने के लिए तैयार हो जाते, जो

दिल्ली में औरंगज़ेब को पैगाम देने के समय छोड़कर चले गये थे। इससे उनके ईमान की परीक्षा नहीं हो सकती थी। दूसरा, उस टीका पर संशय भी खड़ा किया जा सकता था कि श्री प्राणनाथ जी स्वयं अपने मुख से अपनी प्रशंसा करके स्वयं को इमाम महदी घोषित करना चाहते हैं।

श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आने वाले अक्बल खां थे, जिन्होंने चाबुक से अपने शरीर को इसलिये प्रताड़ित करना शुरू कर दिया कि उसने इमाम महदी की पहचान करने में इतनी देर क्यों की। जहान मुहम्मद तो सभी पठानों को कुरआन की तालीम देता था। श्रीजी के चरणों में आने पर वह उन्हें अल्लाह तआला के रूप में मानते हुए कहता है—

मैं तो साहिब देखिया, जाहिर अपने नैन।

तहां खतरा होत है, ए मुखथे कहो न बैन॥

बीतक ५३/११३

तारतम वाणी तो आवेशित वाणी है। उसके कथन पर कोई सुन्दरसाथ इसलिये संशय नहीं कर सकता था कि उसे स्वयं श्री प्राणनाथ जी ने नहीं लिखा, अपितु वाणी अवतरण के समय सुन्दरसाथ ही लिखते थे। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी के इस कथन को ध्यान में रखना चाहिए—

यों कई छल मूल कहूं मैं केते, मेरे टोने ही को आकार।

ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक न रहे खुमार॥

किरंतन १२०/११

ए सब किताबें इन पे, तामें किल्ली कुरान।

रुह अल्ला महंमद मेंहेदी, एही इमाम पेहेचान॥६॥

आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां (श्री प्राणनाथ जी) की पहचान यही है कि उनके पास सभी धर्मग्रन्थों का गुह्य ज्ञान होगा और इसके अतिरिक्त कुरआन के रहस्यों को खोलने की कुञ्जी इल्म-ए-लदुन्नी भी इनके पास होगी। इनके स्वरूप में तीनों सूरतें- बसरी, मलकी, तथा हकी (मुहम्मद स.अ.व., रुहुल्ला, महदी)- भी विराजमान होंगे।

जो लों माएने मगज न पाइया, तो लों पढ़या न किन कुरान।

किन भेज्या किन वास्ते, ना कछू रसूल पेहेचान॥७॥

जब तक किसी को कुरआन के गुह्य अर्थों का ज्ञान नहीं होता, तब तक उसको यही मानना चाहिए कि उसने

कुरआन को यथार्थ रूप में अभी तक नहीं पढ़ा है। उसे तो अभी भी यह ज्ञान नहीं होता कि कुरआन को भेजने वाला कौन है तथा किसके लिए भेजा है। उस अवस्था में तो उसे कुरआन को लाने वाले मुहम्मद स.अ.व. की भी वास्तविक पहचान नहीं होती।

जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो कहे देव सैतान।

यों जंजीरां मुसाफ की, कई विध करी बयान॥८॥

कुरआन के बाह्य अर्थ लेने वालों को देव या शैतान कहा गया है। इस प्रकार कुरआन में किसी प्रसंग को अनेक स्थानों पर अनेक प्रकार से अर्थात् कई आयतों में वर्णित किया गया है।

भावार्थ— तमोगुण से ग्रसित अज्ञानी एवं पापी व्यक्ति शैतान कहलाता है। इसके विपरीत सात्विक स्वभाव

वाला धर्मात्मा एवं ज्ञानी व्यक्ति देवता कहलाता है। जिस प्रकार शैतानी मस्तिष्क वाला व्यक्ति धर्मग्रन्थों के गुह्य ज्ञान को जानने में असमर्थ होता है, उसी प्रकार देव तुल्य पुरुष भी अपने ऐश्वर्य एवं विद्या के अभिमान में परब्रह्म के प्रति समर्पण नहीं कर पाते, जिससे वे भी यथार्थ तत्त्वज्ञान से वंचित रह जाते हैं। उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण का यही आशय है। वस्तुतः प्रेममयी भावना से शुद्ध समर्पित हृदय ही परब्रह्म की कृपा रूपी छत्रछाया में धर्मग्रन्थों के यथार्थ आशय को जान सकता है।

कुरआन में कियामत का प्रसंग अनेक स्थानों पर अनेक आयतों के रूप में आया है। सभी को मिलाने पर यथार्थ सत्य प्रकट होता है, जैसे— पार: १७ सू. २२ आ. ४७ "व यस्तअजिलू-न-क बिल्अजाबि व

लंय्युख्लिफ़ल्लाहु वअ-दहू व इन्-न यौमन् .अिन्-द
 रब्बि-क क-अल्फ़ि स-नतिम् मिम्मा तअुद्धून" अर्थात्
 और यह जो तुमसे अज़ाब (दण्ड) माँगने में जल्दी करते
 हैं और अल्लाह अपना वायदा हरगिज़ झूठा नहीं करता,
 एवं बेशक तुम्हारे रब के यहाँ एक दिन ऐसा है जैसे तुम
 लोगों की गिनती में हजार साल (यहाँ पर संसार के
 १००० साल के समक्ष रब का एक दिन कहा गया है।
 इसी दिन को कियामत कहते हैं, जो कि दो प्रकार की
 होती है- कियामतुल्ल सुगरा व कियामतुल्ल कुबरा। सुगरा
 से तात्पर्य छोटी कियामत एवं कुबरा से आशय बड़ी
 कियामत से है। छोटी कियामत में व्यक्ति भूकम्प, बाढ़,
 असाध्य बीमारियों, एवं युद्धग्रस्त क्षेत्रों में मृत्यु का
 आलिंगन करते हैं, जबकि बड़ी कियामत में व्यक्ति
 सामूहिक रूप में काल का ग्रास बनते हैं)।

इसके पश्चात् न्याय का दिवस कहा गया है, जिसमें मानव को उनके कर्मफल के अनुसार प्रतिफल प्रदान होगा। कुरआन का कथन है कि मुहम्मद साहब द्वारा संसार के प्राणियों को परब्रह्म के सम्मुख प्रस्तुत करके उनका आमालनामा (कर्मफल) प्रस्तुत किया जायेगा, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्तियों को मोक्ष व दण्ड की अनुशंसा प्राप्त होगी।

पार: २७ सूर: ५७ आयत १० में लिखा है—
 "लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्जि" अर्थात् यद्यपि आकाशों व पृथ्वी का स्वामी परब्रह्म है, उनका पृथ्वी पर अधिकारी श्री प्राणनाथ जी ही हैं।

पार: २८ सूर: ५८ आयत ६ "यौ— म यब्असुहुमुल्लाह..... कुल्लि शैइन् शहीद" अर्थात् जिस दिन परब्रह्म सबको पुनरोत्थान के समय उठायेगा,

तो उन्हें उनके कर्मफल प्रदान किये जायेंगे, जिनको वह भूल गये थे (अतः परब्रह्म का उत्तराधिकारी उनको उनके कर्मों के अनुसार प्रतिफल प्रदान करेगा) क्योंकि हर वस्तु परब्रह्म के सम्मुख उपस्थित है।

अजाजील दम सबन में, फरिस्ता जो बुजरक।

सारी जिमी पर सिजदा, किया ऊपर हक॥९॥

अजाजील (महाविष्णु) सृष्टि में सबसे बड़ा फरिश्ता है। सभी प्राणियों में उसकी ही चेतना का प्रतिभास है। उसने परब्रह्म के नाम पर सारी धरती पर सिजदा किया।

हुकम हुआ तिन को, कर सिजदा आदम पर।

माणे मगज न ले सके, लिया ऊपर का जाहेर॥१०॥

अजाजील फरिश्ते को अल्लाह तआला का आदेश हुआ

कि आदम पर सिजदा करो, किन्तु अजाजील ने आदम के अन्दर विद्यमान अल्लाह की रूह को नहीं पहचाना और उस पर सिजदा नहीं किया। इसी प्रकार, शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान कुरआन के गुह्य अर्थों को नहीं जान सके और केवल बाह्य अर्थों में ही भटकते रहे।

भावार्थ- अन्तर्दृष्टि खुले बिना न तो किसी धर्मग्रन्थ के आन्तरिक आशय को जाना जा सकता है और न किसी स्वरूप की पहचान ही की जा सकती है। यही कारण है कि जीवसृष्टि एक मानव तन में आये हुए श्री प्राणनाथ जी को नहीं पहचान सकी।

लानत हुई तिन को, हुआ गले में तौक।

यों सब जाहेर पुकारहीं, तो भी छोड़ें ना वे लोक॥११॥

इसलिए अजाजील को फटकार लगी। उसके गले में गुनाह का फँदा लग गया। यह बात कुरआन के सभी विद्वान प्रत्यक्ष रूप से कहा करते हैं, किन्तु स्वयं भी अजाजील की राह पर चलना नहीं छोड़ते अर्थात् इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) की पहचान कर उन पर समर्पित नहीं हो पाते।

तिन दिया धक्का आदम को, अबलीस गेहूँ खिलाए।

काढ्या प्यारी भिस्त से, दुस्मन संग लगाए॥१२॥

अजाजील के मन स्वरूप इब्लीश ने धोखे से आदम को गेहूँ खिलाकर प्रिय बहिश्त से निकलवा दिया। इसके साथ ही इस सृष्टि में आदम के वंशजों (सभी प्राणियों) के हृदय में शत्रु रूपी इब्लीश बैठा है, जो सबको माया में भटकाता रहता है।

ए विचारे क्या करें, सब आदम की नसल।

तो फुरमाया ना करें, वे खँचे पेड़ असल॥१३॥

आदम की वंशावलि में उत्पन्न होने वाले बेचारे जीवसृष्टि के ये मानव क्या करें? इनके अन्दर इब्लीश रूपी अज्ञान बैठा है। जिस प्रकार अजाजील ने अल्लाह के आदेश को नहीं माना, उसी प्रकार ये भी न तो श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान कर पा रहे हैं और न उनके निर्देशों को ही मानने के लिए तैयार हैं। जीवसृष्टि के ये मानव अपने मूल अजाजील और इब्लीश की ओर बन्धे (खिंचे) रहते हैं, इसलिये परब्रह्म के निर्देशों को नहीं मानते।

ओ तो ले ले माएने मगज, लिखे बड़े निसान।

सो ए धरे सरत पर, करने अपनी पेहेचान॥१४॥

कुरआन में कियामत के सात बड़े चिन्ह (निशान) संकेतों में लिखे हुए हैं, जिसके गुह्य भेदों को श्री प्राणनाथ जी कुरआन से लेकर स्पष्ट कर रहे हैं। अब कियामत का समय आ चुका है, इसलिए श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) तारतम वाणी में उन रहस्यों को प्रकाशित कर रहे हैं, जिससे ब्रह्मसृष्टि अपनी तथा अपने प्राणेश्वर की पहचान कर सके।

दुनियां सबे जाहेरी, सो लेवे माएनें जाहेर।

अंदर अर्थ खुले बिना, क्यों पावे दिन आखिर॥१५॥

संसार के सभी जीव बहिर्मुखी प्रवृत्ति के होते हैं, इसलिए वे धर्मग्रन्थों के बाह्य अर्थों को ही ग्रहण कर पाते हैं। जब तक उनके आन्तरिक अर्थ स्पष्ट न हों, तब तक कोई भी कियामत के आने का दिन कैसे पहचान सकता

है।

निसान कहे इन वास्ते, सो बांधें कौल पर हद।
लेत माएने ऊपर के, सो करने को सब रद॥१६॥

कियामत के समय को निश्चित करने के लिए ही कियामत के निशानों का वर्णन किया गया है। शरीयत पर चलने वाले लोग इन निशानों के बाह्य अर्थ लेते हैं, और उन सातों निशानों की रहस्यमयी बातों को झूठा कर देते हैं, और कहते हैं कि अभी तो कियामत का समय आया ही नहीं है।

कलाम अल्ला के माएने, सो भी कही इसारत।
ए नसल आदम हवाई, क्यों पावे दिन आखिरत॥१७॥
कुरआन में अल्लाह के कहे हुए शब्द हैं, जो संकेतों में

कहे गये हैं। आदम से उत्पन्न होने वाली यह मानव जाति, बिना तारतम ज्ञान के, कियामत के समय की कैसे पहचान कर सकती है।

माणे मुल्लां या ब्राह्मण, करते जो उलटाए।

सोई हरफ जबराईल, गया सब चटाए॥१८॥

अब तक मुल्ला या ब्राह्मण कुरआन और वेद आदि ग्रन्थों के उल्टे अर्थ किया करते थे, किन्तु जिबरील फरिश्ते ने सभी धर्मग्रन्थों के शब्दों को ही निगल लिया, अर्थात् तारतम वाणी के प्रकाश में सभी अन्य धर्मग्रन्थों के गुह्य अर्थ प्रकाशित होने से उनके बाह्य अर्थों के शब्दों का कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया।

नेहेरें चलसी उलटी, किए नजीकी दूर।

ईसा मेंहेदी महंमद, आए हिंद में बरस्या नूर॥१९॥

कुरआन में लिखा है कि कियामत के समम उल्टी नहरे बहेगी, अर्थात् सभी धर्मों के विद्वान, पण्डित, मुल्ला, पादरी आदि जो अपने-अपने धर्मग्रन्थों का बाह्य अर्थ करके स्वयं को परब्रह्म का नजदीकी माना करते थे, वे यह अनुभव करने लगे कि निःसन्देह हम ही परमात्मा से दूर थे, क्योंकि तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण हमें परब्रह्म का यथार्थ ज्ञान था ही नहीं। अब हिन्दुस्तान में श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप प्रकट हो गया है, जिनके अन्दर तीनों सूरतें— बसरी, मलकी, और हकी (मुहम्मद स.अ.व., अहमद, महदी)— विराजमान हैं। अब भारतवर्ष में तारतम ज्ञान की इतनी वर्षा हो रही है कि सर्वत्र अखण्ड ज्ञान का प्रकाश दिखाई दे रहा है।

नूर खुदा रोसन हुआ, खैच छूटी सब तरफ।

लेत माएने ऊपर के, सो रहया न कोई हरफ॥२०॥

अब तारतम वाणी द्वारा सभी को परब्रह्म के नूरमयी स्वरूप की पहचान हो गयी। सभी मत-मतान्तरों में परब्रह्म के सम्बन्ध में जो वैचारिक मतभेद थे, वे सब समाप्त हो गये। अब तक जो सभी धर्मग्रन्थों के बाह्य अर्थ लिये जाते थे, वे बन्द हो गये, और अब किसी भी धर्मग्रन्थ में ऐसा कोई भी शब्द नहीं बचा है, जिसमें बाह्य अर्थ का वर्चस्व हो।

भावार्थ- उपरोक्त कथन अभी आंशिक रूप में ही फलीभूत हुआ है। काव्य की आलंकारिक भाषा में ही यह कथन व्यक्त किया गया है। योगमाया में न्याय के दिन यह कथन पूर्ण रूप से चरितार्थ हो पायेगा।

महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।

अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम॥२१॥

ईसा रूहुल्ला (श्यामा जी के पहले तन श्री देवचन्द्र जी) में जब मुहम्मद स.अ.व. (अक्षर की आत्मा) का प्रवेश हुआ, तो उस स्वरूप को अहमद कहलाने की शोभा मिली। जब यह स्वरूप श्यामा जी के दूसरे तन (श्री मिहिरराज जी) में महदी (महामति) में मिला, तो इन तीनों स्वरूपों को ईमाम (अर्थात् प्राणनाथ) कहा गया।

भावार्थ- पाँचों शक्तियों के श्री इन्द्रावती जी के धाम-हृदय में विराजमान होने पर उन्हें महामति की शोभा मिली। इस स्वरूप में अक्षर ब्रह्म की जाग्रत बुद्धि तथा अक्षरातीत की निजबुद्धि दोनों विद्यमान हैं, इसलिये इस स्वरूप से अधिक ज्ञान अन्य किसी भी स्वरूप द्वारा नहीं उतरा। "महामति" का तात्पर्य महान बुद्धि वाला नहीं,

अपितु परब्रह्म का महानतम् ज्ञान जिसके तन से प्रकट हुआ, वह "महामति" है। इस स्वरूप को कतेब पक्ष में महदी कहा गया है। इस प्रकार इमाम महदी या महामति प्राणनाथ शब्द समानार्थक हैं।

अल्लफ कहा महंमद को, रूह अल्ला ईसा लाम।

मीम मेंहेदी पाक सें, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम॥२२॥

बसरी सूरत मुहम्मद स.अ.व. को "अलिफ" कहते हैं। मल्की सूरत सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी को "लाम" कहते हैं, तथा हकी सूरत को अति पवित्र "मीम" कहते हैं। कुरआन का कथन है कि ये तीनों स्वरूप एक ही हैं।

भावार्थ— अलिफ (मुहम्मद) के अन्दर अक्षर ब्रह्म (सत्) की आत्मा है, लाम (श्री देवचन्द्र जी) के अन्दर श्यामा जी की आत्मा है, तथा मीम (महामति/महदी) के

अन्दर चिद्धन स्वरूप परब्रह्म अपनी आवेश शक्ति के साथ विराजमान हैं। इस प्रकार अलिफ-लाम-मीम का आशय सच्चिदानन्द परब्रह्म से है। श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) का यही स्वरूप है।

महंमद ईसा आए मेयराज में, और असराफील इमाम।

बुध जबराईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम॥२३॥

जब हब्शा में श्री महामति जी (श्री इन्द्रावती जी) को प्रियतम का साक्षात्कार हुआ, तो उनके धाम-हृदय में अक्षर ब्रह्म की आत्मा, श्यामा जी की आत्मा, जाग्रत बुद्धि, तथा श्री राज जी की आवेश शक्ति विराजमान हो गये। जोश की शक्ति जिबरील तथा जाग्रत बुद्धि की शक्ति इस्राफील ने कुरआन के गुह्य रहस्यों को उजागर किया।

भावार्थ— कुरआन के मारिफत (परमसत्य) सम्बन्धी

गुह्य रहस्यों को मात्र युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी ही जानते हैं, किन्तु उन्हें श्री महामति जी के तन से व्यक्त करने का कार्य जिबरील और इस्त्राफील का है। इसलिये उपरोक्त चौपाई में इन दोनों द्वारा कुरआन के गुह्य भेदों को प्रकट करने वाला कहा गया है।

मुहम्मद स.अ.व. और जिबरील का मेड़ता में आकर विराजमान होने की बात कहना उचित नहीं है। इस चौपाई में यही दर्शाया गया है कि ये दोनों हब्शा में ही आकर श्री महामति जी के धाम-हृदय में विराजमान हो गये थे।

माणे इन मुसाफ के, कलाम अल्ला का कौल।

ईसे के इलम से, दई इसारतें सब खोल॥२४॥

कुरआन में अल्लाह तआला के वचन हैं, जो संकेतों में

कहे गये हैं। इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ने इसके सभी भेदों को तारतम ज्ञान के प्रकाश में उजागर कर दिया।

बड़े निसान आखिरत के, आजूज माजूज दोए।

बेटे कहे याफिस के, इनहूँ न छोड़या कोए॥२५॥

कियामत के बड़े निशानों में याजूज और माजूज का वर्णन किया गया है। इन्हें नूर पैगम्बर के बेटे याफिस की सन्तान कहा गया है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने किसी को भी नहीं छोड़ा, अर्थात् सारे प्राणी इनके बन्धन में हैं।

भावार्थ— याजूज दिन को कहते हैं तथा माजूज रात्रि को कहते हैं। दिन और रात्रि का चक्र हमेशा चलता रहता है, जिससे इस सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ की आयु क्षीण होती रहती है। इसलिए सभी को इनके बन्धन में रहने वाला

कहा गया है।

कहे बड़े सबन से, सौ गज का आजूज।

और तंग चसम कहया, एक गज का माजूज॥२६॥

कुरआन में याजूज को सबसे बड़ा, सौ गज का, कहा गया है, इसी प्रकार माजूज को मात्र एक गज का अर्थात् दूर तक ना देखने वाला कहा गया है।

भावार्थ- दिन के समय मनुष्य का मन सौ तरफ भागता रहता है, इसलिए याजूज को सौ गज का कहा गया है, किन्तु रात्रि में जब वह सो जाता है तो उसका मन शान्त हो जाता है, इसलिए माजूज को मात्र एक गज का अर्थात् नजदीक तक दृष्टि रखने वाला कहा गया है।

चार लाख कौम इन की, फौजां होसी तीन।

अर्थ ऊपर के आखिरत, क्यों पावें रात दिन॥२७॥

याजूज और माजूज की संख्या चार लाख कही गयी है और इनकी तीन फौजें— तुलुअ, ताब, शब अर्थात् प्रातः, दोपहर, रात्रि— कही गयी हैं। इस कथन का बाह्य अर्थ लेने से कियामत के दिन और रात की पहचान नहीं होती।

ए तो गिनती कही दिनन की, आखिरत बड़े निसान।

माणे मगज मुसाफ के, और करे सो कौन बयान॥२८॥

यह जो दिनों की गणना की गयी है, वह कियामत के बड़े निशानों में से एक है। श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त और कौन है, जो कुरआन के इन गुह्य भेदों को स्पष्ट करके बताये।

भावार्थ- विक्रमी सम्वत् व ईस्वी सन् में ५७ वर्ष का अन्तर होता है। हिजरी सन् एवं ईस्वी सन् में ६२२ साल का अन्तर होता है। जिस प्रकार ईस्वी सन् २०१८ में १३९६ हिजरी कमरी (चन्द्र) और १४४० शम्शी (सौर्य) वर्ष होता है। इसी वर्ष में विक्रमी सम्वत् २०७५ है। हिजरी वर्ष की गणना सायंकालीन चन्द्रोदय के साथ शुरू हो जाती है, अर्थात् चन्द्रमा निकलने के पश्चात् नया हिजरी दिन शुरू हो जाता है। जबकि विक्रमी सम्वत् के दिन की गणना प्रातः ब्रह्म मुहूर्त से होती है, एवं ईस्वी वर्ष के दिन की गणना रात्रि १२ बजे के पश्चात् से की जाती है। इसी प्रकार तीनों प्रकार के साल की गिनती में अन्तर आता है। ईस्वी व विक्रमी सम्वत् में ३६५ दिन का एक वर्ष होता है, तथा ईस्वी सन् में हर चौथे साल अधिक वर्ष में ३६६ दिन होते हैं।

हिजरी सन् की दो प्रकार से गणना की जाती है—

१. क़मरी (चाँद), २. शम्शी (सूर्य)। दोनों को समान करने के लिये हर वर्ष १० दिन की वृद्धि कर दी जाती है एवं हर चौथे साल ग्यारह दिन की वृद्धि की जाती है। इस प्रकार, चार साल में ४१ दिन का अन्तर हो जाता है। यदि हम ४ लाख दिन को ३६५ से विभाजित करते हैं तो १०९५ वर्ष बनते हैं। यद्यपि यह १०९० हिज़री था। वि.सं. १७३५ में हिजरी सन् १०९० था। इस प्रकार, वि.सं. १७४० में १०९५ हिजरी सन् होता है, जिस समय श्री प्राणनाथ जी पन्ना जी में पधारे थे और इस खुलासा ग्रन्थ का अवतरण हुआ था।

काल याही दिन कहे, सो पोहोंचे कौल पर आए।

तब पिंड या ब्रह्मांड, देत सबे उड़ाए॥२९॥

यह वही समय और दिन है, जिसमें इमाम महदी के प्रकट होने का वायदा है। अब ये याजूज और माजूज (दिन तथा रात) प्रत्येक इन्सान के अष्टधातु (रस, रक्त, माँस, मेद, मज्जा, अस्थि, शुक्र, ओज) के तन, तथा पाँच तत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) एवं तीन गुणों (सत, रज, तम) वाले इस ब्रह्माण्ड को नष्ट कर देंगे।

भावार्थ— कियामत दो तरह की होगी। पहली कियामत में ज्ञान दृष्टि से कायमी की लीला होगी, इसे छोटी कियामत कहते हैं। दूसरी कियामत स्वरूप की दृष्टि से होगी, जिसमें इस ब्रह्माण्ड के सभी प्राणी बेहद मण्डल में अखण्ड हो जायेंगे, इसे बड़ी कियामत कहते हैं। अखण्ड होने से पूर्व इस ब्रह्माण्ड का प्रलय हो जायेगा। याजूज—माजूज द्वारा सभी प्राणियों के शरीर तथा ब्रह्माण्ड को

लय करने का प्रसंग इसी सन्दर्भ में दिया गया है, किन्तु महाप्रलय का समय स्पष्ट रूप से कहीं भी दर्शाया नहीं गया है।

तारतम वाणी से इतना ही संकेत मिलता है कि ग्यारहवीं सदी वि.सं. १७४५ में पूर्ण हो जाती है और याजूज-माजूज पूर्ण रूप से जाहिर हो जायेंगे, अर्थात् वि.सं. १७४८ में मारफत सागर के अवतरण के पश्चात् अन्य किसी ग्रन्थ का अवतरण नहीं हुआ। इसका तात्पर्य यह है कि छोटी कियामत का समय यहाँ पूर्ण हो जाता है।

वि.सं. १७५१ में श्री जी के अन्तर्धान होने के पश्चात् छठें दिन की लीला प्रारम्भ होती है, जिसमें ब्रह्मात्माओं द्वारा जागनी की लीला की जा रही है। यह लीला कितने समय तक चलेगी और याजूज-माजूज

द्वारा इस ब्रह्माण्ड की आयु कब पूरी होगी, इसे मात्र श्री राज जी ही जानते हैं। "ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानों जिन दर्ई खबर" (बड़ा कयामतनामा २३/४) का कथन यही सिद्ध करता है।

दाभ-तूल-अर्ज मक्के से, जाहेर होसी सब ठौर।

एक हाथ आसा मूसे का, दूजे सलेमान की मोहोर॥३०॥

मक्का से दाब्ह-तूल-अर्ज (दाब मिनल अर्ज) अर्थात् जानवर जैसी प्रवृत्ति वाले मनुष्य प्रकट होंगे और सारे संसार में फैल जायेंगे। कियामत के समय श्री प्राणनाथ जी के एक हाथ में मूसा पैगम्बर की लाठी होगी तथा दूसरे हाथ में सुलेमान पैगम्बर की मुहर होगी।

भावार्थ- उपरोक्त कथन का भाव यह है कि कियामत के समय ऐसे मनुष्य उत्पन्न होंगे, जिनके हृदय में शेर

जैसी क्रूरता होगी, मुर्गे की तरह अहंकार होगा, बैल के सींग की तरह विवादग्रस्त मानसिकता होगी, सुअर की तरह कुदृष्टि होगी, हाथी की तरह बुरी बातों को सुनने की प्रवृत्ति होगी, गीदड़ की तरह धार्मिक त्याग भावना से पलायनवादी मानसिकता होगी, और गदहे की तरह बुद्धि होगी, किन्तु चेहरा अवश्य मनुष्य का धारण किये होंगे।

कुरआन-हदीसों में यह संकेत किया गया है कि इन पाश्चिक प्रवृत्ति वाले मनुष्यों का धार्मिक क्षेत्र में भी वर्चस्व होगा और वे दावा करेंगे कि कुरआन पर निष्ठा रखने से अपने ललाट पर अभिवादन (नमाज़) की अधिकता के कारण काला चिह्न बना लेंगे। तत्पश्चात् वह दावा करेंगे कि मात्र हम अपने चिन्हित ललाट के कारण ही मोक्ष प्राप्त करेंगे, जिससे बहिश्त में प्रवेश करने हेतु मूसा पैगम्बर की लाठी हमें दिशा-निर्देश प्रदान करेगी।

यह तो सर्वविदित है कि मूसा पैगम्बर ने अपनी लाठी द्वारा कई चमत्कार किये थे। इसी प्रकार, सुलेमान अपने सच्चे न्याय के लिये प्रसिद्ध थे। सुलेमान की मुहर लगाने का तात्पर्य है, सत्य-असत्य का निर्णय करना। कियामत के समय जब इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी हिन्दुस्तान में जाहिर हो गये, तो कुरआन के अखण्ड ज्ञान की शक्ति भी मक्का से उठकर हिन्दुस्तान में इमाम महदी के अन्दर आ गई। तारतम वाणी उनका वाङ्मय (ज्ञानमय) स्वरूप है।

इस प्रकार, मूसा की लाठी और सुलेमान की मुहर भी कुल्जुम ग्रन्थ में निहित हैं। इस वाणी द्वारा अक्षरातीत की पहचान होती है, जिनसे प्रेम करने पर मूसा की लाठी की तरह अनेक अलौकिक शक्तियाँ ब्रह्मात्माओं के पीछे-पीछे चलती हैं, तथा यह वाणी सुलेमान की मुहर की

तरह सत्य-असत्य का स्पष्ट निर्णय दर्शाने वाली है। इस तथ्य को आगे की चौपाइयों से समझा जा सकता है।

सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन।

आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन॥३१॥

जिनके मुख पर सुलेमान की मुहर लग जायेगी, उनका मुख उज्ज्वल हो जायेगा, अर्थात् तारतम वाणी का प्रकाश जिनके हृदय में आ जायेगा, वे परब्रह्म के ज्ञान, प्रेम, एवं आनन्द में डूब जायेंगे, जिससे वे उज्ज्वल मुख वाले हो जायेंगे। इसी प्रकार, सुलेमान की अँगूठी एवं मूसा की लाठी के स्पर्श से काफ़िरों का मुँह काला हो जायेगा और मोमिनों का मुँह उज्ज्वल हो जायेगा। इसका आशय यह है कि तारतम वाणी यह निर्णय कर देगी कि तुमने परब्रह्म से प्रेम करने के स्थान पर अपने सारे जीवन में पाप ही पाप

किया है। उनका प्रायश्चित ही उनके मुख को काले रंग में दशयिगा।

उज्जल मुख मोमिन कहे, स्याह मुख कहे काफर।

या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखिर॥३२॥

मोमिनों को उज्ज्वल मुख वाला कहा गया है तथा काफिरों को काले मुख वाला कहा गया है। न्याय के दिन यह बात प्रकट हो जायेगी कि कौन बहिश्त में जायेगा और कौन दोजक में।

कही दाभा वास्ते वह जिमी, पेहेले हुती सबे कुफरान।

जोलों स्याम बरारब ना हतें, ना रसूल खबर फुरमान॥३३॥

जब तक मुहम्मद स.अ.व. अरब में नहीं आये थे और उनके द्वारा परब्रह्म का भेजा हुआ आदेश पत्र कुरआन

अवतरित नहीं हुआ था, तब तक अरब की सम्पूर्ण धरती काफिरों (कृतघ्नों) से भरी हुई थी और वहाँ मात्र पशुवृत्ति वाले मानव रहा करते थे।

जब स्याम रसूल आए इन जिमी, तब हुआ नूर रोसन।

कुरान रसूल उमत, जाहेर करी सबन॥३४॥

जब मुहम्मद स.अ.व. अरब की धरती पर अवतरित हुए, तब वहाँ अलौकिक ज्ञान का प्रकाश फैला। मुहम्मद स.अ.व. ने कुरआन के माध्यम से अपने, परब्रह्म, तथा ब्रह्मसृष्टियों के बारे में सबको बताया।

ल्याए बंदगी केहेलाए कलमा, बरस्या खुदा का नूर।

सो नूर फिरया खाली भई, जैसी असल दाभा थी अंकूर॥३५॥

अरब की धरती पर उन्होंने तौहीद (अद्वैत) का कलमा

कहलाकर शरीयत और तरीकत की बन्दगी प्रचलित की। वहाँ पर खुदाई नूर की वर्षा हुई, अर्थात् परमधाम का ज्ञान सांकेतिक शब्दों में अवतरित हुआ। मुहम्मद स.अ.व. के परदे में होने के १०९० वर्ष तक कुरआन की बाह्य शक्ति अरब में रही, एवं आध्यात्मिक शक्ति प्रथम ईमाम अली वलीउल्लाह से लेकर ईमाम जाफर सादिक एवं ईमाम आजम तक, व औलियाल्लाहु हज़रत हसन बसरी, शेख शम्नुन, शेख बयाज़िद बस्तामी, ख्वाज़ा मुईनुद्दीन चिश्ती, शेख फरिदुद्दीन, शेख निजामुद्दीन औलिया, कुतुबुद्दीन बख्तियार के रूप में संचारित रही।

तत्पश्चात् ईमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां के हिन्दुस्तान में जाहिर होने के पश्चात् सारी शक्ति (नूर) श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में समाहित हो गयी। परिणाम स्वरूप, अरब की धरती पर पाश्चिक प्रवृत्तियाँ पूर्ववत्

सक्रिय हो गयीं और वहाँ की धरती आध्यात्मिकता से रहित हो गयी।

सो नूर सब इत आइया, इन जिमी मसरक।

तब वह जिमी दाभा भई, जैसी पेहेले थी बिना हक॥३६॥

जब कुरआन के सम्पूर्ण ज्ञान का प्रकाश पूर्व में भारतवर्ष में इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के अन्दर आ गया, तो अरब की धरती ब्राह्मी कृपा से रहित होकर पहले की तरह ही पाश्चिक शक्तियों से भरपूर हो गयी।

मोमिन मुख उज्जल भए, भए काफर मुख स्याह।

यों मसरक और मगरब, दोनों दुरस्त कहया॥३७॥

श्रीमुखवाणी (कुल्जुम) के प्रकाश में ब्रह्मसृष्टियों के मुख ज्ञान और प्रेम से उज्ज्वल हो गये, तथा काफिरों के मुख

काले हो गये। इस प्रकार कुरआन में पूर्व तथा पश्चिम के सम्बन्ध में जो कुछ कहा था, वह अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ।

रूह अल्ला महंमद इमाम, मसरक आए जब।

सूरज गुलबा आखिरी, मगरब ऊग्या तब॥३८॥

जब भारत में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में तीनों सूरतें (बशरी, मल्की, हकी) निहित हो गयीं, तो भारत की दिशा पूर्व की मानी गयी। मक्का से कुरआन की सफ़कत्त-बरकत्त हिन्दुस्तान में इमाम महदी के अन्दर आ जाने से पश्चिम अर्थात् अरब में जो कुरआन के ज्ञान का सूर्य उगा रहा, उसमें अन्धेरा बना रहा।

नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब।

जाहेरी ढूँढ़े सूरज जाहेर, ए जो पढ़े आखिरी सब॥३९॥

जब श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में खुदाई नूर (ब्रह्मज्ञान) का सूर्य भारत में हिन्दू तन में आ गया, तो भारत पूर्व दिशा वाला बन गया। इसके विपरीत, पश्चिम दिशा वाले अरब में बिना उजाले का सूर्य उगा रहा, अर्थात् मुसलमानों में अज्ञानता का अन्धकार छाया रहा। कुरआन-हदीसों का बाह्य अर्थ लेने वाले पढ़े-लिखे मुसलमान अभी भी आकाश में उगने वाले सूर्य के अरब की पश्चिम दिशा में उगने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

भावार्थ— चाहे जापान हो या भारत, अरब अथवा अमेरिका, सभी देशों में सूर्य पूर्व दिशा में ही उगा करता है, पश्चिम दिशा में नहीं। कुरआन के कथनों का आशय ज्ञान रूपी सूर्य के उगने से है। जब अरब में या

मुसलमानों में, परमधाम के ज्ञान का सूर्य उगा, तो अरब या मुस्लिम समाज को पूर्व दिशा का माना गया। अब भारत में हिन्दू तन (श्री मिहिरराज जी) में, परमधाम के अखण्ड ज्ञान का सूर्य उगा हुआ है, जिस पर विश्वास न करने के कारण वह उनके लिये अन्धेरे जैसा ही रहेगा।

ज्यादा चौदे तबक से, दज्जाल गधा इन हद।

काना अस्वार तिन पर, सो भी वाही कद॥४०॥

दज्जाल का गधा चौदह लोकों से भी अधिक ऊँचा कहा गया है। इसके अतिरिक्त यह भी कहा गया है कि उस पर जो सवार बैठा है, उसकी ऊँचाई भी उतनी ही है, तथा वह एक आँख से काना है।

भावार्थ— दज्जाल अर्थात् अज्ञान रूपी राक्षस के गधे की ऊँचाई को चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड से भी ऊँचा कहा

गया है। दज्जाल एक आँख से काना है अर्थात् बहिर्मुखी दृष्टि वाला है। दज्जाल को भी उसी ऊँचाई वाला कहा गया है।

इसका आशय यह है कि मन की उत्पत्ति जिस महत्तत्त्व से होती है, उसी महत्तत्त्व से अहंकार उत्पन्न होता है। अहंकार से ही तन्मात्रायें और उनसे पञ्चभूतादि उत्पन्न होते हैं, जिनसे मानव शरीर का निर्माण होता है। सभी भोज्य पदार्थ पञ्चभूतों से ही बनते हैं। उनमें तामसिक पदार्थों का आहार करके मनुष्य अपनी बुद्धि को तामसिक बना लेता है, जिससे उसके मन में अज्ञानता का अन्धकार छा जाता है। यही अज्ञान मन को वशीभूत करके जीव को भी भटकाता रहता है। इसी तथ्य को दर्शाने के लिये, आलंकारिक भाषा में यह कथन किया गया है कि मन रूपी दज्जाल तमोगुणी बुद्धि

रूपी गधे पर सवार रहता है। सांख्य दर्शन के कथनानुसार, सृष्टि का प्रथम पदार्थ महत्तत्त्व है, जिसका सूक्ष्म अंश ही बुद्धि के रूप में कार्य करता है। इस प्रकार, मन और बुद्धि का आधार महत्तत्त्व है, इसलिये दोनों (दज्जाल तथा उसके गधे) को समान ऊँचाई वाला कहा गया है।

ताए रूहअल्ला मारसी, करसी दुनियां साफ।

आखिर उमत महंमदी, करसी आए इंसाफ॥४१॥

श्यामा जी द्वारा अपने तारतम ज्ञान से अज्ञान रूपी राक्षस (दज्जाल) का संहार किया जायेगा, जिससे संसार के लोगों का हृदय निर्मल हो जायेगा। इसके पश्चात् श्यामा जी की अँगरूपा ब्रह्मात्माओं द्वारा सारे संसार का न्याय किया जायेगा।

भावार्थ- ब्रह्मसृष्टियों के हृदय में परमधाम के ज्ञान का प्रकाश होगा, जिससे वे सारे संसार को परमसत्य का मार्ग दिखायेंगी। इसे ही न्याय करना कहा गया है।

दम दज्जाल सबन में, रहत दुनी दिल पर।

ए जो पातसाह अबलीस, करत सबों में पसर॥४२॥

सभी प्राणियों के हृदय में अज्ञानता (दज्जाल) का अस्तित्व है। वह सभी प्राणियों के ऊपर शासन करता है और सभी को भटकाता रहता है।

ऐसा ए जानत हैं, तो भी जाहेर चाहें दज्जाल।

जब ए दज्जाल मारिया, तब दुनी रेहेसी किन हाल॥४३॥

पढ़े-लिखे लोग इस बात को जानते हैं कि दज्जाल सबके दिल में बैठा है, फिर भी उसे बाहर खोजते रहते हैं

कि वह गधे पर बैठा हुआ दिखायी देगा। वे जरा भी यह नहीं सोचते कि चौदह लोक से भी अधिक ऊँचे दज्जाल को जब मारा जायेगा, तो इस संसार की क्या अवस्था होगी?

आखिर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर।

फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर॥४४॥

कियामत के समय में जाग्रत बुद्धि का फरिश्ता असराफील जब पहला सूर फूँकेगा, तो अज्ञानता के बड़े-बड़े पहाड़ समाप्त हो जायेंगे। पुनः दूसरे सूर में परब्रह्म की वाणी का फैलाव करेगा। इसके पश्चात्, योगमाया में इस चौदह लोक के ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर देगा।

भावार्थ— श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में विद्यमान जाग्रत

बुद्धि की तारतम वाणी का अवतरण, पहला सूर माना गया है। इस वाणी के समक्ष स्वप्न की बुद्धि के धर्मग्रन्थों के बड़े-बड़े विद्वानों का अस्तित्व नगण्य सा हो जायेगा, इसे ही पहाड़ों का उड़ाना कहा गया है।

तारतम वाणी का प्रकाश फैलने पर परब्रह्म की कृपा दृष्टि से इस ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति का उपहार मिलेगा, यह दूसरा सूर है। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी की ये चौपाइयाँ देखने योग्य हैं—

कायम सदी तेरहीं, उथींदा निरवाण। सनंध ३५/३०
एक सूरें उड़ाए के दिए, दूसरे तेरहीं में कायम किए।

यों कयामत हुई जाहेर दिन, महंमदे करी उमत रोसन॥

बड़ा कयामतनामा २४/६

गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर।

तब फिरसी सब फरिस्ते, एह बात चित धर॥४५॥

श्री महामति जी के धाम-हृदय से इस्राफील तारतम वाणी को अति मधुर स्वरों में गाएगा, जिसे सुनकर ईश्वरीय सृष्टि अपने धाम सत्स्वरूप लौट जायेगी।

भावार्थ- मारिफत के तीस हजार हरुफ मुहम्मद स.अ.व. द्वारा नहीं कहे गये, इसलिये वे कुरआन में नहीं लिखे हैं। वे सभी तारतम वाणी में सागर, श्रृंगार आदि में निहित हैं। इसलिये श्रीमुखवाणी को आखिरी कुरआन कहा गया है।

इस चौपाई के तीसरे चरण में "फिरसी" शब्द है, जिससे यह स्पष्ट है कि यहाँ कालमाया के देवी-देवताओं का प्रसंग नहीं है, अपितु ईश्वरीय सृष्टि का प्रसंग है।

जब जहूर जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर।

तब ए होसी कायम, ले याही का जहूर॥४६॥

जब अक्षरातीत की महिमा तथा तारतम वाणी का प्रकाश चारों ओर फैल जायेगा, तो यह संसार उसे आत्मसात् करेगा तथा परब्रह्म की कृपा स्वरूप अखण्ड होने का उपहार प्राप्त कर लेगा।

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए।

सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए॥४७॥

कुरआन में स्वयं परब्रह्म ने लिखवा रखा है कि कुरआन के गुह्य भेदों को आखरुल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के बिना अन्य कोई भी दूसरा स्पष्ट नहीं कर सकता।

प्रकरण ॥१५॥ चौपाई ॥८१९॥

सूरत मीजान की

इस प्रकरण में तुलनात्मक रूप से क्षर, अक्षर, और अक्षरातीत पर प्रकाश डाला गया है।

केहेती हों उमत को, सुनसी सब संसार।

मकसूद तिनका होएसी, जो लेसी एह विचार॥१॥

श्री महामति जी की आत्मा कह रही है कि यह तारतम्य वाणी मैं परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों के लिए कह रही हूँ और इसे सारा संसार सुनेगा, किन्तु लाभ एकमात्र उसको ही हो पायेगा जो इसके वचनों को निष्पक्ष हृदय से विचार कर अपने आचरण में उतारेगा।

फिरके सबों ने यों कहया, ए जो दुनियां चौदे तबक।

ढूढ़ ढूढ़ के हम थेके, पर पाया नाहीं हक॥२॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में जितने भी मत-पन्थ हैं, सभी का यही कहना है कि हम सच्चिदानन्द परब्रह्म को खोजते-खोजते थक गये, किन्तु उनका साक्षात्कार नहीं कर पाये।

वेद कतेब पढ़ पढ़ थके, केहे केहे थके इलम।

कहया तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम॥३॥

वेद-कतेब को बड़े-बड़े ज्ञानी पढ़ते-पढ़ते और उस पर बड़े-बड़े व्याख्यान देते-देते थक गये। उन्होंने ही अपने मुख से यह स्वीकार किया कि हमें इस नश्वर जगत से परे अखण्ड परमधाम का कुछ भी ज्ञान नहीं है।

भावार्थ- यद्यपि वेद के पुरुष सूक्त में बेहद मण्डल तथा केन सूक्त में ब्रह्मपुरी का वर्णन है, किन्तु बिना तारतम्य ज्ञान के इसे समझा नहीं जा सकता। यही कारण है कि

बड़े-बड़े विद्वान भी प्रकृति से परे उस चेतन त्रिगुणातीत परमधाम के बारे में कुछ भी नहीं कह पाते, अपितु परमधाम के सारे लक्षणों को इस नश्वर जगत के कण-कण में अति सूक्ष्म रूप से व्यापक मानकर वर्णित कर देते हैं, और अन्ततोगत्वा उस परब्रह्म को मन-वाणी से परे कहकर मौन धारण कर लेते हैं।

मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूह अल्ला मिले मुझ।

खोल दिए पट अर्स के, जो बका ठौर थी गुझ॥४॥

मेरे ऊपर प्राणेश्वर अक्षरातीत की कृपा हुई, जिसके परिणामस्वरूप श्यामा जी से मेरा मिलन हुआ और उन्होंने मेरे लिए उस अखण्ड परमधाम का द्वार खोल दिया, जिसे आज दिन तक कोई भी जान नहीं पाया था।

इलम दिया मोहे लदुन्नी, आई असल अकल।

सेहेरग से नजीक, पाया अर्स असल॥५॥

श्यामा जी ने मुझे तारतम ज्ञान दिया, जिससे मेरे हृदय में जाग्रत बुद्धि प्रविष्ट हो गयी, और तारतम ज्ञान के प्रकाश में मैंने यह समझ लिया कि हमारा अखण्ड परमधाम, जो हृद-बेहृद से भी परे है, इस नश्वर जगत में हमारी प्राणनली से भी अधिक निकट है।

और मेहेर महंमद की, खुली हकीकत।

पाई साहेदी दूसरी, हक की मारफत॥६॥

श्यामा जी की कृपा से मुझे परमधाम का यथार्थ ज्ञान प्राप्त हुआ। बसरी सूरत मुहम्मद स.अ.व. द्वारा जब कुरआन की साक्षी मिली, तो तारतम ज्ञान के प्रकाश में प्रियतम अक्षरातीत की पूर्ण पहचान हो गयी।

पाई इसारतें रमूजें, बीच अल्ला कलाम।

सक जरा ना रही, पाया कायम आराम॥७॥

मैंने कुरआन के अन्दर संकेतों में कहे हुए बहुत ही गुह्य रहस्यों को पाया, जिससे मुझे अक्षरातीत व परमधाम के सम्बन्ध में नाम मात्र भी संशय नहीं रहा और मेरी आत्मा को अखण्ड सुख का अनुभव हुआ।

अब करूं बका जाहेर, वास्ते अर्स उमत के।

कहूं अर्स और खेल की, ज्यों बेवरा समझें ए॥८॥

श्री महामति जी कहते हैं कि अब मैं परमधाम की आत्माओं के लिए अपने अखण्ड निजधाम का वर्णन कर रहा हूँ। मैं समीक्षात्मक दृष्टि से परमधाम की भी बातें कहूँगा और नश्वर जगत् की भी, जिससे ब्रह्मात्माएँ समझ जायें।

अब लीजो ए रोसनी, जो अरवा अर्स के।

ए निमूना देखिए, ज्यों सुध होए हिरदे॥९॥

जो भी परमधाम की आत्मा हो, वह अपने मूल घर के इस ज्ञान को अवश्य ग्रहण करें। मैं एक दृष्टान्त द्वारा वहाँ का वर्णन कर रहा हूँ, जिससे वह हृदय में आत्मसात् हो जाये।

नासूत और मलकूत का, निमूना देखकर।

ए बल दिल में लेय के, देखो अर्स जानवर॥१०॥

हे साथ जी! इस पृथ्वी लोक और वैकुण्ठ के दृष्टान्त से अपने हृदय में परमधाम के जानवरों के बल के विषय में जानिये कि जब यहाँ के जानवरों में इतनी शक्ति है, तो परमधाम के जानवरों में कितनी शक्ति होगी?

एक जानवर अर्स का, मैं तौल्या तिन का बल।

क्यों कहूं तफावत, ओ फना ए नेहेचल॥११॥

जब मैंने परमधाम के एक जानवर के बल का आँकलन किया, तो यह प्रश्न खड़ा हुआ कि यहाँ के जानवरों के बल की माप से मैं परमधाम के जानवरों के बल के अन्तर को कैसे स्पष्ट करूँ? परमधाम अखण्ड है, जबकि पृथ्वी लोक और वैकुण्ठ नश्वर हैं।

लाख ब्रह्मांड की दुनी का, है हिकमत बल बुद्ध जेता।

दे दिल नजरोँ तौलिया, मैं लिया अंदर में एता॥१२॥

मैंने अपने हृदय की आँखों से परमधाम के एक पशु के बल का आँकलन किया, तो मैं अपने हृदय में बस इतना ही जान पाया कि लाखों ब्रह्माण्ड के प्राणियों में जितनी बुद्धि और बल है, उससे भी अधिक बल, बुद्धि, और

तत्त्वज्ञान परमधाम के केवल एक पशु में है।

ज्यों कबूतर खेल के, हुए अलेखे इत।

आदमी एक नासूत का, दोऊ देखो तफावत॥१३॥

जिस प्रकार जादू के खेल में असंख्य कबूतर दिखाई देने लगते हैं और उनकी तुलना यदि पृथ्वी लोक के एक मनुष्य से की जाये, तो इन दोनों में क्या अन्तर दिखाई दे सकता है?

कोई केहेसी ए कछुए नहीं, और ए तो हैं जीवते।

ए जवाब है तिनको, देखो पटंतर ए॥१४॥

कोई कह सकता है कि जादू के खेल के कबूतर तो कुछ हैं ही नहीं, जबकि संसार के लोग तो जीवित प्राणी हैं। उनका उत्तर इस प्रकार का होगा। आप दोनों में भेद को

समझिए।

आगूं कायम अर्स के, है चौदे तबक यों कर।

ज्यों आगूं नासूत दुनीय के, ए खेल के कबूतर॥१५॥

अखण्ड परमधाम की तुलना में चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड का अस्तित्व वैसे ही है, जैसे पृथ्वी लोक के प्राणियों के समक्ष जादू के खेल के कबूतर।

जो कछु पैदा कुंन से, मैं तिन का देत निमूना।

सो क्यों कही जाए कायम को, जो वस्त है झूठ फना॥१६॥

कुन्न (हो जा) कहने से उत्पन्न होने वाली सृष्टि का मैं नमूना देता हूँ। यह मायावी सृष्टि नश्वर है, इसलिये इसे अखण्ड परमधाम के समक्ष तुलनात्मक दृष्टि से कैसे रखा जा सकता है?

भावार्थ- जिसके द्वारा उसके समान दूसरी वस्तुओं के स्वरूप तथा गुण आदि का ज्ञान हो जाये, नमूना कहलाता है।

तो कहा सब्दातीत को, हृद सद्द पोहोंचत नाहें।

ऐसे झूठ निमूना देय के, पछतात हों जीव माहें॥१७॥

उस शब्दातीत परमधाम में इस नश्वर जगत् के शब्द नहीं पहुँच पाते हैं। इस नश्वर जगत् के दृष्टान्त से परमधाम के विषय में कुछ भी कहने पर मेरा जीव अपने हृदय में पश्चाताप करता है कि अरे! मैंने यह क्या कर दिया (झूठा सा दृष्टान्त दे दिया)।

कछुक सुख तो उपजे, हिस्सा कोटमां पोहोंचे तित।

एक जरा न पोहोंचे हक को, मैं तार्थें दुख पावत॥१८॥

तुलनात्मक दृष्टि से कहे हुए मेरे कथन का यदि करोड़वाँ अंश भी परमधाम में पहुँच जाये, तो भी मेरे हृदय में कुछ सुख उत्पन्न हो जाये। मेरे कथन का अंश मात्र भी वहाँ नहीं पहुँच पा रहा है, इसलिए मेरा हृदय व्यथित हो रहा है।

मैं देख्या सुन्या दुनीय में, सो सब फना वस्त।

इन झूठे आकार से, क्यों होए कायम सिफत॥१९॥

मैंने इस संसार में जिन-जिन वस्तुओं को देखा और सुना है, वे सभी नश्वर हैं। इस नश्वर शरीर से भला अखण्ड परमधाम की महिमा का वर्णन कैसे हो सकता है?

तार्थें सिफत मैं क्यों करूँ, अर्स अजीम की ख्वाब में इत।
एता भी कहूँ मैं हुकमें, और केहेने वाला न कित॥२०॥
इसलिए इस स्वप्नमयी संसार में सर्वोपरि परमधाम का
वर्णन कैसे करूँ? इतना भी मैं श्री राज जी के आदेश से
ही कह रहा हूँ, क्योंकि और कोई दूसरा कह ही नहीं
सकता।

तार्थें अर्स और दुनी के, तफावत जानवर।
कायम और फना की, क्यों आवे बराबर॥२१॥
इसलिए परमधाम और इस नश्वर संसार के अन्तर को
कैसे स्पष्ट किया जाये? अखण्ड परमधाम और नश्वर
संसार की कभी तुलना ही नहीं हो सकती।

चुप किए भी न बने, समझाए ना बिना मिसल।

पसु पंखी अर्स और खेल के, देखो तफावत बल॥२२॥

यदि मैं चुप रहता हूँ तो भी उचित नहीं है और बिना दृष्टान्त के समझाया भी नहीं जा सकता। इसलिए हे साथ जी! परमधाम के पशु-पक्षियों और इस संसार के पशु-पक्षियों की शक्ति में कितना अन्तर है, इसे इस दृष्टान्त से समझिये।

इत अंगद बाल सुग्रीव, गरुड़ जांबू हनुमान।

ए उठावें पहाड़ को, ऐसे कहे बलवान॥२३॥

इस पृथ्वी लोक में अंगद, बालि, सुग्रीव, गरुड़, जामवन्त, और हनुमान जी इतने बलवान कहे जाते हैं कि ये पहाड़ को भी उठा लेते हैं।

लोक नासूती एह बल, कहे जो जानवर।

राम कृष्ण इनके सिर, तो कहे ऐसे जोरावर॥२४॥

इस पृथ्वी लोक के जानवरों का इतना बल है। इनके सिर पर भगवान राम और कृष्ण की छत्रछाया है, इसलिये ये इतने शक्तिशाली हैं।

भावार्थ- पौराणिक मान्यता के अनुसार ही बालि, अंगद, सुग्रीव, तथा हनुमान को बन्दर माना जाता है। गरुड़ को पक्षी माना जाता है तथा जामवन्त को ऋक्ष माना जाता है। अशिक्षा के अन्धकार में उपरोक्त महापुरुषों को पशु-पक्षी कहने की प्रवृत्ति पैदा हो गयी, इसलिए लोक श्रुति को यहाँ उद्धृत किया गया है। इसे अक्षरातीत का कथन नहीं मानना चाहिए।

वैदिक मान्यता के अनुसार अंगद, बालि, सुग्रीव, और हनुमान बन्दर नहीं हैं। जिस बालि का विवाह विश्व-

सुन्दरी तारा के साथ होता है, जो राज सिंहासन पर बैठता हो, हीरे-मोती के आभूषण धारण करता हो, जिसकी राजधानी पम्पापुर कही जाती है, जिसके आठ मन्जिले भवनों का वर्णन वाल्मीकी रामायण में आया है, वह बालि और उसका भाई सुग्रीव बन्दर कैसे हो सकते हैं? इसी प्रकार बालि पुत्र अंगद, जिसने अपनी वाकपटुता से रावण के भरे दरबार में उसे लज्जित कर दिया हो, भला वह बन्दर कैसे हो सकता है?

वेदों के अप्रतिम विद्वान, अखण्ड ब्रह्मचारी, महान योगी, हनुमान को बन्दर कैसे कहा जा सकता है? वे तो केरल के राजा पवन के पुत्र हैं। इन्हें बन्दर कहना तो इनकी महान गरिमा को कलंकित करना है। भगवान विष्णु के विमान का नाम गरुड़ है। इसी प्रकार जामवन्त जी महान वीर और महान स्वाध्यायशील योगी हैं। उन्हें

ऋक्ष कहना पौराणिकों की अल्प बुद्धि और पक्षपातपूर्ण हृदय की देन है। लोक परम्परा में प्रचलित कथनों को यहाँ उद्धृत करने का आशय जन-सामान्य को समझाने से है।

अब कहूं मलकूत की, बल की हकीकत।

लोक जिमी आसमान के, ऐ देखो तफावत॥२५॥

अब मैं वैकुण्ठ के बल की वास्तविकता का वर्णन कर रहा हूँ। इससे पता चल जायेगा कि पृथ्वी लोक और वैकुण्ठ के बल में कितना अन्तर है।

बोझ उठावें ब्रह्मांड को, ऐसे जोरावर।

गरुड़ बल ऐसा रखे, चले विष्णु मन पर॥२६॥

भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ में इतनी शक्ति है कि वह

सारे ब्रह्माण्ड का बोझ उठा सकता है और वह विष्णु भगवान के मन की इच्छा के अनुसार चलता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का कथन अतिशयोक्ति (बढ़ा-चढ़ाकर कहना) अलंकार की भाषा में है, इसे अक्षरशः नहीं मानना चाहिए।

देख बल इन खावन्द का, जो मलकूत में बसत।

कोट ब्रह्मांड नए कर, अपने बन्दों को बकसत॥२७॥

हे साथ जी! वैकुण्ठ में रहने वाले इन विष्णु भगवान की शक्ति को तो देखिए, जो करोड़ों नये ब्रह्माण्ड बनाकर अपने सेवकों को दे देते हैं।

भावार्थ- करोड़ों ब्रह्माण्डों को रचने की शक्ति अक्षर ब्रह्म में है, जिनके मन अव्याकृत का स्वाप्लिक रूप आदिनारायण इस कार्य को चरितार्थ करता है। यदि यहाँ

आदिनारायण का प्रसंग माना जाये तो ठीक है, किन्तु ब्रह्मा और शिव के समकक्ष माने जाने वाले विष्णु भगवान द्वारा करोड़ों ब्रह्माण्डों की रचना का कथन अतिशयोक्ति अलंकार की भाषा मानी जायेगी।

ओ तो भए नासूत में, मलकूत है तिन पर।

ए तो दोऊ फना मिने, ज्यों लेहेरें उठें मिटें सागर॥२८॥

यह तो मैंने पृथ्वी लोक तथा उसके ऊपर स्थित वैकुण्ठ लोक के पशु-पक्षियों के बल का वर्णन किया है। ये दोनों लोक उसी प्रकार नश्वर हैं, जैसे समुद्र में लहरों का उठना और मिटना बना रहता है।

नासूती अवतार के, ऐसे बंदे जोरावर।

सो मलकूत के एक खिन में, कई कोट जात मर मर॥२९॥

पृथ्वी लोक में अवतरित होने वाले भगवान राम के सेवक हनुमान, सुग्रीव आदि इतने बलवान हैं, फिर भी ऐसे करोड़ों बलवान सेवक वैकुण्ठ के एक क्षण में उत्पन्न होकर लय को प्राप्त हो जाते हैं।

नासूत तले मलकूत के, ज्यों लेहेर सागर।

तले इन मलकूत के, नासूत है यों कर॥३०॥

वैकुण्ठ के नीचे इस पृथ्वी लोक का अस्तित्व वैसे ही है, जैसे सागर से उठने वाली एक लहर अर्थात् वैकुण्ठ सागर है, तो पृथ्वी लोक उसकी लहर है।

दरिया ला मकान का, तिनकी लेहेर मलकूत।

तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत॥३१॥

इसी प्रकार निराकार एक सागर है, तो वैकुण्ठ उसकी

एक लहर है। वैकुण्ठ रूपी सागर से उठने वाली एक लहर को पृथ्वी लोक समझना चाहिये।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई से यह सिद्ध होता है कि महाविष्णु (आदिनारायण) एक है, जबकि करोड़ों वैकुण्ठों में रहने वाले विष्णु भगवान करोड़ों हैं। इस प्रकार अजाजील को भी महाविष्णु ही मानना चाहिये, जिसने समस्त सृष्टि को बनाया है। सभी प्राणी इसी की चेतना के प्रतिभास कहे जा सकते हैं। मोह सागर में जो नारायण का स्वरूप है, वह प्रकृति के महाकारण स्वरूप में है, जबकि वैकुण्ठ सूक्ष्म लोक में आता है।

ए तले ला मकान के, दोऊ फना के मांहें।

ए बल मलकूत नासूत, पर जरा कायम नांहें॥३२॥

मृत्यु लोक और वैकुण्ठ दोनों ही निराकार रूपी मोह

सागर से उत्पन्न हुए हैं, किन्तु ये दोनों ही नश्वर हैं।
आपने जिस वैकुण्ठ लोक और पृथ्वी लोक की शक्ति का
वर्णन सुना है, वह सब नश्वर है।

विष्णु ब्रह्मा रुद्र की, साहेबियां बुजरक।

ए चौदे तबक की दुनियाँ, जाने याही को हक॥३३॥

ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव का स्वामित्व बहुत बड़ा है।
चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड के लोग भ्रमवश इन्हीं को ही
परमात्मा का स्वरूप समझते हैं।

बिना हिसाबें उमतेँ, करें सिफतेँ अनेक।

सो सारे यों केहेवहीं, हम सिर एही एक॥३४॥

इस संसार के बहुसंख्यक लोग इनकी अनेक प्रकार से
महिमा गाते हैं। सभी मिलकर ऐसा कहते हैं कि हमारे

सिर पर तो एकमात्र यही परमात्मा हैं और हम इनके अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं जानते।

भावार्थ- वर्तमान समय में पृथ्वी लोक की जनसंख्या लगभग ७ अरब से अधिक है, जिनमें लगभग एक अरब हिन्दू हैं, और इन एक अरब हिन्दुओं में केवल कुछ करोड़ ही ब्रह्मा, शिव के भक्त हो सकते हैं। इसलिए कुछ करोड़ की संख्या को अनन्त (बेहिसाब) कहना अतिशयोक्ति अलंकार की भाषा है।

खुदा याही को जानहीं, जो मलकूत में त्रैगुन।

कदी ले इलम आगूं चले, गले ला मकान जो सुन॥३५॥

हिन्दू धर्म की पौराणिक विचारधारा के लोग वैकुण्ठ में रहने वाले ब्रह्मा, विष्णु, और शिव को ही परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। यदि इनमें से कोई शास्त्रों का आधार

लेकर इनसे आगे चलता है, तो वह महाशून्य-निराकार मण्डल में गल जाता है, अर्थात् अपने अस्तित्व को ही भुला बैठता है।

भावार्थ- निराकार में गलने का अर्थ अस्तित्वहीन होना नहीं है, अपितु अनन्त मोहसागर में स्वयं को भूल जाने से है। इनकी अस्तित्वहीनता महाप्रलय के समय ही हो सकती है।

ए जो खावंद मलकूत के, सो ढूँढ़ें हक को अटकल।

रात दिन करें सिफतें, पर पावें नहीं असल॥३६॥

वैकुण्ठ के स्वामी कहे जाने वाले तीनों देवता बुद्धि के अनुमान के सहारे परब्रह्म की खोज करते हैं। वे रात-दिन सच्चिदानन्द परब्रह्म की महिमा तो गाते हैं, किन्तु उसके वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते हैं कि वह कहाँ

है और कैसा है।

ऐसे बिना हिसाबें मलकूत, सो तीनों फरिस्ते समेत।

सिफत कर कर आखिर, कहे नेत नेत नेत॥३७॥

वैकुण्ठ में तीनों देवता— ब्रह्मा, विष्णु, शिव— निवास करते हैं। ऐसे अनन्त वैकुण्ठ के त्रिदेव परब्रह्म की महिमा गाते-गाते अन्त में नेति-नेत (ऐसा नहीं, ऐसा नहीं) कहकर थक जाते हैं।

करें कोट मलकूती सिफतें, देख नूरजलाल कुदरत।

तो पट आड़ा ना टरे, कई कर कर गए सिफत॥३८॥

अक्षर ब्रह्म की महान शक्ति को देखकर करोड़ों वैकुण्ठ के त्रिदेव उनकी महिमा गाते रहते हैं। वे केवल महिमा ही गाते रह गये। निराकार के पर्दे को पार कर अखण्ड धाम

में नहीं जा सके।

भावार्थ- इन त्रिदेवों में विष्णु और शिव जी पञ्चवासना के अन्तर्गत आते हैं, जिन्होंने निराकार को पार कर बेहद का सुख लिया।

ए सबें सिफतें करें, पर पोहोंचें न नूरजलाल।

ए पैदा ला मकान की, याको पोहोंचे ना फैल हाल॥३९॥

ये सभी त्रिदेव महिमा तो गाते हैं, किन्तु अक्षर ब्रह्म का दर्शन नहीं कर पाते। इनकी उत्पत्ति निराकार से हुई है। इनकी करनी और रहनी इन्हें अखण्ड धाम में नहीं पहुँचा पाती।

इन विध चले जात हैं, आखिर अव्वल से।

यों सिफत कर कर गए, पर नूर न पाया किनने॥४०॥

प्रत्येक सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर प्रलय होने तक त्रिदेव परब्रह्म के गुण गाते-गाते थक जाते हैं, लेकिन अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति नहीं कर पाते।

अब देखो बल महंमद का, दर्ई दुनियां को सरीयत।

कह्या आखिर रब आवसी, खोलसी हकीकत॥४१॥

हे साथ जी! मुहम्मद स.अ.व. की शक्ति देखिए, जिन्होंने इस संसार के लोगों को परब्रह्म की शरीयत की बन्दगी पर चलना सिखाया। उन्होंने कहा कि कियामत के समय परब्रह्म इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के रूप में आयेंगे और कुरआन के वास्तविक रहस्यों को उजागर करेंगे।

आवसी उमत अर्स से, ए खेल को देखन।

करें हक को जाहेर, सब का एह कारन॥४२॥

माया का खेल देखने के लिए परमधाम से ब्रह्मसृष्टियाँ आयेंगी और तारतम वाणी द्वारा परब्रह्म को जाहिर करेंगी। इस जगत् को बनाने का मुख्य कारण ही उनकी खेल देखने की इच्छा है।

कायम वतन करें जाहेर, करें जाहेर नूरजलाल।

करें उमत अर्स की जाहेर, करें जाहेर नूरजमाल॥४३॥

परमधाम की आत्माएँ जब इस नश्वर संसार में आयेंगी, तो वे तारतम ज्ञान द्वारा अक्षर ब्रह्म, अखण्ड परमधाम, तथा अक्षरातीत के स्वरूप को उजागर करेंगी।

जब ए करें जाहेर, देवें पट उड़ाए।

भिस्त दे सबन को, लेवें कयामत उठाए॥४४॥

जब वे अक्षर-अक्षरातीत की शोभा तथा लीला को संसार में ज्ञान द्वारा प्रकाशित करेंगी, तो संशय और अज्ञानता के सभी बन्धनों (आवरणों) को नष्ट कर देंगी। इसके पश्चात् इस ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को बेहद मण्डल की अखण्ड बहिश्तों में नूरमयी तन देकर अखण्ड कर दिया जायेगा।

ए सब नूर महंमद के, महंमद नूर खुदाए।

तो आखिर आए सबन को, दर्ई हैयाती पोहोंचाए॥४५॥

परमधाम की सभी ब्रह्मसृष्टियाँ श्यामा जी की नूर स्वरूपा (अँगरूपा) हैं तथा श्यामा जी परब्रह्म अक्षरातीत की नूर स्वरूपा हैं। यही कारण है कि ब्रह्मसृष्टियाँ

कियामत के समय संसार में आकर सभी जीवों को
अखण्ड मुक्ति देंगी।

बारे हजार उमत की, रूहें जो इतदाए।

जबराईल के पर पर, दोऊ बाजू बैठाए॥४६॥

जिबरील के दोनों पँखों पर, दोनों ओर, परमधाम की
छः-छः हजार अर्थात् १२००० सखियों को बैठाकर।

आप बैठे बीच में, ले अपनी तीन सूरत।

ला मकान उलंघ के, नूर पार पोहोंचत॥४७॥

प्रियतम अक्षरातीत स्वयं बीच में बैठेंगे और अपनी तीनों
सूरतों के साथ निराकार को पार करके अक्षरधाम से भी
परे परमधाम जायेंगे।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में आलंकारिक रूप से जिबरील को एक पक्षी मानकर वर्णित किया गया है कि किस प्रकार जिबरील के साथ परब्रह्म एवं उनकी आत्मायें परमधाम जायेंगी। वह परब्रह्म का जोश है, कोई पक्षी नहीं है।

ऐसा जोस बल महंमद का, जबराईल जानवर।

नासूत मलकूत ला परे, पोहोंचे अपने घर॥४८॥

मुहम्मद स.अ.व. का जानवर (जोश रूप पक्षी) कहे जाने वाले जिबरील में इतनी शक्ति है कि वह मुहम्मद स.अ.व. को अपने साथ लेकर इस पृथ्वी लोक से वैकुण्ठ, निराकार को पार कर अपने घर सत्स्वरूप तक पहुँचा देता है।

भावार्थ- जिस प्रकार पक्षी आकाश में निर्द्वन्द्व होकर

उड़ा करता है, उसी प्रकार जिबरील भी बिना किसी बाधा के कालमाया से योगमाया तक सरलतापूर्वक जाता है। इसलिये उसे उपमालंकार के रूप में पक्षी कहा जाता है।

उपरोक्त तीनों चौपाइयों के कथन से ऐसा आशय नहीं लेना चाहिए कि जिबरील रंगमहल तक या परमधाम में चला गया। जिबरील परब्रह्म के सत् अंग अक्षर ब्रह्म का फरिश्ता है, वह स्वलीला अद्वैत परमधाम के एकत्व (वहदत) में प्रवेश नहीं कर सकता। उसे अक्षरातीत का जोश या अक्षर ब्रह्म का आवेश भी कहते हैं। इस सन्दर्भ में श्री नवरंग स्वामी द्वारा रचित ग्रन्थ रोसननामा का यह कथन देखने योग्य है—

जबराईल फरिस्ता जेह, अक्षर का इस्क आवेस रूप तेह।

रोसननामा १४/३५

यह सर्वमान्य तथ्य है कि इस जागनी लीला में श्री महामति जी का धाम-हृदय ही परमधाम की भूमिका निभा रहा है, जिसमें युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी सहित अक्षर ब्रह्म, जिबरील, एवं इस्त्राफील सभी विद्यमान हैं। तारतम वाणी एवं बड़ी वृत्त में जिबरील के ४ मुख्य कार्य बताये गये हैं—

१. ब्रह्मात्माओं की परिक्रमा करना (सम्मान करना)।
२. उनकी वकीली करना (उनकी भावनाओं को परब्रह्म तक पहुँचाना)।
३. उन्हें माया से दूर रखकर उनके हृदय को निर्मल बनाये रखना।
४. उनकी सुरता को कालमाया से परे ले जाना।

चाहे अरब में स्वयं अक्षर ब्रह्म की आत्मा ही क्यों न हो, वह मेयराज में जिबरील के माध्यम से ही इस

निराकार मण्डल से पार जा सकी। अन्य सभी ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टि के साथ भी यही स्थिति माननी पड़ेगी। जिबरील के साथ ही किसी भी ब्रह्मात्मा की आत्मिक दृष्टि सत्स्वरूप तक जाती है। उसके पश्चात् परब्रह्म की कृपा से उसे अनन्य प्रेम (इश्क) प्राप्त होता है, जो उसे मूल मिलावा तक ले जाता है।

जागनी लीला में प्रत्येक ब्रह्मात्मा को श्रीजी के चरणों में लाना (जाग्रत होने के लिये अथवा तन-त्याग के पश्चात्) जिबरील का ही उत्तरदायित्व है। उपरोक्त चौपाई का प्रसंग बातिनी (सूक्ष्म) रूप से श्री महामति जी के धाम-हृदय के लिये भी घटित होगा।

प्रत्येक सुन्दरसाथ की आत्मा चितवनि में जिबरील के माध्यम से ही कालमाया को पार कर सत्स्वरूप तक पहुँचती है। आगे परमधाम में धनी का प्रेम ही ले जायेगा।

इस जागनी लीला के समाप्त होने के पश्चात् अर्थात् प्रलय के पश्चात्, सभी ब्रह्मात्मायें जिबरील के साथ ही कालमाया को पार करेंगी और सत्स्वरूप तक पहुँचेंगी। आगे धाम धनी उन्हें अपने साथ परमधाम ले जायेंगे। उपरोक्त चौपाई का यही आशय है।

यही स्थिति इस्राफील (जाग्रत बुद्धि के फरिश्ते) की भी है। दोनों का मूल घर सत्स्वरूप है। आगे की चौपाइयों में यही बात दर्शायी गयी है।

एह बल महंमद के, जानवर का जान।

दूजी गिरो फरिस्ते, पोहोंचाई नूर मकान॥४९॥

मुहम्मद स.अ.व. के जोश रूप पक्षी जिबरील में इतनी शक्ति है कि वह ईश्वरीय सृष्टि को उनके मूल घर अक्षरधाम अर्थात् सत्स्वरूप तक ले जाता है।

गिरो फरिस्ते इत रहे, जबराईल मकान।

एह आगे ना चल सके, याको याही ठौर निदान॥५०॥

ईश्वरीय सृष्टि जिबरील के मूल घर सत्स्वरूप तक ही रहेंगी। ये यहाँ से आगे नहीं जा सकेंगी, क्योंकि इनका मूल घर यहीं है।

जो रुहें अर्स अजीम की, खासल खास उमत।

ले पोहोंचे नूरतजल्ला, महंमद तीन सूरत॥५१॥

जो परमधाम की आत्मायें हैं, वे सबसे विशिष्ट हैं। वे तीनों सूरतों के साथ परमधाम जायेंगी।

भावार्थ— मुहम्मद तो शोभा का नाम है। प्रत्येक स्वरूप में अलग-अलग आत्मा की लीला है, जैसे बशरी सूरत में अक्षर ब्रह्म है, मल्की में श्यामा जी की आत्मा है, और हकी सूरत में महामति (श्री इन्द्रावती जी) की आत्मा है।

इनका मूल घर परमधाम है और उन्हें आत्माओं के साथ वहीं जाना है।

खेल देख उमत फिरी, भिस्त दे सबन।

इतहीं बैठे पोहोंचहीं, अपने कायम वतन॥५२॥

इस मायावी खेल को देखकर परमधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ संसार के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति देंगी और अपने मूल घर परमधाम चली जायेंगी। अपनी परात्म में जाग्रत होने पर उन्हें यह बोध होगा कि हमने तो यहीं से बैठे-बैठे ही माया का खेल देखा था।

इस चौपाई की दूसरी पंक्ति का अर्थ इस प्रकार भी होगा कि जैसे मूल मिलावा में हमारे तन विद्यमान हैं और हम अपनी सुरता द्वारा इस संसार में आकर खेल को देख रहे हैं, उसी प्रकार हमारे ये स्वाप्निक तन यहीं पड़े

रहेंगे और आत्मायें इन नश्वर तनों को छोड़कर अपने अखण्ड धाम में पहुँच जायेंगी। न तो वहाँ का तन यहाँ आया है और न यहाँ का तन वहाँ जायेगा।

भावार्थ- तारतम वाणी से सभी सुन्दरसाथ को यह बात ज्ञात है कि हमारे मूल तन वहीं हैं, हम मात्र अपनी सुरता से आये हैं, किन्तु परात्म में जाग्रत होने पर यह ज्ञान अनुभवजन्य होगा। इस प्रकार का अनुभव उन्हें भी होगा, जिन्होंने चितवनि में युगल स्वरूप के साथ अपनी परात्म को भी देख लिया है।

ए जो दुनियां चौदे तबक, ताए जबरईल जोस देत।

ए झूठों इस्क देखाए के, कायम सबों कर लेत॥५३॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड को जिबरील शक्ति देता है। वह संसार के जीवों को प्रेम लक्षणा भक्ति का मार्ग

दिखाकर उन्हें अखण्ड मुक्ति प्रदान करता है।

भावार्थ- जिबरील परब्रह्म का जोश है। वह जिस व्यक्ति में प्रविष्ट होता है, वह ब्राह्मी अवस्था को प्राप्त कर लेता है। शुकदेव जी, शिव जी, तथा विष्णु स्वरूप श्री कृष्ण जी ने इसी के बल से अखण्ड का ज्ञान संसार में दिया था।

क्यों कहूं बल जबराईल, जिन सिर है महंमद।

ए सिफत इन बल बुध की, क्यों कहे जुबां हद॥५४॥

मैं जिबरील की शक्ति का कैसे वर्णन करूँ, जब इसके सिर पर स्वयं अक्षर ब्रह्म (मुहम्मद) हैं। मेरी जिह्वा इस नश्वर संसार की है, भला वह जिबरील की अलौकिक शक्ति तथा बुद्धि का वर्णन कैसे कर सकती है।

कायम जिमी अर्स की, सांची जो साबित।

पसु पंखी इन भोम के, जो हमेसा बसत॥५५॥

सत्स्वरूप से भी परे परमधाम की धरती सत्य है और सदा नित्य (अखण्ड) रहने वाली है। यहाँ रहने वाले पशु-पक्षी भी अनादि, अखण्ड, और शाश्वत हैं।

कायम जिमी का खावंद, जिन को कहिए हक।

तिन जिमी के जानवर, सो होए तिन माफक॥५६॥

उस अखण्ड परमधाम में एकमात्र प्रियतम अक्षरातीत श्री राज जी हैं। ऐसी स्थिति में उस स्वलीला अद्वैत भूमिका के जानवर भी अक्षरातीत की महिमा के ही अनुकूल हैं।

बिना हिसाबें जानवर, पसु बिना हिसाब।

ए बल दिल में लेय के, तौलो निमूना ख्वाब॥५७॥

परमधाम में अनन्त प्रकार के पशु-पक्षी हैं। उनके अन्दर की शक्ति का आँकलन करके इस संसार के पशु-पक्षियों से उनकी शक्ति की तुलना कीजिए।

द्रष्टव्य- पशु और जानवर समानार्थक शब्द हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि पशु शब्द संस्कृत तथा हिन्दी भाषा का है और जानवर शब्द फारसी भाषा का है।

कोट इंड की दुनीय का, कूवत बल हिकमत।

अपार अर्स के जानवर, क्यों कहूं बल बुध इत॥५८॥

हमारे इस ब्रह्माण्ड जैसे करोड़ों ब्रह्माण्ड के सभी प्राणियों की शक्ति तथा कौशल की तुलना परमधाम के एक जानवर से नहीं की जा सकती, तो परमधाम के

अनन्त पशु-पक्षियों के बल तथा बुद्धि को इस संसार में कैसे कहा जा सकता है।

विशेष- "कुवत" शब्द फारसी है, जिसका हिन्दी और संस्कृत में अर्थ "बल" होता है।

अलेखे बल इन का, क्यों देऊं निमूना इन।

झूठे दम कहे ख्वाब के, जाको पेड़ ला मकान सुन॥५९॥

परमधाम के पशु-पक्षियों की शक्ति अनन्त है। इनकी भला किसी से कैसे उपमा दी जा सकती है। संसार के जीव स्वाप्निक होते हैं, इनकी उत्पत्ति निराकार से हुई होती है।

ए बल सब्दातीत को, सो सांचे हैं सूर।

और बल फना मिने, इत तिन की क्या मजकूर॥६०॥

परमधाम के पशु-पक्षी अखण्ड स्वरूप वाले हैं, इसलिये उनकी शक्ति भी अखण्ड है। इनकी शक्ति इतनी अधिक है कि उसे शब्दों की परिधि में नहीं बाँधा जा सकता। संसार के जीवों की शक्ति नश्वर है, भला उनसे तुलना करने की बात ही क्या हो सकती है।

सांच झूठ पटंतरो, कबहूँ कहयो न जाए।

सांच हक झूठी दुनियां, ए क्यों तराजू तौलाए॥६१॥

सत्य और झूठ में इतना अधिक अन्तर है कि उसे शब्दों में कहा ही नहीं जा सकता। परब्रह्म और परमधाम सत्य है, जबकि यह संसार नश्वर है। दोनों में तुलना कैसे की जा सकती है?

मलकूत और नूर के, क्यों कहूं तफावत।

झूठी दुनी बका हक को, ए कैसी निसबत॥६२॥

वैकुण्ठ और अक्षर ब्रह्म के भेद को मैं कैसे स्पष्ट करूँ।
इस स्वप्नमयी जगत् का भला सच्चिदानन्द परब्रह्म से
क्या सम्बन्ध हो सकता है?

कोट मलकूत नासूत, एक पल में करें पैदाए।

सो नूर नजर देख के, एक खिन में दें उड़ाए॥६३॥

पृथ्वी लोक तथा वैकुण्ठ सहित चौदह लोक के इस
ब्रह्माण्ड जैसे करोड़ों ब्रह्माण्डों को अक्षर ब्रह्म एक पल में
उत्पन्न करते हैं तथा उन्हें देखकर पल-भर में नष्ट कर
देते हैं।

ओ जाने हम कदीम के, आद हैं असल।

कई चले जात हैं मलकूत, नूरजलाल के एक पल॥६४॥

संसार के जीव तो यही समझते हैं कि हम सदा से ही अपने मूल रूप चैतन्य द्वारा रहने वाले हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि अक्षर ब्रह्म के एक पल में अनेक वैकुण्ठ लय को प्राप्त हो जाते हैं।

कोट इंड पैदा फना, करे नूर की कुदरत।

ए बल नूर जलाल का, पाव पल की इसारत॥६५॥

अक्षर ब्रह्म की चेतन प्रकृति योगमाया में इतनी अधिक शक्ति है कि वह अक्षर ब्रह्म के संकेत मात्र से एक पल के चौथाई भाग में ही करोड़ों ब्रह्माण्डों को उत्पन्न करती है तथा लय करती है।

झूठ तो कछुए है नहीं, सांचा कायम साबित।

यों अर्स और दुनीय के, कौन निमूना इत॥६६॥

यह नश्वर जगत तो कुछ है ही नहीं, जबकि परमधाम सत्य है और सर्वदा रहने वाला है। इसलिये सच्चिदानन्दमयी परमधाम तथा स्वप्नमयी जगत में कभी तुलना नहीं हो सकती।

बल अलेखे इन का, कोई इनका निमूना नाहें।

तो निमूना दीजिए, जो होवे कोई क्याहें॥६७॥

परमधाम के पशु-पक्षियों की शक्ति इतनी अनन्त है कि न तो उसे व्यक्त किया जा सकता है और न ही उसकी किसी से तुलना की जा सकती है। इनकी उपमा तो किसी से तभी दी जा सकती है, जब उसका कोई अखण्ड स्वरूप हो।

ऐसे अति जोरावर, जो रहेत हक हजूर।

तो मुख से सब्द ना केहे सकों, इन बल हक जहूर॥६८॥

प्रियतम अक्षरातीत की सान्निध्यता में रहने वाले ये पशु-पक्षी अनन्त शक्ति वाले हैं। अक्षरातीत के ही नूर का बल इनमें लीला करता है, इसलिये इनके अनुपम बल का वर्णन करने के लिये मेरे मुख में कोई शब्द ही नहीं है।

जो बसत अर्स जिमिँ, या नजीक या दूर।

रात दिन इन के अंग में, बरसत हक का नूर॥६९॥

परमधाम में रहने वाले ये पशु-पक्षी चाहे लीला रूप में श्री राज जी के निकट रहें या दूर रहें, दिन-रात इनके अंग-अंग में प्रियतम अक्षरातीत का नूर निरन्तर क्रीड़ा करता है।

यों अर्स के जानवर, सो सारे ही पेहेलवान।

बरसत नूर इनों पर, नजर हक मेहेरबान॥७०॥

इस प्रकार परमधाम के सभी पशु अनन्त बलशाली हैं। कृपा के सागर अक्षरातीत श्री राज जी इनके ऊपर अपनी अमृतभरी दृष्टि से प्रेम की वर्षा करते रहते हैं।

जोत सरूपी जानवर, बल बुध को नहीं सुमार।

नजरों अमी रस पीवत, अर्स खावंद सींचनहार॥७१॥

सभी जानवर ज्योतिर्मयी हैं। इनके बल तथा बुद्धि की कोई सीमा ही नहीं है। ये प्रियतम अक्षरातीत के नेत्रों से बरसने वाले प्रेममयी अमृत रस का निरन्तर पान करते हैं। श्री राज जी इनके हृदय में अपने प्रेम रस की वर्षा करते हैं।

कौन बल होसी इन का, देखो दिल विचार।

जिनका सका साहेब, पल पल सींचनहार॥७२॥

हे साथ जी! आप अपने हृदय में इस बात का विचार करके देखिए कि जिन जानवरों को श्री राज जी अपने हृदय का प्रेम पिलाते हों, अपनी प्रेम-भरी दृष्टि से उनके ऊपर प्रेम की वर्षा करते हों, उन जानवरों का बल कितना होगा, यह सहज ही सोचा जा सकता है।

ऐसे कोट ब्रह्मांड को, एक फूँके देवे तोड़।

तो भी निमूना इन का, कह्या न जावे जोड़॥७३॥

परमधाम के ये जानवर अपनी फूँक मात्र से ही इस ब्रह्माण्ड जैसे करोड़ों ब्रह्माण्डों को तोड़ सकते हैं, फिर भी न तो इनके बल की किसी से तुलना की जा सकती है और न इनके समकक्ष किसी को कहा जा सकता है।

उड़ावे कोट ब्रह्मांड को, एक जरे सा जानवर।

उड़ जाँँ इन के वाउ सों, जब ए उठावें पर॥७४॥

परमधाम का एक बहुत छोटा सा पक्षी (जानवर) भी यदि अपने पँखों को उठाता है, तो उसके पँखों की हवा मात्र के लगने से करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ सकते हैं।

ए निमूना अर्स ख्वाब का, देखो तफावत।

देखो अकल असल की, जो होवे अर्स उमत॥७५॥

हे साथ जी! आप में जो भी परमधाम की ब्रह्मात्मा हो, वह अपनी जाग्रत बुद्धि से परमधाम के जानवरों तथा इस स्वप्नमयी ब्रह्माण्ड के जानवरों के भेद को तुलनात्मक दृष्टि से देखें (विचार करें)।

उमत को देखलावने, बनाए चौदे तबक।

देने पहचान गिरो को, यासे जाने हक॥७६॥

चौदह लोक का यह ब्रह्माण्ड ब्रह्मसृष्टियों को दिखाने के लिये बनाया गया है, जिससे आत्माओं को अक्षरातीत के स्वामित्व एवं गरिमा की पहचान करायी जा सके।

पावने बुजरकी अर्स की, और बुजरकी खुदाए।

पावने बुजरकी रूहों की, कायम जो इसदाए॥७७॥

यह मायावी खेल इसलिए बनाया गया है कि ब्रह्मात्मायें अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत तथा अपने परमधाम की महिमा को जान सकें। इसके अतिरिक्त वे अपनी उस अखण्ड महिमा को भी जान सकें, जो अनादि काल से परब्रह्म की प्रियतमा होने के कारण है।

सो बुजरकी तो पाइए, जो फिकर कीजे दिल दे।

अर्स लज्जत पाइयत है, तेहेकीक किए ए॥७८॥

हमें अपने प्रियतम श्री राज जी तथा परमधाम की असीम गरिमा का पता तब चलता है, जब हम अपने हृदय को धनी के प्रति समर्पित करके इस नश्वर संसार से उनकी तुलना करके देखते हैं। जब हम धाम धनी के प्रति अटूट आस्था के साथ दृढ़ हो जाते हैं, तो हमें इस नश्वर जगत में भी परमधाम का स्वाद आने लगता है।

सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को।

विचार देखो हादीय की, वानी ले दिलमों॥७९॥

हे साथ जी! आप इस संसार की अज्ञानमयी निद्रा में सोते रहने के लिये नहीं आये हैं, अपितु यहाँ भी परमधाम के सुखों का रसास्वादन करना आपका

उत्तरदायित्व है। आप इस सम्बन्ध में श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी लेकर विचार कीजिए।

गिरो देखत जो ब्रह्मांड, सो तो कछुए नाहें।

सांच निमूना दूसरा, कोई नाहीं अर्स के माहें॥८०॥

यथार्थता तो यह है कि ब्रह्मसृष्टियाँ जिस ब्रह्माण्ड के खेल को देख रही हैं, वह कुछ भी नहीं है, मात्र स्वप्नवत् है। परमधाम सत्य है। इसकी तुलना में अन्य कोई है ही नहीं, जिसे कहा जा सके।

जब खावंद अर्स देखिए, तब तो एही एक।

इस बिना और जरा नहीं, जो तूं लाख बेर फेर देख॥८१॥

जब परमधाम में विराजमान श्री राज जी को देखते हैं, तो सर्वत्र एकमात्र उन्हीं का स्वरूप दिखायी देता है। हे

मेरी आत्मा! यदि तुम लाखों बार भी विचार करके देखो,
तो परमधाम में श्री राज जी से भिन्न एक कण भी नहीं है
अर्थात् वह स्वलीला अद्वैत है।

जो कछू अर्स में देखिए, सो सब जात खुदाए।

और खेलौने बगीचे, सो सब जातै के इमदाए॥८२॥

परमधाम में जो कुछ भी है, वह परब्रह्म का स्वरूप है।
वहाँ जो भी पशु-पक्षी रूप खिलौने तथा बाग-बगीचे हैं,
वे अनादि काल से ही परब्रह्म श्री राज जी के अङ्गरूप हैं।

न अर्स जिमिँ दूसरा, कोई और धरावे नाउ।

ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नाहीं खुदा बिन काहूँ॥८३॥

स्वलीला अद्वैत परमधाम में श्री राज जी के अतिरिक्त
अन्य कोई भी नहीं है। वेद-कतेब दोनों में यही लिखा है

कि वहाँ पर परब्रह्म के अतिरिक्त अन्य किसी का भी कोई पृथक अस्तित्व नहीं है।

भावार्थ- परमधाम में श्री राज जी का हृदय (मारिफत) ही श्यामा जी, सखियों, अक्षर ब्रह्म, महालक्ष्मी, खूब खुशालियों, तथा पच्चीस पक्षों के रूप (हकीकत) में लीला कर रहा है। इसलिये श्री राज जी से भिन्न वहाँ किसी भी अन्य स्वरूप की कल्पना नहीं की जा सकती। लीला रूप में सभी अलग-अलग दिख रहे हैं, किन्तु आन्तरिक (मारिफत) दृष्टि से केवल श्री राज जी ही हैं।

और खेलौने जो हक के, सो दूसरा क्यों केहेलाए।

एक जरा कहिए तो दूसरा, जो हक बिना होए इतदाए॥८४॥

परमधाम में खिलौनों के रूप में जो पशु, पक्षी आदि हैं, उन्हें भी श्री राज जी से अलग स्वरूप नहीं मानना

चाहिए। वहाँ के एक कण को भी श्री राज जी से भिन्न दूसरा स्वरूप तो तब कहा जाये, जब वह अनादि काल से ही परब्रह्म का अँगरूप न हो (उनसे अलग अस्तित्व हो)।

और पैदा फना जो होत है, क्यों दूसरा कहिए ताए।

ए खेल है खावंद के, ए जो चली कतारें जाए॥८५॥

उत्पन्न होने वाले तथा लय होने वाले ब्रह्माण्डों को भी दूसरा कैसे कह सकते हैं, इनका तो अस्तित्व ही नहीं है। अक्षरातीत के सत् अंग अक्षर ब्रह्म का यह खेल है, जिसमें ब्रह्माण्ड बनते हैं और लय होते हैं।

भावार्थ— कतार चलना एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है किसी समूहबद्ध कार्य का नियमित अन्तराल पर पूर्ण होते रहना। करोड़ों ब्रह्माण्डों के बनने तथा लय होने की

प्रक्रिया को इस प्रकार के कथन द्वारा दर्शाया गया है।

ए जो दुनियां खेल की, सो चीन्हत हक को नाहें।

ना तो क्यों कहे छल को दूसरा, जो होत पैदा फनाए॥८६॥

इस मायावी ब्रह्माण्ड में रहने वाली जीवसृष्टि को परब्रह्म की पहचान नहीं होती है। यही कारण है कि उत्पन्न होकर लय हो जाने वाले इस मायावी जगत को दूसरा कहना पड़ता है।

भावार्थ— परमधाम में स्वलीला अद्वैत की भूमिका है, जबकि योगमाया के ब्रह्माण्ड में अद्वैत है। इसी प्रकार, इस नश्वर जगत में जीव और प्रकृति की लीला होने से इसे द्वैत मण्डल कहते हैं। परमधाम में जहाँ सभी परब्रह्म के ही अङ्गरूप होने से उनके अतिरिक्त अन्य किसी की भी कल्पना नहीं की जा सकती, वहीं इस जगत के

सम्बन्ध में यही धारणा है कि या तो यह जगत है ही नहीं
या परब्रह्म से भिन्न असत्, जड़, और दुःख रूप है।

ए जो दुनियां ला इलाह की, ताए क्यों होए चिन्हार।

सो ला ही लिए जात है, ज्यों चले चींटी हार॥८७॥

अक्षर ब्रह्म के आदेश से उत्पन्न होने वाले इस जगत की
जीवसृष्टि को भला सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान कैसे
हो सकती है? जिस प्रकार एक चींटी के पीछे दूसरी
चींटियाँ पंक्तिबद्ध होकर चलती हैं, उसी प्रकार इस
मायावी जगत के सभी लोक-लोकान्तर निराकार-
महाशून्य में विलीन हो जाते हैं।

बड़ी बुजरकी हक की, तिन के खेल भी बुजरक।

लिख्या वेद कतेब में, पर इनों न जात सक॥८८॥

अक्षरातीत परब्रह्म की महिमा अनन्त है। इसी प्रकार उनके आदेश से बना हुआ खेल भी महान है। यद्यपि ऐसा वेद-शास्त्रों में लिखा हुआ है, फिर भी जीवसृष्टि का संशय जाता ही नहीं है।

भावार्थ- लीला और खेल में भेद है। लीला स्वयं परब्रह्म करते हैं, जबकि खेल में अन्य भाग लेते हैं। यह अवश्य हो सकता है कि उस खेल में स्वयं धाम धनी भी लीला करें, जिस प्रकार इस मायावी खेल में वे जागनी लीला कर रहे हैं।

झूठ सांच का निमूना, ओ फना ए नेहेचल।

खेल देखे पाइयत हैं, खुद खावंद का बल॥८९॥

इस झूठे संसार और परमधाम में यही तुलना की जा सकती है कि यह जगत नश्वर है, जबकि परमधाम

अनादि और अखण्ड है। इस मायावी जगत को देखने पर ही यह पता चलता है कि हमारी तथा हमारे प्राणेश्वर अक्षरातीत की शक्ति कितनी महान है।

असल आदमियों मिने, कोई पाइए उमत का एक।

ए देखो पटंतर दिल में, दोऊ का विवेक॥९०॥

इस संसार के सर्वश्रेष्ठ लोगों में कोई एक ही ब्रह्मसृष्टि होती है। हे साथ जी! अब आप अपने हृदय में ब्रह्मसृष्टि तथा जीवसृष्टि के भेद को समझिए।

अब कहूं मैं तिन को, अर्स खावंद की बात।

खड़ियां तले कदम के, जो हैं हक की जात॥९१॥

अब मैं परमधाम के प्रियतम अक्षरातीत के सम्बन्ध में अपनी उन आत्माओं से कहता हूँ, जो मूल मिलावा में

उनके चरणों में बैठी हुई हैं तथा उन्हीं की अँगरूपा हैं।

जो उतरे हैं अर्स अजीम से, रूहें और फरिस्ते।

कहिए जात खुदाए की, असल हैं अर्स के॥९२॥

परमधाम से ब्रह्मसृष्टियाँ तथा अक्षरधाम से ईश्वरीय सृष्टि इस माया का खेल देखने के लिये आयी हैं। जो ब्रह्मसृष्टि परमधाम से आयी है, उसे साक्षात् परब्रह्म का ही स्वरूप मानना चाहिए।

ए जो बात खुदाए की, सुनेंगे भी सोए।

एही हकुल्यकीन, जो अर्स दरगाह के होए॥९३॥

परमधाम की लीला में मग्न रहने वाली ये ब्रह्मसृष्टियाँ ही अपने प्रियतम पर अटूट विश्वास रखने वाली हैं तथा ये ही धाम धनी की बातों को निष्ठाबद्ध होकर सुनेंगी।

सो फुरमान केहेत है जाहेर, जो उतरे अर्स से।

उतरते अरवाहों सो, कौल किया हक ने॥९४॥

कुरआन में स्पष्ट रूप से यह बात कही गयी है कि परमधाम से जो भी ब्रह्मात्मायें इस मायावी जगत में आयी हैं, उनसे परमधाम से आते समय प्रियतम अक्षरातीत ने वचन लिया है।

कहया उतरते हक ने, अलस्तो-बे-रब-कुंम।

फेर कहया अरवाहों ने, वले न भूलें हम॥९५॥

परमधाम से आते समय धाम धनी ने कहा था कि क्या मैं तुम्हारा प्रियतम नहीं हूँ? उत्तर में सभी आत्माओं ने यही कहा था कि निश्चित रूप से आप ही हमारे प्रियतम हैं। हम किसी भी स्थिति में आपको नहीं भूलेंगी।

ए देत अर्स निसानियां, याद आवसी तिन।

सरत करी खावंद ने, उतरते अर्स रूहन॥९६॥

कुरआन आदि धर्मग्रन्थों में वर्णित परमधाम के संकेतों को देने से परमधाम की आत्माओं को अपने निज घर की याद आ जायेगी, क्योंकि अपने मूल घर से इस संसार में आते समय धाम धनी ने इनसे न भूलने का वचन लिया था।

अब जो असल उमत का, ताए देऊँ अर्स निसान।

इन विध देऊँ साहेदी, ज्यों होए हक पेहेचान॥९७॥

अब जो यथार्थ में परमधाम की ब्रह्मसृष्टि है, उसे मैं परमधाम के सांकेतिक तथ्य देता हूँ। मैं इस प्रकार से धर्मग्रन्थों की साक्षी दूँगा कि उसे अपने प्रियतम परब्रह्म की पहचान हो जायेगी।

कलाम अल्ला की साहेदी, और हदीसें महंमद।

तुमें कहूं तौहीद की, ले रूह अल्ला साहेद॥९८॥

मैं कुरआन तथा मुहम्मद स.अ.व. की हदीसों एवं सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के तारतम ज्ञान की साक्षी देकर परमधाम के स्वलीला अद्वैत स्वरूप की पहचान कराऊंगा।

नूर आवें दीदार को, लेने सुख सुभान।

ए कायम सुख देखिए, ए किया वास्ते पेहेचान॥९९॥

अक्षर ब्रह्म प्रतिदिन श्री राज जी का दर्शन करके आत्मिक सुख लेने के लिये चाँदनी चौक आते हैं। आप परमधाम के अखण्ड सुख के सम्बन्ध में विचार कीजिए। प्रियतम की पहचान देने के लिये ही यह मायावी खेल बनाया गया है।

नूरें चाह्या दिल में, देखूं इस्क रुहन।

तब तुमें खेल नूर का, दिल में हुआ देखन॥१००॥

अक्षर ब्रह्म के हृदय में यह इच्छा हुई कि मैं ब्रह्मसृष्टियों की अक्षरातीत के साथ होने वाली प्रेममयी लीला देखूँ। हे साथ जी! तब आपके भी मन में अक्षर ब्रह्म का मायावी खेल देखने की इच्छा हुई।

खेल किया तुम वास्ते, देखो दिल में आन।

ए झूठ खेल देखाइया, करने हक पेहेचान॥१०१॥

आप अपने हृदय में विचार करके देखिए तो यह स्पष्ट होगा कि माया का यह खेल आपके लिए ही बनाया गया है। प्रियतम अक्षरातीत की पूर्ण (मारिफत की) पहचान देने के लिये आपको माया का यह झूठा खेल दिखाया गया है।

भावार्थ- अक्षर ब्रह्म अनादि काल से अनन्त ब्रह्माण्डों की उत्पत्ति तथा प्रलय करते आ रहे हैं, किन्तु केवल यह ब्रह्माण्ड (व्रज, रास, एवं जागनी) सुन्दरसाथ को प्रियतम की पूर्ण पहचान देने के लिये बनाया गया है।

विचारो रुहें अर्स की, जो देखाई झूठ नकल।

देखो तफावत दिल में, ले अपनी असल अकल॥१०२॥

परमधाम की जो भी आत्मायें हैं, वे इस बात का विचार करें कि उनको परब्रह्म की पूर्ण पहचान देने के लिये ही वहाँ की नकल के रूप में यह झूठा ब्रह्माण्ड बनाया गया है। अपनी निज बुद्धि के प्रकाश में इस सम्बन्ध में विवेचना कीजिए कि परमधाम तथा संसार में क्या भेद है।

ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम।

पेहेले चीन्हों आप को, पीछे हादी और खसम॥१०३॥

दृष्टान्त के रूप में माया का यह मिथ्या ब्रह्माण्ड आपको यथार्थ सत्य की पहचान देने के लिये बनाया गया है। इसमें तारतम वाणी के प्रकाश में पहले आप अपनी पहचान कीजिए, तत्पश्चात् श्यामा जी और श्री राज जी की पहचान कीजिए।

ए खावंद सिर अपने, आपन इन के अंग।

अर्स वतन अपना, कायम हमेसा संग॥१०४॥

प्रियतम अक्षरातीत की छत्रछाया पल-पल अपने सिर पर है। हम सभी इनके ही अंग हैं। हमारा मूल घर परमधाम है, जो सदा सर्वदा नित्य है, शाश्वत है।

कायम जिमी अर्स की, साहेबी पूरन कमाल।

तो कैसा निमूना इनका, जिन सिर नूर जमाल॥१०५॥

परमधाम की धरती अखण्ड है। ब्रह्मात्माओं का स्वामित्व पूर्ण एवं अलौकिक है। जिनके सिर पर धाम धनी की पल-पल प्रेम-भरी कृपा बरसती हो, उनका इस संसार में कैसे दृष्टान्त दिया जा सकता है।

इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और।

कायम जिमी में दूसरा, काहूँ न पाइए ठौर॥१०६॥

इनका नमूना तो तब हो सकता है, जब परमधाम में कोई किसी से किसी भी दृष्टि (सौन्दर्य, प्रेम, आनन्द, एकत्व आदि) से कम होता। परमधाम में तो एक अक्षरातीत के अतिरिक्त अन्य कोई है ही नहीं, अर्थात् सखियों के रूप में श्री राज जी का ही स्वरूप लीला

करता है।

ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन।

ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन॥१०७॥

इस मिथ्या जगत में न तो अक्षर ब्रह्म की उपमा देने योग्य कोई पदार्थ है, न परमधाम की, न श्री राज जी की, न श्यामा जी, तथा उनकी अँगरूपा आत्माओं की।

महामत कहे ए मोमिनो, तुम हो बका के।

हक अर्स किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते॥१०८॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! आप अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं। इस संसार में तारतम वाणी द्वारा अक्षरातीत तथा परमधाम का जो ज्ञान अवतरित हुआ है, वह आपके कारण ही सम्भव हो सका है।

प्रकरण ॥१६॥ चौपाई ॥१२७॥

अर्स अजीम की हक मारफत – महाकारन

इस मायावी जगत में ब्रह्मसृष्टियों के आने का कारण है— उनके हृदय में माया का खेल देखने की इच्छा तथा अक्षर ब्रह्म के अन्दर सखियों की प्रियतम अक्षरातीत के साथ होने वाली प्रेममयी लीला को देखने की इच्छा।

किन्तु, खेल का महाकारण कुछ और है और वह है— अक्षरातीत के हृदय में प्रेम की परिपूर्णता के कारण अपनी पूर्ण पहचान अपने दोनों अंगों (सत् और आनन्द) को देने की इच्छा होना, जो आज तक सम्भव नहीं हो सका था। "मेहर का दरिया दिल में लिया, तो रूहों के दिल में खेल देखने का ख्याल उपजा" का कथन इसी सन्दर्भ में है। इस प्रकरण में इसी तथ्य को दर्शाया गया है।

कहूं अर्स अरवाहों को, रूह अल्ला के इलम।

जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम॥१॥

श्री महामति जी कहते हैं कि मुझे श्री राज जी का जैसा आदेश हुआ है, उसके अनुसार मैं तारतम ज्ञान के प्रकाश में परमधाम की आत्माओं से कह रहा हूँ, जिससे कि अक्षरातीत के यथार्थ स्वरूप को जाना जा सके।

और कहूं मैं अर्स की, ज्यों खबर उमत को होए।

सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए॥२॥

इसके अतिरिक्त मैं परमधाम की भी बातें कह रहा हूँ, जिससे परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को अपने मूल घर का ज्ञान हो जाये। मैं हर प्रकार से अखण्ड धाम की लीला, गरिमा, एवं शोभा आदि से सम्बन्धित वास्तविकता को कहूँगा, जिससे सबको उसका ज्ञान हो जाये।

हक जात जाहेर करूँ, और जाहेर हादी उमत।

नूर मकान जाहेर करूँ, ए एकै जात सिफत॥३॥

अब मैं परब्रह्म श्री राज जी की अँगस्वरूपा श्यामा जी एवं ब्रह्मसृष्टियों की वास्तविकता को उजागर करता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं अक्षरधाम में विराजमान अक्षर ब्रह्म का भी वर्णन करता हूँ। इन सबकी महिमा एक जैसी ही है।

महंमद नूर हक का, रूहें महंमद का नूर।

ए हमेसा बका मिने, ए एकै जात जहूर॥४॥

श्यामा जी परब्रह्म के नूर हैं अर्थात् उनकी अँगस्वरूपा हैं। सखियाँ श्यामा जी की अँगरूपा हैं। ये सभी परमधाम में एक ही स्वरूप में शोभायमान हैं।

ए जो सदरतुल-मुंतहा, ए है कायम अर्स।

ए जात सिफात एकै, ए हैं अरस-परस॥५॥

अक्षरधाम सर्वदा अखण्ड रहने वाला धाम है, जिसमें अक्षर ब्रह्म का निवास है। ये सभी (श्यामा जी, सखियाँ, अक्षर ब्रह्म, और महालक्ष्मी) एक ही परब्रह्म के अङ्गस्वरूप हैं। इनकी महिमा भी एक जैसी है तथा ये आपस में एक ही परब्रह्म के स्वरूप से ओत-प्रोत हैं।

नूर महंमद रूहें हक की, ए हैं एकै जात।

और बाग जोए हौज कौसर, ए साहेबी अर्स सिफात॥६॥

अक्षर ब्रह्म, श्यामा जी, तथा सखियाँ सभी श्री राज जी के ही अङ्गरूप हैं अर्थात् एक स्वरूप हैं। परमधाम के सभी बाग, यमुना जी, हौज कौसर आदि सभी उसी परमधाम की शोभा एवं ऐश्वर्य के अन्तर्गत हैं।

पार ना अर्स जिमी का, ना बागों का पार।

पार ना पसु पंखियन को, ना कछू खेल सुमार॥७॥

परमधाम की धरती तथा बागों के विस्तार की कोई सीमा नहीं है। वहाँ के पशु-पक्षियों की संख्या भी अनन्त है। वहाँ की लीलाओं की भी कोई सीमा नहीं है।

पार न बुध बल को, पार ना खूबी खुसबोए।

पार ना इस्क आराम को, नूर पार ना इत कोए॥८॥

परमधाम के पशु-पक्षियों की बुद्धि तथा बल भी असीम है। इनकी सुगन्धि आदि विशेषतायें भी अनन्त हैं। इनके प्रेम तथा आनन्द की भी कोई सीमा नहीं है। अक्षर ब्रह्म के रंगमहल के आगे स्वलीला अद्वैत के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है।

भावार्थ- परिकरमा १४/९१ में कहा गया है-

जैसी साहेबी रुहन की, विध लखमीजी भी इन।

वाहेदत में ना तफावत, पर ए जानें रूहें अर्स तन॥

अर्थात् महालक्ष्मी को भी उसी प्रेम और आनन्द का रस प्राप्त होता है, जो श्यामा जी एवं सखियों को प्राप्त है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अक्षर ब्रह्म के रंगमहल में भी परमधाम जैसा ही प्रेम और आनन्द का रस है, केवल अक्षर ब्रह्म का स्वरूप ही सत्ता का है।

सर्वरस सागर सहित सभी सागरों में युगल स्वरूप तथा सखियों की लीला होती है। इसलिये यह कहना उचित नहीं है कि यमुना जी के उस पार ही परमधाम है। वस्तुतः अक्षर ब्रह्म की लीला अव्याकृत से सत्स्वरूप तक होती है। परमधाम में अक्षरधाम या रंगमहल मात्र कथन रूप में ही हैं, जहाँ अक्षर ब्रह्म का निवास है। अक्षर ब्रह्म स्वलीला अद्वैत परब्रह्म के स्वरूप हैं, इसलिये

परमधाम की भूमिका सर्वरस सागर से ही प्रारम्भ हो जाती है।

एक पात बिरिख को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर।

ना होए नया कछू अर्स में, जंगल या जानवर॥९॥

परमधाम में न तो किसी वृक्ष का पत्ता गिरता है और न किसी पक्षी का पंख ही गिरता है। उस निजधाम के किसी भी वन या पशु-पक्षी में कोई भी नया परिवर्तन नहीं होता।

अब कहूं बेवरा खेल का, हुआ जिन कारन।

सो वास्ता कहूं इन भांत सों, ज्यों होए सबे रोसन॥१०॥

माया का यह खेल क्यों बनाया गया है, इसका मैं विवरण दे रहा हूँ। उस तथ्य को मैं इस प्रकार से प्रस्तुत

करूँगा, जिससे सबको समझ में आ जाये।

नूर मकान जो हक का, जित होत है हुकम।

होए पल में पैदा फना, ऐसे लाख इंड आलम॥११॥

परमधाम में जो अक्षरधाम है, वह राज जी का ही है, जिसमें उनके ही सत् अंग अक्षर ब्रह्म के स्वरूप विराजमान होकर अनन्त ब्रह्माण्डों की रचना का आदेश देते हैं। अक्षर ब्रह्म के आदेश मात्र से हमारे इस ब्रह्माण्ड जैसे लाखों ब्रह्माण्ड एक पल में उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं।

अर्स खावंद है एकला, आपै हक जात।

बिना कुदरत कादर की, क्यों पाइए सिफात॥१२॥

परमधाम में एकमात्र प्रियतम श्री राज जी हैं। लीला रूप

में दृष्टिगोचर होने वाले अन्य सभी (श्यामा जी, सखियाँ, अक्षर ब्रह्म, और महालक्ष्मी) उन्हीं के अङ्गरूप हैं। अक्षर ब्रह्म के योगमाया को जाने बिना अक्षर-अक्षरातीत की महिमा को जाना नहीं जा सकता।

इत हमेसा होत है, इन कादर की कुदरत।

ए खेल इन खावंद के, देखो नूर सिफत॥१३॥

हे साथ जी! अक्षरधाम में विराजमान अक्षर ब्रह्म की महिमा तो देखिये। उनकी शक्ति योगमाया द्वारा निरन्तर करोड़ों नश्वर ब्रह्माण्डों की रचना हुआ करती है। इस मायावी खेल के वे ही स्वामी हैं।

खेल में कई मुद्दत, होत है दुनियां को।

कई कोट होत पैदा फना, नूर के निमख मों॥१४॥

इस मायावी खेल के एक ब्रह्माण्ड की आयु में कई युग बीत जाते हैं, जबकि अक्षर ब्रह्म के एक ही क्षण में करोड़ों ब्रह्माण्ड पैदा होकर लय भी हो जाते हैं।

जब कछू पैदा ना हुआ, जिमी या आसमान।

सो हुकम तब ना हुआ, जिनथें उपजी जहान॥१५॥

अब मैं आपको उस समय की बात बता रहा हूँ, जिस समय न धरती थी, न आकाश था, और अन्य कुछ भी उत्पन्न नहीं हुआ था। उस समय वह आदेश भी नहीं हुआ था, जिससे यह सृष्टि बनी।

अब सुनो इन खेल की, रूहें उतरी जिन वास्ते।

फुरमान ल्याया रसूल, और उतरे फरिस्ते॥१६॥

हे साथ जी! अब इस मायावी खेल की बात सुनिये,

जिसे देखने के लिये परमधाम की आत्मायें और ईश्वरीय सृष्टि आयी हुई हैं। इन्हीं को साक्षी देने के लिये मुहम्मद स.अ.व. कुरआन का ज्ञान लेकर आये।

ए बीच ला मकान के, खेल जिमी आसमान।

चौदे तबक भई दुनियां, आखिर फना निदान॥१७॥

धरती और आकाश का यह सारा खेल निराकार के अन्तर्गत स्थित है। चौदह लोक का यह जो संसार दिख रहा है, अन्ततोगत्वा नष्ट हो जाने वाला है।

ए खेल हुआ महंमद वास्ते, और अर्स उमत।

आखिर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत॥१८॥

माया का यह खेल श्यामा जी तथा परमधाम की आत्माओं के लिये बनाया गया है। ये ही कियामत के

समय प्रकट होकर वास्तविकता को दर्शायेंगे।

अर्स उमत होसी जाहेर, और जाहेर हक जात।

करसी दुनियां कायम, ए महंमद की सिफात॥१९॥

हकी सुरत श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी की यह महिमा है कि उसके प्रकाश में परमधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ तथा परब्रह्म की अँगरूपा श्यामा जी इस संसार में अपनी महिमा सहित उजागर हो जायेंगे और इस सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति देंगे।

रूह अल्ला उतरे अर्स से, होए काजी लेसी हिसाब।

दे दीदार करसी कायम, यों कहे महंमद किताब॥२०॥

कुरआन में मुहम्मद स.अ.व. कहते हैं कि परमधाम से श्यामा जी (रूहुल्लाहु) आयेंगी और वे दूसरे तन में सबका

न्यायाधीश बनकर न्याय करेंगी तथा परब्रह्म के रूप में दर्शन देकर अखण्ड मुक्ति देंगी।

महंमद मेंहेदी आवसी, करसी इमामत।

बका पर सिजदा गिरोह को, करावसी आखिरत॥२१॥

कियामत के समय में आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां श्री प्राणनाथ जी आयेंगे और सभी ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम का मार्ग दर्शाते हुये परमधाम में विराजमान युगल स्वरूप की चितवनि करायेंगे।

भावार्थ- उपरोक्त प्रसंग कुरआन के सि. १७ सू. २२ आ. ४७ तथा पार: १७ सू. २२ आ. १६ "व कज़ालिक..... यहदी मय्युरीदु" में लिखा हुआ है।

सब कहें किताबें हक के, खेल हुआ हुकमें।

किस वास्ते हुकम किया, ए ना कहया किनने॥२२॥

परब्रह्म के आदेश से अवतरित सभी धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि यह मायावी जगत परब्रह्म के आदेश से बना है, किन्तु किसी ने भी यह नहीं कहा है कि इस खेल को बनाने का आदेश किसके लिये किया गया है।

अब देखो दुनियां जाहेरी, करम कांड सरीयत।

इनके इस्क ईमान की, कहूं सो हकीकत॥२३॥

हे साथ जी! अब कर्मकाण्ड और शरियत के मार्ग पर चलने वाले संसार के जीवों की वास्तविकता को देखिये। इनके हृदय में परब्रह्म के लिये कितना प्रेम और विश्वास है, उसकी यथार्थता को मैं बताता हूँ।

दुनी कहे हक को, वजूद नहीं मुतलक।

तो ए हुकम किनने किया, जो सूरत नाही हक॥२४॥

संसार के लोग कहते हैं कि निश्चित रूप से परब्रह्म का स्वरूप नहीं है। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह होता है कि जब उनका कोई स्वरूप ही नहीं है, तो सृष्टि को बनाने का आदेश किसने दिया?

न ठौर ठेहेरावें अर्स को, न हक की सूरत।

हुकम सूरत बिना क्यों होए, और हुकम रखे साबित॥२५॥

संसार के विद्वान न तो यह बताते हैं कि परमधाम का स्थान कहाँ है और न परब्रह्म के स्वरूप के विषय में ही कुछ कहते हैं। वे परब्रह्म के आदेश की बात तो अवश्य मानते हैं, किन्तु वे यह नहीं सोचते कि बिना स्वरूप के आदेश कैसे हो सकता है?

हक वजूद महंमद कहे, नूर पार तजल्ला नूर।

रद-बदल वास्ते उमत, पोहोंच के करी हजूर॥२६॥

मुहम्मद स.अ.व. कहते हैं कि परब्रह्म का अति सुन्दर किशोर स्वरूप है। मैंने अक्षरधाम से भी परे परमधाम में जाकर ब्रह्मसृष्टियों के लिये उनसे प्रत्यक्ष वार्ता की है।

हकें हुकम यों किया, कहे हरफ नब्बे हजार।

तीस जाहेर कीजियो, तीस तुम पर अखत्यार॥२७॥

परब्रह्म ने मुझसे ९०००० शब्दों (हरुफों) में वार्ता की और मुझे आदेश दिया कि इसमें से शरियत के ३०००० हरुफों को तुम्हें जाहिर करना है और ३०००० तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।

और तीस गुझ रखो, वे आखिर पर मुद्दार।

सो हम आए के खोलसी, अर्स बका के द्वार॥२८॥

शेष ३०००० हरुफों को छिपाकर रखना है। उनके भेदों को कियामत के समय में खोला जायेगा। मैं स्वयं उस समय इमाम महदी के रूप में आकर उन गुझ रहस्यों को उजागर करूँगा और अखण्ड परमधाम का द्वार खोल दूँगा अर्थात् उसकी पहचान कराऊँगा।

सो साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सों कौल।

भिस्त दरवाजे कायम, सब को देसी खोल॥२९॥

जिस परब्रह्म ने मुहम्मद स.अ.व. को वचन दिया था कि मैं कियामत के समय में आऊँगा और सारे ब्रह्माण्ड के लिये अखण्ड बहिश्तों का दरवाजा खोल दूँगा, वही परब्रह्म इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में

आयेंगे, ऐसा कुरआन का कथन है।

काजी होए के बैठसी, होसी सबों दीदार।

तो भी ईमान न दुनी को, जो एती करी पुकार॥३०॥

मुहम्मद स.अ.व. ने पुकार-पुकार के कहा कि कियामत के समय परब्रह्म इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के रूप में सबके न्यायाधीश होकर विराजमान होंगे और सबको दर्शन देंगे। फिर भी संसार के लोगों को कुरआन के वचनों पर विश्वास नहीं है।

ऐसा ईमान इन दुनी का, कहे महंमद को बरहक।

और महंमद के फुरमाए में, फेर तिन में ल्यावें सक॥३१॥

इस संसार की जीवसृष्टि का ऐसा बनावटी ईमान है कि एक ओर तो वह मुहम्मद स.अ.व. को सच्चा कहती है,

किन्तु उनके कथनों में ही पुनः संशय लाती है कि हमें इस पर विश्वास नहीं है।

महंमद बातें हकसों, पोहोंच के करी हजूर।

दुनी न माने हक सूरत, जासों एती भई मजकूर॥३२॥

मुहम्मद स.अ.व. ने मूल मिलावा में आत्मिक दृष्टि से पहुँचकर परब्रह्म से प्रत्यक्ष बातें की। जिस अक्षरातीत से इतनी बातें हुई, संसार के लोग उनका स्वरूप ही नहीं मानते।

और कहूं लैलत कदर की, जो कहे तक़रार तीन।

हादी हुकमें रूहें फरिस्ते, बीच नाजल इसलाम दीन॥३३॥

अब मैं उस महिमावान रात्रि का वर्णन करता हूँ, जिसके तीन भाग हुए— ब्रज, रास, और जागनी। श्री राज जी के

आदेश से श्यामा जी सहित ब्रह्मसृष्टियाँ और ईश्वरीय सृष्टियाँ इस संसार में आयीं और उन्होंने श्री निजानन्द सम्प्रदाय का मार्ग अपनाया।

और आगे नूह तोफान के, बीच लैलत कदर।

गिरो उतरी अर्स से, जो चढ़ी किस्ती पर॥३४॥

उस महिमावान रात्रि की रास लीला में जो आत्मार्ये योगमाया के ब्रह्माण्ड में गयी थीं (किस्ती पर चढ़ी थीं), वे परमधाम से पुनः इस नश्वर जगत का खेल देखने के लिये आयीं।

भावार्थ— यह तो सर्वविदित है कि सखियाँ रास के पश्चात् पुनः परमधाम पहुँची थीं।

कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर।

खेल देखन के कारने, आईयां उमेदां कर॥

प्रकास हि. १/१ का कथन यही दर्शाता है।

दो तकरार पेहेले कहे, जो गुजरे मांहें लैल।

तोफान पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल॥३५॥

लैल-तअल-कद्र की रात्रि में दो लीलायें ब्रज तथा रास की पहले हो चुकी हैं। रास लीला के पश्चात् यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड बना है, जिसमें तारतम वाणी के उजाले में प्रियतम को पहचानकर खेल देख रहे हैं।

दसमी लग रोज रब का, सो दुनी के साल हजार।

कहया बेहेतर महीने हजार से, लैल तीसरा तकरार॥३६॥

मुहम्मद स.अ.व. के अन्तर्धान होने के बाद दसवीं सदी तक संसार के एक हजार वर्ष बीत गये थे, जो परब्रह्म के एक दिन के बराबर हैं। लैल-तअल-कद्र का तीसरा

भाग, अर्थात् जागनी ब्रह्माण्ड का प्रारम्भिक भाग, एक हजार महीने से भी अधिक का माना गया है।

भावार्थ- १ हजार माह में ८३ वर्ष और ४ महीने होते हैं। यह विक्रम सम्वत् १६३८ से १७२२ तक माना जाता है।

महंमद मेंहेदी ईसा नाजल, असराफील जबराईल।

रुहें फरिस्ते ऊपर, हकें भेजे एह वकील॥३७॥

इस खेल में तीनों सूरतें बशरी, मल्की, तथा हकी एक ही तन (श्री महामति जी) के अन्दर लीला कर रही हैं। प्रियतम परब्रह्म ने जिबरील तथा इस्राफील को भी ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों की देखभाल के लिये वकील के रूप में भेज रखा है।

रहे साल चौरासी लैल में, तिन ऊपर हुई फजर।

अग्यारैं सदी मिने, मेरी बातून खुली नजर॥३८॥

इस जागनी ब्रह्माण्ड के प्रारम्भिक ८४ वर्षों (वि.सं. १६३८-१७२२) तक सभी अन्धकार में रहे। इसके पश्चात् तारतम वाणी के अवतरण से ज्ञान का उजाला हुआ। ग्यारहवीं सदी में अर्थात् वि.सं. १७२२ के पश्चात् मेरी अन्तर्दृष्टि खुल गई।

भावार्थ- अन्तर्दृष्टि खुलने का तात्पर्य है- श्री महामति जी के धाम-हृदय में अखण्ड ज्ञान का पूर्ण प्रकाश हो गया और जागनी लीला प्रारम्भ हो गयी। वि.सं. १७२२ में श्रीजी ने दीपबन्दर से जागनी लीला प्रारम्भ की।

चौदे तबकों न पाइया, अर्स हक का कित।

सो नजीक देखाए सेहेरग से, इलम ईसा के इत॥३९॥

चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में आज तक किसी ने भी अक्षरातीत के परमधाम को नहीं पाया था कि वह कहाँ पर है। श्यामा जी के तारतम ज्ञान ने यह दर्शा दिया है कि वह परमधाम ब्रह्मसृष्टियों के धाम-हृदय में है, जो प्राणनली (शाहरग) से भी अधिक निकट है।

अर्स ना चौदे तबक में, सो लिए इलम ईसा के।

नजीक देखाया सेहेरग से, बीच अर्स बैठाए ले॥४०॥

जो परमधाम चौदह लोक के इस ब्रह्माण्ड में कहीं भी नहीं है, उसे श्यामा जी के तारतम ज्ञान ने प्राणनली से भी निकट दर्शा दिया है, जिससे यह बोध होता है कि हम तो परमधाम में ही बैठे हैं।

भावार्थ— शाहरग (प्राणनली) इस पञ्चभौतिक तन में ही होती है, परात्म के तन में नहीं। मूल सम्बन्ध की पहचान

होने पर आत्मा को अपने धाम-हृदय में ही सम्पूर्ण परमधाम एवं युगल स्वरूप के दर्शन होने लगते हैं, और उसे इस मायावी जगत में भी ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे हम परमधाम में ही बैठे हैं। इस तथ्य को तारतम्य वाणी के इन कथनों से जाना जा सकता है—

अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो हक सों रूह निसबत।
 ना तो अर्स दिल आदमी का, क्यों कह्या जाए ख्वाब में इत॥
 रूह तन की असल अर्स में, अर्स ख्वाब नहीं तफावत।
 तो कह्या सेहेरग से नजीक, हक अर्स दुनी बीच इत॥

श्रृंगार २६/१२, १३

और मेहेर करी मोहे रूहअल्ला, दिया खुदाई इलम।
 तूं रूह है अर्स अजीम की, तुझ को दिया हुकम॥४१॥

मेरे ऊपर सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी ने अपार कृपा की और मुझे तारतम ज्ञान देकर कहा कि तू परमधाम की आत्मा है। मैं तुम्हें यह आदेश देता हूँ।

गिरो आई लैल के खेल में, सो तुमें मिलसी आए।

दिल साफ इनों के करके, अर्स में लीजे उठाए॥४२॥

इस मायावी जगत में परमधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ आयी हुई हैं, वे तुम्हें आकर मिलेंगी। तारतम ज्ञान के प्रकाश में इनके हृदय को निर्मल करो तथा इन्हें परमधाम लेकर आओ।

ए बात मैं दिल में लई, तब महंमद हुए मेहेरबान।

हकीकत मारफत के, पट खोल दिए फुरमान॥४३॥

जब मैंने यह बात अपने दिल में ली, तो बशरी सूरत की

मेरे ऊपर कृपा हुई। दोनों हादियों (मुहम्मद स.अ.व. तथा सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) ने मेरे धाम-हृदय से कुरआन एवं भागवत आदि धर्मग्रन्थों में छिपे हुए हकीकत और मारिफत (सत्य एवं परमसत्य) के भेदों को स्पष्ट कर दिया।

सब सुध भई अर्स की, हुई हक सों निसबत।

गिरो मिली मोहे वतनी, ताए देऊं अर्स न्यामत॥४४॥

इसके पश्चात् मुझे परमधाम तथा अक्षरातीत से अपने मूल सम्बन्ध का सम्पूर्ण बोध हो गया। जागनी लीला में मुझे परमधाम की आत्मायें मिलीं, जिन्हें मैं परमधाम के ज्ञान की निधियाँ दे रहा हूँ।

ए सुकन पेहेले लिखे, बीच कतेब वेद।

सो ए करत हों जाहेर, जो दिया दोऊ हादियों भेद॥४५॥

वेद तथा कतेब में ये बातें पहले से लिखी हुई थीं। मेरे धाम-हृदय में दोनों हादियों (दोनों सूरतों) ने विराजमान होकर धर्मग्रन्थों के जिन छिपे हुए भेदों को उजागर किया है, उन्हें मैं सुन्दरसाथ के लिये प्रकाश में लाता हूँ।

भावार्थ- पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र, कुरआन आदि में परमधाम, ब्रज, रास, और जागनी से सम्बन्धित ज्ञान दिया गया है। इस चौपाई के प्रथम चरण का यही आशय है।

रूहें बेनियाज थीं, बीच दरगाह बारे हजार।

जाने ना आप अर्स की, साहेबी अपार॥४६॥

अपने प्राणेश्वर के अथाह प्रेम में डूबी होने के कारण

परमधाम में १२ हजार ब्रह्मसृष्टियाँ इतनी बेसुध थीं कि उन्हें अपनी तथा परमधाम की अपार गरिमा की कोई पहचान ही नहीं थी।

सुध नहीं दुख सुख की, ना सुध विरह मिलाप।

ना सुध बुजरक अर्स की, खबर न खावंद आप॥४७॥

उन्हें यह भी पता नहीं था कि दुःख क्या है, सुख क्या है, विरह का कष्ट क्या होता है, तथा मिलन का सुख कैसा होता है। उन्हें अपने महान परमधाम तथा अपने प्राणवल्लभ श्री राज जी की अनन्त महिमा का भी कुछ ज्ञान नहीं था।

साहेब बंदे की सुध नहीं, छोटा बड़ा क्यों कर।

ना सुध एक ना दोए की, ना सांच झूठ खबर॥४८॥

परमधाम में उन्हें यह भी ज्ञान नहीं था कि स्वामी (परमात्मा) कौन है तथा उनका भक्त कौन है, कोई व्यक्ति छोटा और कोई बड़ा क्यों कहलाता है। उन्हें स्वलीला अद्वैत परब्रह्म तथा द्वैत जगत में भी भेद का पता नहीं था। उन्हें इसका भी ज्ञान नहीं था कि सत्य क्या है तथा झूठ क्या है।

ना सुध दोस्त ना दुस्मन, ना सुध नफा नुकसान।

ना सुध दूर नजीक की, ना सुध कुफर ईमान॥४९॥

स्वलीला अद्वैत की भूमिका में रहने से उन्हें यह भी ज्ञात नहीं था कि मित्र कौन है, शत्रु कौन है, हानि क्या है, तथा लाभ क्या है। दूरवर्ती पदार्थ क्या है तथा निकटस्थ वस्तु क्या है। कुफ्र (परब्रह्म पर अविश्वास) क्या है तथा अटूट विश्वास क्या होता है।

तिस वास्ते खेल देखाइया, ए बात दिल में आन।

झूठ निमूना देखाए के, रूहों होए हक पेहेचान॥५०॥

यह बात अपने हृदय में लेकर धाम धनी ने अपनी अँगनाओं को यह माया का खेल दिखाया है। माया में झूठ को देखकर ही उन्हें अपने प्रियतम की यथार्थ पहचान हो सकती है।

सांची साहेबी हक की, कोई नहीं दूजा और।

झूठ नकल देखे बिना, पावे ना अर्स ठौर॥५१॥

एकमात्र सच्चिदानन्द परब्रह्म का स्वामित्व ही सर्वोपरि है, सत्य है। उनकी गरिमा के समकक्ष कोई भी अन्य दूसरा नहीं हो सकता। किन्तु माया के इस स्वाप्निक ब्रह्माण्ड में आये बिना परमधाम की आत्माओं को अपने मूल घर की गरिमा (स्वामित्व) का अनुभव नहीं हो

सकता।

बिना निमूने न पाइए, क्यों है तफावत।

कछू दूजी देखे बिना, पाइए ना हक सिफत॥५२॥

इस मिथ्या जगत के दृष्टान्त के बिना परमधाम और संसार के भेद का पता नहीं चल सकता। किसी मिथ्या वस्तु (स्वाप्निक संसार) को देखे बिना अक्षरातीत की महिमा को नहीं समझा जा सकता।

यों जान बीच बका मिने, दिल में ल्याए हक।

नूर-जलाल रूहन को, देखें असल इस्क॥५३॥

ऐसा जानकर परमधाम में श्री राज जी ने अपने हृदय में विचार किया कि अक्षर ब्रह्म तथा परमधाम की आत्माओं में मेरे प्रति जो वास्तविक प्रेम है, उसे देखें।

और लिया ए दिल में, जो अरवाहें अर्स की।

दूजी बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी॥५४॥

उन्होंने अपने हृदय में यह भी विचार किया कि जब तक परमधाम की आत्मायें मायावी जगत में नहीं जायेंगी, तब तक वे यह नहीं जान सकती कि मेरे (अक्षरातीत के) स्वामित्व की गरिमा क्या है।

जित दूजी कोई है नहीं, एकै साहेब हक।

तो तिन को दूजी बिना, कौन कहे बुजरक॥५५॥

जिस स्वलीला अद्वैत परमधाम में एकमात्र सच्चिदानन्द परब्रह्म के अतिरिक्त अन्य किसी का स्वरूप ही नहीं है, तो बिना किसी मिथ्या जगत का दृष्टान्त दिये उन अक्षरातीत को सर्वोपरि महान कौन कह सकता है।

असल होए जित अकेला, और होए नहीं नकल।

सो नकल देखे बिना, क्यों पाइए असल॥५६॥

जिस स्वलीला अद्वैत परमधाम में एकमात्र परब्रह्म ही हों और उनकी अनुकृति (नकल) के रूप में कोई अन्य न हो, तो बिना अनुकृति की पहचान किये उस सच्चिदानन्द परब्रह्म की भी यथार्थ पहचान कैसे हो सकती है?

भावार्थ— जिस प्रकार दर्पण में देखने पर मनुष्य का प्रतिबिम्ब यथार्थतः दिखता है किन्तु वह होता नहीं है, तथा दर्पण में दिखने वाले प्रतिबिम्ब को हाथ से छूने का प्रयास करने पर हाथ दर्पण से टकराता है लेकिन प्रतिबिम्ब का स्पर्श नहीं होता है, उसी प्रकार यह सम्पूर्ण मायावी जगत अक्षरातीत के सत् अंग अक्षर ब्रह्म के मन स्वरूप अव्याकृत के स्वाप्टिक रूप आदिनारायण द्वारा बनाया गया है।

जिस प्रकार परमधाम सत्, चित्, आनन्दमय है, उसी प्रकार यह जगत् असत्, जड़, और दुःखमय है। जिस प्रकार परमधाम में प्रेम, शान्ति, और आनन्द का सागर लहराता है, उसी तरह से इस संसार में द्वेष, अशान्ति, और दुःख का सागर क्रीड़ा करता है। इसमें भटकने वाला जीव प्रेम, शान्ति, और आनन्द को मृगतृष्णा की तरह खोजता है।

परमधाम के गुणों के विपरीत होते हुए भी मनुष्य परब्रह्म, एवं प्रेम, शान्ति, तथा आनन्द को इस जगत् में ढूँढने का प्रयास करता है। इसलिये इस संसार को आंशिक लक्षणों की दृष्टि से परमधाम की अनुकृति या प्रतिकृति तो कह सकते हैं, लेकिन स्वरूप की दृष्टि से नहीं। इस जगत् में भी सच्चिदानन्द परब्रह्म की चर्चा होती है तथा अनेक साधनाओं से उनको खोजने का प्रयास

किया जाता है। प्राणियों में परस्पर आंशिक प्रेम, सुख, तथा क्षणिक शान्ति का आभास होता है। इस दृष्टि से परमधाम की अनुकृति कह सकते हैं, किन्तु स्वरूप की दृष्टि से नहीं।

परमधाम का प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब योगमाया में पड़ता है और उसका प्रतिबिम्ब कालमाया में हो सकता है। इस प्रकार कालमाया के ब्रह्माण्ड को नकल की नकल तो कह सकते हैं, लेकिन प्रत्यक्ष नकल (अनुकृति) नहीं कह सकते। "जो नकल हमारे की नकल" (किरंतन ९१/४) के कथन से इस तथ्य को समझा जा सकता है।

जित दुख कोई जाने नहीं, होए अकेला सुख।

ए सुख लज्जत तब पाइए, जब देखिए कछू दुख॥५७॥

उस परमधाम में एकमात्र सुख ही सुख है। वहाँ कभी

किसी ने दुःख को जाना ही नहीं था। परमधाम के सुख का स्वाद तो तब पाया जा सकता है, जब इस नश्वर जगत में कुछ दुःख देखा जाये।

सांच होए जित एकै, पाइए न जिद के छूट।

सांच हक तब पाइए, जब होए निमूना झूठ॥५८॥

जिस परमधाम में एकमात्र सत्य का ही साम्राज्य है। हठपूर्वक खोजने पर भी वहाँ अंशमात्र भी झूठ नहीं मिल सकता और सत्य से छुटकारा नहीं मिल सकता। जब इस मिथ्या मायावी जगत को देखा जाये, तो इसके दृष्टान्त से सच्चिदानन्दमय परब्रह्म की वास्तविक पहचान हो सकती है।

दूसरा कोई है नहीं, जित एकै होए।

तो तिन की सुध दूजे बिना, क्यों कर देवे सोए॥५९॥

जिस स्वलीला अद्वैत परमधाम में एकत्व की क्रीड़ा होती है, वहाँ राज जी के सिवाय किसी दूसरे का अस्तित्व माना ही नहीं जा सकता। ऐसी स्थिति में दूसरे स्वरूप की उपस्थिति के बिना परब्रह्म की सुध कैसे दी जा सकती है?

जित साहेब होवे एकला, ना साहेदी दूजे बिन।

बिन दिए साहेदी तीसरे, क्यों आवे ईमान तिन॥६०॥

जिस परमधाम में एकमात्र श्री राज जी का हृदय ही क्रीड़ा कर रहा है, तो उनकी साक्षी बिना किसी अन्य के कैसे दी जा सकती है, और तीसरे व्यक्ति को दूसरे की साक्षी दिये बिना विश्वास कैसे हो सकता है?

भावार्थ- परमधाम में एकमात्र श्री राज जी का हृदय ही श्यामा जी, सखियों, अक्षर ब्रह्म, महालक्ष्मी, खूब खुशालियों, पशु-पक्षियों, तथा २५ पक्षों के रूप में क्रीड़ा कर रहा है। यही कारण है कि सबके हृदय में एकत्व (वहदत) होने के कारण कोई किसी की साक्षी नहीं दे सकता। अतः एकमात्र कालमाया का ब्रह्माण्ड ही वह स्थान है, जहाँ श्यामा जी, सखियों, तथा अक्षर ब्रह्म की सुरताओं को लाकर परमधाम तथा अक्षरातीत की पूर्ण पहचान कराई जा सकती है।

तो कहया खुदा एक है, और महंमद कहया बरहक।
 सो न आवे ख्वाबी दम पर, जो लो होए न रूहें बुजरक॥६१॥
 इसलिये कुरआन का कथन है कि अल्लाह तआला (परब्रह्म) एक है और मुहम्मद स.अ.व. का कथन पूर्णतः

सच है। जब तक इस मायावी जगत में परमधाम की ब्रह्मात्मायें अवतरित न हों, तब तक स्वप्न के जीवों के लिये सच्चिदानन्द परब्रह्म का स्वरूप इस संसार में नहीं आ सकता।

भावार्थ- चौपाई का उपरोक्त कथन यही दर्शाता है कि अक्षरातीत का आवेश मात्र परमधाम की आत्माओं या अक्षर ब्रह्म की आत्मा पर ही आ सकता है। अक्षर की पञ्चवासनाओं पर जिबरील, जो धनी का जोश या अक्षर का आवेश है, वही आ सकता है। यही कारण है कि कबीर, शुकदेव, तथा योगेश्वर श्री कृष्ण जी पर जिबरील अर्थात् परब्रह्म के जोश ने लीला की।

स्वाप्निक जीवों को स्वप्न या ध्यान-समाधि के माध्यम से भविष्य या सत्य की अनुभूति कराई जा सकती है, किन्तु इन पर कभी भी अक्षरातीत का आवेश

नहीं आ सकता। इसलिये गुरु नानक देव जी तथा सूरदास जी को भविष्य की बातें स्वप्न या ध्यान के माध्यम से ही बतायी गयीं, आवेश या जोश द्वारा नहीं।

ए खेल हुआ तिन वास्ते, हक के हुकम।

महंमद आया रूहों वास्ते, ले फुरमान खसम॥६२॥

इसलिये श्री राज जी के आदेश से माया का यह खेल बनाया गया है। इस मायावी जगत में मुहम्मद स.अ.व. परमधाम की आत्माओं के लिये परब्रह्म के आदेश पत्र कुरआन को लेकर आये हैं।

जो ल्याए फुरमान रसूल, सो अब खोली हकीकत।

अर्स रूहें फरिस्ते, हुई हक की मारफत॥६३॥

अब तारतम ज्ञान के प्रकाश में मुहम्मद स.अ.व. द्वारा

लाई गई कुरआन की वास्तविकता स्पष्ट हुई, जिससे परमधाम की आत्माओं, ईश्वरीय सृष्टि, तथा अक्षरातीत की पूर्ण पहचान का प्रकाश चारों ओर फैल गयी है।

लिख्या था जो अव्वल, सो आए पोहोंची कयामत।

भिस्त दुनी को देय के, हादी ले उठसी उमत॥६४॥

कुरआन में पहले से ही जिस कियामत के विषय में लिखा हुआ था, अब वह समय आ चुका है। श्री प्राणनाथ जी संसार के सारे प्राणियों को अखण्ड मुक्ति देकर तथा ब्रह्मसृष्टियों को लेकर इस संसार से परमधाम जायेंगे।

इन विध कहूं बेवरा, ज्यों रूहें जानें बुजरकी।

देखाए बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी॥६५॥

मैं यह विवरण इस प्रकार दे रहा हूँ कि जिससे आत्मायें अक्षरातीत, परमधाम, तथा अपनी महिमा को जान सकें। इस मायावी जगत में आये बिना वे यह जान ही नहीं सकती थीं कि राज जी के स्वामित्व की गरिमा क्या है।

हकें देखाई अर्स साहेबी, हादी रुहों को यों कर।

दुई देखाई झूठ ख्वाब में, पावने पटंतर॥६६॥

इस प्रकार श्री राज जी ने श्यामा जी तथा सखियों को अपने परमधाम की गरिमा का अनुभव कराया। इस संसार तथा परमधाम में भेद को स्पष्ट करने के लिये धाम धनी ने इस स्वप्नमयी जगत के रूप में यह द्वैत मण्डल दिखाया है, जिसमें जीव तथा माया की लीला चल रही है।

चढ़ना है नासूत से, तिन ऊपर है मलकूत।

तिन पर ला-मकान है, तिन पर नूर बका साबूत॥६७॥

इस संसार में परमधाम की अनुभूति करने के लिये ध्यान द्वारा आत्मिक दृष्टि से पृथ्वी लोक को छोड़कर ऊपर जाना है, जिसमें मुख्यतः वैकुण्ठ आता है। उसके ऊपर निराकार (मोह सागर) का आवरण है। इसको पार करने के पश्चात् अक्षर ब्रह्म का अखण्ड बेहद मण्डल आता है।

कोट नासूत की दुनियां, मलकूत को पूजत।

खुदा याही को जानहीं, ए मलकूत साहेबी इत॥६८॥

करोड़ों पृथ्वी लोकों के प्राणी वैकुण्ठ में विराजमान विष्णु भगवान की पूजा करते हैं। वे इन्हीं को सच्चिदानन्द परमात्मा का रूप मानते हैं। वैकुण्ठ की महिमा ऐसी है।

कोट मलकूत के खावंद, ला के तले बसत।

नूर सिफत कर कर गए, पर आगे ना पोहोचत॥६९॥

करोड़ों वैकुण्ठ के स्वामी निराकार की छत्रछाया में रहते हैं। वे अक्षर ब्रह्म की महिमा तो निरन्तर गाते हैं, किन्तु निराकार से आगे नहीं जा पाते।

वेदें नाम धरे खेल के, पूत बंझा सींग ससक।

आकास फूल इनको कहया, एक जरा न रखी रंचक॥७०॥

आधुनिक वेदान्त में इस मायावी संसार को बन्ध्या के पुत्र, खरगोश की सींग, तथा आकाश के फूल के समान कहा गया है, अर्थात् जिस प्रकार बन्ध्या स्त्री का पुत्र नहीं हो सकता, खरगोश का सींग नहीं हो सकता, तथा आकाश का फूल नहीं होता, उसी प्रकार इस जगत का भी अस्तित्व नहीं है। वस्तुतः इस संसार का एक कण

भी अखण्ड नहीं है।

कतेब कहे तले ला के, सो खेल है सब ला।

ए कुंन केहेते हो गया, सो कयामत को फना॥७१॥

कतेब ग्रन्थों का कथन है कि निराकार से बनने वाला सम्पूर्ण जगत लय हो जाने वाला है। यह तो परब्रह्म के "कुन्न" (हो जा) कहने से ही उत्पन्न हुआ था और महाप्रलय में नष्ट हो जाने वाला है।

जो जाने खेल को साहेबी, सो खेलै के कबूतर।

इन की सहूर सुरिया लग, सो हकें पोहोंचे क्यों कर॥७२॥

जो इस झूठे खेल को ही परब्रह्म का स्वरूप मानते हैं, वे सपने के जीव हैं। इनका ज्ञान सुरैय्या सितारा (ज्योति स्वरूप) तक ही होता है। ये सच्चिदानन्द परब्रह्म की

पहचान कैसे कर सकते हैं।

कहे कबूतर खेल के, खेल सरीक हक का।

हक हमेसा वेद कतेब में, खेल तीनों काल फना॥७३॥

स्वप्न के जीव यह कहा करते हैं कि यह खेल भी परब्रह्म का ही है अर्थात् उसका इसमें स्वरूप है। वेद-कतेब में लिखा है कि परब्रह्म का स्वरूप तो हमेशा अखण्ड है, जबकि यह स्वप्नमयी खेल तीनों काल (भूत, भविष्य, व वर्तमान) में नश्वर है।

एक साहेबी नूर हक की, और खेल कछुए नाहें।

न सरीक न निमूना, ए लिख्या वेद कतेबों मांहें॥७४॥

परब्रह्म की साहेबी (स्वामित्व) का स्वरूप तो अक्षर ब्रह्म हैं और यह खेल कुछ है ही नहीं। वेद-कतेबों में

ऐसा लिखा गया है कि परब्रह्म का स्वरूप न तो इस जगत में है और न यहाँ के किसी नमूने (दृष्टान्त) से उसकी तुलना की जा सकती है।

खेल तो झूठा फना कहया, साहेब हमेसा हक।

जैसा साहेब बुजरक, खेल भी तिन माफक॥७५॥

माया के इस झूठे खेल को नश्वर कहा गया है, जबकि परब्रह्म का स्वरूप हमेशा अखण्ड रहने वाला है। जैसी परब्रह्म की महानता है, खेल भी उनकी गरिमा के अनुकूल ही होगा।

भावार्थ— अक्षरातीत सच्चिदानन्दमय हैं, तो परमधाम की लीला भी सच्चिदानन्दमयी ही होगी। इस खेल की रचना अवश्य अक्षरातीत एवं अक्षर के आदेश से हुई, किन्तु इसको बनाने वाला तो अक्षर के मन अव्याकृत का

स्वाप्तिक स्वरूप नारायण ही है। इस प्रकार जब आदिनारायण स्वाप्तिक हैं, तो इस मायावी खेल की लीला भी स्वाप्तिक ही होगी, किन्तु ब्रह्मसृष्टियाँ, श्यामा जी, अक्षर ब्रह्म, तथा अक्षरातीत के चरण कमल इस खेल में आये हैं, इसलिये इस खेल में ब्रह्मलीला होने से इसकी गरिमा बढ़ गयी है। किन्तु, मूल रूप से इस मायावी खेल की गरिमा परमधाम की लीला के समकक्ष नहीं रखी जा सकती।

झूठ निमूना हक को दीजिए, ए कैसी निसबत।

ए झूठ खेल देखाइया, लेने हक लज्जत॥७६॥

इस झूठे जगत की तुलना परब्रह्म से की ही नहीं जा सकती। भला सत्य (परब्रह्म) और झूठ (जगत) में कैसा सम्बन्ध हो सकता है। धनी ने हमें सत्य की लज्जत

(स्वाद) देने के लिये ही यह झूठा खेल दिखाया है।

कोट इंड पैदा फना, होवें नूर के एक पल।

ऐसी नूर जलाल की, कुदरत रखे बल॥७७॥

अक्षर ब्रह्म की योगमाया के अन्दर इतनी शक्ति है कि अक्षर ब्रह्म के एक पल में ही उनके आदेश मात्र से करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं।

तिन से कायम होत है, सदरतुलमुंतहा जित।

होए नाहीं इन जुबां, नूर मकान सिफत॥७८॥

अक्षरधाम में विराजमान अक्षर ब्रह्म की जाग्रत दृष्टि में जो ब्रह्माण्ड आ जाते हैं, वे बेहद-मण्डल में अखण्ड हो जाते हैं। इस नश्वर संसार की जिह्वा से अक्षरधाम की महिमा को व्यक्त नहीं किया जा सकता।

सदस्तुलमुंतहा थें, आवत नूर-जलाल।

जित है अर्स अजीम, खावंद नूर-जमाल॥७९॥

अक्षरधाम से अक्षर ब्रह्म प्रियतम अक्षरातीत का दर्शन करने के लिये यमुना जी को पार कर प्रतिदिन रंगमहल के सामने चाँदनी चौक में आते हैं।

सो नूर नूरतजल्ला के, दायम आवे दीदार।

इन दरगाह में उमत, रूहें बारे हजार॥८०॥

वह अक्षर ब्रह्म नियमित रूप से श्री राज जी का दर्शन करने के लिये चाँदनी चौक आते हैं। उस रंगमहल में परब्रह्म की अँगना रूप १२००० ब्रह्मसृष्टियाँ रहती हैं।

एह मरातबा रुहन का, जिन का हादी अहमद।

मीम गांठ जब खुली, तब सोई हक अहद॥८१॥

परमधाम की आत्माओं की यह महान गरिमा है कि जिनका निर्देशन करने वाली परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा श्यामा जी हैं। जब हरुफ-ए-मुक्तेआत में वर्णित "मीम" का रहस्य खुल जायेगा, अर्थात् हकी सुरत श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप प्रकट हो जायेगा, तब यह मान लेना चाहिये कि यही साक्षात् परब्रह्म का स्वरूप है।

महामत कहे ए मोमिनो, देखो खसम प्यार।

ईसा महंमद अन्दर आए के, खोल दिए सब द्वार॥८२॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! प्राणेश्वर अक्षरातीत का प्रेम तो देखिये। मेरे धाम-हृदय में दोनों सूरतों ने आकर वेद-कतेब के सभी रहस्यों को उजागर

कर दिया।

प्रकरण ॥१७॥ चौपाई ॥१००९॥

इस प्रकरण में परमधाम की आत्माओं को आत्म-जाग्रति के लिये प्रबोधित किया गया है।

अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत।

कौल किया था हक ने, सो आई कियामत॥१॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! अब आप इस मायावी संसार से अपना ध्यान हटाइये क्योंकि यह आपकी आत्म-जाग्रति का समय है। प्रियतम अक्षरातीत ने कियामत के समय आने का जो वचन दिया था, वह कियामत आ चुकी है तथा वे भी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आ चुके हैं।

जबराईल हक हुकमें, ल्याया नामें वसीयत।

फुरमान फकीरों सफकत, ले आवे दुनी बरकत॥२॥

मक्का-मदीना से वसीयतनामें आये हैं, जिनमें लिखा है कि जिबरील फरिश्ता परब्रह्म के आदेश से कुरआन की शक्ति, फकीरों की कृपा, तथा दुनियावी बरकत (सांसारिक सुख की कृपा) अरब से उठाकर हिन्दुस्तान में ले आया है।

द्वार तोबा के बंद होएसी, अग्यारैं सदी आखिर।

जो होवे अरवा अर्स की, सो नींद करे क्यों कर॥३॥

ग्यारहवीं सदी के अन्त में तोबा (अपराधों का प्रायश्चित) करने के दरवाजे बन्द हो जायेंगे अर्थात् उन्हें इसका अवसर नहीं मिलेगा। जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होगी, वह ऐसे समय में नहीं सोयेगी।

भावार्थ- वि.स. १७४५ में ग्यारहवीं सदी पूर्ण हो जाती है। वि.सं. १७५१ में श्री जी की अन्तर्धान लीला के

पश्चात्, संसार के जीवों के लिये अपने अपराधों का प्रायश्चित्त करने का स्वर्णिम अवसर समाप्त हो गया। इसी को तोबा के द्वार का बन्द होना कहते हैं। योगमाया में न्याय के दिन होने वाले प्रायश्चित्त को दोजक की अग्नि में जलना कहते हैं। तोबा करने का तात्पर्य है, श्री प्राणनाथ जी की प्रत्यक्ष लीला (बाह्य तन के साथ होने वाली लीला) के समय उनके चरणों में स्वयं को सौंप देना तथा अपने अपराधों की क्षमा माँगना।

आए लैल के खेलमें, लेने अर्स लज्जत।

सुख सांचे झूठे दुख में, लेने को एह बखत॥४॥

हे साथ जी! आप इस मायावी जगत में परमधाम के आनन्द का स्वाद लेने के लिये आये हैं। आपके लिये यही सुन्दर अवसर है कि आप इस मिथ्या जगत के

दुःखों में भी परमधाम के अखण्ड सुखों का अनुभव कर सकते हैं।

अपन बैठे बीच अर्स के, अर्स को नहीं सुमार।

दसों दिस मन दौड़ाइए, काहूँ न आवे पार॥५॥

हम परमधाम के रंगमहल में मूल मिलावा में बैठे हैं। हमारे परमधाम की कोई सीमा ही नहीं है। दशों दिशाओं में भले ही आप कहीं भी अपने मन को क्यों न दौड़ायें, किन्तु आप कहीं भी उसका ओर-छोर नहीं पा सकते हैं।

खसमें ख्वाब देखाइया, बीच अर्स अपने इत।

हक हादी रूहें मिलाए के, उड़ाए दर्ई गफलत॥६॥

प्रियतम अक्षरातीत ने हमें रंगमहल के मूल मिलावा में

ही बैठाकर इस मायावी खेल को दिखाया है। अब श्री राजश्यामा जी ने सखियों को तारतम ज्ञान के प्रकाश में अपने चरणों में ले लिया है तथा उनकी अज्ञानमयी नींद को समाप्त कर दिया है।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी विराजमान हैं तथा उनकी वाणी के प्रकाश में जागनी लीला चल रही है।

ए खेल तो जरा है नहीं, सब है अर्स खसम।

बैठे इतहीं जागिए, उठो अर्स में तुम॥७॥

यह मायावी खेल तो कुछ है ही नहीं, मात्र स्वप्नवत् है। एकमात्र प्रियतम और उनका परमधाम ही शाश्वत् है। हे साथ जी! आप तारतम वाणी के प्रकाश में चितवनि द्वारा अपने धाम-हृदय में युगल स्वरूप की छवि को बसाइये,

जिससे कि आप यहाँ बैठे-बैठे ही जाग्रत हो सकें तथा इस खेल के समाप्त होने के पश्चात् अपने मूल तन परात्म में भी जाग्रत हो सकें।

अर्स बाग हौज जोए के, करो याद हक के सुख।

ज्यों पेड़ झूठे ख्वाब का, उड़ जाए सब दुख॥८॥

आप परमधाम के बागों, हौज कौसर, तथा यमुना जी की शोभा, एवं प्रियतम श्री राज जी के साथ होने वाली लीला के सुखों को याद कीजिए, जिससे यह स्वप्नमयी संसार आपके मन से निकल जाये तथा आपके सभी लौकिक दुःख भी समाप्त हो जायें।

असल आराम हिरदे मिने, अर्स को अखंड।

तब ए झूठे ख्वाब को, रहे न पिंड ब्रह्मांड॥९॥

जब आपके हृदय में परमधाम के अखण्ड एवं वास्तविक सुखों का अनुभव होने लगेगा, तब आपको अपने इस स्वापिक तन तथा ब्रह्माण्ड की कोई भी स्मृति नहीं रहेगी।

भावार्थ- चितवनि की गहन अवस्था में ही शरीर तथा संसार की स्मृति नहीं रहती है। इसे ही पिण्ड-ब्रह्माण्ड का न रहना कहते हैं। चितवनि से उठने या प्रियतम की भावलीनता से ऊपर होने (अलग होने) पर, स्मृति तो रहती है किन्तु आसक्ति नहीं रहती है।

कायम हक के अर्स में, बैठे अपने ठौर।

हक के इत वाहेदत में, कोई नहीं काहूं और॥१०॥

हे साथ जी! हम सभी अपने प्राणेश्वर के अखण्ड परमधाम में रंगमहल के मूल मिलावा में बैठे हुए हैं। उस

स्वलीला अद्वैत के एकत्व अर्थात् एकदिली में श्री राज जी का हृदय ही श्यामा जी एवं सखियों के रूप में लीला कर रहा है, अर्थात् एक अक्षरातीत के अतिरिक्त वहाँ अन्य किसी का कोई अस्तित्व ही नहीं है।

महामत कहे ए मोमिनो, इस्क लीजे हक।

असल अर्स के बीच में, हक का नाम आसिक॥११॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! अपने मूल परमधाम में श्री राज जी को सभी आत्माओं का प्रेमी (आशिक) कहते हैं। आप उनके अँगरूप हैं, अतः आप अपने प्राणवल्लभ के अखण्ड प्रेम को अपने जीवन का सर्वस्व बनाइये।

प्रकरण ॥१८॥ चौपाई ॥१०२०॥

किताब कुरानकी, इनमें एते बाब हैं- खुलासा फुरमान का, गिरो दीन का, मेयराजनामे का, खुलासा इसलाम का, भिस्त सिफायत का बेवरा, हक की सूरत का, नाजी फिरके का, रूहों की बिने, नूर नूरतजल्ला, जहूरनामा, दोनामा, मीजान अर्स अजीम की महाकारन, मोमिन आए अर्स अजीम से, दोनामा के प्रकरण पांच किताब तमाम।

॥ खुलासा संपूर्ण ॥